सारस्वतम् ।
भाषाटीकासहितम् ।

॥ श्रीः ॥

सारस्वतम्

(व्याकरणम्)

श्रीमदनुभूतिस्वरूपाचार्यप्रणीतम् ।

पण्डितकाशिरामपाठकविरचितसटिप्पणीक-
सुबोधिनीभाषाटीकाविभूषितम् ।

तदेव

क्षेमराज-श्रीकृष्णदासश्रेष्ठिना

मुम्बय्यां

(खेतवाडी ७ वीं गली खम्बाटालैन)

स्वकीये "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) मुद्रणयन्त्रालये

मुद्रयित्वा प्रकाशितम् ।

संवत् १९६८, शके १८३३.

भूमिका ।

परमहंसप्रेष्ठाय जंगमाचरसूतये। निगमागमगीताय नमः प्रज्ञाप्रवर्त्तिने ॥ १ ॥

यह तो संसारमें प्रकट रूपसे प्रसिद्धही है कि, व्याकरण शास्त्र सर्व शास्त्रोंमें शिरोमणि और अर्थतत्त्वका बोधक होनेसे मूल कारण है, क्योंकि इसी शास्त्रके द्वारा समस्त शास्त्रोंका अर्थतत्त्व सरलतासे अवगत होता है इसके शक्तिप्रकाशके विना एक पद मात्रकाभी यथार्थ ज्ञान नहीं होता है लिखाभी है (अर्थप्रवृत्तितत्त्वानां शब्दा एव निबन्धनम् ॥ तत्त्वाववोधः शब्दानां नास्ति व्याकरणादृते ॥ १ ॥) अर्थ । अर्थप्रवृत्ति तत्त्वोंका निबन्धन शब्दही है और शब्दोंका तत्त्वज्ञान व्याकरणके विना नहीं होता है इसलिये व्याकरण शब्दशास्त्रको सर्वशास्त्रोंमें उत्तम मानते हैं केवल तत्त्ववोधक होनेसेही उत्तम नहीं किन्तु वेदोंका प्रथम अंग होनेसे पठन मात्रही परम तप है लिखाभी है (आसन्नं ब्रह्मणस्तस्य तपसामुत्तमं तपः ॥ प्रथमंछन्दसामंगमाहुर्व्याकरणं वुधाः ॥ १ ॥) अर्थ । व्याकरण शास्त्रको ब्रह्मप्राप्तिके प्रथम अंग होनेसे आसन्न–समीपवर्ती कहते हैं और उनके तपोंमें उत्तम तप तथा वेदोंका प्रथम अंग वुधजन कहते हैं। इस शास्त्रका पढनेवाला विद्वद्गोष्ठीमें निःशंकहृदय होकर विराजित होता है और कदापि मानुषिक निसर्गजन्य दोषवशसे अशुद्ध शब्दभी उच्चारण हो जाता है तो इसी शास्त्रके अध्ययन और तत्त्वाववोधके प्रभावसे अपना बुद्धिवैभव दिखाय विद्वज्जनोंको प्रसन्न करदेताहै और किसीके मिथ्या प्रपञ्चमें निवद्ध न होकर शास्त्रविरुद्ध कर्मको नहीं सेवन कर सक्ता है, क्योंकि सत्याऽसत्यका अववोधक नेत्र उसके हृदयमें विराजमान है जिसप्रकार कि, सुवर्णकी परीक्षा कसौटी रखनेवाले परीक्षकको सुगमतासे होजाती है तिसीप्रकार शास्त्रार्थके सत्याऽसत्यकी परीक्षा व्याकरण शास्त्रके तत्त्वार्थके जाननेवालेको होजातीहै और जो कि, कुभाग्यवशसे इस शास्त्रका अभ्यास नहीं करताहै उसको अन्य शास्त्रका तत्त्वार्थज्ञान अतीव दुर्लभ होता है और जवतक कि, शास्त्रोंका तत्त्वार्थही नहीं जाना जाता है तवतक शास्त्रोक्त कर्म्म वनना असम्भवित है. और जब कि, शास्त्रोक्त कर्म वननाही असम्भवित रहा तव ऐहिक पारलौकिक सुखकी प्राप्ति कैसे हो सक्ती है इसलिये जो कि, इस शास्त्रको नहीं अध्ययन करते हैं वह केवल उभय लोकसे भ्रष्ट होकर दुःखही भोगते हैं केवल दुःखही नहीं भोगते किन्तु विद्वद्गोष्ठीमें उनको मौनही रहना पड़ता है और यदि किसीप्रकार भाषणभी करनेको उद्यत होते हैं तो उनका हृदय कम्पित हो जाताहै (नांगीकृतव्याकरणौषधानामपाटवं वाचि सुगूढमास्ते। कर्हिंचिद्दुक्तेतुपदेकथंचित्स्वैरंवपुःस्विद्यतिवेपतेच ।) अर्थ–जिन्होंने कि, व्याकरणरूप औषधि नहीं स्वीकार की है उनकी वाणीके विषे दृढपूर्वक भाषणकी शून्यताही स्थित रहती है और कदाचित् कोई पद उनकी वाणीसे उच्चारण होभी जाता है तो उनका शरीर स्वेदयुक्त होकर कांपने लगता है और भी लिखा है (शब्दशास्त्रमनधीत्ययःपुमान् वक्तुमिच्छति वचःसंभान्तरे ॥ वद्धुमिच्छतिवनेमदोत्कटंहस्तिनंकमलनालतन्तुना ॥ १ ॥) अर्थ। जो कि, पुरुष शब्दशास्त्र व्याकरणको नहीं पढकर सभाके मध्यमें वाक्य कहना चाहता है वह कमलके नालके तांतेसे वनमें मदमत्त हुए हाथीको वांधना चाहताहै तात्पर्य यह है कि, जिस प्रकार कमलके नालके तांतेसे मदमत्त हाथीका बाँधना असम्भवित है तिसीप्रकार सभाके मध्यमें व्याकरण शास्त्रके अध्ययन किये विना वाक्य कहना असम्भवित है इसकारण सर्वमनुष्य मात्रमें आवाल वृद्ध पर्य्यन्त इस शास्त्रका अध्ययन अवश्यही कर्त्तव्य है इस शास्त्रके रचयिता तो (इन्द्र–चन्द्र–काशिकृत्स्न–आपिशलि–शाकटायन–पाणिनि–अमर–जैनेन्द्र) यह आठ हैं परन्तु उनमें विशेषकर पाणिनीय व्याकरणके पठन पाठनकी परिपाटी बहुत कालसे चली आई थी सो वहभी कुछ कालसे दैवकी भयंकर कुदृष्टिसे अन्तर्धानको प्राप्त होनेपर आगई है अब उसका पुनरुद्धार होना दुष्कर है क्योंकि, प्रथम तो मनुष्य कलिकालमें विशेषकर संस्कारभ्रष्ट होनेसे प्रज्ञाहीन होगये दूसरे पाणिनीय शास्त्रके पढनेमें विशेष कालकी आवश्यकता है और लोकमें मनुष्योंकी यह दुर्गति होगई है कि १५ वा १६ वर्षकी अवस्थामें गार्हस्थ्यके वशसे सन्तानोत्पादन कर भरण पोषणमें निबद्ध होजाते हैं फिर इस शास्त्रका अध्ययन कहाँ होसक्ता है ? इसलिये बहुधा कुछ समयसे सारस्वत प्रक्रियाके पढनेकी परिपाटी होगई है यह व्याकरण अपने भक्त अनुभूतिस्वरूपाचार्य्यको प्रसन्न होकर कलिकालके अल्पवुद्धिजनोंके हितार्थ सरस्वतीजीने कृपा कर स्वयं रूपसे एक रात्रिभरमें कह दियाथा इस शास्त्रके पढनेमें सरस्वतीकी कृपासे विशेष कालकी अपेक्षा नहीं किन्तु अधिकसे अधिक एकवर्षमें अल्पबुद्धि विद्यार्थी पढकर वैयाकरण होजाताहै और इसग्रन्थकी शैली कैसी उत्तमहै कि, अल्पसे अल्प बुद्धिवालाभी इसके यथार्थ ज्ञानसे सम्पन्न होकर जो कि त्रयो पाणिनीय व्याकरणके पढनेमें वर्षोंमें होताहै उस बोधको महीनोंमें ही प्राप्त करलेता है विशेष प्रशंसा

इसकी वही जान सक्ताहै जिसको कि, इसके अध्ययनसे अल्पकालहीमें शब्दार्थ बोधका आनन्द हस्तगत हुआहै ऐसे इस परम हितकारी व्याकरण ग्रन्थ पर यथार्थ तत्त्वामृतवर्षिणी टीका न होनेके हेतु वह पुरुष मनही मनमें खटकतेथे जिनको कि, गृहस्थकर्मवशसे इस व्याकरण ग्रन्थके अभ्यास करनेमें अवकाश गुरुके निकट रहनेके लिये नहीं मिलाथा इसकारण सर्वसाधारण जनोंके उपकारार्थ मैंने वडे श्रमसे इसप्रकार भाषानुवाद कियाहै कि, प्रथम सूत्रके पद तथा भिन्न २ विभक्तियोंके विवरणांक तत्पश्चात् वृत्ति तदनन्तर अर्थ तात्पर्य्य सहित हिन्दी भाषा पश्चात् प्रयोगोंका उदाहरण और यत्र तत्र टिप्पणीद्वारा शंका समाधान और विशेष व्याकरण विषय उचित रीतिसे उपन्यस्त हैं मैंनेभी यह टीका स्वयंबुद्धिसे नहीं किया किन्तु चंद्रकीर्ति और प्रसादका सर्वभाव लेकर रचाहै अतः वहुत सुवोध और विशाल होनेसे स्वकीय मुखसे प्रशंसा करना व्यर्थ है क्योंकि, पाठकगण स्वयं दृष्टिसे पवित्र कर कोटिशः आशीर्वचन कहते हुए मुझको कृतकृत्य करेंगे तिसमें भी सकल गुणगणालंकृत वैष्णवधर्मधुरीण वैश्यवंशावतंस **श्रीकृष्णदासात्मज खेमराज**जीने विद्वज्जनोंके द्वारा शुद्ध कराय मुद्रित भी इस रीतिसे करायाहै कि, मुद्रण शोभा अतीव चमत्कृत है उपसंहारमें सर्व व्याकरणरसज्ञ महानुभावोंसे इतनीही सविनय प्रार्थना है कि, मानुषिक निसर्गजन्य दोषवशसे जहाँ कहीं त्रुटि रहगई हो उसको करुणाभावसे मुझ ग्रन्थ भाषानुवादकको सूचित करदेवैं जिससे कि, दूसरी वार शुद्ध करदियाजाय ॥ "सूत्रसप्तशतीं यस्मै ददौ साक्षात्सरस्वती ॥ अनुभूतिस्वरूपाय तस्मै श्रीगुरवे नमः" ॥ इस व्याकरण ग्रन्थमें सातसौ सूत्र हैं यह सूत्र सरस्वतीने अपने परम उपासक अनुभूतिस्वरूपाचार्य्यके लिये कहेथे इसीसे इसको सारस्वती प्रक्रिया कहतेहैं अल्पबुद्धिजनोंके हितार्थ अनुभूतिस्वरूपाचार्य्यने इसको निज व्याख्यामुख कर सरल कियाहै इसकारण अनुभूतिस्वरूपाचार्य्यही इस ग्रन्थके प्रतिपादनकर्त्ता मानेजातेहैं यह अनुभूतिस्वरूपाचार्य्य सरस्वती देवीके परम भक्त थे सरस्वतीकी उपासनाके प्रभावसे इनको सर्वविद्या अवगत हुईथी एक समय विद्वानोंकी गोष्ठीमें इनके मुखसे पुंसु शब्दके स्थानमें पुंक्षु शब्द निकल गयाथा उस समय अशुद्ध होनेके कारण विद्वानोंने इनका उपहास किया तव अपनी उपहास्यताको न सहकर इन्हीं अनुभूतिस्वरूपाचार्य्यने उत्तर दिया कि, जिसको कि,आप अपनी आज्ञानतासे अशुद्ध मानते हो वह अशुद्ध नहीं किन्तु शुद्धही है तव समस्त सभासद् विद्वान् कहने लगे कि, यदि शुद्ध है तो साधन करिये किस व्यारणसे ऐसा होता है तव अनुभूतिस्वरूपाचार्य्यने कहा कि, कल हम तुमको इसका उत्तर देंगे उस समय ऐसा कहकर निजगृहको पधारि सरस्वतीकी उपासना करनेलगे तव अर्द्धरात्रके विषे सरस्वती स्वयं रूपसे प्रत्यक्ष होकर अपने परमभक्त अनुभूतिस्वरूपाचार्य्यसे कहने लगी कि, वर माँगिये उस समय वह अनुभूतिस्वरूपाचार्य्य अपूर्व व्याकरणको देवीसे माँगते हुए तव देवी सातसौ सूत्र देकर अन्तर्हित होगई उस समय उस सारस्वती प्रक्रियाको पाय हर्षित हो इसग्रन्थके द्वारा पुंक्षु शब्दको साधि स्वोपहासकर्त्ता विद्वानोंको प्रसन्न करते हुए तदनन्तर शिष्योंके हितार्थ सरस्वतीप्रोक्त सूत्रोंकी सरलरीतिसे व्याख्या कर सारस्वत नाम इस ग्रन्थका रखते हुए यह जनश्रुति है ॥

पण्डित–काशिरामशर्मा–पाठक–मुण्ढाढौकी-

भाषाटीकासहितसारस्वतस्यप्रकरणाऽनुक्रमणिका ।

॥ श्रीः ॥

अथ सारस्वतव्याकरणम् ।

भाषाटीकासहितम् ।

पूर्वार्धम् ।

प्रणम्य परमात्मानं बालधीवृद्धिसिद्धये ॥
सारस्वतीमृजुं कुर्वे प्रक्रियां नातिविस्तराम् ॥ १ ॥

अ० क्रिया०

प्रणम्य १ परमात्मानम् २ बालधीवृद्धिसिद्धये ३ सारस्वतीम् ४ ऋजुम् ५ कुर्वे ६ प्रक्रियाम् ७ नातिविस्तराम् ८ (अस्मिन् श्लोकेऽष्टौ पदानि सन्ति) अथान्वयः—अहम् । अनुभूतिस्वरूपाचार्य्यः । सारस्वतीम् । प्रक्रियाम् । ऋजुम् । कुर्वे । किं कृत्वा । परमात्मानम् । प्रणम्य । कस्यै सिद्धये । बालधीवृद्धिसिद्धये । कीदृशीम्—नातिविस्तराम् ।

सरस्वतीं नमस्कृत्य सरस्वत्यनुक्रोशतः ।
सरस्वतीकृतग्रन्थे कुर्वे भाषां सुबोधिनीम् ॥ १ ॥

भाषार्थ—मैं अनुभूतिस्वरूपाचार्य्य सरस्वतीप्रणीत सूत्रसम्बन्धिनी प्रक्रियाको सरल करताहूं भाव यह है कि, जहाँ तहाँ स्थित हुए सरस्वतीप्रोक्त सूत्रोंका क्रम त्यागि प्रयोगोंके साधनेके लिये उन्हीं सूत्रोंको क्रमानुसार रखकर सरल करताहूं यदि कहो कि, ग्रन्थके आदिमें गुरुदेवतादि नमस्कारात्मक मंगलाचरण विना शास्त्रसमाप्ति नहीं होतीहै। तहाँ कहते हैं कि, क्या करके कि, परमात्माको प्रणाम करके भाव यह है कि, मन वाणी शरीरद्वारा परमात्माको प्रणाम कर निर्विघ्नतापूर्वक इस प्रक्रियाको रचताहूं क्योंकि परमात्माका प्रणामही प्रक्रियाकी रचनामें निर्विघ्नताकारक देवताओंकी सन्तुष्टिका कारणहै. यदि कहो कि, प्रयोजनके विना किसी कार्यके करनेमें मन्द भी नहीं प्रवृत्त होताहै अतः इस प्रक्रियाके सरल करनेमें ग्रन्थकर्त्ताका क्या प्रयोजनहै ? तहां कहतेहैं कि, किस सिद्धिके लिये कि, बाल अर्थात् जो कि, नहीं व्याकरण पढेहुए शब्दापशब्दबोधवर्जित जन हैं उनके अर्थ बुद्धिके बढानेरूप सिद्धिके लिये भाव यह है कि, म ाभाष्यादि होनेपरभी

कठिन होनेसे उन महाभाष्यादिकोंके विषयोंका बालोंको भलीप्रकार ज्ञान नहीं होताहै इसकारण उन महाभाष्यादिकके विषय नहीं आदर करनेवाले अल्पबुद्धिजनोंकी बुद्धि बढानेरूप सिद्धिके अर्थ करताहूं यदि कहो कि, सरलभी प्रक्रिया विस्तार बहुत होनेसे पढनेको नहीं योग्य होसक्ती है तहाँ कहतेहैं कि, कैसीहै प्रक्रिया कि, विस्तर जो शब्दबाहुल्यता उस करके वर्जितहै अर्थात् थोडे शब्दसमूह और बहुत अर्थवाली है ॥ १ ॥ (१)

यदि कहो कि, इस प्रक्रियाके रचनेमें विस्तर करना कैसे दूर किया इस शंकाके निवारक तथा अपने गर्वके अपहरणसूचक द्वितीय श्लोकको कहतेहैं-

इन्द्रादयोपि यस्यान्तं न ययुश्शब्दवारिधेः ॥
प्रक्रियां तस्य कृत्स्नस्य क्षमो वक्तुं नरः कथम् ॥ २ ॥

इन्द्रादयः १ अपि २ यस्य ३ अन्तम् ४ न ५ ययुः ६ शब्दवारिधेः ७ प्रक्रियाम् ८ तस्य ९ कृत्स्नस्य १० क्षमः ११ वक्तुम् १२ नरः १३ कथम् १४ (अस्मिन् श्लोके चतुर्दश पदानि सन्ति) इन्द्रादयो देवाः (अपि शब्दाद्व्यासवाल्मीक्यादयः) अथवा (इन्द्रादयोऽष्टौमहाव्याकरणकर्त्तारोपि) यस्य शब्दवारिधेः अन्तं न ययुः तस्य कृत्स्नस्य शब्दवारिधेः प्रक्रियां वक्तुम् (मल्लक्षणो) नरः कथं क्षमः ॥ २ ॥ (इत्यन्वयः)

भाषार्थ-इन्द्रादिक देव और अपि शब्दसे व्यासवाल्मीकिआदि ऋषि अथवा इंद्रादिक आठ महाव्याकरण शास्त्रके कर्त्ता जिस शब्दसमुद्र व्याकरणके अन्त नाम पारको नहीं प्राप्त होते हुए तिस समस्त शब्दसमुद्रकी प्रक्रियाके कहनेको मेरे सदृश लक्षणवाला नर कैसे समर्थ होसक्ताहै किन्तु नहीं होसक्ताहै। इस कारण संक्षेपपूर्वक कहताहूं ॥ २ ॥

प्रथम संज्ञाप्रक्रिया कहनेको अपेक्षित होनेसे संज्ञाव्याख्याके जनानेवाली फक्किकाको कहतेहैं-

तत्रतावत्संज्ञासंव्यवहारायसंगृह्यते ।

तत्र-तावत्-संज्ञा-मया-संगृह्यते-कस्मै प्रयोजनाय-संव्यवहाराय ।

---

(१) इस ग्रन्थके अधिकारी बाल हैं और विषय शब्द है और बालबुद्धिकी वृद्धि प्रयोजन है. और प्रतिपाद्य प्रतिपादकभाव सम्बन्ध है। इस श्लोकमें प्रथम प्र-शब्दका प्रयोग मंगलार्थहै। लिखाहै- "प्र शब्दश्चाथ शब्दश्च द्वावेतौ ब्रह्मणः पुरा । कंठं भित्त्वा विनिर्यातौ तस्मान्मंगलवाचिनौ ॥" इति ।

भाषार्थ–तिस सारस्वती प्रक्रियाके विषे प्रथमही समानस्वरादिकोंकी संज्ञा मुझ अनुभूतिस्वरूपाचार्य्यने संग्रह की है किस प्रयोजनके अर्थ कि, भली प्रकार शास्त्रव्यवहारके अर्थ क्योंकि शास्त्रके विषे संज्ञा विना भलीप्रकार प्रत्येक रूपका नहीं ज्ञान होताहै. भाव यह है कि, जिसप्रकार कि, लोकमें सुनाजाताहै कि, यह राजाहै यह मंत्रीहै यह देवदत्तहै तिसीप्रकार इसमेंभी समानादि संज्ञा शास्त्रव्यवहारके अर्थ संग्रह की हैं ॥

प्रथम स्वरोंकी संज्ञा कहते हैं ।

अ इ उ ऋ ऌ समानाः ।

अ इ उ ऋ ऌ–समानाः । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) अनेन प्रत्याहारग्रहणाय वर्णाः परिगण्यन्ते तेषां समानसंज्ञा च विधीयते ।

भाषार्थ–इस कहे हुए और कहे जानेवाले सूत्रोंके समूहकर प्रत्याहार ग्रहणकरनेके लिये वर्ण गिनेगयेहैं अर्थात् अक्षरक्रमसे प्रकाशित कियेगयेहैं उन अक्षरोंके मध्यमें पूर्व कहे हुए अ इ उ ऋ ऌ इन अक्षरोंकी समान यह संज्ञा विधान की है. भाव यह है कि, इस सूत्रमें जो कि, अक्षर क्रमसे गिनाये गयेहैं उनको समान इस नामसे वैयाकरण कहतेहैं ॥ (१)

यदि कहो कि, अ इ उ ऋ ऌ इत्यादिक सूत्रोंके विषे सन्धि कैसे नहीं की तहाँ कहते हैं–

एतेषुसूत्रेषुसन्धिर्नानुसन्धेयोऽविवक्षितत्वाद्विवक्षितस्तुसन्धिर्भवतीतिनियमात् ।

भाषार्थ–इन कहेहुए और अगाडी कहेजानेवाले सूत्रोंके विषे सन्धि नहीं करने योग्यहै किसकारण कि, अविवक्षित होनेसे क्योंकि, विवक्षित सन्धि होताहै यह नियमहै भाव यहहै कि, जिस सन्धिके किये जानेपर कार्य विध्वंस होवे वह अविवक्षित सन्धि होवै है जैसे कि, अ इ उ ऋ ऌ इनका सन्धि करनेपर अय्वृ ऌ ऐसा होताहै और जिस सन्धिके किये जानेपर कार्य सिद्धि होवे वह विवक्षित सन्धि

---

(१) अ–इ–उ–ऋ–ऌ–समानाः । इस सूत्रमें कोई आचार्य्य छे पद कहतेहैं यहाँ सांकेतिक पद होनेसे विभक्तिका लोप होगयाहै लिखाभीहै–"सूत्रे विभक्तिर्नैवास्ति वृत्तौ यत्रोपलभ्यते । एकद्वित्त्वबहुत्वादि तत्सांकेतिकमुच्यते ॥ १ ॥" अर्थ–सूत्रमें विभक्ति होवै नहीं और जहाँ वृत्तिमें एकवचन वा द्विवचन वा बहुवचनादिक प्राप्त होवें तो वह पद सांकेतिक कहा जाताहै छे प्रकारके सूत्रोंमें यह संज्ञासूत्रहै ॥ "संज्ञा च परिभाषा च विधिर्नियम एव च । अतिदेशोऽधिकारश्च षड्विधं सूत्रलक्षणम् ॥ १ ॥" अर्थ–संज्ञा–परिभाषा–विधि–नियम–अतिदेश–अधिकार–यह छे प्रकारके सूत्र होते हैं । इति ।

होवैहै जैसे कि, ई ऊ ए। इनकी सन्धि करनेपर य्वे ऐसा रूप होताहै इत्यादि-कमें सन्धि करना निषेध नहीं क्योंकि इत्यादिकमें सन्धि करनेसे कार्य सिद्धि नहीं दूर हुई-

लौकिकप्रयोगनिष्पत्तयेसमयमात्रत्वाच्च ।

भाषार्थ-लौकिक प्रयोग अर्थात् व्याकरणके विषे उत्पन्न हुए जो अनादिसिद्ध शब्दप्रयोग उनकी सिद्धिके लिये सूचनमात्र किये जानेसे सन्धि नहीं की अथवा लौकिक जो बाल उनके प्रयोगोंकी सिद्धिके लिये सूचनमात्र होनेसे सन्धि नहीं की। भाव यहहै कि, सन्धिकार्य करनेपर (अय्वृऌ) ऐसा पद होताहै उसके पाठमें मन्दबुद्धिजन संशयवद्ध होतेहैं दूसरे यकारादिकोंका स्वरसंज्ञाप्रसंग होताहै इस कारण यहाँ सन्धि नहीं की ॥

ह्रस्वदीर्घप्लुतभेदाः सवर्णाः ।

ह्रस्वदीर्घप्लुतभेदाः-सवर्णाः । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) एतेषां ह्रस्व-दीर्घप्लुतभेदाः परस्परं सवर्णा भण्यन्ते ।

भाषार्थ-इन समानसंज्ञक अक्षरोंके ह्रस्व दीर्घ प्लुत भेद आपसमें सजातीय कर सवर्ण कहेहैं (१) यदि कहो कि, सरस्वतीप्रणीत सूत्रोंमें ह्रस्वादि लक्षण नहीं हैं फिर यहाँ कैसे जाने जासक्ते हैं तहाँ कहतेहैं-

लोकाच्छेषस्यसिद्धिरितिवक्ष्यति ।
ततोलोकत एव ह्रस्वादिसंज्ञा ज्ञातव्या ।

भाषार्थ-इस व्याकरणमें शेषरहेहुएकी सिद्धि लोक नाम अन्य व्याकरणग्रन्थसे जानने योग्यहै इस ग्रन्थके अन्तमें सरस्वती ऐसा कहैगी तिसकारण अन्य व्याकर-णग्रन्थोंसे ह्रस्वादि संज्ञा जानने योग्यहै ।

एकमात्रो ह्रस्वो द्विमात्रो दीर्घस्त्रिमात्रःप्लुतो व्यञ्जनं चार्द्धमात्रकम् । एषामन्येप्युदात्तादिभेदाः सन्ति । उच्चैरुपलभ्यमान उदात्तः । नीचैरनु-दात्तः । समवृत्त्या स्वरितः । सानुनासिको निरनुनासिकश्च ।

भाषार्थ-जिसके उच्चारणकालमें एक मात्रा होतीहै वह ह्रस्व और जिसके उच्चा-रणकालमें दो मात्रा होवे हैं वह दीर्घ और जिसके उच्चारणकालमें तीन मात्रा होवे हैं वह प्लुत और जिसके उच्चारणकालमें अर्द्ध मात्रा होवै है वह व्यञ्जन कहाजाताहै

(१) जैसे। अ यह ह्रस्व और आ यह दीर्घ आ ३ यह प्लुत इसी प्रकार इ और उ और ऋ और ऌ के भेद जानने। "चाषश्चैकां वदेन्मात्रां द्विमात्रं वायसो वदेत् । त्रिमात्रं च शिखी ब्रूयान्नकुलश्चार्द्धमात्रकम् ॥ १ ॥" इति ॥

इन ह्स्वादिभेदोंके औरभी उदात्तादिक भेद हैं जो कि, ऊंचे शब्दकर उच्चारण कियाजाताहै वह उदात्त और जो कि, नीचे स्वर करके उच्चारण किया जाताहै वह अनुदात्त और जोकि, समानवृत्तिकर उच्चारण कियाजाताहै वह स्वरित है यह सब सानुनासिक और निरनुनासिक होतेहैं जैसे एक अ इस अक्षरके ह्स्व दीर्घ प्लुत भेदकर तीन रूप हुए फिर उदात्त अनुदात्त स्वरित भेदकर नौ रूप हुए फिर सानुनासिक निरनुनासिक भेदकर अठारह भेद हुए इति ॥

ए ऐ ओ औ संध्यक्षराणि ।

एऐ ओऔ–सन्ध्यक्षराणि (१) द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) एषां ह्रस्वा न सन्ति ।

भाषार्थ–एकार तथा ऐकारऔर ओकार औरऔकार संध्यक्षरसंज्ञक हैंऔर इन एकार तथा ऐकार और ओकार व औकार सन्ध्यक्षरोंके ह्स्वभेद नहीं होतेहैं किन्तु दीर्घ और प्लुत भेद होते हैं और यह सन्ध्यक्षर परस्पर सवर्ण भी नहीं होतें हैं(२)॥

उभये स्वराः ।

उभये–स्वराः । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) अकारादयः पञ्च चत्वार एकारादयश्च उभये स्वरा उच्यन्ते ।

भाषार्थ–अकारसे आदिलेकर पांच अर्थात् अकार इकार उकार ऋकार ऌकार और एकारसे आदिलेकर चार अर्थात् एकार ऐकार ओकार औकार यह दोनों मिलकर नवसंख्याक स्वर कहे हैं और चकार ग्रहणसे समानोंके दीर्घ भेद अर्थात् आकार ईकार ऊकार ॠकार ॡकार यह पांच और मिलनेसे चौदह स्वर होतेहैं॥

अवर्ज्जा नामिनः ।

अवर्ज्जाः–नामिनः । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) अवर्णवर्ज्जाः स्वरा नामिन उच्यन्ते ।

भाषार्थ–अवर्ण नाम अकार और आकार इनसे वर्जित जो स्वरहैं वह नामी कहेहैं अर्थात् इई उऊ ऋॠ ऌॡ एऐ ओऔ यह स्वर नामिसंज्ञकहैं ॥

---

(१) अथवा । ए –ऐ–ओ–औ–संध्यक्षराणि । पंचपदमिदं सूत्रम् । (२) इन सन्ध्यक्षरोंके ४८ भेद होतेहैं जैसे चार संध्यक्षरोंके दीर्घ प्लुत भेदसे आठ भेद और इन आठोंके मध्यमें प्रत्येकके उदात्त अनुदात्त स्वरित भेदसे चौवीस भेद और इन चौवीसोंके मध्यमें प्रत्येकके सानुनासिक और निरनुनासिक भेदसे अठतालीस भेद होतेहैं ।

अनुक्रान्तास्तावत्स्वराः ।

भाषार्थ-तावत् नाम आदिमें स्वर जो हैं वे अनुक्रमसे कहे हैं ॥

अथ प्रत्याहारजिग्राहयिषया व्यञ्जनान्यनुक्रामति ।

भाषार्थ-इसके अनन्तर प्रत्याहारोंके ग्रहण करानेकी इच्छासे व्यञ्जनोंकोभी अनुक्रमसे कहते हैं ॥

हयवरल । ञणनङम । झढधघभ । जडदगब ।

खफछठथ । चटतकप । शषस ।

हयवरल ञणनङम (१) झढधघभ जडदगब खफछठथ चटतकप शषस ।

आद्यन्ताभ्याम् ।

आद्यन्ताभ्याम् । एकपदमिदं सूत्रम् । (वृत्तिः) प्रत्याहारं जिघृक्षता आद्यन्ताभ्यामेते वर्णा ग्राह्याः । आदिर्वर्णोऽन्त्येन सह गृह्यमाणस्तन्नामा प्रत्याहारः । तथाहि । अकारो बकारेण सह गृह्यमाणोऽबप्रत्याहारः ।

भाषार्थ-प्रत्याहारके ग्रहण करनेकी इच्छावाले पुरुषको आद्यन्त वर्णोंसहित यह हकारादि सकारपर्यंत हस ग्रहण करने योग्यहैं, भाव यह है कि, जो पुरुष प्रत्याहार ग्रहण करनेकी इच्छा करै उसको इन हकारादि सकारान्तहसोंके मध्यमें आदि और अन्तवर्ण सहित वर्ण ग्रहण करने चाहिये, जो कि आदिवर्ण अन्तवर्णके साथ ग्रहण कियाजाताहै उसीका नाम प्रत्याहार है जैसे कि, अकार बकारके साथ ग्रहण कियाजावै तौ उसको अब प्रत्याहार कहते हैं ॥

सचोच्यते । अ इ उ ऋ ऌ ए ऐ ओ औ । हयवरल । ञणनङम । झढधघम । जडदगब । इत्येतावत्संख्याकः संपद्यते । चटतकप इति चप प्रत्याहारः । जडदगब इति जब प्रत्याहारः । झढधघभ इति झभ प्रत्याहारः ।

भाषार्थ-वह अब प्रत्याहार कहाभी जाताहै-अ इ उ ऋ ऌ ए ऐ ओ औ । हयवरल ञणनङम झढधघभ जडदगव इतनी संख्यावाला अब प्रत्याहार होताहै अर्थात् अकारसे लेकर बकारपर्यन्त उनतीसवर्णका वा आकारादि सवर्ण ग्रहणसे चौंतीस वर्णका अब प्रत्याहार होताहै इसीप्रकार चटतकप इन पांच अक्षरोंकरके चप प्रत्याहार होताहै और जडदगव इन पांच अक्षरोंकरके जब प्रत्याहार होताहै और झढधघभ इन पांच अक्षरोंकरके झभ प्रत्याहार होताहै ॥

---

(१) इन हकारादि सकारान्त हसोंमें प्रत्येकके विषे प्रथमान्त एकवचन सांकेतिक जानने ।

एवं यत्रयत्र येनयेन प्रत्याहारेण कृत्यं सस तत्रतत्र ग्राह्यः । प्रत्याहाराणां संख्यानियमस्तु नास्ति ।

भाषार्थ-इसीप्रकार जिस २ उदाहरणके विषे जिस २ प्रत्याहारके साथ कार्य होवै वह वह प्रत्याहार उसी उसी उदाहरणके विषे ग्रहण करने योग्यहै प्रत्याहारोंकी संख्याका नियम नहीं है ॥ (१)

हसाव्यञ्जनानि ।

हसाः-व्यञ्जनानि । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) हकारादयस्सकारान्ता वर्णा हसा व्यञ्जनानि भवन्ति ॥

भाषार्थ-हकारसे लेकर सकारपर्यन्त तेतीस अक्षर हस संज्ञक कहेहैं और व्यञ्जनसंज्ञक भी कहेहैं ॥

इसके अनन्तर व्यञ्जनलक्षण कहतेहैं ।

स्वरहीनं व्यञ्जनम् । तेष्वकारः सुखोच्चारणार्थत्वादित्संज्ञकः ।

भाषार्थ-जो कि, स्वरकरके हीनहै वह व्यंजन होताहै भाव यहहै कि, जिस अक्षरमें कि, अकारादि स्वर न होवै वह व्यञ्जन कहा जाताहै । यदि कहो कि, हकारादिक स्वरसहित वर्ण कैसे व्यञ्जनसंज्ञकहैं तहाँ कहतेहैं कि, उन व्यञ्जनोंके विषे अकार सुखपूर्वक उच्चारणार्थ किया गयाहै वह इत्संज्ञकहै ॥

कार्यायेत् ।

कार्याय-इत् । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) प्रत्ययाद्यतिरिक्तः कस्मैचित्कार्य्यायोच्चार्यमाणो वर्ण इत्संज्ञो भवति । यस्येत्संज्ञा तस्य लोपः ।

भाषार्थ-प्रत्यय और आदि शब्दसे आगम आदेश उपदेश इनसे अतिरिक्त

---

(१) यहाँपर कोई आचार्य ऐसा अर्थ करतेहैं कि, प्रत्याहारोंकी संख्याका अनियम नहीं है किन्तु नियमही है, क्योंकि प्रत्याहारोंकी संख्या पूर्वाचार्योंने कही है-"हसो १ झवो २ जब ३ स्चैव यपो ४ अब ५ इल ६ स्चपः ७ । अमो ८ झभः९खसः १० प्रोक्तो झस ११ श्र छत १२ ईरितः ॥ ॥ १ ॥ यमो १३ हवः १४ खप १५ स्चोक्तो डब १६ स्च ढभ १७ इष्यते । रसो १८ वसः १९ शसः २० ख्यातो झपो २१ अब २२ उदाहृतः ॥ २ ॥ ऊ २३ उच्यते ततः प्राज्ञैः प्रत्याहारा उदीरिताः । सौत्रा एते स्फुटं ज्ञेयास्तथा चान्ये यथामति ॥ ३ ॥"

अर्थात् अधिक वर्ण किसी कार्यके लिये उच्चारण किया हुआ इत्संज्ञक होताहै (१) जिसकी इत्संज्ञाहै उसका लोप कियाजाताहै ॥

वर्णादर्शनं लोपः । वर्णविरोधीलोपश् । मित्रवदागमः । शत्रुवदादेशः । स्वरानन्तरिता हसाः संयोगः ।

भाषार्थ-वर्णनाम अक्षरोंका जो अदर्शनहै वह लोप कहा जाताहै और वर्णोंका जो विरोधहै वह लोपश् कहाजाताहै भाव यहहै कि, एक वर्णको नाश करै और दूसरेकी उत्पत्तिको रोकै वह लोपश होताहै । मित्रके समान आगम कहाहै भाव यहहै कि, जिस प्रकार कि, मित्रके समीप आकर मित्र वैठताहै तिसी प्रकार आगम प्राप्तहोताहै और शत्रुके समान आदेश कहाहै भाव यहहै कि, जिस प्रकार कि शत्रु शत्रुका विनाश कर उसके स्थानमें स्थित होताहै तिसीप्रकार आदेशभी आदेशीको विनाशि उसके स्थानमें होताहै । स्वरों करके अनन्तरित अर्थात् स्वरों-करके वर्जित जो दो वा वहुत हस वह संयोगसंज्ञक कहेहैं ॥

कुचुटुतुपु वर्गाः ।

कुचुटुतुपु-वर्गाः । द्विपदमिदं सूत्रम् । (वृत्तिः) उकारः पञ्चवर्णपरि-ग्रहणार्थः ।

भाषार्थ-कुचुटुतुपु यह पाँचों वर्गसंज्ञकहैं इनके विषे उकारका उच्चारण पाँचों वर्गके वर्णोंके ग्रहण करनेकेलिये हैं जैसे कु इस कहनेसे कखगघङ इन पाँच अक्षरोंका ग्रहण होगा इसीप्रकार अन्यभी जानने ॥

अरेदोन्नामिनो गुणः ।

अरेदोत्-नामिनः-गुणः । (२) त्रिपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) नामिनः स्थानिका अर् एत् ओत् एते गुणसंज्ञका भवन्ति ।

भाषार्थ-नामियोंके स्थानपर उत्पन्न हुए अर् और एकार और ओकार यह तीनों गुणसंज्ञक होवैं हैं भाव यहहै कि, ऋकार और ॠकारके स्थानमें अर् गुण और इकार और ईकारके स्थानमें ए गुण और उकार तथा ऊकारके स्थानमें ओ गुण होताहै और ऋकार तथा ऌकारकी सवर्णता होनेसे ऌकारको अल् गुण होताहै ॥

---

(१) प्रत्ययसे अतिरिक्त अप् प्रत्ययादि और आगमातिरिक्तनुडागमादि । और आदेश पुंसो-सुङ् इत्यादिरूप और उपदेश शिष्याख्यारूप हयवरल इत्यादिक-इत्यलम् । (२) अर्-एत्-ओत्-नामिनः-गुणः । पञ्चपदमिदं सूत्रम् ।

आदैऔ वृद्धिः ।

आदैऔ—वृद्धिः । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) आ आद् ऐ औ एते वृद्धिसंज्ञकाः ।

भाषार्थ—आ, आद्, ऐ तथा औ यह वृद्धिसंज्ञक होवै हैं । भाव यहहै कि, अवर्णके स्थानमें आ वृद्धि और ऋवर्णके स्थानमें आर् वृद्धि और इवर्ण तथा एकारके स्थानमें ऐ वृद्धि और उवर्ण तथा ओकारके स्थानमें औ वृद्धि होवे है और ऋकार तथा ऌकार इन दोनोंकी सवर्णता होनेसे ऌवर्णके स्थानमें आल् वृद्धि होवै है ॥

अन्त्यस्वरादिष्टिः ।

अन्त्यस्वरादिः—टिः । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) अन्त्यो यः स्वरस्तदादिर्वर्णष्टिसंज्ञको भवति ।

भाषार्थ—अन्तके विषे स्थित हुआ जो स्वर और वही अन्तके विषे स्थित हुआ स्वरहै आदिमें जिसके ऐसे वर्ण सहित टि संज्ञक होताहै अर्थात् अन्त्य स्वरसे लेकर वर्ण टि संज्ञिक होवै है । भाव यहहै कि, स्वरान्त शब्दका जो अन्तका स्वरहै वही टि संज्ञक होताहै और हसान्त शब्दका अन्त्य हस और उससे पहिला स्वर दोनोंही टि संज्ञक होवै हैं जैसे स्वरान्त शब्द हरिमें इकारकी टि संज्ञाहै और हसान्त महिमन् शब्दमें अन्की टि संज्ञाहै ॥

अन्त्यात्पूर्व उपधा ।

अन्त्यात्—पूर्वः—उपधा । त्रिपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) अन्त्याद्वर्णमात्रात्पूर्वो यो वर्णः स उपधासंज्ञको भवति ।

भाषार्थ—केवल अन्तके विषे स्थित हुए वर्ण मात्रसे जो पूर्व वर्ण है वह उपधासंज्ञक होताहै जैसे राजन् शब्दमें न्कारसे पहिले जो अकारहै उसकी उपधा संज्ञाहै॥

असंयोगादिपरो ह्रस्वो लघुः । विसर्गानुस्वारसंयोगपरो दीर्घश्च गुरुः ।

भाषार्थ—नहीं है संयोग और आदि शब्दसे विसर्ग तथा अनुस्वार परे जिसके ऐसा ह्रस्व वर्ण लघु कहाहै भाव यहहै कि, जिस ह्रस्व वर्णसे अगाड़ी संयोग तथा विसर्ग और अनुस्वार न होवैं वह लघु कहाताहै और विसर्ग तथा अनुस्वार और संयोग परे हैं जिसके अर्थात् जिसके अगाड़ी विसर्ग वा अनुस्वार वा संयोग होवै ऐसा ह्रस्व और दीर्घ गुरु कहाताहै ॥

वर्णग्रहणे सवर्णग्रहणम् । कारग्रहणे केवलग्रहणम् । तपरकरणं तावन्मात्रार्थम् ।

भाषार्थ-वर्णके ग्रहणमें सवर्णका ग्रहण होता है और कार ग्रहणमें केवल उसीका ग्रहण होता है और तकारका परमें करना तावन्मात्रार्थ है भाव यहहै जिसके साथ वर्ण ग्रहण किया जावे तो उसका और उसके सवर्णका ग्रहण होताहै जैसे अवर्णके ग्रहणसे अकार तथा आकार दोनोंका ग्रहण होगा और जिसके साथ कारका ग्रहण किया जावे तो केवल उसीका ग्रहण होताहै जैसे अकारके ग्रहणसे अ इसका ही ग्रहण होगा और जिसके पिछारी त् ऐसा अक्षर बोलाजावे तोभी केवल उसीका ग्रहण होगा ॥

मुखनासिकावचनोऽनुनासिकः ।

मुखनासिकावचनः-अनुनासिकः । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) मुखनासिकाभ्यामुच्चार्यमाणो वर्णोऽनुनासिकः ।

भाषार्थ-मुख और नासिका इन दोनोंसे उच्चारण किया हुआ जो वर्ण है वह अनुनासिकसंज्ञक होता है ॥

अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः । इचुयशानां तालु । ऋटुरषाणां मूर्द्धा । ऌतुलसानां दन्ताः । उपूपध्मानीयानामोष्ठौ ॥ जिह्वामूलीयस्य जिह्वामूलम् । नासिकानुस्वारस्य । एदैतोः कण्ठतालु । ओदौतोः कण्ठोष्ठम् । वकारस्य दन्तोष्ठम् । ञमङणनानां नासिका च । ᳵ क इति जिह्वामूलीयः । ᳵ प इत्युपध्मानीयः । अं इत्यनुस्वारः । अः इति विसर्गः ।

भाषार्थ-अ वर्ण और क वर्ग और हकार तथा विसर्जनीयोंका स्थान कण्ठ है और इ वर्ण तथा च वर्ग और यकार तथा शकार इनका स्थान तालु है और ऋ वर्ण तथा ट वर्ग और रकार तथा षकार इनका स्थान मूर्द्धा है और ऌ वर्ण तथा त वर्ग और लकार तथा सकार इनका स्थान दंत है और उ वर्ण तथा प वर्ग और उपध्मानीय इनका स्थान ओष्ठहै और जिह्वामूलीयका स्थान जिह्वामूल है और अनुस्वारका स्थान नासिकाहै ए ऐ का कण्ठतालुस्थानहै ओ औ का कंठ ओष्ठ स्थान है और ञ म ङ ण न इनका स्थान भी नासिका है, जिस विसर्गका ककार तथा खकारके संबन्धसे ऐसा ᳵ रूप हो वह जिह्वामूलीय संज्ञकहै और जिस विसर्गका पकार तथा फकारके संबन्धसे ऐसा ᳵ रूप होवे वह उपध्मानीय संज्ञकहै अं यह अनुस्वार संज्ञकहै । अः यह विसर्गसंज्ञकहै ॥

॥ इति संज्ञाप्रकरणम् ॥

अधुना स्वरसन्धिरभिधीयते ।

भाषार्थ-संज्ञाप्रक्रियाके कहनेके अनन्तर अव स्वरसन्धि कही जावै है जो कि, आपसमें अक्षरोंका मिलना है वही संधि कही जाती है ॥ (१)

इ यं स्वरे ।

१ १२ १ ७ १
इ-यम्-स्वरे । त्रिपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) इवर्णो यत्वमापद्यते स्वरे परे । दधि आनय इति स्थिते दध्य् आनय इति तावद्भवति ।

भाषार्थ-इ वर्ण अर्थात् इकार और ईकार यकारको प्राप्त होवैं हैं स्वर परे सन्तें भाव यह है कि, जिस इकार अथवा ईकारसे अकारादि स्वर परे होवैं तौ उस इकार वा ईकारके स्थानमें यकार होता है जैसे दधि आनय ऐसी स्थिति है इसका द ध् य् आनय ऐसा हुआ ॥ (२)

हसेऽर्हसः ।

७ १११-११
हसे-अर्ह्-हसः । त्रिपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) स्वरात्परो रेफहकारवर्जितो हसो हसे परे द्विर्भवति । इति धकारस्य द्वित्वम् ।

भाषार्थ-स्वरसे परे रेफ और हकार वर्जित जो हस सो हस परे सते द्विरूप होवै भाव यह है कि, जिस हसके स्वर तो पूर्वमें होवै और हस पिछारी होवै तो वह हस द्विरूप होताहै परन्तु वह हस रकार अथवा हकारमेंसे न होवै यदि रकार अथवा हकारमेंसे होवै तो द्विरूप न होवे इससे धकारको द्वित्व हुआ ॥

पुनर्द्वित्वे प्राप्ते न द्विरुक्तस्य द्विरुक्तिः । द्वित्वविधानसामर्थ्याद्द्वावेव शिष्येते । अन्ये हसा लुप्यन्ते । दध्ध्य् आनय इति जातम् ।

---

(१) यदि कहो कि, प्रथम तो स्वरोंमें अकारकी गणनाहै फिर उसके होनेपर इकारकी संधि अगले सूत्रमें पहले कैसे प्रतिपादन की है तहाँ यह समाधानहै कि इकार सावित्रीशक्तिरूपहै और वह सर्व जगत्की रचना करनेवालीहै इससे प्रथम इकारकीही सन्धि प्रतिपादन की है-इत्यलम् ॥

(२) यदि कहो कि (दधि आनय) इस प्रयोगमें (नामिनः स्वरे) इस सूत्रविधानसे नुमागम कैसे नहीं किया तहाँ कहते हैं कि (नामिनः स्वरे) यह सूत्र स्यादि विभक्तियोंके विषे स्वर परे संतेही प्राप्त होसक्ताहै न कि और जगह । यदि कहो कि तो (यस्य लोपः) इस सूत्रविधानसे इकारका लोप कैसे नहीं होताहै तहाँ कहते हैं कि (यस्य लोपः) यह सूत्र ईप् प्रत्यय तथा तद्धित स्वर और यकार परेसंतेही होसक्ताहै न कि और जगह । यदि कहो कि दध्य् आनय इस प्रयोगमें (संयोगान्तस्य लोपः) इस सूत्र विधानसे यकारका लोप क्यों नहीं किया गया तहा कहते है कि (असिद्धंबहिरंगमन्तरङ्गे) अन्तरङ्ग कार्य करते बहिरंग कार्य असिद्ध होताहै इस कारण इकारको यकार विधान करनेसे (संयोगान्तस्य लोपः) इस सूत्रकी प्राप्ति नहीं होसक्ती-इत्यलम् ॥

भाषार्थ-इस हसेऽर्हहसः सूत्रसे फिर द्वित्व प्राप्त होता है तहाँ कहते हैं कि, द्विरुक्त अर्थात् द्विर्वचन हुएका फिर द्विर्वचन नहीं होता है, द्वित्व विधानके सामर्थ्यसे दोही शेष रहते हैं अन्य हस लोप होजाते हैं तव (द्ध्ध्ध्य्) आनय ऐसा हुआ ॥

झबे जबाः ।

झबे-जबाः । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) झसानां झबे परे जबा भवन्ति । इति पूर्वधकारस्य दकारः । सवर्णत्वाद्वर्ग्योवर्ग्येण सवर्ण इति वचनात् । यथासंख्यं वा वक्तव्यम् । स्वरहीनं परेण संयोज्यम् । दद्ध्यानय इति सिद्धम् ।

भाषार्थ-झसोंको झब प्रत्याहार परे सते जब होते हैं । यदि कहो कि, झस तो तेईस हैं और जब पांचही हैं तिस कारण (यथासंख्यं) इस करके धकारको दकारही कैसे किया जाता है तहाँ कहतेहैं सवर्ण होनेसे धकारके स्थानमें दकारही होता है । यदि कहो कि, धकार तथा दकारकी सवर्णता कैसे है तहाँ कहते हैं कि वर्ग्य अर्थात् वर्गका वर्ण अपने गर्वके अन्तर्वर्त्ती अक्षरके साथ सवर्ण होता है इस वचनसे सवर्ण होनेसे धकारके स्थानमें दकार हुआ अथवा यथासंख्यभी वक्तव्य है परन्तु अग्निमद्भ्यां इत्यादिकके विषे सवर्ण होनेसेही थकारको दकार होता है न कि, यथासंख्यकर जो कि, अक्षर अकारादि स्वरसे वर्जित होता है वह पर अर्थात् अगाडी स्थित हुए स्वरादि वर्णके साथ संयुक्त होने योग्य है-तब दद्ध्यानय ऐसा सिद्ध हुआ इसी प्रकार और भी जानने-इति ॥

गौरी अत्र । अर्हेति विशेषणान्न रेफस्य द्वित्वम् । किन्तु- ।

भाषार्थ-इसके अनन्तर ईकारका उदाहरण कहते हैं गौरी अत्र इस प्रयोगके विषे (इ यं स्वरे) इस सूत्रकर गौरयत्र ऐसा भया (हसेऽर्हहसः) इस सूत्रके विषय अर्ह इस विशेषणसे रेफको द्विर्वचन नहीं हो सक्ता है तो फिर क्या करना चाहिये तहाँ कहतेहैं-

राद्यपो द्विः ।

रात्-यपः द्विः । त्रिपदमिदंसूत्रम् । (वृत्तिः) स्वरपूर्वाद्रेफात्परो यपो द्विर्भवति । जलतुम्बिकान्यायेनरेफस्योर्ध्वगमनम् । गौर्य्यत्र । स्वर इत्यनुवर्त्तते।

भाषार्थ-स्वरहै पूर्व जिसके ऐसा जो रकार उससे परे जो यप् प्रत्याहार सो द्विरूप होवै है । और जलतुम्बिकाके न्याय कर रकारका ऊर्ध्व गमन होताहै तव

गाय्यत्र ऐसा सिद्धहुआ (१) इससे अगाड़ी स्वरसन्धिपर्य्यन्त समस्त सूत्रोंके विषे (स्वरे) ऐसापद अनुवृत्तिको प्राप्त होताहै जैसे कि,(इ यं स्वरे) इसमें (स्वरे) ऐसा पदहै तिसीप्रकार (उ वम्) इत्यादिकमें भी जानना चाहिये इति ॥

एवमन्यत्रापि यत्र न सूत्राक्षरैः कार्यसिद्धिस्तत्र सर्वत्र सूत्रान्तरात्पदान्तराऽनुवृत्तिर्ज्ञातव्या । ग्रन्थभूयस्त्वभयान्नास्माभिर्लिख्यते ।

भाषार्थ–इसी प्रकार अन्य प्रयोगोंके विषेभी जहाँ केवल सूत्राक्षरों कर कार्यसिद्धि न होवे तहाँ अन्य सूत्रसे अन्य पदकी अनुवृत्ति जानने योग्यहै शास्त्रकी बाहुल्यताके भयसे सूत्र २ के विषे वह २ पद हमने नहीं लिखाहै जो कि, किसी २ सूत्रमें आचुकाहै अथवा आ नाम सरस्वतीने नहीं लिखाहै–इति ॥

उ वम् ।

उ–वम् । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) उवर्णोवत्वमापद्यते स्वरे परे मधुअत्र । मद्ध्वत्र ।

भाषार्थ–उवर्ण (२) अर्थात् उकार ऊकार रूप वकारको प्राप्त होवैहै स्वर परे संते भाव यहहै कि, जिस उकार वा ऊकारसे परे स्वर होवै तो उस उकार वा ऊकारके स्थानमें वकार होय जैसे मधु अत्र इसका हुआ मध्व् अत्र । फिर हसेऽर्हेहः इस सूत्रसे धकारको द्वित्व तो हुआ । मध्ध्व् अत्र । फिर झवे जबाः। इस सूत्रसे पूर्व धकारको दकार भया फिर (स्वरहीनं परेण संयोज्यम्) इससे मद्ध्वत्र ऐसा सिद्ध हुआ–इति ॥

ऋ रम् ।

ऋ–रम् । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) ऋवर्णो रत्वमापद्यते स्वरे परे । पितृ अर्थः । पित्त्रर्थः ।

भाषार्थ–ऋवर्ण नाम ऋकार ॠकाररूप रकारको प्राप्त होताहै स्वरपरे संते भाव यहहै कि, जिस ऋकार वा ॠकारसे परे स्वर होवे उस ऋकार वा ॠकारके स्थानमें रकार होताहै जैसे पितृ अर्थः। इसका पितर् अर्थः हुआ । फिर हसेऽर्हेहूसः। इस सूत्र करके तकारको द्वित्व हुआ तो पि त् त् र् अर्थः। फिर (स्वरहीनं०) इस कर पित्त्रर्थः । ऐसा सिद्ध हुआ–इति ॥

---

(१) (नदीर्घादाचार्याणाम्) इससे दीर्घ स्वरहै पूर्व जिसके ऐसे रकारसे परे यपका द्वित्व कोई आचार्य नहीं इच्छा करते हैं इससे उनके मतमें गौर्यत्र ऐसा सिद्ध होताहै । (२) यदि कहो कि सूत्रमें तो केवल उकारहीका ग्रहणहै वृत्तिमें वर्णका ग्रहण कैसे कियाहै तहाँ कहते हैं कि, तपरकरण और कार ग्रहण विना वर्णही ग्रहण होताहै ।

ऌ लम् ।

ऌ-लम् । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) ऌवर्णो लत्वमापद्यते स्वरे परे ।

ऌ अनुवन्धः । लनुवन्धः ।

भाषार्थ-ऌवर्ण अर्थात् ऌकार ॡकार रूप लकारको प्राप्त होवेहै स्वर परे संते जैसे ऌ अनुवन्धः । तिसका भया ल् अनुवन्धः । फिर (स्वरहीनंपरेण०) इससे हुआ लनुवन्धः-इति ॥

ए अय् ।

ए-अय् । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) एकारो अय् भवति स्वरे परे ।

ने अनम् । नयनम् ।

भाषार्थ-एकार अय् होवै स्वरपरेसंते भाव यहहै कि, जिस एकारसे परे स्वर होवै तो उस एकारके स्थानमें अय् होय जैसे-ने अनम् । नयनम्, ऐसा सिद्ध भया-इति ॥

ओ अव् ।

ओ-अव् । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) ओकारोऽव्भवति स्वरे परे ।

भो अति । भवति ।

भाषार्थ-ओकार अव् होवे स्वरे परे संते जैसे-भो अति । तिसका भया भ् अव् अति । फिर (स्वरहीनं०) इससे भवति ऐसा सिद्ध भया ।

गवादेरवर्णागमोऽक्षादौवक्तव्यः। गो अक्षः । गवाक्षः । गो इन्द्रः। गवेन्द्रः। गो अजिनम् । गवाजिनम् । प्र ऊढः । प्रौढः । प्र ऊढिः । प्रौढिः । स्व ईरम् । स्वैरम् । स्व ईरिणी । स्वैरिणी । अक्ष ऊहिनी । अक्षौहिणी सैना ।

भाषार्थ-गवादिक शब्दोंको अ वर्णका आगम होय अक्षादि पर हुए संते भाव यह है कि, गोआदिक शब्दोंसे यदि अक्षादिक शब्द परे होवैं तो गोआदिक शब्दोंको अकारका आगम होय जैसे (गो अक्षः) तिसका भया (गो अ अक्षः) फिर (ओ अव्) इससे भया (ग् अ व् अ अक्षः) फिर (स्वरहीनं परेण संयोज्यम्) इससे भया (गव अक्षः) फिर (सवर्णे दीर्घः सह) इस अगले सूत्रकर सिद्ध भया (गवाक्षः) इसी प्रकार (गो अजिनम्) तिसका भया (गो अ अजिनम्) फिर (ओ अव्) इससे भया (ग् अ व् अ अजिनम्) फिर (स्वरहीनं०) (गव अजिनम्) फिर (सवर्णे दीर्घः सह) इस कर भया सिद्ध (गवाजिनम्) और (गो इन्द्रः) तिसका भया (गो अ इन्द्रः). फिर (ओ अव्) इस कर भया (ग्

अ व् अ इन्द्रः) फिर (स्वरहीनं परेण०) इससे भया (गव इन्द्रः) फिर (अ इ ए) इस अगले सूत्रकर सिद्ध भया (गवेन्द्रः) और (प्र ऊढः) तिसका भया (प्र अ ऊढः) फिर (उ ओ) इस सूत्रकर भया (प्र ओढः) फिर (ओ औ औ) इस सूत्रकर सिद्ध भया (प्रौढः) इसी प्रकार (स्व ईरम्) तिसका भया (स्वैरम्) और (स्व ईरिणी) तिसका भया (स्वैरिणी) और (अक्ष ऊहिनी) तिसका भया (अक्षौहिणी) ॥

क्वचित्स्वरवद्यकारः । यथाध्वपरिमाणे । गो यूतिः । गव्यूतिः । अन्यत्र गवां मिश्रीभावे । गोयूतिः ॥

भाषार्थ-कहीं प्रयोगान्तरके विषे यकार स्वरके तुल्य निश्चय करने योग्यहै भाव यह है कि, स्वर परे संते जो कार्य होता है वहीं यकार परे संते भी होताहै जैसे मार्ग प्रमाण वाच्य हुए संते (गोयूतिः) तिसका भया (ग अ व् यूतिः) फिर (स्वरहीनं०) इस कर हुआ सिद्ध (गव्यूतिः) यह दो कोशके नाम हैं और जगह मार्ग प्रमाण न होनेमें गौओंका जो इकठा होना है उसमें (गोयूतिः) होता है इसी प्रकार (पितृयम्) तिसका (ऋरम्) इस सूत्रकर भया (पि त् र् यम्) फिर (स्वरहीनं परेण०) इस कर सिद्ध भया (पित्र्यम्) ॥

ऐ आय् ।

१ १ १ १
ऐ--आय् । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) ऐकार आय् भवति स्वरे परे । नै अकः । नायकः ।

भाषार्थ-ऐकार आय् होता है स्वर परे संते जैसे (नै अकः) तिसका भया (न् आय् अकः) फिर (स्वरहीनं०) इससे सिद्ध भया (नायकः) ॥

औ आव् ।

औ --आव् । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) औकार आव् भवति स्वरे परे । तौ इह । ताविह ।

भाषार्थ-औकार आव् होता है स्वर परे संते भाव यह है कि, जिस औकारसे परे स्वर होवे तो उस औकारके स्थानमें आव् होता है जैसे (तौ इह) तिसका भया (त् आव् इह) फिर (स्वरहीनं०) इसकर सिद्ध भया (ताविह) ॥

य्वोर्लोपश् वा पदान्ते ।

६ २ १ आ० ७ १
य्वोः--लोपश् वा--पदान्ते । चतुष्पदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) पदान्ते स्थि-

तानामयादीनांयकारवकारयोर्लोपश्वाभवति । तेआगताः । तआगताः ।
तयागताः । तस्मैएतत् । तस्माएतत् । तस्मायेतत् । तौइमौ । ताइमौ ।
ताविमौ । बटोइह । बटइह । बटविह ।

भाषार्थ-पदान्तके विषे स्थित जो अय् और आदि शब्दसे आय् अव् आव् तिन्होंके यकार और वकार का लोपश् होवै विकल्प करके भाव यह है कि (ए अय्) (ऐ आय्) (ओ अव्) (औ आव्) इन सूत्रोंकर उत्पन्न हुए जो (अय् आय् अव् आव्) तिन्होंके सम्बन्धी यकार और वकारोंका विकल्प कर लोप होवै है जैसे (ते आगताः) तिसका (ए अय्) इस सूत्रकर भया (त् अय् आगताः) फिर (य्वोर्लोपश् वा पदान्ते) इस सूत्रकर विकल्पतासे यकारका लोपश् करनेसे हुवा (त् अ आगताः) फिर (स्वरहीनं०) इसकर सिद्ध भया (त आगताः) और जहाँ यकारका लोपश् नहीं हुआ तहाँ भया (तयागताः) और (तस्मैएतत्) तिसका (ऐ आय्) इस सूत्रकर भया (तस्म् आय् एतत्) फिर (य्वोर्लोपश्०) इस कर यकारका लोपश् करनेसे हुआ (तस्म् आ एतत्) फिर (स्वरहीनं०) इसकर हुआ (तस्मा एतत्) और जहाँ यकारका लोपश् नहीं हुआ तहाँ (तस्मायेतत्) ॥

लोपशि पुनर्न सन्धिः छन्दसि तु (१) भवति। हेसखे इति । हेसख-इति। हेसखेति ।

भाषार्थ-लोपश् कियेसंते फिर सन्धि नहीं होवैहै भाव यह है कि, लोपश् होने-पर फिर पूर्वापर वर्णोंका परस्पर घटनरूप सन्धि और कार्यान्तर सन्धान नहीं होता-है जैसे (ते आगताः) तिसका हुआ (य्वोर्लोपश्०) इस सूत्रकर यकारका लोपश् करनेसे (त आगताः) इसमें (सवर्णे दीर्घः सह) इस सूत्रकी नहीं प्राप्ति होसकती और (राजभ्याम्) इस प्रयोगमें (अद्भिः) इस सूत्रकर आकार कार्यान्तर सन्धान रूप सन्धि नहीं होवै है । और छन्दस् नाम वेदके विषय लोपश् होनेपरभी सन्धि होवें है जैसे (हे सखे इति) तिसका भया (य्वोर्लोपश् वा पदान्ते) इस सूत्रसे यकारका लोपश् करनेसे (हे सख इति) फिर वैदिक प्रयोग होनेसे लोपश् करनेपर (अ इ ए) इस सूत्रकर सन्धि करनेसे सिद्ध भया (हे सखेति) और जहाँ कि, वैदिक प्रयोग नहीं है तहाँ भया (हे सख इति) ॥

---

(१) (छन्दसि तु भवति) इसमें तु शब्द होनेसे कहीं लौकिक उदाहरणके विषेभी लोपश् करनेपर सन्धि होवेहै जैसे (दाम उदर) इसमें नकारका लोपश् होनेपरभी सन्धि (उओ) इस सूत्रकर हुई है । तब (दामोदरः) ऐसा सिद्ध हुआ इसी प्रकार (राजाश्वः, पञ्चाग्निः) इत्यादिक प्रयोग सिद्ध हुएहैं और (दण्डिषु) इत्यादिकके विषे षकार कार्यान्तर सन्धानरूप सन्धि हुई है ॥

एदोतोतः ।

एंदोतः-अंतः । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) पदान्ते स्थितादेकारादोकाराच्च परस्याकारस्य लोपो भवति । ते अत्र । तेऽत्र । पटो अत्र । पटोऽत्र ।

भाषार्थ-पदान्तके विषे स्थित जो एकार और ओकार उनसे परे जो अकार तिसका लोप होवेहै जैसे (ते अत्र) तिसका भया (तेऽत्र) पटो अत्र । तिसका भया (पटोऽत्र) (१)

सवर्णे दीर्घः सह ।

सवर्णे-दीर्घः-सह । त्रिपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) समानस्य सवर्णे परे सह दीर्घो भवति । श्रद्धा अत्र । श्रद्धात्र । भानु उदयः । भानूदयः । पितृ ऋणम् । पितॄणम् । दधि इह । दधीह । दण्ड अग्रम् । दण्डाग्रम् ॥

भाषार्थ-समानको सवर्ण परे हुए सन्ते मिलकर दीर्घ होय भाव यहहै कि जिस समानके अगाडी सवर्ण होवै तो दोनों मिलकर दीर्घ होतेहैं जैसे (श्रद्धा अत्र) इसमें श्रद्धा शब्दमें जो आकार है उसका सवर्ण अत्र शब्दमें अकार विद्यमानहै यह दोनों मिलकर दीर्घही होगये तो (श्रद्धात्र) ऐसा सिद्ध होगया इसी प्रकार (भानु उदयः) इसमें भानुशब्दके विषे जो उकार है उसका सवर्ण उदय शब्दमें उकार विद्यमानहै यह दोनों मिलकर दीर्घ होगये तो (भानूदयः) ऐसा सिद्धभया इसी प्रकार (पितृ ऋणम्) तिसका भया (पितॄणम्) (दधि इह) तिसका भया (दधीह) (दण्ड अग्रम्) तिसका भया (दण्डाग्रम्) ॥

अदीर्घो दीर्घतां याति नास्ति दीर्घस्य दीर्घता ।
पूर्वदीर्घस्वरं दृष्ट्वा परलोपो विधीयते ॥ १ ॥

भाषार्थ-अदीर्घ अर्थात् ह्रस्व जो स्वर है वह अगाडीके सवर्ण ह्रस्व वा दीर्घसे मिलकर दीर्घताको प्राप्त होता है और दीर्घको अगाडीके सवर्ण ह्रस्व वा दीर्घसे मिलकर और दीर्घता नहीं होवै है किन्तु पूर्व दीर्घस्वरको देखकर पिछले ह्रस्व वा दीर्घ स्वरका लोपविधान किया जाताहै ॥ १ ॥

सामान्यशास्त्रतो नूनं विशेषो बलवान्भवेत् ।
परेण पूर्वबाधो वा प्रायशो दृश्यतामिह ॥ २ ॥

(१) यदि कहो कि (ते अत्र) इस प्रयोगमें तो (ए अय्) और (पटो अत्र) इस प्रयोगमें (ओ अव्) इन सूत्रोंकी प्राप्ति कैसे नहीं हुई तहाँ यह समाधानहै कि, सामान्य सूत्रसे विशेष सूत्र बलवान् होताहै इस कारण (एदोतोतः) इस विशेष सूत्रकी प्राप्ति हुई । इति ॥

भाषार्थ-निश्चयही सामान्य शास्त्रसे विशेष शास्त्र बलवान् होताहै। अथवा इस व्याकरण शास्त्रके विषे बहुधा कर बहुत स्थानोंमें पिछले सूत्रकर पूर्व सूत्रका बाध अर्थात् निषेध विद्वानोंकर जानना चाहिये भाव यह है कि, सामान्यसूत्रसे विशेष सूत्र बली होता है सामान्य सूत्र वह होताहै जिसकी व्याप्ति बहुत जगह होय और विशेष सूत्र वह होता है जिसकी व्याप्ति थोडे स्थानोंमें होय जैसे (दधि इह) इस प्रयोगमें (इ यं स्वरे) इस सूत्रकी प्राप्ति नहीं हो सक्ती क्योंकि, इसमें बहुतसे स्वरोंका ग्रहण होनेसे यह सामान्य सूत्र है और (सवर्णे दीर्घः सह) इस सूत्रकी प्राप्ति होसक्ती है, क्योंकि, इसमें केवल समानकाही ग्रहण होनेसे यह विशेष सूत्र है। अथवा इस व्याकरण शास्त्रके विषे बहुधा कर बहुत स्थानोंमें अगाडीके सूत्रसे पूर्व सूत्रका निषेध होताहै जैसे (इ यं स्वरे) यह पूर्व सूत्र है इस सूत्रका बाधक (दधि इह) इत्यादि प्रयोगमें (सवर्णे दीर्घः सह) यह सूत्र है। इस कथनसे यह जनागया कि, जिस एक उदाहरणमें दो सूत्र प्राप्त होते हों तो उन दोनों सूत्रोंमें जो विशेष सूत्र है वह लगता है न कि सामान्य अथवा पूर्वोक्त तथा परोक्त सूत्रोंमें जो परोक्त सूत्र है वह प्राप्त होता है न कि पूर्वोक्त-इति ॥

अ इ ए।

अ--इ-ए। त्रिपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) अवर्ण इवर्णे परे सह ए भवति। तव इदम्। तवेदम्।

भाषार्थ-अवर्ण इवर्ण परे सन्ते मिलकर ए होता है भाव यह है कि, जिस अकार वा आकारसे परे इकार वा ईकार होवै तो वह दोनों पूर्व पिछले स्वरसे मिलकर एकार होता है जैसे (तव इदम्) तिसका भया (तव्एदम्) फिर (स्वर० हीनं) इसकर सिद्ध भया (तवेदम्) इति ॥

हलादेरीषादौ टेर्लोपो वक्तव्यः। हल ईषा। हलीषा। मनस् ईषा। मनीषा। लांगल ईषा। लांगलीषा। शक अन्धुः। शकन्धुः। कर्क अन्धुः। कर्कन्धुः। कुल अटा। कुलटा। सीमन्त अन्तः। सीमन्तः। सार अंगः। सारंगः। पतत् अञ्जलिः। पतञ्जलिः। अद्य ओम्। अद्योम्।

भाषार्थ-हलादिक शब्दोंकी टि का लोप होय ईषादिक शब्द पर हुये संते जैसे (हल ईषा) इस प्रयोगमें जो कि, हल शब्द है उसमें अकारकी टि संज्ञा है उस टि का लोप हो गया क्योंकि, ईषा शब्द परे विद्यमानहै तब हुआ (हल् ईषा) फिर (स्वरहीनं०) इस कर सिद्ध हुआ (हलीषा) इसी प्रकार (मनस् ईषा) सइ प्रयोगमें जो कि, मनस् शब्द है उसमें अस्की टि संज्ञा है उस टिका लोप हो

गया क्योंकि ईषा शब्द परे विद्यमान है तब हुआ (मन् ईषा) फिर (स्वरहीनं०) इस करके सिद्ध भया (मनीषा) इसी प्रकार (लांगलीषा) आदिक सिद्ध होते हैं ॥

उ ओ।

७ १ ११
उ–ओ। द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) अवर्णे उवर्णे परे सह ओ भवति। गंगा उदकम्। गंगोदकम्।

भाषार्थ–अवर्ण उवर्ण परे संते मिलकर ओ होवै भाव यह है कि, जिस अकार वा आकारसे परे उकार वा ऊकार होवै तो दोनों पूर्व और पिछले मिलकर ओकार होय जैसे (गंगा उदकम्) इस प्रयोगमें जो कि, गंगा शब्दमें आकार है उससे परे उदक शब्दका उ विद्यमान है तब आकार और उकार इन दोनोंके स्थानमें ओकार करनेसे सिद्ध भया (गंगोदकम्) ॥

ऋ अर्।

ऋ–अर्। द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) अवर्णे ऋवर्णे परे सह अर् भवति। तव ऋद्धिः। तवर्द्धिः।

भाषार्थ–अवर्ण ऋवर्ण पर हुए संते अर् होय भाव यह है कि, जिस अकार वा आकारसे परे ऋकार वा ॠकार होवै तो वह दोनों पूर्व और पिछले स्वर मिलकर अर् होय जैसे (तव ऋद्धिः) इस प्रयोगमें तव शब्दके विषे जो कि, अकार है उससे परे ऋद्धि शब्दमें ऋ विद्यमान है इन दोनोंके स्थानमें अर् करनेसे सिद्धभया (तवर्द्धिः) इति ॥

क्वचिदार्।

अ० १ १
क्वचित्–आर्। द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) अवर्णे ऋवर्णे परे सह क्वचिदार् भवति। ऋण ऋणम्। ऋणार्णम्। प्र ऋणम्। प्रार्णम्। वसन ऋणम्। वसनार्णम्। वत्स ऋणम्। वत्सार्णम्। वत्सतर ऋणम्। वत्सतरार्णम्। कंबल ऋणम्। कंबलार्णम्। दश ऋणम्। दशार्णम्। शीत ऋतः। शीतार्त्तः। दुःख ऋतः। दुःखार्त्तः।

भाषार्थ–अवर्ण ऋवर्ण परे संते किसी प्रयोगके विषे आर् होता है भाव यहहै कि, अकार वा आकारसे ऋकार वा ॠकार परे होय तो किसी प्रयोगमें दोनों पूर्व और पिछले स्वर मिलकर आर् होवैहै जैसे (ऋण ऋणम्) इस प्रयोगमें जो कि, ऋण शब्द है उसमें जो कि, अकार है उससे परे पिछले ऋण शब्दमें ऋकार

विद्यमानहै तो इन अकार और ऋकारको मिलाकर तृतीया समास होनेपर (ऋणार्णम्) ऐसा प्रयोग सिद्ध हुआ इसी प्रकार (प्रार्णम्) आदि शब्द सिद्ध हुए जानने-इति ॥

ऌ अल्।

ऌ-अल्। द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) अवर्णे ऌवर्णे परे सह अल् भवति । तव ऌकारः । तवल्कारः ।

भाषार्थ-अवर्ण ऌवर्ण पर हुए संते अल् होय भाव यहहै कि, जिस अकार वा आकारसे परे ऌकार वा ॡकार होवे तो वह दोनों पूर्व पिछले स्वर मिलकर अल् होय जैसे (तव ऌकारः) इस प्रयोगमें तव शब्दके विषे जो अकारहै उससे परे ऌकार शब्दमें ऌ विद्यमानहै तब इन अकार और ऌकारको मिलकर अल् होनेसे हुआ (तवल्ऌकारः) फिर (राद्यपोद्विः) इस सूत्रकर भया (तव ल् क् कारः) फिर (स्वर हीनं०) इसकर सिद्ध हुआ (तवल्कारः) ॥ (१ ॥

रलयोः सावर्ण्यं वा वक्तव्यम् । होतृ ऌकारः । होतॄकारः । होल्ऌकारः ।

भाषार्थ-रकार और लकार इन दोनोंकी आपसमें सवर्णता कहने योग्यहै अर्थात् रकार लकार परस्पर सवर्ण हैं और उपचारसे अथवा वाके ग्रहणसे वेदके विषे ऋकार और ऌकार इन दोनोंकी भी सवर्णता कहने योग्यहै । जैसे (होतृ-ऌकारः) इस प्रयोगमें होतृ शब्दके विषे ऋकारहै उससे परे जो ऌकार शब्दमें ऌ है इसको ऋकारका सवर्ण मानकर (सवर्णे दीर्घः सह) इस सूत्रकर सन्धि की तो सिद्ध हुआ (होतॄकारः)और होतृ शब्दमें जो कि,ऋकारहै उसको ऌकार सवर्ण मानकर (सवर्णे दीर्घः सह) इस सूत्रकर सन्धि की तो हुआ (होतॣ ऌकारः) फिर (तोर्लि लः) इस अगले सूत्रसे सिद्ध हुआ (होल्ऌकारः) इसी प्रकार (परि अंकः) तिसका सिद्ध हुआ (पर्य्यंकः) (पल्यंकः) ॥

ए ऐ ऐ।

ए-ऐ-ऐ । त्रिपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) अवर्णे एकारे ऐकारे च परे सह ऐकारो भवति । तव एषा । तवैषा । तव ऐश्वर्य्यम् । तवैर्य्यम् ।

भाषार्थ-अवर्ण एकार और ऐकार पर संते मिलकर ऐकार होताहै भाव यहहै कि, जिस अकार वा आकारसे परे एकार वा ऐकार होवे तो उन दोनों पूर्व पिछले

(१) यदि कहो कि (तवल्कारः) इसमें ऌकारहै रकार तौ नहीं है फिर कैसे (राद्यपोद्विः) यह सूत्र लग सक्ताहै इस शंकाके दूर करनेकोही (रलयोः सावर्ण्यं वा वक्तव्यम्) यह है । इति ॥

स्वरको मिलकर ऐकार होय जैसे (तव एषा) इस प्रयोगके विषे तव शब्दके अकारसे परे एषा शब्दमें एकार विद्यमानहै तो इन दोनोंके स्थानमें ऐकार करनेसे सिद्ध हुआ (तवैषा) इसी प्रकार (तवैश्वर्य्यम्) यह सिद्ध प्रयोगहै ॥

ओ औ औ ।

ओँ[1]--औँ[1]--औँ[1] । त्रिपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) अवर्ण ओकारे औकारे च परे सह औकारो भवति । तव ओदनम् । तवौदनम् ।तव औन्नत्यम् । तवौन्नत्यम् ।

भाषार्थ–अवर्ण ओकार और औकार परे संते मिलकर औकार हो भाव यहहै कि, जिस अकार वा आकारसे परे ओकार वा औकार होवै तो वह दोनों पूर्व पिछले स्वर मिलकर औकार होय जैसे (तव ओदनम्) इस प्रयोगके विषे तव शब्दमें जो अकारहै उससे परे ओदन शब्दका ओकार विद्यमानहै इन दोनोंके स्थानमें औकार करनेसे सिद्ध हुआ (तवौदनम्) इसी प्रकार (तव औन्नत्यम्) तिसका सिद्ध भया (तवौन्नत्यम्) ॥

ओष्ठोत्वोर्वा समासे ।

ओँष्ठोत्वोः[2]--वाँ--ओ[1]--सँमासे । चतुष्पदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) अवर्णस्य ओष्ठोत्वोः परयोर्वा सह ओ भवति समासे सति । विम्ब ओष्ठः । बिम्बोष्ठः । बिम्बौष्ठः । स्थूल ओतुः । स्थूलोतुः । स्थूलौतुः ।

भाषार्थ–अवर्ण नाम अकार वा आकारके परे ओष्ठ और ओतु शब्द भये संते अकार वा आकारको ओकार वा औकार सहित ओकार विकल्पकर होवै समास होनेपर भाव यहहै कि, समासान्त पदके मध्यमें अकार वा आकारसे परे ओष्ठ वा ओतुशब्द होवै तो उस अकार और ओष्ठ वा ओतु शब्दके ओकारके स्थानमें ओकार विकल्प करके होय जैसे (विम्ब ओष्ठः) इस समासान्त प्रयोगमें विम्ब शब्दके विषे जो कि, अकारहै उससे परे ओष्ठ शब्दहै अब उस अकार और ओष्ठ शब्दके ओकार इन दोनोंके स्थानमें विकल्पकर ओकार होनेसे सिद्ध हुआ (बिम्बोष्ठः) और जहाँपर बिंब शब्दके अकार और ओष्ठ शब्दके ओकार इन दोनोंके स्थानपर ओकार नहीं हुआ तौ (ओ औ औ) इस सूत्रकर सिद्ध हुआ (बिम्बौष्ठः) इसी प्रकार (स्थूलओतुः) तिसका भया (स्थूलोतुः) और (स्थूलौतुः) । इति स्वरसन्धिः ॥

अथ प्रकृतिभाव उच्यते ।

भाषार्थ-अथ अर्थात् स्वरसन्धिके कहनेके अनन्तर प्रकृति(१)भाव कहा जावै है ॥

नामी ।

नं-अमी । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) अदसोऽमीशब्दः सन्धिं न प्राप्नोति । अमी आदित्याः । अमी अश्वाः । अदस् इति किम् । अमी रोगवान् । अमी असौ । अम्यसौ ।

भाषार्थ-अदस् शब्दका प्रथमा बहुवचनके विषे जो कि, अमी शब्द सिद्ध हुआहै वह सन्धिको नहीं प्राप्त होय जैसे (अमी आदित्याः) इस प्रयोगमें (इ यं स्वरे) इससूत्रकी प्राप्ति होनेपर भी सन्धि नहीं हुई क्योंकि यह अमी शब्द अदस् शब्दके प्रथमाबहुवचनका रूप है इसी प्रकार (अमी अश्वाः) इत्यादिक प्रयोगोंमें भी सन्धि नहीं की यदि कहो कि, वृत्तिमें अदस् शब्दका अमी शब्द ऐसा क्यों कहा तहाँ कहते हैं कि, अमी शब्द रोगीका वाचक भी है जहाँ अमी शब्द रोगीका वाचक होय और अदस् के प्रथम बहुवचनमें नहीं सिद्ध हुआ हो तहाँ सन्धिको प्राप्त होय जैसे (अमी असौ) तिसका हुआ (इ यं स्वरे) इस सूत्रकर (अम्यसौ) ॥

ग्वे द्वित्वे ।

ग्वे-द्वित्वे । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) ईच ऊच एच ग्वे ईकारान्त ऊकारान्त एकारान्तश्च शब्दो द्वित्वे वर्त्तमानः सन्धिं न प्राप्नोति । मणीवादिवर्ज्ज्यम् । अग्नीअत्र । पटूअत्र । मालेआनय । मणीवादौतु सन्धिर्भवति । मणी इव । मणीव । दम्पती इव । दम्पतीव । जंपती इव । जंपतीव । रोदसी इव । रोदसीव ।

भाषार्थ-द्विवचनके विषे वर्त्तमान जो ईकारान्त तथा ऊकारान्त और एकारान्त शब्द सन्धिको नहीं प्राप्त होवैं हैं मणीव आदि शब्दोंको वर्जितकरके जैसे (अग्नी अत्र) इस प्रयोगमें अग्नी शब्दका ईकार द्विवचनसम्बन्धी है इसकारण (इ यं स्वरे) इस सूत्रकी प्राप्ति होनेपर भी सन्धि नहीं हुई और (पटूअत्र) इस प्रयोगमें पटू शब्दका ऊकार द्विवचनसम्बन्धी है इसकारण इस प्रयोगमें सन्धि नहीं हुई और (माले आनय) इस प्रयोगमें माले शब्दका एकार द्विवचनसम्बन्धी

---

(१) सन्धिके योग्य होकरभी कोई एक स्वरोंका यथावस्थित रहनाही प्रकृतिभावहै । और जो कि, सन्धिके संभव होनेपरभी यथावस्थित रूप होकर स्थित रहतेहैं वह प्रगृह्य कहे जावै हैं । इत्यलम् ।

है इस कारण इस प्रयोगमें भी सन्धि नहीं हुई परन्तु (मणी इव) आदिक प्रयोगोंके विषे सन्धि होवै है। जैसे (मणी इव) इस प्रयोगमें मणी शब्दका ईकार द्विवचनसम्बन्धी है तथापि मणीवादिवर्जं इस कथनसे (सवर्णे दीर्घः सह) इस सूत्रकर सन्धि करनेसे सिद्ध हुआ (मणीव) इसी प्रकार (दम्पती इव) तिसका भया (दम्पतीव) और (जम्पती इव) तिसका भया (जम्पतीव) (रोदसी इव) तिसका भया (रोदसीव) इति ॥

ओ निपातः।

आ–ओ–निपातः। त्रिपदमिदं सूत्रम्। वृत्तिः। आकार ओकारो निपात एकस्वरश्च सन्धिं न प्राप्नोति। आ एवं किल मन्यसे। नो अत्र स्थातव्यम्। अ अपेहि। इ इन्द्रं पश्य। उ उत्तिष्ठ।

भाषार्थ–आकार निपात तथा ओकार निपात और एक स्वर निपात सन्धिको नहीं प्राप्त होता है भाव यह है कि, वाक्य और स्मरण (१) अर्थके विषे जो निपात हुआ आ अक्षर है वह सन्धिको नहीं प्राप्त होता है जैसे (आ एवं किल मन्यसे) इस प्रयोगमें वाक्यार्थ जो आ निपात है उससे परे एवं शब्दका एकार विद्यमान है इन दोनोंके विषे (एऐऐ) इस सूत्रकर सन्धि नहीं हुई और 'आहो अहो उताहो नो हो हंहो अथो भो' इत्यादिक निपात शब्दोंमें जो ओकार है वहभी सन्धिको नहीं प्राप्त होय जैसे (नो अत्र स्थातव्यम्) इस प्रयोगके विषे जो नो शब्द है उसमें जो ओकार है उससे परे अत्र शब्दमें अकार विद्यमान है इन दोनोंके विषे (एदोतोतः) इस सूत्रकर सन्धि नहीं हुई। और एक स्वर सन्धिको नहीं प्राप्त होय इसका तात्पर्य यह है कि, निपातरूप जो अकार इकार उकार हैं उन्होंके मध्यमें जो कोई आदिमें होय और तैसाही स्वर अगाडी होय तो सन्धिको नहीं प्राप्त होता है जैसे (अ अपेहि) (इ इन्द्रं पश्य) (उ उत्तिष्ठ) इत्यादिकमें सवर्णे दीर्घः सह) इस सूत्रकर सन्धि नहीं हुई ॥

---

(१) "ईषदर्थे क्रियायोगे मर्यादाभिविधौ च यः। एतमातं ङितं विद्याद्वाक्यस्मरणयोरङित्।" (भाषार्थ) ईषदर्थमें और क्रियायोगमें और मर्यादा सीमा तथा अभिविधि अभिव्याप्ति इन अर्थोंके विषे आ यह अक्षर निपातहै उसको ङित् जाने और वाक्य तथा स्मरणअर्थके विषे जो आ यह अक्षर निपातहै उसको अङित् जाने जो कि, अङित् आ यह अक्षर निपातहै वह सन्धिको नहीं प्राप्त होताहै और ङित् आ यह अक्षर निपात ईषदर्थ तथा क्रियायोग तथा सीमा और अभिव्याप्ति अर्थमें है वह सन्धिको प्राप्त होताहै जैसे। ईषदर्थ में आ उत्तमः। ओत्तमः। क्रिया योगमें। आ ईक्षसे। एक्षसे। और सीमा अर्थमें। आ अमृतात्। आमृतात् और अभिव्याप्ति अर्थमें। आ इन्द्रतः। ऐन्द्रतः।

हेहयौ ।

भाषार्थ-है निपात और हे निपात सन्धिको नहीं प्राप्त होते हैं जैसे । हे अम्ब । हे ईश ॥

प्लुतः । (१)

प्लुतः। एकपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) प्लुतः सन्धिं न प्राप्नोति। देवदत्त एहि।

भाषार्थ-प्लुत सन्धिको प्राप्त नहीं होता है जैसे (भो देवदत्त एहि) इसमें (एऐऐ) इस सूत्रकर सन्धि नहीं हुई ॥

दूरादाह्वाने टेः प्लुतः ।

दूरात्-आह्वाने-टेः-प्लुतः । चतुष्पदमिदं सूत्रम् । वृत्तिः । दूरादाह्वाने गाने रोदने विचारे च टेः प्लुतो भवति ।

भाषार्थ-दूरसे बुलानेमें गानेमें रोनेमें विचारमें टि की प्लुतसंज्ञा होवै है, प्लुतभेद उच्चारणमात्र ही होता है न कि लिखनरूप ॥

॥ इति प्रकृतिभावः ॥

अथ व्यञ्जनकार्यमुच्यते ।

भाषार्थ-प्रकृतिभाव कहनेके अनन्तर व्यञ्जनकार्य कहाजाता है ॥

चपा अबे जबाः ।

चपाः-अबे-जबाः । त्रिपदमिदं सूत्रम् । वृत्तिः । पदान्ते वर्त्तमानाश्चपा जबा भवन्त्यबे परे। षट् अत्र । षडत्र । अच् अन्तम् । अजन्तम् । तत् एतत् । तदेतत् । ककुप् ऐन्द्री । ककुबैन्द्री । वाक् यथा । वाग्यथा ।

भाषार्थ-पदान्तके विषे वर्त्तमान जो चप ते जब होयँ अब प्रत्याहार परे संते भाव यह है कि, पदान्तके विषे स्थित जो चटतकप यह व्यञ्जन ते क्रमसे जडदगब यह होयँ जो अब प्रत्याहार परे होवै तो जैसे (षट् अत्र) इस प्रयोगमें जो कि, षट् शब्दमें टकार है वह पदान्तके विषे वर्त्तमान है इससे परे अत्र शब्दका अकार

---

(१) प्लुतोनितौ । प्लुतः-अनितौ । द्विपदमिदं सूत्रम् । कोई आचार्य ऐसा सूत्र पढतेहैं । भाव यहहै कि, प्लुत सन्धिको नहीं प्राप्त होताहै परन्तु इति शब्द परे संते सन्धिको प्राप्त होताहै जैसे हा तात इति । इस प्रयोगमें (अइए) इस सूत्रकर सन्धि होनेसे (हा तातेति) ऐसा हुआ । इति ॥

अव प्रत्याहार सम्बन्धी विद्यमान है इसकारण टकारके स्थानमें डकार होगया तब सिद्ध हुआ (षडत्र) और (अच् अन्तम्) इस प्रयोगमें जो कि अच् शब्दमें चकार है वह पदान्तके विषे वर्त्तमान है इससे परे अन्त शब्दमें अकार अव प्रत्याहार सम्बन्धी विद्यमान है इसकारण यथासंख्यकर चकारके स्थानमें जकार होगया तब सिद्ध हुआ (अजन्तम्) इसी प्रकार (तत् एतत्) उसका हुआ (तदेतत्) और (ककुप् ऐन्द्री) तिसका भया (ककुवैन्द्री) और (वाकुयथा) तिसका भया (वाग्यथा) ॥ (१)

ञमे ञमा वा।

ञमे ञमाः-वा । त्रिपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) पदान्ते वर्त्तमानाश्चपा ञमे परे ञमा वा भवन्ति । वाक् मात्रम् । वाङ्मात्रम् । वाग्मात्रम् । षट् मम । षण्मम । षड्मम ।

भाषार्थ–पदान्तके विषे वर्त्तमान चप ञम प्रत्याहार परे संते ञम होयँ विकल्प करके । भाव यह है कि, पदान्तके विषे वर्त्तमान जो चटतकप यह व्यञ्जन ते ञम प्रत्याहार परे संते ञणनङम वा जडदगव यह होय जैसे (वाक् मात्रम्) इस प्रयोगमें जो वाक् शब्दमें ककारहै वह पदान्तके विषे वर्त्तमानहै और उससे परे मात्र शब्दका मकार ञम प्रत्याहार सम्बन्धी विद्यमान है इसकारण चपोंकी यथासंख्याकर ञम करनेसे ककारके स्थानमें ङकार हुआ तब सिद्ध भया (वाङ्मात्रम्) और जहाँ चपोंको ञम प्रत्याहार परे संते वाके ग्रहणसे ञम नहीं हुए तहाँ (चपा अबे जबाः) इस सूत्रकर (वाक मात्रम्) इस प्रयोगमें ककारके स्थानमें गकार हुआ तब सिद्ध हुआ (वाग्मात्रम्) इसी प्रकार (षट् मम) तिसका हुआ (षण्मम) और (षड्मम) ॥ (२)

चपाच्छश्शः।

चपात्-छः-शः । त्रिपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) चपादुत्तरस्य शकारस्य छो वा भवति । वाक्शूरः वाक्छूरः । वाक्शूरः ।

---

(१) कहीं चपोंको पदान्तके विनाही जब होजाते हैं जैसे (सद्गुरुर्मवदीयः) और तिस प्रकार कहीं होतेभी नहीं हैं जैसे (मरुत्वान्) (तडित्वान्) इत्यादिकके विषे तकारको दकार नहीं हुआ अथवा जिसमें कि, समास नहीं होताहै उसमें साक्षात् पदान्तके विषेही चटतकप इन व्यंजनोंके स्थानमें अब प्रत्याहार परे संते जडदगब यथाक्रमसे होते हैं और समासादिके विषे अन्तर्वर्तिनी विभक्तिको आश्रयकर पदान्त होनेसे चपोंको जब अब प्रत्याहार परे संते होजातेहैं । इति॥

(२) मयटि प्रत्यये परे तु नित्यमेव यमाः स्युः । (भाषार्थ) मयट् प्रत्यय परे हुए संते नित्यही पदान्तके विषे वर्त्तमान हुए चटतकप इन व्यञ्जनोंके स्थानमें ञणनङम यह क्रमसे होते हैं जैसे । अप् मयः । अम्मयः । चित् मयः । चिन्मयः । वाक् मयः । वाङ्मयः ॥

भाषार्थ-चप प्रत्याहारसे उत्तर जो शकार तिसको छकार होय विकल्प करके भाव यहहै कि, चटतकप इन व्यञ्जनोंसे अगाड़ी यदि शकार होवे तो विकल्प करके उस शकारके स्थानमें छकार होय जैसे (वाक् शूरः) इस प्रयोगमें जो कि, वाक् शब्दके विषे चप प्रत्याहारसम्बन्धी ककार है उससे परे शूरशब्दके शकारको विकल्पकरके छकार करनेसे सिद्ध हुआ (वाक्छूरः)और जहाँ शकारको छकार नहीं हुआ तहाँ (वाक्शूरः) ऐसाही रहा ॥

हो झभाः ।

हः-झभाः । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) चपादुत्तरस्य हकारस्य झभा वा भवन्ति । यद्वर्गगश्चपस्तद्वर्गगश्चतुर्थोभवति । वाक्हरिः । वाग्घरिः वाग्हरिः। तत् हविः तद्धविः तद्हविः ।

भाषार्थ-चप प्रत्याहारसे उत्तर जो हकार तिसको विकल्प करके झभ होयँ भाव यहहै कि, चटतकप इन व्यञ्जनोंसे परे जो हकार तिसके स्थानमें झढधघभ यह व्यञ्जन होंय विकल्पकरके यदि कहो कि, एक हकारके स्थानमें पांच झभ कैसे हो सक्ते हैं तहाँ कहतेहैं कि, जिस वर्गका सम्बन्धी चप हकारसे पूर्व होवे उस वर्गका चतुर्थ अक्षर हकारके स्थानमें होय अर्थात् ककारसे परे हकार होवै तो हकारके स्थानमें घकार और चकारसे परे हकार होवे तो हकारके स्थानमें झकार और टकारसे परे होवै तो हकारके स्थानमें ढकार और तकारसे परे होवे तौ हकारके स्थानमें धकार और पकारसे परे होवे तो हकारके स्थानमें भकार होय जैसे (वाक् हरिः) इस प्रयोगमें चप् प्रत्याहारसम्बन्धी ककारसे परे हकारहै इसकारण कवर्गका चतुर्थ अक्षर घकार हकारके स्थानमें हुआ तब सिद्ध भया (वाग्घरिः) और जहाँ हकारके स्थानमें घकार नहीं हुआ तहाँ (चपा अबे जबाः) इस सूत्रकर सिद्धहुआ (वाग्हरिः) इसी प्रकार (तत् हविः) तिसका सिद्ध हुआ (तद्धविः) तद्हविः ॥ (१)

स्तोः श्चुभिः श्चुः ।

स्तोः-श्चुभिः-श्चुः । त्रिपदमिदं सूत्रम्(वृत्तिः) स्तोः सकारस्य तवर्गस्य शकारेण चवर्गेण च योगे शकारचवर्गौ यथासंख्येन भवतः । कस् चरति

---

(१) वृत्तिमें वाके ग्रहणका दूसरा यहभी प्रयोजनहै कि, कहीं चप प्रत्याहारसे अनुत्तरभी हकारको झभ होतेहैं जैसे (समिध् होमः) तिसका भया (समिध् घोमः) फिर (झबे जबाः) इस सूत्रकर सिद्ध हुआ.(समिद्घोमः) ॥

कश्चरति । कस्शूरः । कश्शूरः । तत् चित्रम् । तच्चित्रम् । तत् शास्त्रम् । तच्छास्त्रम् ।

भाषार्थ-सकार तथा तवर्गको शकार तथा चवर्गकर योग हुए सन्ते शकार चवर्ग यथाक्रमसे होयँ । भाव यह है कि, सकारसे पूर्व अथवा अगाड़ी शकार वा चवर्गका योग होवे तो सकारके स्थानमें शकार होय और तवर्गसे पूर्व अथवा अगाड़ी शकार वा चवर्गका योग होवे तो तवर्गके स्थानमें क्रमसे चवर्ग होय जैसे (कस्चरति) इस प्रयोगमें जो कि, सकार है उसके अगाड़ी चवर्गका योग है इस कारण सकारके स्थानमें शकार होगया तब सिद्ध हुआ (कश्चरति) और (कस्शूरः) इस प्रयोगमें जो कि, सकारहै उसके अगाड़ी शकारका योगहै इस कारण सकारके स्थानमें शकार होगया तब सिद्ध हुआ (कश्शूरः) और (तत् चित्रम्) इस प्रयोगमें जो कि, तकार है उसके अगाड़ी चवर्गका योगहै इस कारण तकारके स्थानमें चवर्गसम्बन्धी चकार हुआ क्योंकि तवर्गमें तकार प्रथम हैं और चवर्गका प्रथम अक्षर चकारहै तब सिद्ध हुआ (तच्चित्रम्) और (तत् शास्त्रम्) इस प्रयोगमें जो कि, तकारहै उसके अगाड़ी शकारका योगहै इस कारण तकारके स्थानमें चवर्गसम्बन्धी चकार हुआ तब भया (तच्शास्त्रम्) फिर (चपाच्छःशः) इस सूत्रकर सिद्ध भया (तच्छास्त्रम्, तच्शास्त्रम्) ॥

न शात् ।

अ०

न-शात् । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) शकारादुत्तरस्य तवर्गस्य चुत्वं न भवति । विश्नः । प्रश्नः ।

भाषार्थ-शकारसे उत्तर जो तवर्ग तिसको चवर्ग नहीं होय भाव यहहै कि, शकारसे अगाडी जो तवर्ग होवे तो उस तवर्गको चवर्ग नहीं होताहै जैसे (विश्नः) (प्रश्नः) इन प्रयोगोमें शकारसे परे तवर्गसम्बन्धी नकारहै इसको (स्तोः श्चुभिः श्चुः) इस सूत्रकर चवर्ग नहीं हुआ अर्थात् नकारके स्थानमें ञकार नहीं हुआ ॥

ष्टुभिः ष्टुः ।

ष्टुभिः-ष्टुः । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) स्तोः सकारतवर्गयोः षकार-टवर्गाभ्यां योगे ष्टुर्भवति । कस् षष्ठः । कष्षष्ठः । कस् टीकते । कष्टीकते । तत् टीकते । तट्टीकते ।

भाषार्थ-सकार तवर्गको षकार टवर्गका योग हुए संते षकार टवर्ग यथाक्रमसे होयँ भाव यहहै कि, षकारसे पूर्व वा अगाडी षकार टवर्गका योग होवे तो

सकारके स्थानमें षकार होताहै और तवर्गसे पूर्व वा अगाडी षकार टवर्गका योग होवै तो तवर्गके स्थानमें टवर्ग यथाक्रमसे होताहै जैसे (कस् षष्ठः) इस प्रयोगमें जो कि, सकार है उससे अगाडी षकारका योगहै इस कारण सकारके स्थानमें षकार होगया तब सिद्ध हुआ (कष्षष्ठः) और (कस् टीकते) इस प्रयोगमें जो कि, सकारहै उससे परे टवर्गसम्बन्धी टकारहै इस कारण सकारके स्थानमें षकार होगया तव सिद्धहुआ (कष्टीकते) और (तत् टीकते) इस प्रयोगमें जो कि, तकारहै उससे परे टवर्गसम्बन्धी टकारहै इस कारण तकारके स्थानमें टकार किया क्योंकि, तवर्गमें प्रथम तकारहै और टवर्गमें प्रथम टकार है तब सिद्ध हुआ (तट्टीकते) ॥

तोर्लि लः ।

६ १ ७ १ १ १

तोः—लि—लः । त्रिपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) तवर्गस्य लकारे परे लकारो भवति । तत् लुनाति । तनाल्लुति । भवान् लिखति । भवाँल्लिखति ।

अन्तस्था द्विप्रभेदाः ।

अन्तस्थाः—द्विप्रभेदाः । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) रेफवर्ज्जिता यवलाः सानुनासिका निरनुनासिकाश्च तत्र सानुनासिक एव लकारो नकारस्य भवति।

भाषार्थ—तवर्गको लकार परे संते लकार होय भाव यह है कि, यदि: तथदधन इन व्यंजनोंसे परे लकार होवै तो तथदधन इन व्यंजनोंके स्थानमें लकार होय जैसे (तत् लुनाति) इस प्रयोगमें तकारसे परे लकार है इसकारण तकारके स्थानमें लकार करनेसे सिद्ध हुआ (तल्लुनाति) और (भवान् लिखति) इस प्रयोगमें नकारसे परे लकार है इसकारण नकारके स्थानमें सानुनासिक लकार किया कारण यह है कि, रकारसे वर्जित अर्थात् रकार विना अन्तस्थ संज्ञक जो यवल ते दो प्रकारके होते हैं एक तो सानुनासिक और दूसरे निरनुनासिक । तहाँ तथदध इन स्थानोंमें तो निरनुनासिकही लकार होता है और नकारको सानुनासिक होनेसे लकारभी सानुनासिक होताहै । तब (भवाँल्लिखति) ऐसा सिद्ध हुआ ॥

न षि ।

अ० ७ १

न—षि । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) षकारे परे तवर्गस्य टुत्वं न भवति । भवान् षष्ठः ।

भाषार्थ—षकार परे संते तवर्गको टवर्ग नहीं होय । भाव यह है कि, जिस तवर्गसे षकार परे होवे तो तवर्गके स्थानमें (ष्टुभिः ष्टुः) इस सूत्रकर टवर्ग नहीं होवै

जैसे (भवान् षष्ठः) इस प्रयोगमें तवर्गसम्बन्धी नकारसे परे षकार है इसकारण नकारके स्थानमें णकार नहीं हुआ ॥

टोरन्त्यात् ।

टोः-अन्त्यात् । द्विपदमिदं सूत्रम् । वृत्तिः । पदान्ते वर्त्तमानाट्टवर्गात्परस्य स्तोः ष्टुर्न भवति । षट् नरः । षड्नरः । षण्णरः । षट् सीदन्ति ।

भाषार्थ-पदान्तके विषे वर्त्तमान जो टवर्ग उससे परे जो सकार तवर्ग तिनके स्थानमें षकार टवर्ग नहीं होवैं । भाव यह है कि, पदान्तके विषे स्थित जो टवर्ग उससे परे जो सकार तवर्ग तिसमें सकारके स्थानमें (ष्टुभिः ष्टुः) इस सूत्रकर षकार नहीं होवै और तवर्गके स्थानमें टवर्ग नहीं होवै जैसे (षड्नरः) इस प्रयोगमें पदान्तके विषे टवर्ग सम्बन्धी टकारसे परे तवर्गसम्बन्धी नकार है इसकारण नकारके स्थानमें (ष्टुभिः ष्टुः) इस सूत्रकर णकार नहीं हुआ किन्तु (चपा अबे जबाः) इस सूत्रकर टकारके स्थानमें डकार करनेसे सिद्ध हुआ (षड्नरः) और (ञमे ञमा वा) इस सूत्रकर सिद्ध हुआ (षण्नरः) और (षट् सीदन्ति) इस प्रयोगमें जो कि टवर्गसम्बन्धी टकार है उससे परे सकार है इसकारण सकारके स्थानमें षकार नहीं हुआ ॥ (१)

नः सक् छते ।

नः-सक्-छते । त्रिपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) नान्तस्य पदस्य छते परे सगागमो भवति । टित्किताबाद्यन्तयोर्वक्तव्यौ । राजन् चित्रम् (राजँश्चित्रम्) भवान् तनोति । भवाँस्तनोति ।

भाषार्थ-नकार है अन्तमें जिसके ऐसे पदको छत प्रत्याहार पर हुए संते सकका आगम होय । भाव यह है कि, जिस पदके अन्तमें नकार होवै उससे यदि छठथ चटत यह वर्ण परे होयँ तो उस नकरान्त पदको सक्का आगम होय टकार है इत्संज्ञक जिसका और ककार है इत्संज्ञक जिसका ऐसे जो आगम हैं वह आदि और अन्तमें क्रमसे कहने योग्य हैं भाव यह है कि, जिस आगमका टकार इत्संज्ञक होय तो वह आगम पदके आदिमें होता है और जिस आगमका ककार इत्संज्ञक होय तो वह आगम पदके अन्तमें होताहै जैसे (राजन् चित्रम्) इस

(१) पदान्ते वर्त्तमानट्टवर्गात्परयोः सकारतवर्गयोः षकारटवर्गौ न भवतः (परम्-नाम् नवति-नगरी-वर्ज्जम्) (भाषार्थ) पदान्तके विषे वर्तमान टवर्गसे परे सकार तवर्गके स्थानमें षकार टवर्ग न होयँ । परन्तु नाम् नवति नगरी शब्दको वर्जिकरके । भाव यह है कि, टवर्गसे परे यदि नाम् नवति नगरी शब्द होवैं तौ इन शब्दों की, आदिके नकारको टवर्गसंबन्धी णकार होजावै-इति ॥

प्रयोगमें राजन् शब्द नकारान्त है और इस राजन् शब्दसे परे छत प्रत्याहारसम्बन्धी चकार है इसकारण राजन् शब्दको सक्का आगम हुआ अब इस आगमका ककार इत्संज्ञकहै और अकार उच्चारणार्थ है इस लिये यह आगम राजन् शब्दके अन्तमें हुआ। तब रूप भया (राजन् स चित्रम्) फिर (स्तोः श्चुभिः श्चुः) इस सूत्रकर सकारके स्थानमें शकार करनेसे (राजन् श् चित्रम्) रूप हुआ फिर।

यदागमास्तद्गुणीभूतास्तद्ग्रहणेनैवगृह्यन्ते ।

भाषार्थ-जिन शब्दोंको जो आगम हुये हैं वह आगम उन्ही शब्दोंके गुणीभूत होतेहैं और उन्हीं शब्दोंके ग्रहण करनेके साथ ही आगम ग्रहण कियेजाते हैं इस परिभाषासे आगमान्त पद मानकर अर्थात् राजन् स् यहाँतक पद मान कर (नश्चापदान्तेझसे) इस सूत्रकर नकारको अनुस्वार करनेसे सिद्ध हुआ (राजंश्चित्रम्) इसी प्रकार (भवान् तनोति) तिसका भया (भवाँस्तनोति) ॥

शे चग्वा ।

शे-चक्-वा । त्रिपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) नान्तस्य पदस्य शे परे वा चगागमो भवति । भवान् शूरः । भवाञ्छूरः । भवाञ्च्शूरः । भवाञ्शूरः ।

भाषार्थ-नकार है अन्तमें जिसके ऐसे पदको शकार पर हुए संते विकल्प करके चक् का आगम होय भाव यह है कि, जिस पदके अन्तमें नकार होवै और उस पदसे यदि शकार परे होय तो उस पदको चक् का आगम होता है जैसे (भवान् शूरः) इस प्रयोगमें नकारान्त पद भवान् है उससे परे शूर शब्दमें शकार विद्यमान है इस कारण चक् का आगम करनेसे रूप भया (भवान् च् शूरः) फिर (स्तोः श्चुभिः श्चुः) इस सूत्रकर सिद्ध हुआ (भवाञ् च् शूरः) फिर (चपाच्छः शः) इस सूत्रकर सिद्ध भया (भवाञ्छूरः) (भवाञ्च्शूरः) और चक् का आगम नहीं हुआ तहाँ (स्तोः श्चुभिः श्चुः) इस सूत्रकर रूप सिद्ध हुआ (भवाञ्शूरः) ॥

ङ्णो ह्रस्वाद्द्विः स्वरे ।

ङ्णः-ह्रस्वात्-द्विः-स्वरे । चतुष्पदमिदं सूत्रम् । ङकारणकारनकारा ह्रस्वादुत्तरा द्विर्भवन्ति स्वरे परे । प्रत्यङ् इदम् । प्रत्यङ्ङिदम् । सुगण् इह । सुगण्णिह । राजन् इह । राजन्निह ।

भाषार्थ-ह्रस्वसे उत्तर जो ङकार णकार नकार ते दो रूप होवैं स्वर परे संते पदान्तमें। भाव यह है कि, जिस ह्रस्व स्वरसे परे ङकार अथवा णकार वा नकार होवै और उस ङकार अथवा णकार वा नकारसे परे स्वर होवे तो उस ङकार वा

णकार वा नकारके दो रूप होवैं पदान्तमें जैसे (प्रत्यङ् इदम्) इस प्रयोगमें ह्रस्व अकारसे परे पदान्तमें ङकार है फिर इस ङकारसे परे इदम् शब्दमें इकार स्वर है इस कारण ङकारके दो रूप हुए तब सिद्ध हुआ रूप (प्रत्यङ्ङिदम्) इसी प्रकार (सुगुण् इह) तिसका भया (सुगण्णिह) और (राजन् इह) तिसका भया (राजन्निह) ॥

छः ।

छः । एकपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) ह्रस्वादुत्तरश्छकारो द्विर्भवति ।

भाषार्थ–ह्रस्व स्वरसे उत्तर जो छकार सो दो रूप होवैं भाव यह है कि, ह्रस्व स्वरसे परे जो छकार होवै उसके स्थानमें दो छकार होवैं । जैसे (तव छत्रम्) इस प्रयोगमें ह्रस्व अकारसे परे छत्र शब्दमें छकार है इस कारण छकारके स्थानमें दो छकार करनेसे रूप हुआ (तव छ् छत्रम्) फिर (खसे चपा झसानाम्) इस सूत्रकर पूर्व छकारके स्थानमें चकार किया तब रूप हुआ (तव च् छत्रम्) फिर (स्वरहीनं०) इस करके रूप हुआ (तवच्छत्रम्) ॥

खसे चपा झसानाम् ।

खसे चपाः–झसानाम् । त्रिपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) झसानां खसे परे चपा भवन्ति ।

भाषार्थ–झसोंको खस प्रत्याहार परे संते चप होवैं भाव यह है कि, जिस झस प्रत्याहारसे परे खस प्रत्याहार होवैं तो उस झस प्रत्याहारके स्थानमें उस झस प्रत्याहारका सवर्ग चप प्रत्याहार होय । जैसे (तव छ् छत्रम्) इस प्रयोगमें झस प्रत्याहारसम्बन्धी छकार है फिर छकारसे खस प्रत्याहारसम्बन्धी छकार परेहै तब उस छकारके स्थानमें चप प्रत्याहारसम्बन्धी चकार हुआ क्योंकि छकारका सवर्ग चप प्रत्याहारमें चकार है तब रूप सिद्ध हुआ (तवच्छत्रम्) ॥

क्वचिद्दीर्घादपि वक्तव्यः ।

भाषार्थ–कहीं दीर्घ स्वरसे भी परे छकारको द्वित्व होताहै भाव यहहै कि, किसी प्रयोगमें दीर्घ स्वरसे परे यदि छकार होवै तो उस छकारके स्थानमें दो छकार होतेहैं जैसे 'ह्री छः' तिसका भया (ह्री छ् छः) फिर (खसेचपाझसानाम्) इस सूत्रकर सिद्ध हुआ (ह्रीच्छः) इसी प्रकार (म्लेछः) तिसका भया (म्लेच्छः) ॥

मोनुस्वारः ।

मः–अनुस्वारः । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) मकारस्यानुस्वारो भवति हसे परे पदान्ते च । तम् हसति । तंहसति । पटुम् वृथा । पटुंवृथा ।

भाषार्थ-मकारको अनुस्वार होय हसप्रत्याहार परे संते पदान्तके विषे भाव यह है कि, पदान्त होनेपर जिस मकारसे परे हसप्रत्याहार होवै तो उस मकारके स्थानमें अनुस्वार होताहै । जैसे (पटुम् वृथा) इस प्रयोगमें पटुम् इस शब्दके विषे पदान्तमें मकार विद्यमानहै और उस मकारसे परे हस प्रत्याहारसम्बन्धी वकार विद्यमानहै ॥ इसकारण मकारके स्थानमें अनुस्वार करनेसे रूप सिद्ध हुआ (पटुंवृथा) इसी प्रकार (तम् हसति) तिसका भया (तंसहति) ॥

स्वरे मः ।

स्वरे-मः। द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) अनुस्वारस्य मकारो भवति स्वरे परे ।

भाषार्थ-अनुस्वारको मकार होवै स्वर परे संते जैसे(अस्माकम् इह)(अस्माकमिह)॥

नश्चापदान्ते झसे ।

नः-च-अपदान्ते-झसे । चतुष्पदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) नकारस्य मकारस्य चापदान्ते वर्त्तमानस्यानुस्वारो भवति झसे परे । यशान् सि । यशांसि । पुम् भ्याम् । पुंभ्याम् ।

भाषार्थ-अपदान्तके विषे वर्तमान जो नकार और मकार तिनको अनुस्वार होवै झस प्रत्याहार परे संते । भाव यहहै कि, अपदान्तके विषे स्थित जो नकार वा मकार उससे परे जो झस प्रत्याहार होवै तो उस नकार वा मकारके स्थानमें अनुस्वार होय। जैसे (यशान् सि) इस प्रयोगमें अपदान्तके विषे नकारहै और उससे परे झस प्रत्याहारसम्बन्धी सकारहै इस कारण नकारके स्थानमें अनुस्वार होनेसे रूप सिद्ध हुआ (यशांसि) इसी प्रकार (पुम् भ्याम्) इस प्रयोगमें अपदान्तके विषे मकारहै आर उससे परे झस प्रत्याहार सम्बन्धी भकारहै इसकारण मकारके स्थानमें अनुस्वार करनेसे (पुंभ्याम्) रूप हुआ ॥

यमा यपेस्य वा ।

यमाः-यपे-अस्य-वा । चतुष्पदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) अनुस्वारस्य यमा वा भवन्ति यपे परे । अस्य यपस्य सवर्णाः । तं करोति । तङ्करोति । तं तनोति । तन्तनोति । सं यन्ता । सय्यँन्ता । यं लोकम् । यँल्लोकम् । सं वत्सरः । सव्वँत्सरः । यवलपरे तु सानुनासिका एव यवला भवन्ति ।

भाषार्थ-अनुस्वारको यम होय विकल्पकरके यप प्रत्याहार परे सते । भाव यहहै कि, जिस अनुस्वारसे परे यप प्रत्याहार होवै तो उस अनुस्वारके स्थानमें यम

प्रत्याहार होवै यदि कहो कि, अनुस्वार तो एकही है और यम प्रत्याहारमें बहुत वर्ण हैं कौनसा होना चाहिये तहाँ कहते हैं कि, उस यपके सवर्ण यम होवै भाव यहहै कि, अनुस्वारसे जो कि, यप प्रत्याहार परेहै उस यप प्रत्याहारका सवर्ण अक्षर यम प्रत्याहारोंमेंसे अनुस्वारके स्थानमें होवै जैसे (तं करोति) इस प्रयोगमें अनुस्वारसे परे यप प्रत्याहारसम्बन्धी ककारहै तब देखा कि, यम प्रत्याहारमें ककारका सवर्ण अक्षर कौनहै तो ङकार हुआ क्योंकि ङकार ककारका सवर्ण है तब रूप सिद्ध भया (तङ्करोति) इसी प्रकार (तंतनोति) तिसका भया (तन्तनोति) और (सं यन्ता) इस प्रयोगमें अनुस्वारसे परे यप प्रत्याहारसम्बन्धी यकारहै तब देखा कि, यम प्रत्याहारमें यकारका सवर्ण कौनहै तो यकारही हुआ इसकारण अनुस्वारके स्थानमें सानुनासिक यकार किया क्यों कि यवल पर हुए संते अनुस्वारको सानुनासिकही यवल होते हैं तब रूप सिद्ध भया (सय्ँयन्ता) और इसी प्रकार (यं लोकम्) तिसका भया (यँल्लोकम्) (सं वत्सरः) तिसका भया (सव्ँवत्सरः) और जहाँ कि, अनुस्वारको यम नहीं हुए तहाँ अनुस्वारही रहा अर्थात् यथावत् जैसा रूप था वैसाही रहा ॥ (१)

ꣳ छन्दसि ।

ꣳ-छँन्दसि । द्विपदमिदं सूत्रम् । वृत्तिः। छन्दस्यनुस्वारः ꣳकारमापद्यते शषसहरेफेषु परतः । हंसः । हꣳसः । सुचींषत् । सुचीꣳषत् । वयं सोमः । वयꣳसोम । संहिता । सꣳहिता । त्वंरविः । त्वꣳरविः ।

भाषार्थ–अनुस्वार ꣳ कारको प्राप्त होवै है शषसहर यह अक्षर परहुए संते वेदमें । भाव यहहै वेदविषयमें जिस अनुस्वारसे परे शकार षकार सकार हकार रेफ परे होवै तो उस अनुस्वारके स्थानमें ꣳकार होताहै जैसे (हं सः) इस वेदके प्रयोगमें अनुस्वारसे परे सकार है इसकारण अनुस्वारके स्थानमें ꣳ कार करनेसे रूप सिद्ध भया (हꣳसः) इसी प्रकार अन्यभी जानने ॥

॥ इति व्यञ्जनसंधिः ॥

---

(१) शसे ङ्णोः–कुक्टुकौ वा । ङ्णोः–कुक्टुकौ–वा । त्रिपदमिदंसूत्रम् (वृत्तिः) ङकारणकारयोः शषसेषु परेषु क्रमेण कुक्टुकौ आगमौवास्तः। भाषार्थ–ङकार और णकारको शषस यह अक्षर परे हुए संते क्रमसे कुक् और टुक् आगम होयँ भाव यहहै कि, जिस ङकारसे परे शकार वा षकार वा सकार होवै तो उस ङकारको कुक्का आगम होय और णकारसे परे शकार वा षकार वा सकार होवै तो उस णकारको टुक्का आगम होय (जैसे प्राङ् षष्ठः) इस प्रयोगमें ङकारसे परे षकार है इस कारण ङकारको कुक्का आगम किया तो रूप हुवा (प्राङ् क् षष्ठः) फिर (कषसंयोगे क्षः) इस करके सिद्ध हुआ (प्राङ्क्षष्ठः) और (सुगण् षष्ठः) इस प्रयोगमें णकारसे परे षकारहै इस कारण णकारको टुक्का आगम किया तो रूप सिद्ध हुआ (सुगण् ट्षष्ठः) ।

अथ विसर्गसन्धिर्निगद्यते ।

भाषार्थ—व्यञ्जन कार्य कहनेकें अनन्तर विसर्गसन्धि कही जावै है ॥

विसर्जनीयस्य सः ।

विसर्जनीयस्य—सः । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) विसर्जनीयस्य सकारो भवति खसेपरे । कः तनोति । कस्तनोति ।

भाषार्थ—विसर्जनीयको खस प्रत्याहार पर हुए संते सकार होय । भाव यहहै कि, जिस विसर्गसे परे खस प्रत्याहार होवै तो विसर्गके स्थानमें सकार होय जैसे (कः तनोति) इस प्रयोगमें विसर्गसे परे खस प्रत्याहारसम्बन्धी तकारहै इसकारण विसर्गके स्थानमें सकार करनेसे रूप सिद्ध हुआ (कस्तनोति) इति ॥

शषसे वा ।

शषसे—वा । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) विसर्जनीयस्य शषसे परे शषसा वा भवन्ति । कः षंढः । कष्षंढः । कः साधुः । कस्साधुः । कः शेते । कश्शेते ।

भाषार्थ—विसर्गको श ष स यह पर भये सन्ते श ष स यह अक्षर होयँ विकल्प करके भाव यह है कि, जिस विसर्गसे परे शकार होवे तो उस विसर्गके स्थानमें शकार और जिस विसर्गसे परे षकार होवे तो उस विसर्गके स्थानमें षकार और जिस विसर्गसे परे सकार होवे तो उस विसर्गके स्थानमें सकार विकल्पकरके होताहै । जैसे (कः षंढः) इस प्रयोगमें विसर्गसे परे षकारहै इस कारण विकल्प करके विसर्गके स्थानमें षकार करनेसे रूप सिद्ध हुआ (कष्षंढः) और जहाँ विसर्गको षकार नहीं हुआ तहाँ विसर्गही रहा (कः षंढः) इसी प्रकार (कः साधुः) तिसका (कस्साधुः) (कः साधुः) (कः शेते) तिसका (कश्शेते) (कः शेते) ॥

कुप्वोः ᳵक ᳶपौ वा ।

कुप्वोः—ᳵक ᳶपौ—वा । त्रिपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) विसर्जनीयस्य कवर्गपवर्गसम्बन्धिनि खसे परे ᳵक ᳶपौ वा भवतः । कपावुच्चारणार्थौ । कः करोति । कᳵकरोति । कः पचति । कᳶपचति । कः खनति । कᳵखनति । कः फलति । कᳶफलति ।

भाषार्थ–विसर्जनीयको कवर्ग पवर्ग सम्बन्धी खस प्रत्याहार पर हुए सन्ते विकल्प करके ᳵक ᳶप होयँ इनमें ककार और पकार तो उच्चारणार्थ है। भाव यह है कि, विसर्गसे परे कवर्ग और पवर्ग सम्बन्धी खस प्रत्याहार अर्थात् खस प्रत्याहारमेंसे कवर्ग और पवर्गके क ख प फ यह अक्षर परे होवें तो विसर्गके स्थानमें ᳵक ᳶप यह होवैं विकल्प करके। इनमें जो ककार और पकार यह अक्षर हैं वह उच्चारणार्थ हैं जहाँ कि, ककार उच्चारणार्थ है तहाँ उस विसर्गके रूपको जिह्वामूलीय कहतेहैं और जहाँ पकार उच्चारणार्थ है तहाँ उस विसर्गके रूपको उपध्मानीय कहते हैं परन्तु क ख परे सन्ते जिह्वामूलीय होताहै और प फ परे सन्ते उपध्मानीय होताहै। जैसे कः करोति इस प्रयोगमें विसर्गसे परे खस प्रत्याहार सम्बन्धी कवर्गमेंसे ककार है इस कारण विसर्गके स्थानमें ᳵ जिह्वामूलीय करनेसे रूप सिद्ध हुआ (क ᳵ करोति) और जहाँ नहीं हुआ तहाँ विसर्गही रहै (कः करोति) इसी प्रकार (कः पचति) इस प्रयोगमें विसर्गसे परे खसप्रत्याहार सम्बन्धी पवर्गमेंसे पकार है इसकारण विसर्गके स्थानमें ᳶ उपध्मानीय करनेसे रूप सिद्ध हुआ (क ᳶ पचति) और जहाँ ᳶ उपध्मानीय नहीं हुआ तहाँ विसर्गही रहे (कः पचति) और इसी प्रकार (कः खनति) तिसका भया (क ᳵ खनति) (कः खनति) और (कः फलति) तिसका भया (क ᳶ फलति) (कः फलति) ॥

वाचस्पत्यादयः संज्ञाशब्दा निपातात्साधवः। वाचस्पतिः बृहस्पतिः। कारस्करः। पारस्करः। राजन् तुंदम्। राजंस्तुन्दम्। हरिः चन्द्रः। हरिश्चन्द्रः। इत्यादि।

भाषार्थ–वाचस्पति आदिक संज्ञा शब्दहैं वह निपातसेही सिद्ध हुए जानने भाव यह है कि, वाचस्पति आदिक संज्ञा शब्द हैं यह सूत्रोंके विनाही सिद्ध हुए हैं इनमें सूत्रकी प्राप्ति होनेपरभी सूत्रोक्त कार्य नहीं होताहै जैसे (वाचः पतिः) इस प्रयोगमें (कुप्वोः ᳵ क ᳶ पौ वा) इस सूत्रकी प्राप्ति होते सन्ते भी विसर्गको सकार निपातसे होगया। तब सिद्ध हुआ (वाचस्पतिः) यह संज्ञा शब्द है इसी प्रकार अन्यभी जानने ॥

तद्बृहतोः करपत्योश्चौरदेवतयोः सुट्तलोपश्च। तत् करः। तस्करः। बृहत् पतिः। बृहस्पतिः।

भाषार्थ–चौर देवता संज्ञा हुए संते तत् और बृहत् शब्दसे परे कर तथा पति शब्दको क्रमसे सुट्का आगम होय और तत् और बृहत् शब्दके तकारका लोप होय जैसे (तत् करः) इस प्रयोगमें तत्से परे कर शब्द है इसकी चौर संज्ञा

होनेसे कर शब्दको सुट्का आगम किया तो वह आगम (टितुकितावाद्यन्तयो-र्वक्तव्यौ) इस करके करके आदिमें हुआ तब रूप हुआ (तत् स् करः) फिर तत् शब्दके तकारका लोप करनेसे रूप सिद्ध हुआ (तस्करः) इसी प्रकार (बृहत् पतिः) इस प्रयोगमें बृहत् शब्दसे परे पति शब्द है इसकी देव संज्ञा होनेसे पति शब्दको सुट्का आगम किया और बृहत् शब्दके तकारका लोप किया तब रूप सिद्ध हुआ बृहस्पतिः ॥ (१)

अह्नो रो रात्रिषु ।

अह्नः । रः--अरात्रिषु--त्रिपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) अह्नो विसर्जनीयस्य पदान्ते रो भवति रात्र्यादिवर्जितेषु परतः । अहर्पतिः । अरात्रिष्विति विशेषणात् । अहोरात्रम् । अहोरथन्तरम् ।

भाषार्थ-पदान्तमें अहन्शब्दसम्बन्धी विसर्गको रकार होय रात्रि आदिक शब्दोंसे वर्जित शब्द परे संते । भाव यह है कि, अहन्शब्दके नकारके स्थानमें उत्पन्न हुआ जो विसर्ग है उस विसर्गके स्थानमें रकार होय पदान्तके विषे परन्तु रात्रिआदिक शब्द यदि उस अहन्शब्दके नकारके स्थानमें उत्पन्न हुए विसर्गसे परे होवें तो उस विसर्गके स्थानमें रकार नहीं होय । जैसे (अहः पतिः) इस प्रयोगमें अहन्शब्दके नकारके स्थानमें उत्पन्न हुआ विसर्ग विद्यमानहै इसकारण विसर्गके स्थानमें रकार करनेसे रूप सिद्ध हुआ (अहर्पतिः) रात्रि आदि शब्द वर्जित शब्दपर हुए संते इस विशेषणसे (अहः रात्रः) इस प्रयोगमें विसर्गके स्थानमें रकार नहीं हुआ किन्तु (हवे) इस सूत्रकर विसर्गके स्थानमें उकार होनेसे रूप सिद्धहुआ (अहोरात्रः) इसी प्रकार (अहः रथंतरम्) तिसका हुआ (अहोरथंतरम्) ॥

अतोत्युः ।

अतः-अति-उः । त्रिपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) अकारात्परस्य विसर्जनीयस्य उकारो भवति अति परतः । कः अर्थः । कोऽर्थः ।

भाषार्थ-अकारसे परे जो विसर्ग तिसको उकार होय अकार परे संते । भाव यह है कि, अकारसे परे जो विसर्ग और उससे परे जो अकार होवे तो उस विसर्गके स्थानमें उकार होवै जैसे (कः अर्थः) इस प्रयोगमें अकारसे परे विसर्ग है और उससे परे अकार विद्यमान है इसकारण विसर्गके स्थानमें उकार करनेसे रूप हुआ

(१) यल्लक्षणेनोपपन्नं तत्सर्वं निपातात्सिद्धम् । भाषार्थ-जो कि लक्षण सूत्रोंकर नहीं सिद्ध हुआ है वह सब निपातसे सिद्ध होताहै-इति ॥

(क उ अर्थः) फिर (उ ओ) इस सूत्रकर हुआ (को अर्थः) फिर (एदोतोतः) इस सूत्रकर सिद्ध हुआ (कोऽर्थः) ॥

हबे ।

हबे[1] । एकपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) अकारात्परस्य विसर्जनीयस्य उकारो भवति हबे परे । कः गतः । कोगतः । देवः याति । देवोयाति । मनः रथः । मनोरथः ।

भाषार्थ–अकारसे परे विसर्गको उकार होय हब प्रत्याहार परे हुए संते । भाव यह है कि, अकारसे परे जो विसर्ग और उस विसर्गसे परे यदि हब प्रत्याहार होवे तो विसर्गके स्थानमें उकार होय जैसे (कः गतः) इस प्रयोगमें अकारसे परे जो विसर्ग है उससे परे हव प्रत्याहार सम्वन्धी गकार अक्षर है इसकारण विसर्गके स्थानमें उकार करनेसे रूप हुआ (क उ गतः) फिर (उ ओ) इस सूत्रकर हुआ (कोगतः) इसी प्रकार (देवः याति) तिसका हुआ (देवोयाति) और (मनः रथः) तिसका हुआ (मनोरथः) ॥

आदबे लोपश् ।

आत्[1]–अबे[1]–लोपश्[1] । त्रिपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) अवर्णात्परस्य विसर्जनीयस्य लोपश् भवत्यबे परे । देवाः अत्र । देवाअत्र । वाताः वान्ति । वातावान्ति ।

भाषार्थ–अवर्णसे परे जो विसर्ग उसका लोपश् होय अब प्रत्याहार परे हुए संते । भाव यह है कि, अकार वा आकारसे परे विसर्ग होय और उस विसर्गसे परे यदि अव प्रत्याहार होवे तो विसर्गका लोपश् होय जैसे (देवाः अत्र) इस प्रयोगमें आकारसे परे विसर्गहै और उस विसर्गसे परे अब पत्याहार सम्वन्धी अकार है इस कारण विसर्गका लोपश् करनेसे रूप हुआ (देवाअत्र) इसीप्रकार (वाताः वान्ति) तिसका भया (वातावान्ति) ॥

स्वरे यत्वं वा ।

स्वरे[1]–यत्वम्[1]–वा[अ] । त्रिपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) अवर्णात्परस्य विसर्जनीयस्य स्वरे परे यत्वं वा भवति । देवाः अत्र देवायत्र । देवाअत्र ।

भाषार्थ–अवर्ण अर्थात् अकार और आकारसे परे विसर्गको यकार होय विकल्प करके स्वर परे संते । जैसे (देवाः अत्र) इस प्रयोगमें आकारसे परे विसर्ग है और उस विसर्गसे परे स्वर संज्ञकोंमेंसे अकार है इसकारण विसर्गको यकार करनेसे

रूप सिद्ध हुआ (देवायत्र) और जहाँ नहीं हुआ तहाँ 'आदबेलोपश्' इस सूत्रकर रूप सिद्ध हुआ (देवा अत्र) ॥

भोसः ।

भोसः । एकपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) भोस् भगोस् अघोस् इत्येतस्मात्परस्य विसर्जनीयस्य लोपश् भवत्यबेपरे । भोः एहि । भो एहि । भगोः नमस्ते । भगो नमस्ते । अघोः याहि । अघो याहि ।

भाषार्थ–भोस् और भगोस् और अघोस् इन शब्दोंसे परे विसर्गको लोपश् होय अब प्रत्याहार परे हुए संते । भाव यह है कि, भोस् भगोस्, अघोस् इन शब्दोंके विसर्गोंसे यदि अब प्रत्यहार पर होवै तो उन विसर्गोंका लोपश् होय जैसे (भोः एहि) इस प्रयोगमें जो कि, भोस् शब्दका विसर्ग है उससे परे अब प्रत्याहार सम्बन्धी एकार विद्यमान है इसकारण विसर्गका लोपश् करनेसे रूप हुआ (भो एहि) इसी प्रकार (भगोः नमस्ते) (भगो नमस्ते) (अघोः याहि) (अघोयाहि) ॥

नामिनो रः ।

नामिनः–रः । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) नामिनः परस्य विसर्जनीयस्य रेफो भवति अबेपरे । अग्निः अत्र । अग्निरत्र । पटुः यजते । पटुर्यजते ।

भाषार्थ–नामि संज्ञक स्वर अक्षरोंसे परे जो विसर्ग तिसके स्थानमें रकार होय अब प्रत्याहार पर हुए संते । भाव यह है कि, इई उऊ ऋॠ ऌॡ एऐ ओऔ इन अक्षरोंसे परे यदि विसर्ग होय और उस विसर्गसे परे यदि अब प्रत्याहार होय तो विसर्गके स्थानमें रकार होताहै जैसे (पटुः यजते) इस प्रयोगमें उकारसे परे विसर्ग है और उस विसर्गसे परे अब प्रत्याहार सम्बन्धी यकार अक्षर है इसकारण विसर्गके स्थानमें रकार करनेसे रूप सिद्ध हुआ (पटुर्यजते) इसी प्रकार (अग्निः अत्र) तिसका हुआ (अग्निरत्र) ॥

रेफप्रकृतिकस्य खपे वा ।

रेफप्रकृतिकस्य–खपे वा । त्रिपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) रेफप्रकृतिकस्य विसर्जनीयस्य रेफो वा भवति खपे परे । गीः पतिः । गीर्पतिः । गी ᳵ पतिः । गीः पतिः । धूः पतिः । धूर्पतिः । धू ᳵ पतिः । धूः पतिः ।

भाषार्थ–रकारही है प्रकृति अर्थात् मूल कारण जिसका ऐसे विसर्गको रकार होय खप प्रत्याहार पर हुए संते विकल्प करके । भाव यह है कि, जिस विसर्गका उत्पत्ति कारण रकारहो उस विसर्गसे यदि खप प्रत्याहार परे होय तो उसी विसर्गके स्थानमें रकार होय विकल्प करके जैसे (गीः पतिः) इस प्रयोगमें जो कि, विसर्ग है उसकी उत्पत्तिका कारण रकार है और उस विसर्गसे परे खप प्रत्याहार सम्बन्धी पकार विद्यमान है इसकारण विसर्गके स्थानमें रकार करनेसे रूप सिद्ध हुआ (गीर्पतिः) और जहाँ इस सूत्रमें वाके ग्रहणसे रकार नहीं हुआ तहाँ (कुप्वोः ᳲ क ᳲ पौ वा) इस सूत्रकर हुआ (गीः पतिः) (गी ᳲ पतिः) इसी प्रकार (धूः पतिः) तिसका हुआ (धूर्पतिः) । (धू ᳲ पतिः) । इति ॥

रः ।

रः[६,१] । एकपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) रेफसम्बन्धिनो विसर्जनीयस्य रेफो भवत्यबे परे । प्रातः अत्र । प्रातरत्र । अन्तः गतः । अन्तर्गतः ।

भाषार्थ–रकार सम्बन्धी विसर्गको रकार होय अब प्रत्याहार पर हुए संते।भाव यह है कि, रकारसे उत्पन्न हुए विसर्गके स्थानमें रकारही होय जो उस विसर्गसे अब प्रत्याहार परे होवे तो जैसे (प्रातः अत्र) इस प्रयोगमें जो विसर्ग है वह प्रातर् शब्दके रकारसे उत्पन्न हुआ इसकारण उस विसर्गके स्थानमें रकार किया क्योंकि विसर्गसे अब प्रत्याहार सम्बन्धी अकार परे विद्यमान है तब रूप सिद्ध हुआ (प्रातरत्र) इसीप्रकार (अन्तः गतः) तिसका सिद्ध हुआ (अन्तर्गतः) ॥

रि लोपो दीर्घश्च ।

रि[७,१]–लोपः[१,१]–दीर्घः[१,१]–च[अ०] । चतुष्पदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) रेफस्य रेफे परे लोपो भवति । पूर्वस्य च दीर्घः । पुनः रमते । पुनारमते । शुक्तिः रूप्यात्मना भाति । शुक्ती रूप्यात्मना भाति ।

भाषार्थ–रकारका रकार पर हुए संते लोप होय और पूर्वस्वरको दीर्घ होय। भाव यह है कि, जिस रकारसे परे रकार होय तो उस रकारका लोप होय और उस लोप हुए रकारसे पूर्व यदि ह्रस्व स्वर होय तो वह स्वर दीर्घ होय जैसे (पुनः रमते) इस प्रयोगमें विसर्गके स्थानमें (रः) इस सूत्रकर रकार करनेसे रूप हुआ (पुन र् रमते) फिर इस प्रयोगमें रकारसे परे रकार होनेसे रकारका लोप कर और उस लोप हुए रकारसे पूर्व अकारको दीर्घ कर रूप सिद्ध हुआ (पुनारमते) और (शुक्तिः रूप्यात्मना भाति) इस प्रयोगमें विसर्गके स्थानमें (नामिनोरः)

इस सूत्रसे रकार करनेसे रूप हुआ (शुक्ति र् रूप्यात्मना भाति) फिर (रिलोपो- दीर्घश्च) इस सूत्रकर रूप सिद्ध हुआ (शुक्ती रूप्यात्मना भाति)

सैषाद्धसे।

सैषात्-हसे। द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) स-शब्दादेष-शब्दाच्च परस्य विसर्जनीयस्य लोपश् भवति हसे परे। सः चरति। सचरति। एषः हसति। एष हसति।

भाषार्थ-स शब्द और एष शब्दसे परे जो विसर्ग उसका लोपश् होय हस प्रत्याहार पर हुए संते। भाव यह है कि, तत् शब्दसे प्रथमा विभक्तिके प्रथम वचनमें उत्पन्न हुआ जो स शब्द और एतत् शब्दसे प्रथमा विभक्तिके एकवचनमें उत्पन्न हुआ एष शब्द इनसे परे जो विसर्ग और उस विसर्गसे परे यदि हस प्रत्याहार होवे तो उसी विसर्गका लोपश् होय जैसे (सः चरति) इस प्रयोगमें तत् शब्दसे प्रथमैकवचनमें सिद्ध हुए स शब्दसे परे विसर्ग है और विसर्गसे परे हस प्रत्याहार सम्वन्धी च अक्षर विद्यमानहै इस कारण विसर्गका लोपश् करनेसे रूप सिद्ध हुआ (सचरति) और (एषः हसति) इस प्रयोगमें एतत् शब्दसे प्रथमैकवचनमें सिद्ध हुए एष शब्दसे परे विसर्गहै और विसर्गसे परे हस प्रत्याहार सम्वन्धी हकार विद्यमान है इस कारण विसर्गका लोपश् करनेसे रूप हुआ (एष हसति) ॥

सैषादितिसंहिता। सैषदाशरथीरामः सैषराजायुधिष्ठिरः।
सैषकर्णो महात्यागी सैषभीमोमहाबलः ॥ १ ॥

इत्यादौ पादपूरणे संध्यर्था ज्ञेयाः।

भाषार्थ-(सैषाद्धसे) इस सूत्रमें जो कि सैषात् ऐसी अघटमान अकार एकारकी (ए ऐ ऐ) इस सूत्रकर संधि दिखाई है वह स और एष शब्दोंकी है और (सैष दाशरथी रामः) इत्यादिकमें जो कि (सः एषः) इस प्रयोगके विषे (आदवे लोपश्) इस सूत्रकर विसर्गका लोपश् करनेपर जो कि, (ए ऐ ऐ) इस सूत्रकर सन्धि की है वह पादकी पूर्तिके लिये जाननी (अर्थ) सो यह दशरथ- पुत्र राम वर्त्तमानहै सो यह राजा युधिष्ठिर वर्त्तमान है और सो यह कर्ण महादानी वर्त्ते है और सो यह भीम महा बली वर्त्ते है ॥ १ ॥

यदुक्तं लौकिकायेह तद्वेदे बहुलं भवेत् ॥
सेमां भूम्याददे सोषामित्यादीनामदुष्टता ॥ २ ॥

भाषार्थ–जो कि, सूत्र इस शास्त्रके विषे लौकिक अर्थात् व्याकरण प्रयोगके अर्थ कहाहै वह वेदके विषे बहुल अर्थात् अन्यथा भी होजाताहै भाव यह है कि, जो सूत्र कि, इस शास्त्रमें व्याकरण प्रसिद्ध उदाहरणके साधनके लिये कहाहै वह वैदिक प्रयोगमें अनिश्चित होताहै अर्थात् किसी वैदिक प्रयोगमें वह सूत्र प्राप्त हो भी जाताहै और किसीमें नहीं भी होताहै जैसे (सः इमाम्) इस प्रयोगमें (आदवे लोपश्) इस सूत्रकर विसर्गका लोपश् करनेसे रूप हुआ (स इमाम्) फिर (लोपशि पुनर्न सन्धिः) इस करके (अ इ ए) इस सूत्रकी प्राप्ति नहीं होनी चाहिये सो वैदिक प्रयोग होनेसे होगई तव रूप हुआ (सेमाम्) और (भूमिःआददे) इसको वैदिक प्रयोग होनेसे कहीं (१) नामि संज्ञिक स्वरसे अब प्रत्याहार पर हुएसंते लोपश् होताहै। इस वचनकर विसर्गका लोपश् होनेसे रूप हुआ(भूमि आददे) फिर (इ यं स्वरे) इस सूत्रकर सान्धि होनेसे रूप सिद्ध हुआ (भूम्याददे) और इसीप्रकार (स उषाम्) तिसका भया (सोषाम्) इत्यादिक वैदिक प्रयोगोंको सूत्रानुसार न होनेका दोष नहीं है ॥ २ ॥

क्वचित्प्रवृत्तिः क्वचिदप्रवृत्तिः क्वचिद्विभाषा क्वचिदन्यदेव ।
विधेर्विधानं बहुधा समीक्ष्य चतुर्विधं बाहुलकं वदंति ॥ ३ ॥

भाषार्थ–किसी प्रयोगमें नहीं प्राप्त होने योग्य सूत्रकी प्रवृत्ति अर्थात् प्राप्ति होजातीहै और किसी प्रयोगमें प्राप्त होने योग्य सूत्रकीभी अप्रवृत्ति अर्थात् प्राप्ति नहीं होवैहै और कहीं विभाषा अर्थात विकल्पही होजाताहै और किसी प्रयोगमें अन्यथाही होजाताहै इस प्रकार विधि नाम व्याकरण सूत्रका विधान बहु प्रकार देखि बाहुलक नाम वैदिक प्रयोगको बुध चार प्रकारका कहतेहैं भाव यहहै कि, किसी प्रयोगमें तो नहीं कहे हुए सूत्रकी प्राप्ति होतीहै । जैसे (लोपशि पुनर्न सन्धिः) इस सूत्रका निषेध होनेपरभी (अ इ ए) इस सूत्रकर सन्धि प्राप्ति हुई है । और किसी प्रयोगमें कहेहुए सूत्रकीभी नहीं प्राप्ति होवैहै जैसे (भूमिः आददे) इस प्रयोगमें (नामिनो रः) इसकी प्राप्ति नहीं हुई और कहीं विकल्पताही होवैहै जैसे वेदमें (देवैः–देवेभिः । गवीशः गवेशः । हंसः ह९सः) और किसी प्रयोगमें अन्यथाही होजाताहै जैसे (भूमिः आददे) इस प्रयोगमें विसर्गलोपरूप कार्य अन्यही हुआहै तव इसप्रकार व्याकरण सूत्रका विधान बहुप्रकार देखि बुधोंने वैदिक प्रयोग चार प्रकारका कहाहै–इति ॥ ३ ॥

---

(१) (नामिनोऽलोपः) नामिनः–लोपः । द्विपदमिदं सूत्रम् । नामिनः परस्य विसर्जनीयस्य लोपो भवति क्वचिदबेपरे । भूमिः आददे बीजम् । भूम्याददे बीजम् । भाषार्थ–नामिस्वरसे परे विसर्गका लोप होय किसी प्रयोगमें अब प्रत्याहार परं हुए संते । जैसे (भूमिः आददे) इस प्रयोगमें नामि स्वर इकारसे परे जो विसर्ग तिसका लोप किया क्योंकि, अब प्रत्याहार सम्बन्धी आकार परे विद्यमान है तब रूप भया (भूमि आददे बीजम्) फिर (इ यं स्वरे) इस सूत्रकर रूप सिद्ध भया (भूम्याददे बीजम्) ।

वर्णागमो वर्णविपर्ययश्च द्वौचापरौ वर्णविकारनाशौ ।
धातोस्तदर्थातिशयेन योगस्तदुच्यते पञ्चविधं निरुक्तम् ॥ ४ ॥

भाषार्थ-एक तो वर्णका आगम और दूसरा वर्णविपर्यय अर्थात् पूर्व उच्चारण किये वर्णके स्थानमें पर वर्णका उच्चारण और पर वर्णके स्थानमें पूर्व वर्णका उच्चारण और दो अन्य एक तो वर्णोंका विकार और दूसरा वर्णोंका नाश जोकि, पूर्व अवस्थाको त्यागकर अन्य अवस्थाका साधन है वह विकार होताहै और सब प्रकारसे लोप होताहै वह नाशहै । और वर्णोंके विकार और नाश करके धातुके अतिशय अर्थात् धातुके अर्थकी अधिकतापूर्वक जो रूप होताहै वह योग नामसे पाँचवाँ भेद है तिसी कारणसे निरुक्त अर्थात् व्याकरणोदाहरण पांच प्रकारका कहाहै-इति ॥ ४ ॥

वर्णागमो गवेन्द्रादौ सिंहे वर्णविपर्ययः ।
षोडशादौ विकारः स्याद्वर्णनाशः पृषोदरे ॥ ५ ॥

भाषार्थ-गवेन्द्रादि प्रयोगोंके विषे वर्णका आगमहै और सिंह इस प्रयोगके विषे वर्णका विपर्य्ययहै और षोडशादिकके विषे वर्णका विकारहै और (पृषोदर) इस प्रयोगके विषे वर्णका नाशहै । भाव यहहै कि (गो इन्द्रः) इत्यादिक प्रयोगमें (गवादेरवर्णागमोऽक्षादौ) इस करके अवर्णका आगम हुआहै । तब (गवेन्द्रः) इत्यादि शब्द सिद्ध हुएहैं । और (हिंसः) ऐसे सिद्ध हुए प्रयोगके विषे वर्णका विपर्यय अर्थात् हकारके स्थानमें सकार और सकारके स्थानमें हकार होनेसे (सिंहः) यह प्रयोग सिद्ध हुआहै । और (षष्दश) इत्यादिक प्रयोगके विषे वर्णका विकार अर्थात् षकारके स्थानमें उकार दकारके स्थानमें डकार होनेसे सिद्ध हुआहै (षोडश) इत्यादिक शब्द और (पृषत् उदरः) इस प्रयोगमें वर्णका नाश अर्थात् तकारका लोप करनेसे सिद्ध हुआ (पृषोदरः) ॥ ५ ॥

वर्णनाशविकाराभ्यां धातोरतिशयेन यः ।
योगः स उच्यते प्राज्ञैर्मयूरभ्रमरादिषु ॥ ६ ॥

भाषार्थ-वर्णके नाश और विकार करके धातुके अर्थकी अधिकतापूर्वक जो रूप उत्पन्न होता है वह योग इस नामसे पण्डितोंने मयूर भ्रमरादिशब्दोंके विषे कहा है । जैसे (मह्यामतिशयेन रौति-मयूरः) इसमें मही शब्दके ही के स्थानमें यू हो गया है और (भ्रमन् सन् अतिशयेन रौति-भ्रमरः) इसमें नकारका लोप हो गया है ॥ ६ ॥

इति विसर्गसन्धिः ।

अथ विभक्तिर्विभाव्यते।

भाषार्थ–सन्धिप्रकरण कहनेके अनन्तर विभक्ति कही जावे है । जिस करके कि, कर्त्ता कर्म आदिक पृथक् किये जाते हैं वह विभक्ति होवे है ॥

सा द्विधा स्यादिस्त्यादिश्च।

भाषार्थ–वह विभक्ति दो प्रकारकी होवै है एक तो स्यादि अर्थात् सि औ जस् इत्यादिक और एक त्यादि अर्थात् तिप् तस् अन्ति इत्यादिक ॥

विभक्त्यंतं पदम्।

तत्र स्यादिर्विभक्तिर्नाम्नो योज्यते।

भाषार्थ–जिसके अन्तमें स्यादि अथवा त्यादि विभक्ति हो वह पद कहा जाता है। उन स्यादि और त्यादि दोनों विभक्तियोंके मध्यमें स्यादि विभक्ति नामसे अगाडी युक्त कीजातीहै और त्यादि धातुसे अगाडी युक्त कीजातीहै।

अविभक्ति नाम।

अविभक्ति--नाम। द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) विभक्तिरहितं धातुवर्जितं चार्थवच्छब्दरूपं नामोच्यते।

भाषार्थ–विभक्तिसे वर्जित धातुसे पृथक् अर्थवान् जो शब्दरूप अर्थात् अकारादि वर्णरूप सो नामसंज्ञक कहा है। भाव यह है कि, जिस अर्थवान् अकारादि वर्णरूप शब्दमें विभक्तिभी युक्त न होवै और वह अर्थवान् अकारादि वर्णरूप शब्द स्वयं धातुभी न होवै तो वह नामसंज्ञक कहा जाता है ॥

कृत्तद्धितसमासाश्च प्रातिपदिकसंज्ञका इति केचित्।

भाषार्थ–और कृत् तद्धित समासमें सिद्ध हुए शब्द नामसंज्ञक होते हैं ऐसा कोई आचार्य कहते हैं और उन्हीं आचार्योंके मतमें यह कृत् तद्धित समासमें सिद्ध हुए शब्द प्रातिपदिकसंज्ञक कहेजाते हैं। भाव यह है कि, कृत् और तद्धित तथा समास प्रकरणमें जो शब्द सिद्ध हुए हैं वहभी नामसंज्ञक होते हैं ऐसा पाणिनीयाचार्य कहते हैं उन्हींके मतमें नामको प्रातिपदिकसंज्ञक कहते हैं ॥

तस्मात्–सि औ जस्। अम् औ शस्। टा भ्यां भिस्। ङे भ्यां भ्यस्। ङसि भ्यां भ्यस्। ङस् ओस् आम्। ङि ओस् सुप्।

तस्मात्--सि औ जस्। अम् औ शस्। टा भ्यां भिस्। ङे भ्यां भ्यस्। ङसि भ्यां भ्यस्। ङस् ओस् आम्। ङि ओस् सुप्। द्विपदमिदं सूत्रम्(वृत्तिः)

तस्मान्नाम्नः पराः स्यादयः सप्त विभक्तयो भवन्ति । तत्राप्यर्थमात्रैकत्वविवक्षायां प्रथमैकवचने देव सि इति स्थिते इकार उच्चारणार्थः ।

भाषार्थ-उस नामसे परे सि आदिक सात विभक्ति होवैं हैं तहाँ सि औ जस् प्रथमा । अम् औ शस् द्वितीया । टा भ्यां भिस् तृतीया । ङे भ्यां भ्यस् चतुर्थी । ङसि भ्यां भ्यस् पंचमी । ङस् ओस् आम् षष्ठी । ङि ओस् सुप् सप्तमी । ये सात विभक्ति हैं और इनमें एक २ विभक्तिके एक वचन द्विवचन बहुवचन यह तीन २ वचन होतेहैं तिन सातों विभक्तियोंके मध्यमें जहाँ अर्थमात्र शब्दके एकके कहनेकी इच्छा कीजावै है तहाँ प्रथमाका एकवचन सि दिया जावै है तहाँ प्रथम देव शब्दहै इसके अगाडी सि विभक्ति युक्त करनेसे । देव सि । ऐसा स्थित हुआ इस सि विभक्तिमें इकार उच्चारणार्थ है तब हुआ । देव स् ॥

स्रोर्विसर्गः ।

स्रो[२]ः विसर्गः[१११] । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) सकाररेफयोर्विसर्जनीयादेशो भवत्यधातोरसे पदान्ते च(१)देवः । द्वित्वविवक्षायां औ । ओ औ औ । देवौ । बहुत्वविवक्षायां बहुवचनं जस् । जकारस्येत्संज्ञायां लोपः । प्रयोजनं च जसीति विशेषणम् । देव अस् । इति स्थिते (दीर्घविसर्गौ) देवाः ।

भाषार्थ-धातुवर्जित नाम शब्दके सकार और रकारके स्थानमें विसर्गका आदेश होय रस प्रत्याहार पर हुएसंते और पदान्तके विषे । भाव यहहै कि, जिस नाम शब्दके सकार अथवा रकारसे परे रसप्रत्याहार अथवा पदान्तही होवै तो उस सकार और रकारके स्थानमें विसर्ग हो जाते हैं । तब (देवः) यह सिद्ध हुआ । और दोके कहनेकी इच्छा जहाँ कीजावैहै तहाँ द्विवचन औ होताहै । तब हुआ । देव औ । फिर (ओ ओ औ) इस सूत्रकर सिद्ध हुआ (देवौ) और जहाँ बहुतोंके कहनेकी इच्छा कीजावै है तहाँ बहुवचनसम्बन्धी जस् होताहै इसमें जकार (जसी) इस सूत्रके विशेषणार्थ है इस कारण इत्संज्ञक होनेसे जकारका लोप होगया तब

(१) चकारात्पदान्ते धातुनाम्नोरुभयोरपि नाम्नः सकाररेफयोः रसे परे पदान्ते च विसर्गादेशः । चकारात्पदान्ते धातोरपि सकाररेफयोर्विसर्गादेशः । यथा । अचकाः । अबिभः । रसे परे धातोर्न । यथा आस्ते बिभर्ति । वृत्तिमें जो कि, चकार का ग्रहण किया है उससे पदान्तके विषे तो धातु और नाम दोनोंके सकार तथा रकारको विसर्गका आदेश होय और नामके सकार अथवा रकारको रस प्रत्याहार और पदान्त दोनोंके विषेही विसर्गका आदेश होय और केवल पदान्तके विषे धातुकेही सकार अथवा रकारको विसर्ग आदेश होय जैसे । (अचकास्) तिसका हुआ (अचकाः) (अबिभर्) तिसका हुआ (अबिभः) और रस प्रत्याहार पर हुए संते धातुके सकार और रकारको विसर्ग नहीं होय जैसे । आस्ते, बिभर्ति, इत्यादिकोंमें नहीं हुआ-इत्यलम् ।

हुआ (देव अस्) फिर (सवर्णे दीर्घस्सह) इस सूत्र और (स्रोर्विसर्गः) इस सूत्रकर सिद्ध हुआ (देवाः)

अकाराज्जसोऽसुक् क्वचिद्वक्तव्यः । देवासः । ब्राह्मणासः । द्वितीयैकवचने । देव अम् इति स्थिते ।

भाषार्थ–अकारसे परे जो जस् तिसको कहीं प्रयोगान्तरमें वेदके विषे असुक् आगम होताहै जैसे (देव जस्) इसमें जकारकी इत्संज्ञा होनेसे लोप होगया तब हुआ (देव अस्) फिर असुक्का आगम किया तो (टितिकतावाद्यन्तयोर्वक्तव्यौ) इसकर हुआ (देव अस् अस्) फिर (सवर्णे दीर्घः सह)। (स्वरहीनं परेण संयोज्यम्) (स्रोर्विसर्गः) इन सूत्रोंकर सिद्ध हुआ (देवासः) (ब्राह्मणासः) यहभी इसी प्रकार सिद्ध हुआहै और द्वितीया विभक्तिके विषे (देव अम्) ऐसा स्थितहै ॥

अम्शसोरस्य ।

अम्शसो:--अस्य । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) समानादुत्तरयोरम्शसोरकारस्य लोपो भवति अधातोः । देवम् । देवौ । बहुवचने । देव शस् इति स्थिते । शकारः शसीति विशेषणार्थः ।

भाषार्थ–अधातु अर्थात् क्विप् आदिक प्रत्यय नहीं हैं अन्तमें जिसके ऐसे शब्दके समान संज्ञक वर्णसे परे जो अम् शस्का अकार तिसका लोप होवै । भाव यहहै कि, जिस शब्दके अन्तमें क्विप् आदिक प्रत्यय होवैहैं वह धातु इस नामसे बोला जाताहै और जिसके क्विप् आदिक प्रत्यय अन्तमें नहीं होते हैं वह अधातु इस नामसे बोला जाताहै जो अधातु शब्दोंके समान अआ इई उऊ ऋॠ ऌॡ इन अक्षरोंसे परे यदि अम् शस् द्वितीया विभक्तिके एक वचन बहु वचन आवैं तो अम् शस्के अकारका लोप होजाताहै । जैसे (देव अम्) इस प्रयोगमें देव शब्दके समानसंज्ञक अकारसे परे अम् है इसकारण अकारका लोप करनेसे सिद्ध हुआ (देवम्) और द्वितीयाके द्विवचनमें (देवौ) ऐसा प्रथमाके द्विवचनके समान सिद्ध हुआ और द्वितीयाके बहु वचनके विषे (देव शस्) ऐसा स्थितहै इसमें शकार (शसि) इस सूत्रके विशेषणार्थ होनेसे लोप होगया तब हुआ (देव अस्) फिर (अम् शसोरस्य) इस सूत्रकर शस्के अकारका लोप करनेसे हुआ (देव स्) ॥

सोनः पुंसः ।

सः--नः--पुंसः । त्रिपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) पुँल्लिंगात्समानादुत्तरस्य शसः सकारस्य नकारादेशो भवति ।

भाषार्थ–पुँल्लिङ्गके विषे वर्त्तमान हुए समानसंज्ञक स्वरसे अगाडी शस्‌के सकारको नकार आदेश होय भाव यहहै कि, पुँल्लिग शब्दके समानसंज्ञक वर्णसे परे यदि शस होवै तो उस शस्‌के सकारके स्थानमें नकार होय जैसे (देव स्) इसमें सकारके स्थानमें नकार करनेसे । हुआ (देव न्) ॥

शसि ।

शसि[१] । एकपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) शसि परे पूर्वस्य दीर्घो भवति । देवान् । तृतीयैकवचने देव टा इति स्थिते । टकारोऽनुबन्धष्टेनेति विशेषणार्थः ।

भाषार्थ–शस् पर हुऐ संते पूर्वको दीर्घ होताहै । भाव यहहै कि, जिस पूर्व ह्रस्वसे परे यदि शस् होवै तो उस पूर्व ह्रस्वका दीर्घ रूप होजाताहै । तब (देव न्) तिसका सिद्ध हुआ (देवान्) (१) तृतीयाके एक वचनमें (देव टा) ऐसा स्थितहै इसमें टकार (टेन) इस सूत्रके विषेषणार्थ होनेसे इत्संज्ञक होकर लोप होगया तब हुआ (देव आ) ॥

टेन ।

टा[१]-इन[१] । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) अकारात्परष्टा इन भवति । देवेन । तृतीया द्विवचने देव भ्याम् । इति स्थिते ।

भाषार्थ–अकारसे परे जो टा सो इन होय जैसे (देव आ) इसमें देव शब्दके अकारसे परे टाका आ विद्यमानहै इसकारण आके स्थानमें इन करदिया तब हुआ (देव इन) फिर (अ इ ए) इस सूत्रकर सिद्ध हुआ (देवेन) तृतीयाके द्विवचनमें (देव भ्याम्) ऐसा स्थितहै ॥

अद्भि ।

अत्[१]-भि[१] । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) अकारस्य आ भवति भकारे परे । देवाभ्याम् । देव भिस् । इति स्थिते ।

भाषार्थ–अकारके स्थानमें आकार होय भकार पर हुए संते जैसे (देव भ्याम्) इसमें देवशब्दके अकारसे परे भ्याम् का भकार विद्यमानहै इसकारण अकारके

(१) यदि कहो कि । शस्‌के अकार का तो (अम्शसोरस्य) इस सूत्रकर लोप करदिया और (सो नः पुंसः) इस सूत्रकर सकारके स्थानमें नकार करदिया फिर शस् ऐसा देव शब्दके अकारसे परे कहाँ रहा ? जो (शसि) इस सूत्रकर दीर्घ करते हो तहाँ कहते हैं कि, (यदादेशस्तद्वद्भवति न तु वर्णमात्रविधौ) अर्थ–जिसके स्थानमें जो आदेश हुआहै वह उसीके समान होताहै अर्थात् उसीके नामसे उच्चारण होताहै परन्तु वर्णमात्र विधिमें नहीं होताहै जैसे (द्यौः) इसमें वकारके स्थानमें औकार किया है इस औकारको (यदादेशस्तद्वद्भवति) इस कर वकार मानकर (हसेपः सेर्लोपः) इस सूत्रकर सिका लोप नहीं करसक्ते क्योंकि (हसेपः सेर्लोपः) इस सूत्रमें तो हसमात्रहीका विधान है ।

स्थानमें आकार करनेसे सिद्ध हुआ (देवाभ्याम्) और तृतीयाके बहु वचनमें (देव-भिस्) ऐसा स्थितहै ॥

भ्यः ।

भ्[1]--भि[1]--अः[1] । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) अकारात्परस्य भिसो भकारस्याकारादेशो भवति । (अ इ ए) देव एस् इति स्थिते (ए ऐ ऐ) वृद्धिविसर्जनीयौ ।

भाषार्थ–अकारसे परे भिस्के भकारको अकार आदेश होय । भाव यह है कि, यदि अकारसे परे भिस् होवै तो उस भिसके भकारके स्थानमें अकार होजावै । जैसे (देव भिस्) इसमें देव शब्दके अकारसे परे भिस्का भकारहै इस कारण भकारके स्थानमें अकार करनेसे हुआ (देव अ इस्) फिर (अ इ ए) इस सूत्रकर हुआ (देव एस्) फिर (ए ऐ ऐ) इस सूत्रकर हुआ (देवैस्) फिर (स्रोर्विसर्गः) इस सूत्रकर सिद्ध हुआ (देवैः) ॥

अकारस्य भिसि छन्दस्येकारो वा वक्तव्यः । देवेभिः । कर्णेभिः । चतुर्थ्येकवचने । देव ङे इति स्थिते । ङकारो ङित्कार्यार्थः सर्वत्र ।

भाषार्थ–अकारको भिस् परे हुएसंते । वेदके विषे विकल्पता कर एकार होजाता है । भाव यहहै कि, वेदके विषे अकारके स्थानमें एकार होजाताहै विकल्प करके भिस् पर होवै तो जैसे (देव भिस्) इस वैदिक उदाहरणमें देव शब्दके अकारसे परे भिस् विद्यमानहै इसकारण अकारके स्थानमें एकार करनेसे हुआ (देवे भिस्) फिर (स्रोर्विसर्गः) इसकर सिद्ध हुआ (देवेभिः) और इसीप्रकार सिद्ध हुआ (कर्णेभिः) और जहाँ नहीं हुआ अकारको एकार तहाँ (देवैः–कर्णैः) ऐसे रूप जानने । चतुर्थीके एक वचनके विषे (देव ङे) ऐसा स्थित है । ङकार सब जगह, ङित्कार्यार्थ है । तब हुआ (देव ए) ॥

ङेरक् ।

ङे[1]:--अक्[1]--द्विपदमिदंसूत्रम् (वृत्तिः) अकारात्परस्य ङे इत्येतस्य अगागमो भवति । कित्त्वादन्ते । ए अय् । दीर्घः । देवाय । देवाभ्याम् । देवभ्यस् इतिस्थिते ।

भाषार्थ–अकारसे परे जो ङे तिसको अक्का आगम होय । भाव यहहै कि, अकारसे परे यदि चतुर्थीका एक वचन ङे होवै तो उस ङे को अक्का आगम होय वह आगम ङेके अन्तमें होय क्योंकि, आगममें ककार इत्संज्ञकहै जैसे (देव ए) इसमें देव शब्दके अकारसे परे ङेके स्थानमें ए विद्यमानहै इसकारण ङेके स्थानमें विद्यमान हुए एको अक्का आगम करनेसे रूप हुआ (देव ए अ) फिर (ए अय्)

इस सूत्र कर हुआ (देव अय्) फिर (सवर्णे दीर्घः सह) इस कर सिद्ध हुआ (देवाय) फिर चतुर्थीके द्विवचनमें तृतीयाके द्विवचनके समान सिद्ध हुआ (देवाभ्याम्) और चतुर्थीके वहुवचनमें (देव भ्यस्) ऐसा स्थितहै ॥

ए स्भि बहुत्वे ।

ए'--स्भि--बहुत्वे । त्रिपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) अकारस्य एत्वं भवति सकारे भकारे च परे बहुत्वे सति । देवेभ्यः । पञ्चम्येकवचने । देव अस् । इति स्थिते ।

भाषार्थ–अकारको एकार होय सकार और भकार परे संते बहुवचन होनेपर । भाव यह है कि, बहु वचनमें यदि अकारसे परे सकार अथवा भकार होवै तो उस अकारके स्थानमें एकार होय जैसे (देव भ्यस्) इसमें देव शब्दके अकारसे परे भकार बहु वचनसम्बन्धी विद्यमान है इसकारण अकारके स्थानमें एकार करनेसे रूप हुआ (देवेभ्यस्) फिर (स्रोर्विसर्गः) इसकर सिद्ध हुआ (देवेभ्यः) और पञ्चमीके एक वचनमें (देव अस्) ऐसा स्थित है ॥

ङसिरत् ।

ङसिः–अत् । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) अकारात्परो ङसिरद्भवति । देवात् । देवाभ्याम् । देवेभ्यः । षष्ठ्येकवचने देव अस् इति स्थिते ।

भाषार्थ–अकारसे परे जो ङसि सो अत् होय । भाव यह है कि, अकारसे परे पंचमीका एक वचन ङसिका शुद्ध रूप अस् होवै तो उस ङसिके शुद्ध रूप अस्के स्थानमें अत् होजावै जैसे (देव अस्) इसमें देवशब्दके अकारसे परे ङसिका शुद्ध रूप अस् विद्यमान है इस कारण ङसिके शुद्ध रूप अस्के स्थानमें (अत्) करनेसे रूप हुआ (देव अत्) फिर (सवर्णे दीर्घः सह) इसकर सिद्ध हुआ (देवात्) और पंचमीके द्विवचनमें पूर्ववत् सिद्ध हुआ (देवाभ्याम्) और बहुवचनमें पूर्ववत् सिद्ध हुआ (देवेभ्यः) अब षष्ठीके एक वचनमें (देव अस्) ऐसा स्थित है ॥

ङस्स्य ।

ङस्–स्य । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) अकारात्परो ङस् स्यो भवति । देवस्य । षष्ठीद्विवचने देव ओस् इति स्थिते ।

भाषार्थ–अकारसे परे जो ङस् सो स्य होय। भाव यह है कि, यदि अकारसे परे षष्ठीका एक वचन ङस् का शुद्ध रूप अस् होवै तो उस ङस्के शुद्ध रूप अस्के स्थानमें स्य होता है जैसे (देव अस्) इसमें देव शब्दके अकारसे परे ङस् का शुद्ध रूप अस् विद्यमान है इसकारण अस् के स्थानमें स्य करनेसे रूप सिद्ध हुआ (देवस्य) अब षष्ठीके द्विवचनमें (देव ओस्) ऐसा स्थित है ॥

ओसि ।

ओँसि । एकपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) अकारस्य ओसि परे एत्वं भवति । अय् । देवयोः । षष्ठीबहुवचने । देव आम् इति स्थिते ।

भाषार्थ–अकारको ओस् पर हुए संते एकार होय । भाव यह है कि, जिस अकारसे परे षष्ठीका द्विवचन ओस् होवै तो उस अकारके स्थानमें एकार होवै है । जैसे (देव ओस्) इसमें देव शब्दके अकारसे परे ओस् विद्यमान है इसकारण अकारके स्थानमें एकार करनेसे रूप हुआ । देवे ओस् । फिर (ए अय्) और (स्रोर्विसर्गः) इन कर सिद्ध हुआ (देवयोः) अब षष्ठीके बहु वचनमें । देव आम् । ऐसा स्थित है ॥

नुडामः ।

नुट्ँ–आँमः । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) समानात्परस्यामो नुडागमो भवति । टित्त्वादादौ । उकार उच्चारणार्थः ।

भाषार्थ–समानसे परे जो आम् तिसको नुट्का आगम होय । भाव यह है कि, पुँल्लिगमें ह्रस्व(समान) जो अ इ उ ऋ ऌ और नित्यही स्त्रीलिंगके विषे वर्त्तमान दीर्घ समान जो आबन्त ईकारान्त संबन्धी आ ई इनसे परे यदि षष्ठीबहुवचन आम् तिसको नुट् आगम होय जैसे । देव आम् । इसमें देव शब्दके समानसंज्ञक अकारसे परे षष्ठीबहुवचन आम् विद्यमानहै इसकारण आम्को नुट् आगम किया वह नुट् आगम आम्के आदिमें हुआ क्योंकि, आगममें टकार इत्संज्ञकहै और उकार उच्चारणार्थ है तब रूप हुआ । देव न् आम् । फिर (स्वरहीनं परेण संयोज्यम्) इसकर हुआ (देव नाम्) फिर–॥

नामि ।

नाँमि[१] । एकपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) नामि परे पूर्वस्य दीर्घो भवति । देवानाम् । सप्तम्येकवचने देव ङि इति स्थिते (अ इ ए) देवे । ओसि । देवयोः । देव सुप् । इति स्थिते । ए स्मि बहुत्वे । इत्येकारः ।

भाषार्थ–नाम् पर हुए संते पूर्व ह्रस्वको दीर्घ होता है । भाव यह है कि, नुट् आगम सहित आम् जिस ह्रस्वसे परे होवै तो उसको दीर्घ होता है जैसे । देव नाम् । इसमें देव शब्दके ह्रस्व अकारसे परे नुट् आगम सहित आम् विद्यमान है इस कारण उस ह्रस्व अकारको दीर्घ करनेसे रूप सिद्ध हुआ (देवानाम्)और सप्तमीके एक वचनमें । देव ङि । ऐसा स्थित है तिसका रहा । देव इ । फिर (अ इ ए)

इसकर सिद्ध हुआ (देवे) और सप्तमीके द्विवचनके ओस्के विषे षष्ठीके द्विवचनके समान सिद्ध हुआ (देवयोः) और सप्तमीके बहुवचनके विषे । देव सु । ऐसा स्थित है (ए स्भि बहुत्वे) इसकर रूप सिद्ध हुआ । देवेसु । फिर-॥

क्लिलात्षः सः कृतस्य ।

क्लिलात्-षः-सः-कृतस्य । चतुष्पदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) कवर्गादिलाच्च प्रत्याहारदुत्तरस्य केनचित्सूत्रेण कृतस्य सकारस्य षकारादेशो भवति । देवेषु ।

भावार्थ-कवर्ग और इल प्रत्याहारसे परे किसी एक सूत्रकर कियेही हुए सकारको षकार होय। भाव यहहै कि, कवर्ग और इल प्रत्याहारसे उत्तर जो किसी सूत्रका किया हुआ सकार होवै तो उस सकारके स्थानमें षकार हो जाता है जैसे । देवेसु । इसमें इल प्रत्याहारसन्वन्धी एकारसे परे सप्तमीका बहुवचन सुप् का सूत्रकृत सकार विद्यमान है इसकारण सकारके स्थानमें षकार करनेसे रूप सिद्ध हुआ (देवेषु) (१) ।

आमन्त्रणे सिर्धिः ।

आमन्त्रणे-सिः-धिः । त्रिपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) आमन्त्रणमाभिमुखीकरणं तस्मिन्नर्थे विहितः सिर्धिसंज्ञो भवति ।

भावार्थ-आमन्त्रण जो अभिमुखीकरण तिस अर्थमें रचा हुआ जो सि है वह धि संज्ञक होवै है । भाव यह है कि, जो स्वरूपसे अपने संमुख न होवै वह संमुख जिस करके किया जाता है उसका नाम अभिमुखीकरण है उसी अर्थमें जो कि, प्रथमाका एक वचन सि है वह धि संज्ञक हो जावै है जैसे । देव स् । इसमें सि के शुद्ध रूप सकारकी धि संज्ञा है ॥

समानाद्धेर्लोपोधातोः ।

समानात्-धेः-लोपः-अधातोः । चतुष्पदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) समानादुत्तरस्य धेर्लोपो भवत्यधातोः ।

---

(१) और कवर्ग तथा इलप्रत्याहारसे परे अन्तमें स्थिर हुए स्वाभाविक सकारके स्थानमें षकार नहीं होता है जैसे (हरिस्तत्र) इत्यादिकमें नहीं होता है और नुम् तथा विसर्गके अन्तरमें भी हो जाता है जैसे (हवींषि) (हविः षु) और (क्लिलात्षः सः कृतस्य) इस सूत्रमें (सः षः) ऐसा करना योग्य था तथापि (षः सः) ऐसा जो कि विपरीत क्रमसे किया है सो कहीं विनाही कवर्ग तथा इल प्रत्याहारसे परे सकारके स्थानमें षकारके जनानेके अर्थ है जैसे (अवष्टंभः । अंबष्ठः । अभ्यषुणोत्) इत्यलम् ॥

भाषार्थ–अधातु (१) अर्थात् नहीं है क्विबादि प्रत्यय अन्तमें जिसके ऐसे ह्रस्व समानसे उत्तर जो धि तिसका लोप होय जैसे । देव स् । इसमें धि संज्ञक सकारका लोप करनेसे रूप हुआ । देव ॥

आभिमुख्याभिव्यक्तये हे-शब्दस्य प्राक् प्रयोगः। हे देव । हे देवौ । हे देवाः। एवं घटपटस्तंभकुंभादयः अकारान्ताः पुँल्लिंगाः ।

भाषार्थ–आभिमुख्य नाम संमुखता उसके प्रकट करनेके लिये हे शब्दका आदिमें प्रयोग होता है। भाव यह है कि, संमुखताही प्रकट करनेके लिये शब्दसे पूर्व हे प्रयुक्त किया जावें है जैसे (हे देव) और द्विवचनके विषे (हे देवौ) और बहुवचनके विषे (हे देवाः) इसीप्रकार घट पट स्तंभ कुंभ आदिक अकारान्त पुँल्लिङ्ग जानने योग्य हैं। भाव यह है कि, जिसप्रकार कि, अकारान्त पुँल्लिंग देव शब्द सिद्ध हुआ है तिसीप्रकार घट पट आदिक अकारान्त पुँल्लिंग शब्द सिद्ध हुए जानने चाहिये ॥

अकारान्तानामपि सर्वादीनां तु विशेषः । सर्व । विश्व । उभ । उभय । अन्य । अन्यतर । इतर । डतर । डतम । सम । सिम । त्वत् । त्व । भवतु । नेम । एक । पूर्व । पर । अवर । दक्षिण । उत्तर । अपर । अधर । स्व । अन्तर । त्यद् । तद् । यद् । इदम् । एतद् । अदस् । द्वि । किम् । युष्मद् । अस्मद् । एते सर्वादयस्त्रिलिंगाः ।

भाषार्थ–अकारान्त सर्व आदिक शब्दोंको विशेष है । भाव यह है कि, सर्व आदिक शब्दभी अकारान्त हैं परन्तु सर्व आदिक शब्दोंको देव शब्दसे कुछ भेद है वह सर्वादिक शब्द सर्व शब्दसे लेकर अस्मद् शब्द पर्यन्त गिनायेहैं यह सर्वादिक शब्द त्रिलिंग अर्थात् पुँल्लिग स्त्रीलिंग नपुंसकलिंग होते हैं ॥ (२)

---

(१) अक्विबन्तोऽधातुरुच्यते क्विबन्तश्च शब्दोधातुरित्यभिप्रायः । भाषार्थ–नहीं है क्विबादि प्रत्यय अन्तमें जिसके वह शब्द अधातु कहाता है और क्विबाद्यन्त शब्द धातु कहाता है ।

(२) विश्व शब्द सकलार्थवाचक सर्वादिकोंमें है न कि जगद्वाचक, और सम शब्द सर्वार्थवाचक सर्वादिकोंमें है न कि तुल्यार्थवाचक, और सिम शब्द समग्रार्थवाचक सर्वादिकोंमें है और नेम शब्द खंडवाचक सर्वादिकोंमें है और पूर्व पर अवर यह तीनों शब्द दिशा देशकालार्थवाचक सर्वादिकोंमें हैं और दक्षिण शब्द दिशा देशवाचक सर्वादिकोंमें है न कि प्रवीण श्रृंगारनायकार्थवाचक, और उत्तर शब्द दिशा देशवाचक सर्वादिकोंमें है नकि प्रतिवाक्यार्थवाचक, और अपर शब्द दिशा देशवाचक सर्वादिकोंमें है और अधर शब्द दिशा देशहीनार्थवाचक सर्वादिकोंमें है नकि ओष्ठवाचक, और स्व शब्द आत्मार्थ तथा आत्मीयार्थ वाचक सर्वादिकोंमें है. और अन्तर शब्द बहिर्योग तथा उपसंख्यान अर्थके विषय ही सर्वादिकोंमें है । इत्यलम् ॥

तत्र पुँल्लिंगत्वे रूपं नेयम् । सर्वः । सर्वौ । सर्व जस् इति स्थिते ।

भाषार्थ-तहाँ पुँल्लिंग प्रकरणमें सर्वादिकोंके रूप लानेयोग्य हैं । प्रथमाके एकवचनमें । सर्व स् । ऐसा स्थितहै (स्रोर्विसर्गः) इसकर सिद्ध हुआ (सर्वः) और द्विवचनके विषे (सर्वौ) और प्रथमाबहुवचनके विषे । सर्व जस् । ऐसा स्थित है जकार (जसी) इस सूत्रके प्रयोजनार्थ है तब हुआ । सर्व अस् । फिर ॥

जसी ।

जसि-ई । द्विपदमिदंसूत्रम् (वृत्तिः) सर्वादेरकारान्तात्परोजस् ईर्भवति (अ इ ए) सर्वे । सर्वम् । सर्वौ । सर्वान् (अम्शसोरस्य) (सोनः पुंसः) (शसि) पूर्वस्य दीर्घः । तृतीयैकवचने । सर्व इन इति स्थिते ।

भाषार्थ-अकार है अन्तमें जिसके ऐसे सर्वादिक शब्दसे परे जस्के स्थानमें ईकार होय जैसे । सर्व अस् । इसमें अकारान्त सर्व शब्दसे परे जस्का शुद्ध रूप अस् विद्यमान है इसकारण अस्के स्थानमें ईकार करनेसे रूप हुआ । सर्व ई । फिर (अ इ ए) इस सूत्रकर सिद्ध हुआ (सर्वे) और द्वितीयाके एक वचनमें (सर्वम्) और द्वितीयाके द्विवचनमें (सर्वौ) और बहुवचनमें (अम्शसोरस्य) (सोनः पुंसः) (शसि) इन सूत्रोंकर सिद्ध हुआ (सर्वान्) और तृतीयाके एक वचनमें (टेन) इस सूत्रकर । सर्व इन । ऐसा स्थित हुआ फिर (अ इ ए) इस सूत्रकर हुआ । सर्वेन । फिर-॥

षुर्नोणोऽनन्ते ।

षुः-नः-णः-अनन्ते । चतुष्पदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) षकाररेफऋवर्णेभ्यः परस्य नकारस्य णकारादेशो भवति अन्ते स्थितस्य न भवति ।

भाषार्थ-षकार तथा रकार और ऋवर्णसे परे जो नकार होवै तो उस नकारको णकार आदेश होय परन्तु अन्तमें स्थित हुए नकारको णकार आदेश नहीं होय भाव यह है कि, यदि षकार अथवा रकार वा ऋकार वा ॠकारसे परे नकार विद्यमान होवै ता उस नकारके स्थानमें णकार होजावै परन्तु षकार वा रकार वा ऋॠसे परे नकार जो अन्तमें स्थित होवै तो उस नकारके स्थानमें णकार नहीं होय अर्थात् पदान्तमें स्थित हुए व्यञ्जन नकारके स्थानमें णकार नहीं हो ॥

अवकुप्वन्तरेपि ।

अवकुंप्वंन्तरे-अपि । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) अवप्रत्याहारेण कवर्गेण पवर्गेण च मध्ये व्यवधानेऽपि भवति नान्येन । सर्वेण । सर्वाभ्याम् । अद्भीत्यात्वम् । सर्वैः । चतुर्थ्येकवचने । सर्व ए । इति स्थिते ।

भाषार्थ-अव प्रत्याहार तथा कवर्ग और पवर्गकर मध्यके विषय अन्तर होनेपर भी नकारके स्थानमें णकार होय और अन्य अक्षरकर मध्यमें अन्तर हुए संते नकारके स्थानमें णकार नहीं होय। भाव यह है कि, यदि षकार वा रकार वा ऋवर्ण और नकारके मध्यमें अव प्रत्याहार अथवा कवर्ग वा पवर्गमेंसे कोई होवे तोभी नकारके स्थानमें णकार होजाताहै और अपि शब्दसे जिह्वामूलीयउपध्मानीय अनुस्वार नुम् विसर्ग यह भी मध्यमें होवें तोभी नकारके स्थानमें णकार होजाताहै जैसे। सर्वेन। इसमें रकार और नकारके मध्यमें वकार एकार विद्यमानहैं इसकारण नकारके स्थानमें णकार करनेसे रूप सिद्ध हुआ (सर्वेण) और तृतीयाके द्विवचनमें पूर्ववत् (सर्वाभ्याम्) और बहुवचनमें पूर्ववत् (सर्वैः) अब चतुर्थीके एक वचनमें (सर्व ए) ऐसा स्थितहै॥

सर्वादेः स्मट्।

सर्वादेः-स्मट्। द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) सर्वादेरकारान्तात्परस्य चतुर्थ्येकवचनस्य स्मडागमो भवति। टकारः स्थाननियमार्थः (ए ऐ ऐ) सर्वस्मै। सर्वाभ्याम्। सर्वेभ्यः। षष्ठ्येकवचने। सर्व अस्। इति स्थिते। ङसिरत्। सर्व अत।

भाषार्थ-अकारहै अन्तमें जिसके ऐसे सर्वादिक शब्दसे परे जो चतुर्थीका एक-वचन ङे तिसको स्मट्का आगम होय। आगममें टकार स्थानके नियमके अर्थहै, जैसे (सर्व ए) इसमें सर्व शब्दसे परे चतुर्थीका एक वचन ङेका शुद्ध रूप ए विद्य-मानहै इस कारण ए को स्मट्का आगम किया तो वह आगम ए के आदिमें हुआ क्योंकि, आगमका टकार इत्संज्ञकहै तब रूप हुआ। सर्व स्म ए। फिर। (ए ऐ ऐ) इस सूत्रकर सिद्ध हुवा (सर्वस्मै) और द्विवचनमें पूर्ववत् सिद्ध हुआ। सर्वाभ्याम्। और बहुवचनमें सिद्ध हुआ पूर्ववत्। सर्वेभ्यः। अब पञ्चमीके एक वचनमें। सर्व अस्। ऐसा स्थितहै तिसका हुआ (ङसिरत्) इस सूत्रकर। सर्व अत॥

अतः।

अतः। एकपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) सर्वादेरकारान्तात्परस्यातः स्मडागमो भवति। सर्वस्मात। सर्वाभ्याम्। सर्वेभ्यः। षष्ठ्येकवचने। सर्व अस् इति स्थिते (ङस्स्य) सर्वस्य। सर्व ओस् इति स्थिते (ओसि) (ए अय्) सर्वयोः। सर्व आम् इति स्थिते।

भाषार्थ-अकारहै अन्तमें जिसके ऐसे सर्वादिक शब्दसे परे जो ङसिके स्थानमें उत्पन्न हुआ अत् तिसको स्मट् आगम होय जैसे। सर्व अत। इसमें अकारान्त

सर्व शब्दसे ङसिके स्थानमें (ङसिरत्) इस सूत्रकर उत्पन्न हुआ अत् परे विद्यमानहै इसकारण अत्को स्मट् आगम किया तो वह आगम अत्के आदिमें हुवा क्योंकि आगमका टकार इत्संज्ञकहै तब रूप हुआ । सर्वस्म अत् । फिर (सवर्णे दीर्घः सह) इसकर सिद्ध हुआ (सर्वस्मात्) और पञ्चमीके द्विवचनके विषे पूर्ववत् सिद्ध हुआ (सर्वाभ्याम्) और बहुवचनके विषे (सर्वेभ्यः) और षष्ठीके एकवचनमें । सर्व अस् । ऐसा स्थितहै तब (ङस्य) इस सूत्रकर सिद्ध हुआ (सर्वस्य) और षष्ठीके द्विवचनमें । सर्व ओस् । ऐसा स्थितहै । तब (ओसि) और (ए अय्) इन सूत्रोंकर सिद्ध हुआ । सर्वयोः । अब षष्ठीके बहु वचनमें । सर्व आम् । ऐसा स्थितहै-॥

सुडामः ।

सुट्-आमः । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) सर्वादेः परस्यामः सुडागमो भवति (ए स्भि बहुत्वे) (किलात्षः सः कृतस्य) सस्य षत्वम् । सर्वेषाम् । सप्तम्येकवचने । सर्व ङि इति स्थिते ।

भाषार्थ-सर्वादिक शब्दसे परे जो षष्ठीका बहुवचन आम् तिसको सुट् आगम होय जैसे । सर्व आम् । इसमें सर्व शब्दसे परे षष्ठीका बहुवचन आम् विद्यमानहै इसकारण आम्को सुट् आगम किया तो वह आगम आम्के आदिमें हुआ क्योंकि आगमका टकार इत्संज्ञकहै और उकार उच्चारणार्थ है तब हुआ । सर्व स् आम् । फिर (ए स्भि बहुत्वे) इस सूत्रकर हुआ । सर्वे स् आम् । फिर (स्वरहीनं परेण संयोज्यम्) इसकर हुआ । सर्वेसाम् । फिर (किलात्षः सः कृतस्य) इस सूत्रकर सिद्ध हुआ (सर्वेषाम्) अब सप्तमीके एक वचनमें । सर्व ङि । ऐसा स्थितहै तिसका हुआ । सर्व इ-॥

ङि स्मिन् ।

ङि-स्मिन् । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) सर्वादेरकारान्तात्परोङिस्मिन् भवति । सर्वस्मिन् । ओसि । अकारस्य एत्वम् (ए अय्) सर्वयोः । सप्तमीबहु वचने । सर्व सु । इति स्थिते (ए स्भि बहुत्वे) अकारस्य एत्वम् (किलात्षः सः कृतस्य) इति षत्वम् । सर्वेषु । आमन्त्रणे हे सर्व । हे सर्वौ । हे सर्वे ।

भाषार्थ-अकारहै अन्तमें जिसके ऐसे सर्वादिक शब्दसे परे जो ङि-का शुद्ध रूप इ सो स्मिन् होय जैसे । सर्व इ । इसमें अकारान्त सर्व शब्दसे परे ङि-का शुद्ध इ विद्यमानहै इसकारण इ के स्थानमें स्मिन् करनेसे रूप सिद्ध हुआ (सर्वस्मिन्) और सप्तमीके द्विवचनके विषे (ओसि) इस सूत्रकर अकारको एकार हुआ और (ए अय्) इस सूत्रकर सिद्ध हुआ (सर्वयोः) और सप्तमीके बहुवचनके विषे ।

सर्वे सु । ऐसा स्थित है । तब (ए स्भि बहुत्वे) इसकर अकारको एकार होगया और (किलातषः सः कृतस्य) इसकर सकारको षकार होगया तब सिद्ध हुआ (सर्वेषु) और आमन्त्रण नाम संबोधनके विषे (हे सर्व) (हे सर्वौ) (हे सर्वे) यह पूर्ववत् साधने योग्यहैं ॥

एवं विश्वादीनामेकशब्दपर्य्यन्तानां रूपं ज्ञेयम् । डतरडतमौ विहाय । तौ प्रत्ययौ ततस्तदन्ताः शब्दा ग्राह्याः । पूर्वः । पूर्वौ । पूर्व जस् । इति स्थिते । पूर्वादीनां तु नवानां जस् ईकारो वा वक्तव्यः । पूर्वे । पूर्वाः । परे । पराः । ङसिङ्योः स्मात्स्मिनौ वा वक्तव्यौ । पूर्वस्मात् । पूर्वात् । पूर्वाभ्याम् । पूर्वेभ्यः (ङस्स्य) पूर्वस्य (ओसि) पूर्वयोः (सुडामः) पूर्वेषाम् (ङि स्मिन्) पूर्वस्मिन् । पूर्वे । पूर्वयोः । पूर्वेषु । हे पूर्व । हे पूर्वौ । हे पूर्वे । हे पूर्वाः ।

भाषार्थ–इसी प्रकार विश्वादिक एकशब्द पर्यन्तोंके रूप जानने योग्य हैं । भाव यहहै कि; जिसप्रकार कि, अकारान्त सर्वशब्दका रूप सातों विभक्तियोंमें सिद्ध हुआहै तिसी प्रकार विश्वशब्दसे लेकर एकशब्दपर्यन्त अकारान्त शब्दोंके रूप जानने योग्यहैं परन्तु (डतर, डतम) को छोड करके क्योंकि, वह दोनों प्रत्ययहैं इसकारण तदन्तशब्द ग्रहणकरने योग्यहैं अर्थात् वह डतर डतम प्रत्यय हैं अन्तमें जिनके ऐसे (कतर, कतम) आदि शब्द ग्रहण करने योग्यहैं और प्रथमाके एक वचनमें पूर्व शब्द पूर्ववत् सिद्ध हुआ (पूर्वः) और द्विवचनके विषे (पूर्वौ) और बहुवचनके विषे । पूर्व जस् । ऐसा स्थितहै तिसका हुआ । पूर्व अस् । पूर्वादिक नव शब्दोंके जस्को ईकार विकल्प करके कहने योग्यहै । भाव यहहै कि, पूर्वआदिक नव शब्दोंसे परे जसके स्थानमें विकल्प करके ईकार होय जैसे । पूर्व अस् । इसमें पूर्वशब्दसे परे जसका शुद्ध रूप अस् विद्यमान है इसकारण अस्के स्थानमें ईकार करनेसे रूप सिद्ध हुआ (पूर्वे) और जहाँ ईकार नहीं हुआ तो पूर्ववत् सिद्ध हुआ (पूर्वाः) इसी प्रकार (परे, पराः) और पूर्वादिक नव शब्दोंके ङसि और ङि–के विषे स्मात् और स्मिन् विकल्प करके वक्तव्यहैं । भाव यहहै कि, पूर्व आदिक नव शब्दोंका रूप पंचमीके एकवचन और सप्तमीके एकवचनमें एक जगह सर्व शब्दके समान और अन्य जगह देवशब्दके समान होताहै जैसे (पूर्वस्मात्) (पूर्वात्) (पूर्वस्मिन्) (पूर्वे) शेष विभक्तियोंके रूप सर्वशब्दके समान जाननेयोग्यहैं ।

प्रथम चरमतयायडल्पार्द्धकतिपयनेमानां जसीवा । प्रथमे प्रथमाः ।

शेषं देववत् । तयायडौ प्रत्ययौ । ततस्तदन्ताः शब्दा ग्राह्याः । द्वितये । द्वितयाः । द्वये । द्वयाः ।

भाषार्थ-प्रथम । चरम । तय । अयट् । कतिपय । नेम । इन शब्दोंके जस्को ईकार होय विकल्प करके । भाव यहहै कि, प्रथम । चरम । तय । अयट् । कतिपय । नेम । इन शब्दोंका जस्के विषे एक रूप सर्वशब्दके समान होय और दूसरा देवशब्दके समान होय जैसे । प्रथमे । प्रथमाः । चरमे । चरमाः । शेषरूप देववत् जानने । तय और अयट् (१) प्रत्ययहैं इसकारण तदन्त शब्द ग्रहण करने योग्यहैं अर्थात् वह तय और अयट् प्रत्ययहैं अन्तमें जिनके ऐसे द्वय द्वितय आदिकशब्द ग्रहण करने योग्यहैं जैसे । द्वये । द्वयाः । द्वितये । द्वितयाः । शेषरूप देववत् जानने योग्यहैं ॥

तीयस्य सर्ववद्रूपं ङित्सु वा वक्तव्यम् । द्वितीयस्मै । द्वितीयाय । द्वितीयस्मात् । द्वितीयात् । द्वितीयस्मिन् । द्वितीये । शेषं देववत् । एवं तृतीयः ।

भाषार्थ-तीयप्रत्ययका रूप सर्वशब्दके समान ङित् वचनोंके विषे विकल्प करके वक्तव्यहै । भाव यहहै कि, तीय प्रत्ययहै अन्तमें जिसके ऐसे शब्दका रूप ङे, ङसि, ङि इनमें सर्व शब्दके समान विकल्प कर जानना जैसे (द्वितीयस्मै) और जहाँ सर्ववत् नहीं हुआ तहाँ (द्वितीयाय) (द्वितीयस्मात्) और सर्वशब्दवत् जहाँ नहीं हुआ तहाँ (द्वितीयात्) और (द्वितीयस्मिन्) (द्वितीये) शेष रूप देववत् जानने । इसीप्रकार तृतीय शब्द जानने योग्यहै ॥

उभशब्दो नित्यं द्विवचनान्तः । उभौ । उभौ । उभाभ्याम् । उभाभ्याम् । उभाभ्याम् । उभयोः । उभयोः । हे उभौ । (२)

---

(१) उभय शब्दको अयट् प्रत्ययान्त होनेपरभी सर्वादि पाठसे जस्के विषय विकल्प नहीं है किन्तु जस्के विषय उभय शब्द सर्वशब्दवत् होताहै-इत्यलम् ।

(२) यदि कहो कि, उभशब्द तथा त्वत् शब्द और भवत् शब्द और द्विशब्द इनमें तो सर्वादिकार्य होनेका निमित्तही नहीं फिर सर्वादिकोंमें इनका क्यों ग्रहण कियाहै । तहाँ यह जानना चाहिये कि (अव्ययात्सर्वनाम्नष्टेः प्रागकच्) इस तद्धित सूत्रकर अकच् प्रत्यय करनेके अर्थ इनका सर्वादिकोंमें ग्रहण है ।

"सर्वादिस्सर्वकार्यीस्यान्नचेद्गौणोथवाभिधा । पूर्वादिश्च व्यवस्थायां समोऽतुल्येंतरोऽपुरि । परिधाने बहिर्योगे स्वोर्थज्ञात्यन्यवाच्यपि ॥ १ ॥"

भाषार्थ-यदि सर्वादि शब्द सर्वादि गणमें गौण न होवें अथवा अभिधा अर्थात् नाम न होवें तो सर्वकार्यी होतेहैं अर्थात् जो कार्य कि, सर्व शब्दको हुआहै वहही कार्य उसको होताहै । भाव यहहै कि, जो सर्वादि शब्द गौण न होवे और किसीका नामभी न होवे तो उस सर्वादि शब्दको वह कार्य होताहै जो कि, सर्व शब्दको हुआहै और जो सर्वादि शब्द नाम अथवा गौण अर्थात् अपने अर्थको त्यागकर अन्य अर्थको कहता हो तो सर्वादि कार्य और अन्तर्गण कार्य उसको नहीं होताहै--

भाषार्थ-उभ शब्द दो संख्यावाचक होनेसे नित्यही द्विवचनान्त होताहै जैसे प्रथमाके और द्वितीयाके द्विवचनमें पूर्ववत् (उभौ) (उभौ) और तृतीया चतुर्थी पंचमीके द्विवचनमें पूर्ववत् सिद्ध हुआ (उभाभ्याम् ३) और षष्ठी तथा सप्तमीके द्विवचनमें (उभयोः २) ॥

अकारान्तः पुँल्लिंगो मास शब्दः ।

भाषार्थ-अकारान्त पुँल्लिंग मास शब्दहै ॥

मासस्याल्लोपो वा ।

मासस्य-अल्लोपः-वा । त्रिपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) मासशब्दस्याकारस्य लोपो वा भवति सर्वासु विभक्तिषु परतः ।

भाषार्थ-मास शब्दके अकारका लोप होय विकल्प करके समस्त विभक्ति पर हुए संते । भाव यह है कि, मास शब्दके अकारका सर्व विभक्ति पर हुए संते एक जगह लोप होजावै और एक जगह लोप नहीं होवै जैसे । मास सि । ऐसा स्थित है तिसका हुआ । मास स् । अब इसमें मास शब्दसे परे सि का शुद्ध रूप स् विद्यमान है इसकारण मास शब्दके अकारका लोप करनेसे रूप हुआ । मास् स् । फिर-॥

हसेपः सेर्लोपः ।

हसेपः-सेः-लोपः । त्रिपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) हसान्तादीबन्ताच्च परस्य सेर्लोपो भवति। माः । मासौ । मासः।संबोधने । हे माः । हे मासौ । हे मासः । मासम् । मासौ । मासः । मासा । माभ्याम् । माभिः । मासे । माभ्याम् । माभ्यः । मासः । माभ्याम् । माभ्यः । मासः । मासोः । मासाम् । मासि । मासोः । माः सु । मास्सु । अन्यत्र । देववत् । मासः । मासौ । मासाः ।

-जैसे अतिसर्व इसमें सर्वशब्द गौणहै इसकारण इसको सर्वादिकार्य नहीं होना चाहिये । और (सर्व) ऐसा किसीका नामही होवै तोभी सर्वादि कार्य नहीं होना चाहिये और पूर्वआदिक सात शब्द व्यवस्थाके विषे सर्वकार्यी होते हैं । व्यवस्था उसको कहते हैं जो कि, अपने नामकर अपेक्षा किया हुआ मर्यादाका नियम है सो कहाभी है (स्वाभिधेयापेक्षावधिनियमो व्यवस्था) भाव यहहै कि, पूर्वआदिक सप्तगण दिशा देशकालार्थवाचक होनेपर सर्व शब्दवत् होताहै । और समशब्द तुल्य अर्थवर्जित अन्य समग्रार्थके विषे सर्वकार्यी होताहै किन्तु तुल्यार्थके विषे सर्ववत् नहीं होता और अन्तर शब्द बहियोंग और परिधान (वस्त्र) इन अर्थोंके विषे सर्वकार्यी होताहै और पुरविषयक अर्थके विषे सर्वकार्यी नहीं होताहै और स्वशब्द अर्थ धन और ज्ञाति इनसे अन्यार्थवाची अर्थके विषे सर्वकार्यी होताहै अर्थात् धनार्थ और ज्ञात्यर्थके विषे सर्वकार्यी नहीं होता किन्तु आत्मार्थ तथा आत्मीयार्थके विषे सर्वकार्यी होताहै । इत्यलम् ॥

भाषार्थ–हस है अन्तमें जिसके और ईप् प्रत्यय है अन्तमें जिसके ऐसे शब्दसे परे जो सि तिसका लोप होय जैसे । मास् स् । इसमें हसान्त शब्दसे परे सि का शुद्ध रूप स् विद्यमान है इस कारण सि का शुद्ध रूप स् का लोप किया तो रूप हुआ । मास् । फिर (स्त्रोर्विसर्गः) इस कर सिद्ध हुआ (माः) और द्विवचनमें (मास् औ) (स्वरहीनं परेण संयोज्यम्) (मासौ) और बहुवचनमें । मास् अस् । तिसका सिद्ध हुआ (मासः) और द्वितीयाके एकवचनमें । मास् अम् । तिसका सिद्ध हुआ (मासम्) और द्विवचनमें पूर्ववत् (मासौ) और बहु वचनमें । मास् अस् । तिसका सिद्ध हुआ (मासः) और तृतीयाके एकवचनमें । मास् आ । तिसका सिद्ध हुआ (मासा) और तृतीयाके द्विवचनमें । मास् भ्याम् । (१) तिसका (स्त्रोर्विसर्गः) और (आदवे लोपश्) इन सूत्रोंकर सिद्ध हुआ (माभ्याम्) और बहुवचनमें सिद्ध हुआ (माभिः) और चतुर्थीके एकवचनमें (मासे) और द्विवचनमें (माभ्याम्) और बहुवचनमें (माभ्यः) और पञ्चमीके एकवचनमें (मासः) और द्विवचनमें (माभ्याम्) और बहुवचनमें (माभ्यः) और षष्ठीके एकवचनमें (मासः) और द्विवचनमें (मासोः) और बहुवचनमें (मासाम्) और सप्तमीके एकवचनमें (मासि) और द्विवचनमें (मासोः) और बहुवचनमें (माःसु और मास्सु) और जहाँ मास शब्दके अकारका लोप नहीं हुआ तहाँ सातों विभक्तियोंमें देववत् जानना जैसे (मासः) (मासौ) (मासाः) इत्यादि । संबोधनमें (हे माः) (हे मासौ) (हे मासः) ऐसे प्रयोग जानने । इसप्रकार अकारान्त प्रक्रिया है ॥

आकारान्तः पुँल्लिंगः सोमपा शब्दः ।

सोमपाः । सोमपौ । सोमपाः । सोमपाम् । सोमपौ । सोमपा शस् । इति स्थिते ।

भाषार्थ–आकारान्त पुँल्लिंग सोमपा शब्द है । प्रथमाके एकवचनमें । सोमपा सि । तिसका हुआ । सोमपा स् । फिर (स्त्रोर्विसर्गः) इस कर सिद्ध हुआ (सोमपाः) द्विवचनके विषे । सोमपा औ । ऐसा स्थित है तिसका (ओ औ औ) इस सूत्रकर सिद्ध हुआ (सोमपौ) और बहुवचनके विषे । सोमपा

---

(१) मास्भ्याम् । इसमें कोई आचार्य (झबे जबाः) इस सूत्रकी प्राप्ति कर (लृ तु लसानां दन्ताः) इससे स्थान सवर्ण मानकर सकारके स्थानमें दकार करनेसे रूप सिद्ध करते हैं (माद्भ्याम्) इसीप्रकार (माद्भिः) इत्यादिक जानने ॥

अस् । ऐसा स्थित है (सवर्णे दीर्घः सह) (स्रोर्विसर्गः) इनकर सिद्ध हुआ (सोमपाः) और द्वितीयाके एक वचनके विषे । सोमपा अम् । ऐसा स्थित है । तिसका सिद्ध हुआ (सोमपाम्) और द्वितीयाके द्विवचनमें पूर्ववत् सिद्ध हुआ (सोमपौ) और बहुवचनमें (सोमपा अस्) ऐसा स्थित है–॥

आतो धातोर्लोपः ।

आतः–धातोः लोपः । त्रिपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) धातुसंबंधिन आकारस्य लोपो भवति शसादौ स्वरे । सोमपः । सोमपाः । सोमपाभ्याम् । सोमपाभिः । सोमपे । सोमपाभ्याम् । सोमपाभ्यः । सोमपः । सोमपाभ्याम् । सोमपाभ्यः । सोमपः । सोमपोः । सोमपाम् । सोमपि । सोमपोः । सोमपासु । अधातोरिति विशेषणाद्धेर्लोपो नास्ति । हे सोमपाः । हे सोमपौ । हे सोमपाः । एवं कीलालपाप्रभृतयः ।

भाषार्थ–धातुसम्बन्धी आकारका लोप होय शसादि स्वर पर हुए संते । भाव यह है कि, जो क्विबादिप्रत्ययान्त शब्द होताहै वह धातु (१) स्वरूपको नहीं त्यागता है इसकारण जो धातुसम्बन्धी आकार है उससे परे शसादिक विभक्तियोंका स्वर परें होवे तो उस आकारका लोप होजाता है जैसै । सोमपा अस् । इसमें सोमपा शब्दके विषे पा धातुसम्बन्धी आकार है उससे परे शब्दके शुद्ध रूप अस्का अकार विद्यमान है इस कारण आकारका लोप करनेसे रूप हुआ । सोमप् अस् । फिर (सवर्णे दीर्घः सह) (स्रोर्विसर्गः) इनकर सिद्ध हुआ (सोमपः) इसीप्रकार तृतीयाके एकवचनमें सिद्ध हुआ (सोमपा) और तृतीयाके द्विवचनमें (सोमपाभ्याम्) बहुवचनमें (सोमपाभिः) इसी प्रकार अन्य विभक्तियोंके रूप जानने और । अधातोः । इस विशेषणसे धि–का लोप नहीं हुआ (हे सोमपाः) (हे सोमपौ) (हे सोमपाः) और जिस प्रकार कि, सोमपा शब्द सिद्ध हुआ है तिसी प्रकार (कीलालपा) आदिक जानने ॥ और आकारान्त । हाहा । शब्द है यह क्विप्–प्रत्ययान्त न होनेसे धातुसंज्ञक नहीं है इसकारण इसकी साधना भिन्न है । जैसे प्रथमाके एकवचनमें । हाहा स् । ऐसा स्थित है (स्रोर्विसर्गः) इसकर सिद्ध हुआ (हाहाः) और द्विवचनमें (हाहा औ) तिसका सिद्ध हुआ (ओ औ–औ) इस सूत्रकर (हाहौ) और बहुवचनमें (हाहा अस्) तिसका सिद्ध हुआ (हाहाः) और द्वितीयाके एकवचनमें (हाहाम्) और द्विवचनमें (हाहौ) और

---

(१) क्विबन्ता विजन्ता विडन्ता शब्दा धातुत्वं न जहति नामत्वं प्रतिपादयन्ति । अर्थ– क्विप्प्रत्ययान्त तथा विच् प्रत्ययान्त तथा विट्प्रत्ययान्त शब्द धातु रूपको नहीं त्यागते हैं और नाम संज्ञाका प्रतिपादन करते हैं । इति ॥

बहुवचनमें (हाहा अस्) ऐसा स्थित है तिसका (अम्शसोरस्य) (सोनः पुंसः) (शसि) इन सूत्रोंकर सिद्ध हुआ (हाहान्) और तृतीयाके एकवचनमें (हाहा) और द्विवचनमें (हाहाभ्याम्) और बहुवचनमें (हाहाभिः) और चतुर्थीके एकवचनमें (हाहा ए) तिसका (ए ऐ ऐ) इस सूत्रकर सिद्ध हुआ (हाहै) और द्विवचनमें (हाहाभ्याम्) और बहुवचनके विषे (हाहाभ्यः) और पञ्चमीके एकवचनके विषे (हाहाः) और द्विवचनमें (हाहाभ्याम्) और बहुवचनमें (हाहाभ्यः) और षष्ठीके एकवचनमें (हाहाः) और द्विवचनमें (हाहा ओस्) तिसका (ओ- औ औ) इसकर सिद्ध हुआ (हाहौः) और बहुवचनके विषे (हाहा आम्) ऐसा स्थित है इसमें दीर्घ समान होनेसे नुट् आगम नहीं हुआ किन्तु (सवर्णे दीर्घः सह) इसकर सिद्ध हुआ (हाहाम्) और सप्तमीके एकवचनमें (हाहे) द्विवचनमें (हाहौः) और बहुवचनमें (हाहासु) सम्बोधनमें प्रथमावत् रूप जानने (हे हाहाः) इत्यादि ॥

इकारान्तः पुँल्लिंगो हरि शब्दः ।

प्रथमैकवचने । हरिः । द्विवचने । हरि औ इति स्थिते ।

भाषार्थ–इकार है अन्तमें जिसके ऐसा पुँल्लिंग हरि शब्द है प्रथमाके एक वचनमें । हरिस् । ऐसा स्थित है तिसका (स्रोर्विसर्गः) इस सूत्रकर सिद्ध हुआ (हरिः) और द्विवचनके विषे (हरि औ) ऐसा स्थित है–॥

औ यू ।

औ–यू । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) इकारान्तादुकारान्तात्पर औ यू आपद्यते । ई ऊ भवतः । हरी । बहुवचने (हरि अस्) इति स्थिते ।

भाषार्थ–इकार है अन्तमें जिसके और उकार है अन्तमें जिसके ऐसे शब्दसे परे जो औ सो यू अर्थात् ईकार तथा ऊकारको प्राप्त होय । भाव यह है कि इकारान्त शब्दसे परे द्विवचन औ-के स्थानमें ई होवे और उकारान्त शब्दसे परे द्विवचन औ-के स्थानमें ऊ होवे । जैसे । हरि औ । इसमें इकारान्त हरि शब्दसे परे औकार है इसकारण औ-के स्थानमें ई करनेसे रूप हुआ । हरि ई । फिर (सवर्णे दीर्घः सह) इसकर सिद्ध हुआ । हरी । और बहुवचनके विषे । हरि अस् । ऐसा स्थित है–॥

ए ओ जसि ।

ए–ओ–जसि । त्रिपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) इकारान्तस्य उकारान्तस्य च जसि परे एकार ओकारश्च भवति । हरयः ।

भाषार्थ–इकारान्त शब्द और उकारान्त शब्दोंको जस् पर हुए संते क्रमसे एकार और ओकार होय। भाव यह है कि, जिससे इकार अन्तमें होय, उससे परे जस् विद्यमान होय तो उस इकारके स्थानमें एकार होय और जिसके अन्तमें उकार होय उससे परे जस् विद्यमान होय तो उस उकारके स्थानमें ओकार होय जैसे । हरि अस् । इसमें इकारान्त शब्द हरि है उससे परे जस् का शुद्ध रूप अस् विद्यमान है इसकारण हरि शब्दके इकारके स्थानमें एकार करनेसे रूप हुआ । हरे अस् । फिर (ए अय्) और (स्रोर्विसर्गः) इनकर सिद्ध हुआ (हरयः)॥

धौ ।

धौ । एकपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) इकारान्तस्य उकारान्तस्य च धि विषये एकार ओकारश्च भवति । हे हरे । हे हरी । हे हरयः । हरिम् । हरी । हरीन् । तृतीयैकवचने । हरि टा इति स्थिते ।

भाषार्थ–इकारान्त और उकारान्त शब्दोंको धि विषयमें एकार और ओकार होय । भाव यह है कि, जिसके अन्तमें इकार होय ऐसे शब्दके इकारके स्थानमें एकार होय और जिसके अन्तमें उकार होय ऐसे शब्दके उकारके स्थानमें ओकार होय विधि विषयमें जैसे आमन्त्रणके विषे सि–की धि संज्ञा करनेसे । हरि स् । ऐसा स्थितहै तब (समानाद्धेर्लोपोऽधातोः) इस सूत्रकर धि–का लोप करनेसे रूप हुआ हरि । फिर हरिशब्दके इकारको धि विषयमें एकार करनेसे सिद्ध रूप हुआ (१) (हे हरे) द्विवचनमें (हे हरी) बहुवचनमें (हे हरयः) और द्वितीयाके एकवचनमें । (हरि अम्) ऐसा स्थित है तिसका सिद्ध हुआ (अम्शसोरस्य) इस सूत्रकर (हरिम्) और द्विवचनके विषे प्रथमाद्विवचनवत् सिद्ध हुआ (हरी) और बहुवचनमें (हरि अस्) तिसका सिद्ध हुआ (अम्शसोरस्य) (सोनः पुंसः) (शसि) इन सूत्रोंकर (हरीन्) और तृतीयाके एक वचनमें । हरिआ । ऐसा स्थितहै–॥

टा नाऽस्त्रियाम् ।

टा–ना–अस्त्रियाम् । त्रिपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) इकारान्तादुकारान्ताच्च

---

(१) यदि कहो कि, धि–का तो लोप होगया फिर धि विषय कहाँ रहा जो (धौ) इस सूत्रकर इकारको एकार करतेहो तहाँ यह जानना कि धि–का लोप होनेसे धि–के चिह्नका अभाव नहीं हुआ क्योंकि (सर्पे नष्टे सर्पधृष्टिर्न याति) यह न्यायहै। अर्थ–सर्पके नष्ट होनेपर सर्पकी घृष्टि नहीं दूर होवै है॥

परष्टा ना भवति अस्त्रियाम् । हरिणा । हरिभ्याम् । हरिभिः । चतुर्थ्येकव-चने । हरि ए इति स्थिते ।

भाषार्थ-इकारान्त और उकारान्त शब्दसे परे जो टा सो ना होय स्त्रीलिंग वर्जित विषयमें । भाव यह है कि, जिसके अन्तमें इकार होय और जिसके अन्तमें उकार होय ऐसे शब्दसे परे जो टा का शुद्ध रूप आ तिसके स्थानमें ना होजावै पुँल्लिंग और नपुंसकलिंगके विषे और स्त्रीलिंगके विषे नहीं होवै जैसे । हरि आ । इसमें इकारान्त हरि शब्दसे परे टा का शुद्ध रूप आ विद्यमानहै इस कारण आके स्थानमें ना करनेसे रूप हुआ । हरिना । फिर (षुर्नोणोऽनन्ते) इस सूत्रकर सिद्ध हुआ (हरिणा) द्विवचनमें (हरिभ्याम्) और बहुवचनमें (हरिभिः) अब चतुर्थीके एक वचनमें । हरि ए । ऐसा स्थित है ॥

ङिति ।

ङिति । एकपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) इकारान्तस्य उकारान्तस्य च ङिति परे एकार ओकारश्च भवति । हरये । हरिभ्याम् । हरिभ्यः । हरि ङसि । इति स्थिते ।

भाषार्थ-इकारान्त और उकारान्त शब्दको एकार और ओकार क्रमसे होय ङकारहै इत्संज्ञक जिसका ऐसी विभक्ति पर हुए संते।भाव यह है कि, जिस शब्दके अन्तमें इकार वा उकार होवै तो इकारके स्थानमें एकार और उकारके स्थानमें ओकार होय ङे, ङसि, ङस्, ङि, यह विभक्ति उस शब्दसे परे होवैं तो जैसे चतुर्थीके एकवचनमें । हरि ङे । ऐसा है तिसका (हरि ए ऐसा) स्थितहै अब (हरि ए) इसमें इकारान्त हरि शब्दसे परे ङे-का शुद्ध रूप ए विद्यमानहैं इसकारण हरि शब्दकी इकारके स्थानमें एकार करनेसे रूप हुआ । हरे ए । फिर (ए अय्) इस सूत्रकर सिद्ध हुआ (हरये) द्विवचनमें (हरिभ्याम्) बहुवचनमें (हरिभिः) और पंचमीके एकवचनमें । हरि ङसि । तिसका । हरि अस् । ऐसा स्थितहै फिर (ङिति) इस सूत्रकर रूप हुआ । हरे अस् । फिर-॥

ङस्य ।

ङस्य । एकपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) एदोद्भ्यांपरस्य ङसिङसोरकारस्य लोपो भवति । हरेः । हरिभ्याम् । हरिभ्यः । हरेः । हर्य्योः । हरीणाम् । हरि ङि । इति स्थिते ।

भाषार्थ–एकार तथा ओकारसे परे जो ङसि और ङसका अकार तिसका लोप होय । भाव यहहै कि, एकारसे वा ओकारसे परे पंचमी षष्ठीके एक वचन सम्बन्धी अकारका लोप होजावै जैसे । हरे अस् । इसमें एकारसे परे पंचमीका एक वचनसम्बन्धी अकारका लोप करनेसे रूप सिद्ध हुआ (हरेः) और द्विवचनमें (हरिभ्याम्) बहुवचनमें (हरिभिः) अब षष्ठीके एकवचनमें (हरि अस्) ऐसा स्थितहै । तिसका (ङिति) सूत्रकर रूप हुआ (हरे अस्) फिर (ङस्य) इस सूत्रकर सिद्ध हुआ (हरेः) द्विवचनमें (हरि ओस्) ऐसा स्थितहै तिसका (इ यं स्वरे) राद्यपोद्विः) इत्यादिकर रूप सिद्ध हुआ (हर्योः) और बहुवचनमें (हरि आम्) ऐसा स्थित है तिसको (नुडामः) (नामि) (षुर्नोणोऽनन्ते) इन सूत्रोंकर रूप सिद्ध हुआ (हरीणाम्) सप्तमीके एक वचनमें (हरि ङि) ऐसा स्थितहै तिसका रहा (हरि इ) फिर॥

ङेरौ डित् ।

ङेः–औ–डित् । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) इदुद्भ्यामुत्तरस्य ङेरौ भवति । स च डित् ।

भाषार्थ–इकार और उकारसे उत्तर जो ङि तिसको औ होय और वह औ ङित्संज्ञक होय । भाव यह है कि, इकार वा उकारसे परे जो सप्तमीका एकवचन तिसके स्थानमें औकार होजावै और उस औ-की डित् संज्ञा होय । जैसे (हरि इ) इसमें हरिशब्दके इकारसे अगाडी सप्तमीके एकवचनका शुद्ध रूप इ विद्यमानहै इसकारण इ-के स्थानमें औ । करनेसे रूप हुआ (हरि औ) फिर (यदादेशस्तद्भवति) इसकर औ-को ङि मानकर (ङिति) इस सूत्रकर रूप हुआ । हरे औ । फिर॥

डिति टेः ।

डिति–टेः । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) डिति परे टेर्लोपो भवति । हरौ । हर्योः । हरिषु । एवमग्निगिरिरविकविप्रभृतयः पुँल्लिङ्गाः ।

भाषार्थ–डित्संज्ञक परे हुए संते पूर्वशब्दकी टिका लोप होजाताहै । भाव यहहै कि, जिसका डकार इत्संज्ञक होय वह यदि जिस शब्दसे परे विद्यमान होय तो उस शब्दकी टिसंज्ञाका लोप होवै । जैसे । हरे औ । इसमें हरे शब्दसे परे औ डित्संज्ञक विद्यमानहै इसकारण हरे शब्दकी टिसंज्ञक एका लोप करनेसे रूप हुआ । हर् औ । फिर (स्वरहीनं परेण संयोज्यम्) इसकर सिद्ध हुआ (हरौ) और द्विवचनमें (हर्योः) और बहुवचनमें । हरि सु । ऐसा स्थितहै तिसका (किलात्षः सः कृतस्य) इसकर सिद्ध हुआ (हरिषु) इसीप्रकार इकारान्त अग्नि गिरि रवि कवि आदिक । पुँल्लिगशब्द जानने योग्यहैं ॥

उकारान्ताश्च विष्णु-वायु-भानु-प्रभृतयः पुँल्लिंगाः ।

एतैरेव सूत्रैः सिद्ध्यन्ति। उकारान्तश्च पुँल्लिंगो भानु शब्दः । तस्य हरिं-शब्दवत्प्रक्रिया। भानुः । भानू । भानवः । भानुम् । भानू । भानून्।भानुना । भानुभ्याम् । भानुभिः । भानवे । भानुभ्याम् । भानुभ्यः । भानोः । भानु-भ्याम् । भानुभ्यः । भानोः । भान्वोः । भानूनाम् । भानौ।भान्वोः । भानुषु । हे भानो । हे भानू । हे भानवः । सखिशब्दस्य भेदः । सखि सि इति स्थिते ।

भाषार्थ-उकारहै अन्तमें जिनके ऐसे पुँल्लिङ्ग विष्णु वायु भानु आदि शब्दभी (औ यू) इत्यादिक सूत्रोंकर सिद्ध होतेहैं उकारान्त पुँल्लिङ्ग जो कि, भानुशब्दहै उसकी हरिशब्दवत् प्रक्रियाहै जैसे । भानु सि । तिसका सिद्ध हुआ (भानुः) और द्विवचनके विषे । भानु औ । तिसका सिद्ध हुआ (औ यू) और (सवर्णे दीर्घः सह) इनकरके (भानू) और बहुवचनमें । भानु अस् । तिसका (ए ओ जसि) इस सूत्रकर सिद्धहुआ (भानवः) औरं द्वितीयाके एकवचनमें भानु अम् । तिसका सिद्ध हुआ (अम्शसोरस्य) इस सूत्रकर (भानुम्) और द्विवचनमें । भानु औ । तिसका पूर्ववत् सिद्ध हुआ (भानू) और बहुवचनमें (भानु अस्) तिसका (अम्श-सोरस्य । सोनः पुंसः) (शसि) इन सूत्रोंकर सिद्ध हुआ (भानून्) और तृतीयाके एकवचनमें (टाना स्त्रियाम्) इस सूत्रकर सिद्ध हुआ (भानुना) और द्विवचनमें (भानुभ्याम्) और बहुवचनमें (भानुभिः) और चतुर्थीके एकवचनमें (ङिति) इस सूत्रकर सिद्धहुआ (भानवे) और द्विवचनमें (भानुभ्याम्) और बहुवचनमें (भानुभ्यः) और पंचमीके एकवचनमें (ङिति) और (ङस्य) इन सूत्रोंकर सिद्ध हुआ (भानोः) द्विवचनमें (भानुभ्याम्) बहुवचनमें (भानुभ्यः) और षष्ठीके एक-वचनमें पंचमीके एकवचनवत् (भानोः) और द्विवचनमें (उ वम्) इस सूत्रकर सिद्ध हुआ (भान्वोः) और बहुवचनमें (नुडामः) (नामि) इन सूत्रोंकर सिद्ध हुआ (भानूनाम्) सप्तमीके एकवचनमें (ङेरौ डित्) (डिति टेः) इन सूत्रोंकर सिद्ध-हुआ (भानौ) द्विवचनमें (भान्वोः) बहुवचनमें (किलात्षः सः कृतस्य) इसकर (भानुषु) और आमन्त्रणमें (समानाद्धेर्लोपोऽधातोः) (धौ) इनसूत्रोंकर सिद्ध-हुआ (हे भानो) द्विवचनमें (हे भानू) बहुवचनमें (हे भानवः) इकारान्त सखिश-ब्दको भेद है प्रथमा एकवचनमें । सखि सि । ऐसा स्थितहै ॥

सेर्डाधेः ।

६ १ १ १ ६ १

सैः-डा-अधेः । त्रिपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) सखिशब्दस्य सैरधेर्डा भवति। डित्वाट्टिलोपः।सखा । अधेरिति विशेषणादेकारो धि विषये हे सखे ।

भाषार्थ–सखिशब्दकी धि संज्ञावर्जित सिको डा होताहै । भाव यह है कि, सखिशब्दसे परे जो सि तिसके स्थानमें डकारहै इत्संज्ञक जिसका ऐसा आ होताहै और आमन्त्रणके विषे नहीं होता है जैसे (सखि स्) इसमें सखिशब्दसे परे सिका शुद्धरूप स् विद्यमानहै इसकारण स्के स्थानमें आ करनेसे रूप हुआ (सखि आ) फिर (डिति टेः) यह सूत्र प्राप्त किया क्योंकि, आका डकार इत्संज्ञकहै । तब रूप सिद्ध हुआ (सखा) और जो कि, सूत्रमें (अधेः) यह पदहै, इस विशेषणसे आमन्त्रणम सिके स्थानमें डा नहीं हुआ किन्तु (समानाद्धेर्लोपोऽधातोः) और (धौ) इन सूत्रोंकर रूप सिद्ध हुआ (हे सखे) अब द्विवचनके विषे (सखि औ) ऐसा स्थितहै– ॥

ऐ सख्युः ।

ऐ सख्युः । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) सखिशब्दस्यैकारादेशो भवति पञ्चसु परेषु । षष्ठीनिर्दिष्टस्यादेशस्तदन्तस्य ज्ञेयः । आयादेशः । सखायौ । द्विवचनस्यावा छन्दसि । सखाया । सखायः । सखायम् । सखायौ । सखीन् ।

भाषार्थ–सखिशब्दको ऐकार आदेश होय पाँच वचन परहुए संते । भाव यहहै कि, सखिशब्दको ऐकार आदेश होय धिवर्जित स्यादिक पांच वचन पर हुए संते यदि कहो कि, क्या ऐकार आदेश समस्त सखिशब्दको होवै, तहाँ कहतेहैं कि, षष्ठीविभक्तिकर कहेहुए शब्दको जो आदेश होताहै वह आदेश उस शब्दके अन्तको होताहै भाव यहहै कि, षष्ठीविभक्तिकर जो कि, शब्द सूत्रके मध्यमें उच्चारण कियागयाहै । उसको जो आदेश होताहै वह आदेश उस शब्दके अन्तवर्णको होताहै जैसें (सखि औ) इसमें सखिशब्दसे परे स्यादिक पांच वचनोंका औ विद्यमानहै इसकारण सखिशब्दके इकारको एकार आदेश करनेसे रूप हुआ (सखै औ) फिर (ऐ आय्) इस सूत्रकर सिद्ध हुआ (सखायौ) और द्विवचनको आ होय विकल्पकरके वेदके विषे । भाव यहहै कि प्रथमाद्विवचन औके स्थानमें विकल्प करके वेदके विषे आ होय जैसे (सखि औ) इसमें औके स्थानमें आ करनेसे रूप हुआ (सखि आ) फिर (ऐ सख्युः) इस सूत्रकर सिद्ध हुआ (सखाया) और बहुवचनके विषे (सखायः) और द्वितीयाके एकवचनमें (सखायम्) और द्विवचनमें (सखायौ) और बहुवचनमें (सखि अस्) इसमें स्यादिक पांच वचनोंके ग्रहणसे सखिशब्दके इकारको ऐकार आदेश नहीं हुआ किन्तु (अम्शसोरस्य) (सो नः पुंसः) (शसि) इन सूत्रोंकर सिद्ध हुआ (सखीन्) तृतीयाके एकवचनमें (सखि टा) ऐसा स्थितहै ॥

सखिपत्योरीक् ।

६ २ १ १
सखिपत्योः—ईक् । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) सखिपतिशब्दयोरीगागमो भतति टाङेङिषु परतः । दीर्घत्वान्ना न भवति । सख्या । आगमजमनित्यमिति न्यायात् । सखिना । पतिना । सखिभ्याम् । सखिभिः । सख्ये । सखिभ्याम् । सखिभ्यः । सखि ङसि इति स्थिते ।

भाषार्थ–सखि और पति इन शब्दोंको ईक् आगम होय टा,ङे, ङि, यह विभक्ति वचन परे हुए संते । भाव यह है कि, सखि तथा पतिशब्दसे परे जो टा, ङे, ङि, यह वचन होवैं तो सखि तथा पतिशब्दको ईक् आगम होय जैसे (सखि टा) इसका शुद्ध रूप (सखि आ) ऐसा स्थितहै इसमें सखिशब्दसे परे टाका शुद्ध रूप आ विद्यमानहै इसकारण सखिशब्दको ईक् आगम हुआ तो वह आगम सखिशब्दके अन्तमें हुआ क्योंकि, आगमका ककार इत्संज्ञकहै । तब रूप हुआ (सखि ई आ) तब (सवर्णे दीर्घः सह) इसकर (सखी आ) ऐसा हुआ अब इसमें (टानाऽस्त्रियाम्) इस सूत्रकर दीर्घ होनेसे टाके स्थानमें ना नहीं हुआ किन्तु (इ यं स्वरे) इस सूत्रकर सिद्ध हुआ (सख्या) आगमसे सिद्ध हुआ कार्य अनित्य होताहै भाव यहहै कि, जो कार्य आगमसे उत्पन्न होताहै वह कहीं होजाताहै कहीं नहीं होताहै इस न्यायसे कहीं ईकार आगम नहीं हुआ तिस करके वेदमें हरिशब्दवत् (सखिना) (पतिना) रूप सिद्ध हुए । द्विवचनमें (सखिभ्याम्) बहुवचनमें (सखिभिः) चतुर्थीके एकवचनमें (सखि ए) ऐसा स्थितहै इसमें (सखिपत्योरीक्) इसकर सखि शब्दको ईक आगम करनेसे रूप हुआ (सखि ई ए) फिर (सवर्णे दीर्घः सह (इ यं स्वरे) इन सूत्रोंकर सिद्ध हुआ (सख्ये) द्विवचनमें (सखिभ्याम्) और बहुवचनमें (सखिभ्यः) अब पञ्चमीके एकवचनमें (सखि ङसि) तिसका (सखि अस्) ऐसा स्थितहै – ॥

ऋङ्ङेः ।

१ १ ७ १
ऋक्–ङेः । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) सखिपतिशब्दयोर्ऋगागमो भवति ङसिङसोरकारे परे । सख्यृ अस् । इति स्थिते ।

भाषार्थ–सखि और पतिशब्दको ऋक् आगम होय । ङसि और ङस्का अकार परे हुए संते । भाव यहहै कि, सखि और पतिशब्दसे पंचमीका एकवचन और षष्ठीका एकवचन पर होवै तो सखि और पतिशब्दको ऋक् आगम होय । जैसे

सखि । इसमें सखि शब्दसे परे पंचमीका एकवचन विद्यमानहै इसकारण सखि शब्दको ऋक् आगम किया तो वह आगम सखि शब्दके अन्तमें हुआ क्योंकि, आगमका ककार इत्संज्ञक है तब रूप हुआ (सखि ऋ अस्) फिर (इ यं स्वरे) इसकर रूप हुआ (सख्यृ अस्) फिर—॥

ऋतो ङ उः ।

ऋतः—ङः—उः । त्रिपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) ऋकारान्तात्परस्य ङसिङसोरकारस्य उकारो भवति स च डित् (डिति टेः) सख्युः । सखिभ्याम् । सखिभ्यः । सख्युः । सख्योः । सखीनाम् । सप्तम्येकवचने ङेरौ-डिदित्यौकारे कृते सखिपत्योरीगिति ईगागमः । सख्यौ । सख्योः । (क्विलात्षः सः कृतस्य) सखिषु ।

भाषार्थ—ऋकार है अन्तमें जिसके ऐसे शब्दसे परे जो ङसि ङस् का अकार तिसको उकार होय वह उकार डित्संज्ञक होय । भाव यह है कि, ऋकारान्त शब्दसे परे पंचमीके एकवचन और षष्ठीके एकवचन सम्बन्धी ङकारके शुद्ध रूप अकारके स्थानमें उकार होय परन्तु उकार डित् मानना चाहिये जैसे (सख्यृ अस्) इस प्रयोगमें ऋकारसे परे पंचमीका एकवचनसम्बन्धी ङकारके शुद्ध रूप अकारके स्थानमें उकार करनेसे रूप हुआ (सख्यृ उस्) फिर सख्यृ शब्दके टि संज्ञक ऋकारका (डिति टेः) इस सूत्रकर लोप करनेसे रूप सिद्ध हुआ (सख्युः) द्विवचनमें (सखिभ्याम्) और बहुवचनमें (सखिभ्यः) और षष्ठीके एकवचनमें पंचमीके एकवचनवत् (सख्युः) द्विवचनमें (इ यं स्वरे) इस सूत्रकर (सख्योः) और बहुवचनमें (नुडामः) (नामि) इन सूत्रोंकर (सखीनाम्) और सप्तमीके एकवचनमें (ङेरौ डित्) इस सूत्रकर ङिके स्थानमें औकार करनेपर (डिति टेः) इसकर सखि शब्दके अन्त्य इकारका लोप करनेपर (सखिपत्योरीक्) इसकर (ईक्) आगम किया फिर (इ यं स्वरे) इस सूत्रकर सिद्ध हुआ (सख्यौ) द्विवचनमें (सख्योः) और बहुवचनमें (क्विलात्षः सः कृत्यस्य) इसकर सिद्ध हुआ (सखिषु) ॥

पतिशब्दस्य प्रथमाद्वितीययोर्हरिशब्दवत्प्रक्रिया ।

तृतीयादौ सखिशब्दवत् । पतिः (औ यू) पती (ए ओ जसि) पतयः । पतिम् । पती । पतीन् (सखिपत्योरीक्) पत्या । पतिभ्याम् । पतिभिः । पत्ये । पतिभ्याम् । पतिभ्यः (ऋङ्के) (ऋतो ङ उः) स च डित् । पत्युः । पति-

भ्याम् । पतिभ्यः । पत्युः । पत्योः । पतीनाम् । पत्यौ । पत्योः । पतिषु । पतिरसमास एव सखिशब्दवद्वक्तव्यः । ततः समासान्तस्य नादयो भवन्ति । प्रजापतिना । प्रजापतये । इत्यादि ।

भाषार्थ-पति शब्दकी प्रथमा द्वितीया विभक्तियोंके विषे हरिशब्दके समान प्रक्रिया है और तृतीयादि विभक्तियोंके विषे सखिशब्दवत्प्रक्रिया है । भाव यह है कि, प्रथमा द्वितीया विभक्तिमें पतिशब्द हरिशब्दके समान होता है जैसे (पतिः) (पती) (पतयः) (पतिम्) (पती) (पतीन्) और तृतीया, चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी, सप्तमी विभक्तिमें पतिशब्द सखिशब्दके समान सिद्ध होताहै जैसे (पत्या) (पतिभ्याम्) (पतिभिः) (पत्ये) (पतिभ्याम्) (पतिभ्यः) (पत्युः) (पतिभ्याम्) (पतिभ्यः) (पत्युः) (पत्योः) (पतीनाम्) (पत्यौ) (पत्योः) (पतिषु) असमास अर्थात् समासवर्जित जो पतिशब्द है वह तृतीयादि विभक्तियोंमें सखिशब्दवत् वक्तव्य है और समासान्त पतिशब्दको नादिक होवैं हैं अर्थात् समासान्त पति शब्दको (टानाऽस्त्रियाम्) (ङिति) (ङसिङसोरस्य) (ङेरौ ङित्) इत्यादि सूत्र होते हैं । भाव यह है कि, समासान्त पतिशब्द तृतीयादिकमें भी हरिशब्दवत् साधने योग्य है । जैसे (प्रजापतिना) (प्रजापतये) (प्रजापतेः) (प्रजापतेः) प्रजापतौ । आमन्त्रणके विषे (हे प्रजापते) (हे प्रजापती) (हे प्रजापतयः) ॥

द्विशब्दो नित्यं द्विवचनान्तः (द्वि औ) इति स्थिते ।

भाषार्थ-द्वि शब्द द्विसंख्या वाचक होनेसे नित्यही द्विवचनान्त होता है । द्वि औ । ऐसा स्थित है ॥

त्यदादेष्टेरः स्यादौ ।

त्यदादेः-टेः-अः-स्यादौ । चतुष्पदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) त्यदादेष्टेरकारो भवति स्यादौ परे । द्वौ । द्वौ । द्वाभ्याम् । द्वाभ्याम् । द्वाभ्याम् । द्वयोः । द्वयोः । त्यदादीनां सम्बोधनाभावः ।

भाषार्थ-त्यदादिक शब्दकी टिको अकार होय स्यादिक विभक्ति पर हुये संते । भाव यह है कि, सर्वादिकोंमें जो त्यद् शब्दसे आदि लेकर शब्द हैं उनकी टि संज्ञाके स्थानमें अकार होजावै सि आदिक विभक्ति पर हुये संते जैसे (द्वि औ) इसमें द्वि शब्द त्यदादिसम्बधी है उससे परे प्रथमाद्विचन विद्यमान है इसकारण द्विशब्दकी टिसंज्ञक इकारके स्थानमें अकार करनेसे रूप हुआ द्व औ फिर (ओ औ औ) इसकर रूप सिद्ध हुआ (द्वौ) इसीप्रकार द्वितीयाद्विवचनमें (द्वौ) और तृतीया द्विवचनमें (अद्भि) इसकर सिद्ध हुआ (द्वाभ्याम्) इसीप्रकार चतुर्थीके द्विवचनमें (द्वाभ्याम्) और पंचमीके द्वि-

वचनमें भी इसी प्रकार हुआ (द्वाभ्याम्) और षष्ठीके द्विवचनमें (ओसि) इस सूत्रकर सिद्ध हुआ (द्वयोः) और इसीप्रकार सप्तमीके द्विवचनमें सिद्ध हुआ (द्वयोः) त्यदादि शब्दोंको सम्बोधनका अभाव है अर्थात् त्यदादिक शब्दोंका सम्बोधन नहीं होता है ॥

त्रिशब्दो नित्यं बहुवचनान्तः । त्रि जस् इति स्थिते (ए ओ जसि) इत्येकारे कृते। अयादेशः। त्रयः (सो नः पुंसः) त्रीन् । त्रिभिः । त्रिभ्यः । त्रिभ्यः । षष्ठीबहुवचने । त्रि आम् इति स्थिते (नुडामः) इति नुडागमः ।

भाषार्थ–त्रिशब्द नित्यही बहुवचनान्त होताहै इसकारण (त्रि जस्) तिसका (त्रि अस्) ऐसा स्थित है (ए ओ जसि) इस सूत्रकर सिद्ध हुआ (त्रयः) द्वितीया बहुवचनमें (अम्शसोरस्य) (सो नः पुंसः) (शसि) इन सूत्रोंकर सिद्ध हुआ (त्रीन्) और तृतीयाके बहुवचनमें (त्रिभिः) चतुर्थीके बहुवचनमें (त्रिभ्यः) इसी प्रकार पंचमीबहुवचनमें सिद्ध हुआ (त्रिभ्यः) षष्ठीबहुवचनमें (नुडामः) इस सूत्रकर (त्रिनाम्) ऐसा स्थित हुआ तब–॥

त्रेरयङ् । (१)

'त्रेः'–अयङ् । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) त्रिशब्दस्य अयङ् आदेशो भवति नामि परे । ङिदन्तस्य वक्तव्यः । त्रयाणाम् । त्रिषु । कतिशब्दो नित्यं बहुवचनान्तः । कति जस् इति स्थिते ।

भाषार्थ–त्रिशब्दको अयङ् आदेश होय नाम् पर हुए संते ङित् आदेश अन्तको होता है। भाव यह है कि, त्रिशब्दसे परे नुट् आगमयुक्त आम् होवै तो त्रिशब्दको अयङ् आदेश होता है जिस आदेशका कि, ङकार इत्संज्ञक होय वह आदेश अन्तवर्णको जानना जैसे (त्रिनाम्) इसमें त्रिशब्दसे परे नुट् आगमयुक्त आम् विद्यमान है इसकारण त्रिशब्दको अयङ् आदेश किया तो वह आदेश अन्तवर्ण इकारको हुआ क्योंकि, आदेशका ङकार इत्संज्ञक है। तब हुआ (त्र अय् नाम्) अब (स्वरहीनं परेण संयोज्यम्) इसकर हुआ (त्रय नाम्) फिर (नामि) इसकर हुआ (त्रयानाम्) फिर (षुर्नोणोऽनन्ते) इस सूत्रकर सिद्ध हुआ (त्रयाणाम्)

(१) यदि कहो कि (त्रेरयङ्) इस सूत्रमें त्रिशब्द एकवचनान्त क्यों कहाहै क्योंकि त्रिशब्द तो नित्यही बहुवचनान्त होताहै । तहाँ यह जानना कि, यहाँपर (त्रि) इसको शब्द निर्देश है अथवा सूत्रमें एक वचनके ग्रहणसे यह जानना कि, त्रिशब्दको अयङ् आदेश असमासान्त होनेपर ही हो और समासान्त होनेपर अयङ् आदेश नहींहो जैसे (प्रियत्रीणाम्) (अतित्रीणाम्) इत्यादिकके विषे अयङ् आदेश नहीं हो । इति ॥

और सप्तमीबहुवचनमें (किलात्षः सः कृतस्य) इसकर सिद्ध हुआ (त्रिषु) सम्बोधनमें (हे त्रयः) और कति शब्दभी नित्यही बहुवचनान्त है इसकारण (कति जस्) तिसका (कति अस्) ऐसा स्थित है ॥

कतिशब्दाज्जश्शसोर्लुग्वक्तव्यः । लुकिनतन्निमित्तम् । कति । कति । कतिभिः । कतिभ्यः । कतिभ्यः । कतीनाम् । कतिषु । त्रिषु सरूपः । ईकारान्तः । पुँल्लिगः सुश्रीशब्दः । सुश्रीः । द्विवचने । सुश्री औ । इति स्थिते ।

भाषार्थ—कति शब्दसे परे जो जस् और शस् तिनका लुक् वक्तव्य है। भाव यह है कि, कतिशब्दसे परे जस् शस्का लुक् होजावै लुक् किये संते जिसका कि, लुक् किया जाताहै वही लुक्होनेवाला प्रत्यय निमित्तकारण है जिसकार्यका ऐसा जो कार्य है वह नहीं होय जैसे (कति अस्) इसमें कतिशब्दसे परे जस्का शुद्ध रूप अस् विद्यामान है इसकारण जस्के शुद्ध रूप अस्का लुक् किया तो रूप सिद्ध हुआ (कति) इसीप्रकार द्वितीयाबहुवचनमें सिद्ध हुआ (कति) अब इसमें (ए ओ जसि) और (शसि) यह सूत्र नहीं प्राप्त होसक्ते क्योंकि,जस् और शस्का लुक् होगया है । तृतीयाके बहुवचनमें (कतिभिः) चतुर्थी पंचमीके बहुवचनमें (कतिभ्यः) और षष्ठीबहुवचनमें (कतीनाम्) और सप्तमीबहुवचनमें (कतिषु) कतिशब्दको सम्बोधन नहीं होता है इसीप्रकार कति शब्दके साहचर्यसे यति और तति शब्दसे परे जस्का लुक् होताहै और कति शब्दके तीनों लिंगोंके विषे समान रूप होतेहैं । अब ईकारान्त पुँल्लिग सुश्री शब्द है प्रथमाके एकवचनमें (सुश्री स्) ऐसा स्थित है (स्रोर्विसर्गः) इस सूत्रकर सिद्ध हुआ (सुश्रीः) द्विवचनके विषे । सुश्री औ । ऐसा स्थितहै ॥

य्वोर्धातोरियुवौ स्वरे ।

६२ ६१ २ ७१

य्वोः—धातोः—इयुवौ—स्वरे । चतुष्पदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) धातोरीकारोकारयोरियुवौ भवतः स्वरे परे । सुश्रियौ । सुश्रियः । हे सुश्रीः हे सुश्रियौ । हे सुश्रियः । सुश्रियम् । सुश्रियौ । सुश्रियः । सुश्रिया । सुश्रीभ्याम् । सुश्रीभिः । सुश्रिये । सुश्रीभ्याम् । सुश्रीभ्यः । सुश्रियः । सुश्रीभ्याम् । सुश्रीभ्यः । सुश्रियः । सुश्रियोः । सुश्रियाम् । सुश्रियि । सुश्रियोः । सुश्रीषु । तथैव सुधी शब्दः ।

भाषार्थ—धातुके ईकार ऊकारको क्रमसे इय् उव् होंय विभक्ति—सम्बन्धी

स्वर पर हुए संते । भाव यहहै कि, धातुके ईकारको विभक्तिसम्बन्धी स्वर पर हुये संते इय् होय और धातुके ऊकारको विभक्तिसम्बन्धी स्वर पर हुए संते उव् होय । जैसे (सुश्री औ) इसमें सुश्री शब्दका ईकार धातुसम्बन्धीहै इसकारण ईके स्थानमें इय् किया । क्योंकि, विभक्तिसम्बन्धी स्वर परमें औ विद्यमानहै तव रूप हुआ (सुश्रिय् औ) फिर (स्वरहीनं परेण संयोज्यम्) इसकर सिद्ध हुआ (सुश्रियौ) इसीप्रकार समस्त स्वरादिक विभक्ति वचनोंमें इय् करना चाहिये । बहुवचनमें (सुश्रियः) और सम्बोधनके विषे धिका लोप नहीं हुआ क्योंकि, क्विप्–प्रत्ययान्त शब्द धातुभावको नहीं त्यागताहै । तव रूप हुआ (हे सुश्रीः । हे सुश्रियौ) (हे सुश्रियः) द्वितीयाके एकवचनमें (सुश्रियम्) द्विवचनमें (सुश्रियौ) बहुवचनमें (सुश्रियः) तृतीयाके एकवचनमें (सुश्रिया) द्विवचनमें (सुश्रीभ्याम्) बहुवचनमें (सुश्रीभिः) इसी प्रकार अन्य विभक्ति वचनोंमें रूप जाननेयोग्य हैं और तिसी प्रकार सुधी शब्द साधनेयोग्य है । जैसे प्रथमाके एकवचनमें (सुधीः) द्विवचनमें (य्वोर्धातोरियुवौ स्वरे) इसकर सिद्ध हुआ (सुधियौ) इसीप्रकार अन्य विभक्ति वचनोंके विषे रूप जानने ॥

ऊकारान्तः पुँल्लिंगः स्वयम्भू शब्दः ।

स्वयम्भूः । स्वयम्भुवौ । स्वयम्भुवः । स्वयम्भुवम् । स्वयम्भुवौ । स्वयम्भुवः । स्वयम्भुवा । स्वयम्भूभ्याम् । स्वमम्भूभिः । स्वयम्भुवे । स्वयम्भूभ्याम् । स्वयम्भूभ्यः । स्वयम्भुवः । स्वयम्भूभ्याम् । स्वयम्भूभ्यः । स्वयम्भुवः । स्वयम्भुवोः। स्वयम्भुवाम् । स्वयम्भुवि । स्वयम्भुवोः ।.स्वयम्भूषु । हे स्वयम्भूः । हे स्वयम्भुवौ । हे स्वयम्भुवः ।

भाषार्थ–ऊकारान्त पुँल्लिग स्वयम्भू शब्दहै । प्रथमाके एकवचनमें (स्रोर्विसर्गः) इसकर सिद्ध हुआ (स्वयम्भूः) द्विवचनमें (स्वयम्भू औ) ऐसा स्थितहै इसमें स्वयम्भू शब्दका ऊकार धातुका है क्योंकि, स्वयम्भू शब्द क्विप् प्रत्ययान्तहै इस कारण (य्वोर्धातोरियुवौ स्वरे) इस सूत्रकर स्वयम्भूशब्दके ऊकारके स्थानमें उव् करनेसे (स्वरहीनं परेण संयोज्यम्) इसकर सिद्ध हुआ (स्वयम्भुवौ) इसीप्रकार बहुवचनमें उव् करनेसे रूप सिद्ध हुआ (स्वयम्भुवः) इसीप्रकार अन्य स्वरादि विभक्ति वचनोंमें उव् करके रूप साधने योग्यहैं और संवोधनमें (समानाद्धेर्लोपोऽधातोः) इसकर धिका लोप नहीं हुआ क्योंकि, स्वयम्भूशब्द क्विप् प्रत्ययान्त होनेसे धातुत्वको नहीं त्यागताहै (हे स्वयम्भूः) इत्यादि ॥

सेनानीशब्दस्याविशेषो हसादौ स्वरादौ तु विशेषः सेनानीः ।

भाषार्थ-हसहै आदिमें जिसके ऐसी विभक्तिका वचन पर हुए संते क्विप् प्रत्ययान्त ईकारान्त सेनानी शब्दको विशेष नहीं है स्वरहै आदिमें जिसके ऐसी विभक्तिका वचन पर हुए संते सेनानीशब्दको धातुसम्बन्धी ईकारान्त होनेपरभी विशेष है। जैसै (सेनानी स्) ऐसा स्थितहै इसमें सेनानी शब्दसे परे हसादि सि विभक्ति वचन विद्यमानहै इसकारण विशेष न होनेसे (स्रोर्विसर्गः) इसकर सिद्ध हुआ (सेनानीः) और द्विवचनके विषे। सेनानी औ। ऐसा स्थितहै इसमें सेनानी शब्दसे परे स्वरादि औ विभक्ति वचन विद्यमानहै इसकारण विशेष होना चाहिये किंतु (य्वोर्धातोरियुवौ स्वरे) इसकी प्राप्ति नहीं होनी चाहिये ॥

य्वौ वा।

य्वौ-वा। द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) धातोरवयवसंयोगः पूर्वो यस्मादीकारादूकाराच्च नास्ति तदन्तस्यानेकस्वरस्येकारस्योकारस्य च यकारवकारौ भवतः स्वरे परे। वर्षाभूपुनर्भूव्यतिरिक्तभूशब्दसुधीशब्दौ वर्जयित्वा वाग्रहणादियं विवक्षा। सेनान्यौ। सेनान्यः। हे सेनानीः। हे सेनान्यौ। हे सेनान्यः। सेनान्यम्। सेनान्यौ। सेनान्यः। सेनान्या। सेनानीभ्याम्। सेनानीभिः। सेनान्ये। सेनानीभ्याम्। सेनानीभ्यः। सेनान्यः। सेनानीभ्याम्। सेनानीभ्यः। सेनान्यः। सेनान्योः। षष्ठीबहुवचने। सेनानी आम्।

भाषार्थ-जिस ईकार और ऊकारसे पूर्व धातुका अवयव संयोग वर्त्तमान नहीं है वही ईकारः और ऊकारहै अन्तमें जिसके ऐसे अनेक स्वर धातुके ईकार और ऊकारको क्रमसे यकार और वकार होय विभक्ति स्वर पर हुए संते। भाव यह है कि, जिस ईकार वा ऊकारसे पूर्व धातुके अक्षर संयोगसंज्ञक वर्त्तमान न होंय ऐसा ईकार वा ऊकार जिस धातुके अन्तमें होय वह धातु कारक वा अव्ययके पूर्व होनेसे वा स्वयंही अनेक स्वरवाला होवै तो उसी धातुके ईकार वा ऊकारके स्थानमें क्रमसे यकार तथा वकार होय अर्थात् ईकारके स्थानमें यकार और ऊकारके स्थानमें वकार होताहै परन्तु वर्षाभू और पुनर्भू इनसे वर्जित जो भूशब्द तिसको और सुधी शब्दको त्याग करके,वाके ग्रहणसे यह विवक्षाहै भाव यहहै कि,वर्षा और पुनर् शब्द नहींहैं पूर्व जिसके ऐसे भू शब्द और सुधी शब्दको यकार वकारकी प्राप्ति होनेपरभी यकार वकार नहीं होवैं किन्तु इय् तथा उव् ही होंय यह अर्थ सूत्रमें वाके ग्रहणसे जानना (सेनानी औ) इसम

सेनानी शब्दमें जो ईकारहै उससे पूर्व नी धातुका एक अक्षर नकारही होनेसे संयोग नहीं है इस कारण नी धातुके ईकारके स्थानमें विभक्तिस्वर पर होनेसे यकार किया क्योंकि नी धातु सेना शब्दके पूर्व होनेसे अनेक स्वरवाला है तब रूप हुआ(सेनान् य् औ) फिर (सवर्णे दीर्घः सह) इसकर सिद्ध हुआ (सेनान्यौ) इसीप्रकार अन्य स्वरादि विभक्तिवचनोंमें रूप सिद्ध हुये जानने। अव षष्ठीके बहुवचनमें (सेनानी आम्) ऐसा स्थितहै ॥

सेनान्यादीनां वामो नुड्वक्तव्यः । सेनानीनाम् । सेनान्याम् । सेनानी ङि इति स्थिते ।

भाषार्थ–सेनान्यादिक शब्दोंके आम्को नुट् आगम विकल्पकरके वक्तव्य है भाव यहहै कि, सेनानी आदिक शब्दोंसे परे षष्ठीका बहुवचन आम् तिसको नुट् आगम होताहै विकल्पकरके जैसे (सेनानी आम्) इसमें सेनानी शब्दसे षष्ठीका वहुवचन आम् विद्यमानहै इसकारण आम्को नट् आगम किया तौ वह आगम आम्के आदिमें हुआ क्योंकि, आगम टित्‌है तब रूप हुआ (सेनानी न् आम्) फिर (नामि) इस सूत्रकर सिद्ध हुआ (सेनानीनाम्) और जहाँ नुट् आगम नहीं हुआ तहाँ (य्वौवा) इस सूत्रकर सिद्ध हुआ (सेनान्याम्) और सप्तमीके एकवचनमें (सेनानी ङि) ऐसा स्थितहै– ॥

आम् ङेः ।

आम्[६]–ङेः[१] । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) आबन्तादीबन्तान्नीशब्दाच्चोत्तरस्य ङेरामादेशो भवति । सेनान्याम् । सेनान्योः । सेनानीषु । एवंग्रामणीप्रभृतयः ऊकारान्ताश्चयवलूप्रभृतयः । ऋकारान्तः पुँल्लिगः पितृशब्दः ।

भाषार्थ–आप् प्रत्ययहै अन्तमें जिसके और ईप् प्रत्ययहै अन्तमें जिसके ऐसे शब्दोंसे और नीशब्दसे उत्तर जो ङि तिसको आम् आदेश होय । भाव यह है कि, जिसके अन्तमें आप् प्रत्यय होवै और जिसके अन्तमें ईप् प्रत्यय होवै उस शब्दसे परे वा नीशब्दसे परे सप्तमीका एकवचन ङिके स्थानमें आम् होय जैसे (सेनानी ङि) इसमें क्विप् प्रत्ययान्त नी शब्दसे परे सप्तमीका एकवचन ङि विद्यमानहै इसकारण ङिके स्थानमें आम् करनेसे (सेनानी आम्) ऐसाहुआ फिर (य्वौवा) इस सूत्रकर सिद्धहुआ (सेनान्याम्) द्विवचनमें (सेनान्योः) बहुवचनमें (क्विलात्षः सः कृतस्य) इस सूत्रकर सिद्धहुआ (सेनानीषु) आमन्त्रणमें सेनानी शब्दसे धिका लोप नहीं हुआ क्योंकि, सेनानी शब्द क्विप् प्रत्ययान्त होनेसे धातुरूपहै । इसीप्रकार ग्रामणी आदिक धातुशब्द जानने योग्यहैं और ऊकारान्त यवलू आदिक

धातुशब्दभी इसीप्रकार जाननेयोग्यहैं । ऊकारान्त यवलू शब्दहै । प्रथमैकवचनमें (यवलूः) द्विवचनमें (ख्वौवा) इसकर सिद्धहुआ (यवल्वौ) बहुवचनमें (यवल्वः) द्वितीयाके एकवचनमें (यवल्वम्) द्विवचनमें (यवल्वौ) बहुवचनमें (यवल्वः) तृतीयाके एकवचनमें (यवल्वा) द्विवचनमें (यवलूभ्याम्) बहुवचनमें (यवलूभिः) चतुर्थीके एकवचनमें (यवल्वे) (यवलूभ्याम्) (यवलूभ्यः) पंचमीमें (यवल्वः) (यवलूभ्याम्) (यवलूभ्यः) षष्ठीमें (यवल्वः) (यवल्वोः) (यवल्वाम्) और सप्तमीके एकवचनमें । नीशब्दके न होनेसे ङिको आम् आदेश नहीं हुआ । किन्तु (ख्यौवा) इसकर ऊकारके स्थानमें वकार करनेसे रूप हुआ (यवल्वि) और द्विवचनमें (यवल्वोः) और बहुवचनमें (यवलूषु) सम्बोधनमें (हे यवलूः) (हे यवल्वौ) (हे यवल्वः) और ईकारान्त वातप्रमी शब्द है । प्रथमाके एकवचनमें (वातप्रमीः) द्विवचनमें (वातप्रमी औ) ऐसा स्थित है यह धातुशब्द न होनेसे (ख्वौवा) इसकर नहीं संगत हुआ । किन्तु (इ यं स्वरे) इस सूत्रकर सिद्धहुआ (वातप्रम्यौ) और बहुवचनमें (वातप्रम्यः) द्वितीयाके एकवचनमें (अम्शसोरस्य) इसकर सिद्धहुआ (वातप्रमीम्) और द्विवचनमें (वातप्रम्यौ) बहुवचनमें (अम्शसोरस्य) (सो नः पुंसः) इन सूत्रोंकर सिद्धहुआ (वातप्रमीन्) तृतीयाके एकवचनमें (वातप्रम्यो) द्विवचनमें (वातप्रमीभ्याम्) बहुवचनमें (वातप्रमीभिः) चतुर्थीके एकवचनम (वातप्रम्ये) द्विवचनमें (वातप्रमीभ्याम्) बहुवचनमें (वातप्रमीभ्यः) पञ्चमीमें (वातप्रम्यः । वातप्रमीभ्याम् । वातप्रमीभ्यः) षष्ठीमें (वातप्रम्यः) (वातप्रम्याः) (वातप्रम्याम्) सप्तमीके एकवचनमें (वातप्रमी) ऐसा स्थित है (सवर्णे दीर्घः सह) (वातप्रमी) द्विवचनमें (वातप्रम्योः) बहुवचनमें (वातप्रमीषु) सम्बोधनके विषे वातप्रमी शब्दको दीर्घ समानान्त होनेसे धि का लोप नहीं हुआ (हे वातप्रमीः) (हे वातप्रम्यौ) (हे वातप्रम्यः) इसी प्रकार ऊकारान्त हूहू शब्द है । प्रथमाके एकवचनमें (हूहूः) द्विवचनमें (हूह्वौ) बहुवचनमें (हूहूः) द्वितीयाके एकवचनमें (हूहूम्) द्विवचनमें (हूह्वौ) बहुवचनमें (हूहून्) तृतीयाके विषे (हूह्वा) (हूहूभ्याम्) (हूहूभिः) चतुर्थीमें (हूह्वे) (हूहूभ्याम्) (हूहूभ्यः) पंचमीमें (हूह्वः) (हूहूभ्याम्) (हूहूभ्यः) षष्ठीमें (हूह्वः) (हूह्वोः) (हूह्वाम्) सप्तमीमें (हूह्वि) (हूह्वोः) (हूहूषु) आमन्त्रणमें (हे हूहूः) (हे हूह्वौ) (हे हूह्वः) ऋकारान्त पुँल्लिग पितृ शब्द है प्रथमाके एकवचनमें (पितृ सू) ऐसा स्थित है ॥

सेरा ।

सेः—आ । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) ऋकारान्तात्परस्य सेरा भवति स च डित् । टिलोपः । पिता । प्रथमाद्विवचने । पितृ औ इति स्थिते ।

भाषार्थ-ऋकार है अन्तमें जिसके ऐसे शब्दके परे जो सि तिसको आ होय और वह आ डित् संज्ञक होय । जैसे (पितृ स्) इसमें ऋकारान्त पितृ शब्दसे परे सिका शुद्ध रूप स् विद्यमान है इस कारण स् के स्थानमें आ किया यह आ डित् संज्ञक है इस कारण (डिति टेः) इस सूत्रकर पूर्व पितृ शब्दके टि संज्ञक ऋकारका लोप करनेसे रूप हुआ (पित् आ) फिर (सवर्णे दीर्घः सह) इस कर सिद्ध हुआ (पिता) और प्रथमाद्विवचनमें (पितृ औ) ऐसा स्थित है ॥

अर् पञ्चसु ।

अर्-पञ्चसु । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) ऋकारो अर् भवति पञ्चसु स्यादिषु परेषु । पितरौ । पितरः ।

भाषार्थ-ऋकार अर् होय पंच स्यादिक विभक्ति वचन पर हुये संते । भाव यह है कि, ऋकारके स्थानमें अर् होजावै सिविभक्तिसे लेकर पांच वचनोंके विषे जैसे (पितृ औ) इसमें ऋकारसे परे स्यादिक पंचवचनसम्बन्धी औ विद्यमान है इसकारण ऋकारके स्थानमें अर् करनेसे रूप सिद्ध हुआ (पितरौ) और बहुवचनमें इसीप्रकार सिद्ध हुआ (पितरः) द्वितीयाके एकवचनमें (पितरम्) और द्विवचनमें (पितरौ) और बहुवचनमें (पितृ अस्) ऐसा स्थित है इसमें (अर् पंचसु) इससूत्रकी प्राप्ति नहीं होसक्ती क्यों कि, द्वितीयाका बहुवचन स्यादिक पांच वचनोंसे भिन्न है तब (अम्शसोरस्य) (सो नः पुंसः) (शसि) इन सूत्रोंकर सिद्ध हुआ (पितॄन्) और तृतीयाके एकवचनमें (ऋ रम्) इस सूत्रकर सिद्धहुआ (पित्रा) द्विवचनमें (पितृभ्याम्) बहुवचनमें (पितृभिः) और चतुर्थीके एकवचनमें (पित्रे) द्विवचनमें (पितृभ्याम्) बहुवचनमें (पितृभ्यः) पञ्चमीके एकवचनमें (पितृ अस्) ऐसा स्थित है । इसमें (ऋतो ङ उः) इस सूत्रकर पंचमीके एकवचनके अकारके स्थानमें डित् संज्ञक उकार करनेसे रूप हुआ (पितृ उ स्) इसमें उकी डित् संज्ञा होनेसे (डिति टेः) इस सूत्रकर रूप सिद्ध हुआ (पितुः) और द्विवचनमें (पितृभ्याम्) और बहुवचनमें (पितृभ्यः) इसी प्रकार षष्ठीके एकवचनमें (ऋतो ङ उः) (डिति टेः) इन सूत्रोंकर रूप सिद्ध हुआ (पितुः) द्विवचनमें (पित्रोः) बहुवचनमें (नुडामः) (नामि) (षुर्नोणोऽनन्ते) इन सूत्रोंकर रूप सिद्ध हुआ (पितॄणाम्) अब सप्तमीएकवचनमें (पितृ ङि) ऐसा स्थित है ॥

ङौ ।

ङौ । एकपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) ऋकारस्य अर् भवति ङौ परे । पितरि । पित्रोः । पितृषु । आमन्त्रणे । पितृ सि । इति स्थिते ।

भाषार्थ-ऋकारको अर् होय ङि पर हुये संते । जैसे पितृ शब्दके ऋकारसे परे सप्तमीका एकवचन ङि विद्यमानहै इसकारण ऋकारके स्थानमें अर् करनेसे रूप हुआ (पितर्इ) फिर (स्वरही०) इसकर रूप सिद्ध हुआ (पितरि) द्विवचनमें (पित्रोः) बहुवचनमें (पितृषु) सम्बोधनके विषे सिकीधि संज्ञा करनेसे पितृ स् ऐसा स्थितहै ॥

धेरर् ।

धेः-अर् । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) ऋकारान्तात्परस्य धेरर् भवति स च डित् । डित्त्वाट्टिलोपः । हे पितः । हे पितरौ । हे पितरः । एवं जामात्रादयः । एवं ऋकारान्तो नृशब्दः । ना । नरौ । नरः । हे नः । हे नरौ । हे नरः । नरम् । नरौ । नॄन् । त्रा । नृभ्याम् । नृभिः । त्रे । नृभ्याम् । नृभ्यः नुः । नृभ्याम् । नृभ्यः । नुः । त्रोः । षष्ठी बहुवचने । नृ आम् । इतिस्थिते । नुडागमः । इति । नुडागमः । नृशब्दस्य नामि वा दीर्घो भवति । नृणाम् । नॄणाम् । नारि । त्रोः । नृषु । कर्तृशब्दस्य पंचसु विशेषः कर्तृ सि इतिस्थिते ।

भाषार्थ-ऋकारहै अन्तमें जिसके ऐसे शब्दसेपरे धिको अर् होय और वह अर् डित्संज्ञक होय अर्को डित्संज्ञक होनेसे पूर्वशब्दकी टिसंज्ञाका लोप होजावै । जैसे (पितृ स्) इसमें ऋकारान्तसे परे धिसंज्ञक सकार विद्यमानहै इसकारण सकारके स्थानमें अर् किया तो रूप हुआ (पितृ अर्) फिर अर्को डित्संज्ञक होनेसे (डितिटेः) इस सूत्रकर पितृशब्दके ऋकारका लोप करनेसे रूप हुआ (पितृ अर्) फिर (स्वरही०) (स्रोर्विसर्गः) इनकर सिद्ध हुआ (हे पितः) द्विवचनमें (हे पितरौ) (हे पितरः) इसीप्रकार ऋकारान्त नृ शब्दहै । प्रथमाके एकवचनमें (सेरा) इस सूत्रकर सिद्ध हुआ (ना) और द्विवचनमें (अर् पंचसु) इसकर (नरौ) ऐसा सिद्ध हुआ बहुवचनमें (नरः) द्वितीयैकवचनमें (नरम्) द्विवचनमें (नरौ) बहुवचनमें (नॄन्) तृतीयामें (त्रा) (नृभ्याम् । नृभिः) चतुर्थीमें (त्रे) (नृभ्याम्) (नृभ्यः) पंचमीमें (नुः । नृभ्याम् । नृभ्यः) षष्ठीके एकवचनमें (नुः) द्विवचनमें (त्रोः) बहुवचनमें (नृ आम्) ऐसा स्थितहै (नुडाम.) इस सूत्रकर नुट् आगम करनेसे (नृनाम्) ऐसा स्थित हुआ । नृशब्दको नामपर हुए संते विकल्प करके दीर्घ होय । इसकर एकजगह दीर्घ किया तौ रूप हुआ (नॄनाम्) फिर (षुर्नोणोनन्ते) इसकर सिद्ध हुआ (नॄणाम्) और जहाँ दीर्घ नहीं हुआ तहाँ (षुर्नोणोनन्ते) इसकर सिद्धहुआ (नृणाम्) सप्तमीएकवचनमें

(ङौ) इस सूत्रकर सिद्ध हुआ (नरि) द्विवचनमें (त्रोः) बहुवचनमें (पुंनोंणोऽ- नन्ते) (नृषु) कर्तृ शब्दको पांच वचनोंके विषे विशेष है । प्रथमाके एकवचनमें (कर्तृ स्) ऐसा स्थितहै ॥

स्तुरार् ।

स्तुः-आर् । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) सकारतृप्रत्ययसंबन्धिन ऋका- रस्यार् भवति पञ्चसु परेषु । कर्त्तार् स् इति स्थिते । यदादेशस्तद्वद्भवति । सेरा । डित्वाट्टिलोपः । कर्त्ता । कर्त्तारौ । कर्त्तारः । हे कर्त्तः । कर्त्तारम् । कर्त्तारौ । कर्तॄन् । पूर्ववत्प्रक्रिया । एवं नप्तृहोतृप्रशास्तृपोतृउद्गातृप्रभृतयः ।

भाषार्थ-सकार और तृ प्रत्ययसम्बन्धी ऋकार तिसको आर् होय स्यादिक पंचविभक्ति वचन पर हुए संते । भाव यह है कि, सकारयुक्त ऋ और तृ प्रत्ययका ऋ इन दोनोंके स्थानमें आर् होय सि विभक्तिसे लेकर पांच विभक्ति वचन पर हुए संते जैसे (कर्तृ स्) इसमें तृ प्रत्यय सम्बन्धी ऋकारसे परे सिका शुद्ध रूप स् विद्यमान है इसकारण ऋके स्थानमें आर् करनेसे रूप हुआ (कर्त्तार् स्) फिर (यदादेशस्तद्वद्भवति) इसकर आर्के स्थानमें ऋ मानकर (सेरा) इस सूत्रकी प्राप्ति करनेसे (कर्त्तार् आ) ऐसा हुआ । फिर आको डित्संज्ञक होनेसे (डिति टेः) इस सूत्रकर कर्त्तारकी टि संज्ञा आकारका लोप करनेसे (स्वरहीनं परेण संयो- ज्यम्) इसकर सिद्ध हुआ (कर्त्ता) और द्विवचनमें (स्तुरार्) इस सूत्रकर सिद्ध हुआ (कर्त्तारौ) बहुवचनमें (कर्त्तारः) द्वितीयाएकवचनमें (कर्त्तारं) द्विवचनमें (कर्त्तारौ) बहुवचनम स्यादिक पँच वचनोंसे भिन्न होनेसे (स्तुरार्) इस सूत्रकी प्राप्ति नहीं होसक्ती । किन्तु (अम्शसोरस्य) (सो नः पुंसः) (शसि) इन सूत्रोंकर सिद्ध हुआ (कर्तॄन्) और तृतीयादिकमें पितृशब्दवत् जाननेयोग्यहैं और सम्बोधनमें सिकि धिसंज्ञा होनेसे (धेरर्) इस सूत्रकर रूप सिद्ध हुआ (हे कर्त्तः) (हे कर्त्तारौ) (हे कर्त्तारः) इसी प्रकार नप्तृ होतृ प्रशास्तृ पोतृ उद्गातृ इत्यादिक शब्द जाननेयोग्य हैं । और इसी प्रकार अन्यभी तृप्रत्ययान्त शब्द जानने योग्यहैं । अर्थवान् तृप्रत्ययका ग्रहण होनेसे अव्युत्पन्न नप्तृ आदिक संज्ञा शब्दोंका ग्रहण नहीं होता है इस कारण यहाँ उनका पृथक् ग्रहण कियाहै क्योंकि, (अर्थवतो ग्रहणेनानर्थकस्य ग्रहणम्) अर्थ-अर्थवान्के ग्रहणमें अनर्थकका ग्रहण नहीं होताहै ॥

उकारान्तस्यापि क्रोष्टुशब्दस्य विशेषः । उकारान्तस्यापि क्रोष्टुशब्दस्य पञ्चस्वधिषु तृप्रत्ययान्तस्येव रूपं वक्तव्यम् । क्रोष्टा । क्रोष्टारौ । क्रोष्टारः । अधिष्विति विशेषणात् । हे क्रोष्टो । हे क्रोष्टारौ । हे क्रोष्टारः । क्रोष्टारम् ।

क्रोष्टारौ । शसि परे तृप्रत्ययवद्भावाभावात्। क्रोष्टून् । तृतीयादौ स्वरादौ तृप्र-त्ययान्तता वा वक्तव्या । क्रोष्ट्रा । क्रोष्टुना । क्रोष्टुभ्याम् । क्रोष्टुभिः । क्रोष्ट्रे । क्रोष्टवे । क्रोष्टुभ्याम् । क्रोष्टुभ्यः। क्रोष्टुः। क्रोष्टोः । क्रोष्टुभ्याम् क्रोष्टुभ्यः। क्रोष्टुः । क्रोष्टोः । क्रोष्ट्रोः । क्रोष्ट्वोः। क्रोष्टूनाम् । कृताकृतप्रसंगी यो विधिः स नित्यः।नित्यानित्ययोर्मध्ये नित्यविधिर्बलवान् । इति प्रथमं नुडागमे कृते हसादित्वात्तृवद्भावो नास्ति । क्रोष्टरि । क्रोष्टौ । क्रोष्ट्रोः । क्रोष्टोः। क्रोष्टुषु ।

भाषार्थ–उकारान्त क्रोष्टु शब्दको विशेषहै । यद्यपि क्रोष्टु शब्द उकारान्तहै तथापि उस क्रोष्टु शब्दका धिवर्जित पांच वचनोंके विषे तृप्रत्ययान्त शब्दके समान रूप वक्तव्यहैं । तात्पर्य यह है कि, तृप्रत्ययहै अन्तमें जिसके ऐसे शब्दके कि, जिस प्रकार रूप धिवर्जित स्यादिक पांच वचनोंमें होतेहैं तिसीप्रकार धिवर्जित स्यादिक पांच वचनोंके विषे क्रोष्टु शब्दके जानने योग्य हैं । तिससे पांच वचनोंके विषे तृप्रत्ययान्त शब्दवत् रूप करनेसे । प्रथमाके एकवचनमें (स्तुरार्) (सेरा) इन सूत्रोंसे रूप सिद्ध हुआ (क्रोष्टा) और द्विवचनके विषे (क्रोष्टारौ) और बहुवचनमें (क्रोष्टारः) अधिषु इस विशेषणसे धिके विषे उकारान्तवत् करनेसे (धौ) इस सूत्रकर रूप सिद्ध हुआ (हे क्रोष्टो) और द्विवचनमें (हे क्रोष्टारौ) बहुवचनमें (हे क्रोष्टारः) द्वितीयाके एकवचनमें (क्रोष्टारम्) द्विवचनमें (क्रोष्टारौ) और द्वितीयाबहुवचनसम्बन्धी शस् पर हुए संते तृप्रत्ययके तुल्य भाव न होनेसे उकारान्त शब्दवत् साधने योग्य हैं । तब (अम्शसोरस्य) (सो नः पुंसः) (शसि) इन सूत्रोंकर सिद्ध हुआ (क्रोष्टून्) स्वर है आदिमें जिसके ऐसे तृतीयादिविभक्ति वचनमें क्रोष्टु शब्दको तृप्रत्ययान्त भाव विकल्प करके वक्तव्यहैं, भाव यहहै कि, जिनके आदिमें स्वर होवै ऐसे तृतीयासे लेकर सप्तमी पर्यन्त विभक्ति वचन पर हुए संते विकल्प करके क्रोष्टु शब्दके रूप तृप्रत्ययान्त शब्दके समान जाननेयोग्य हैं अर्थात् एकजगह भानुशब्दके समान और अन्यत्र कर्तृ शब्दके समान जानने । और हसादिक विभक्तिवचनमें उकारान्तवत् ही जानने जैसे तृतीयाके एकवचनमें तृप्रत्ययान्तवत् (क्रोष्ट्रा) और उकारान्तवत् (क्रोष्टुना) द्विवचनमें (क्रोष्टुभ्याम्) बहुवचनमें (क्रोष्टुभिः) और चतुर्थीएकवचनमें । तृप्रत्यया-न्तवत् (क्रोष्ट्रे) और उकारान्तवत् (क्रोष्टवे) और पंचमीके एकवचनमें (तृप्रत्य-यान्तवत् क्रोष्टुः) और उकारान्तवत् (क्रोष्टोः) और षष्ठीके एकवचनमें । तृप्रत्ययान्तवत् (क्रोष्टुः) और उकारान्तवत् (क्रोष्टोः) और द्विवचनमें तृप्रत्ययान्तवत् (क्रोष्ट्रोः) और उकारान्तवत् (क्रोष्ट्वोः) षष्ठीबहुवचनमें (क्रोष्टु आम्) ऐसा स्थितहै इसमें(नुडामः) इसकर नुट् आगमकी प्राप्ति होतीहै और (तृतीयादौ स्वरादौ तृप्रत्ययान्तता वा

वक्तव्या) इसकर तृप्रत्ययान्त भावकीभी प्राप्ति होवैहै परन्तु प्रथम नुट् आगमही होना चाहिये क्योंकि, कृताकृतप्रसंगी जो विधिहै वह नित्यहै और नित्य तथा अनित्यके मध्यमें नित्यविधि बलवान् होवैहै भाव यहहै कि, कार्यान्तर किये जाने- परभी अथवा कार्यान्तर नहीं कियेजानेपरभी प्रसंगवाला अर्थात् जिसका प्रसंग दोनोंमें ही प्राप्त होवै ऐसा जो विधानहै वह नित्यहै और नित्य तथा अनित्यके बीचमें नित्यविधि बली होताहै । इस न्यायसे तृप्रत्ययभाव किये जानेपर तथा नहीं किये जानेपरभी नुट् आगम नित्य होताहै और उस नुट् आगम किये जानेपर विभक्ति वचनको हसादित्व सिद्ध होगया । इसकारण विभक्तिवचनको स्वरादित्व न होनेसे तृप्रत्ययान्त भाव नहीं होताहै । किन्तु (नामि) इससूत्रकर सिद्ध हुआ एकही रूप (क्रोष्टूनाम्) और सप्तमीके एकवचनमें तृप्रत्ययान्तवत् (क्रोष्टरि) और उकारान्तवत् (क्रोष्टौ) द्विवचनमें तृप्रत्ययान्तवत् (क्रोष्टो) (क्रोष्टोः) बहुवचनमें (क्रोष्टुषु) ऋकारान्ता ऌवर्णान्ता एकारान्ताश्चाप्रसिद्धाः । ऐकारान्तः पुँल्लिंगः सुरै शब्दः । सुरैसि । इति स्थिते ॥

रैस्भि ।

रै-स्भि । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) रैशब्दस्याकारादेशो भवति सकार भकारादौ विभक्तौ परतः । सुराः (स्वरादौ सर्वत्रायादेशः) सुरायौ । सुरायः । सुरायम् । सुरायौ । सुरायः । सुराया । सुराभ्याम् । सुराभिः । इत्यादि । ओकारान्तः पुँल्लिंगो गोशब्दः । गो सि । इति स्थिते ।

भाषार्थ-रैशब्दको आकार आदेश होय सकार तथा भकार है आदिमें जिसके ऐसी विभक्ति पर हुए संते । भाव यहहै कि, रै शब्दसे परे यदि सकारादि अथवा भकारादि विभक्ति पर होवै तो रै शब्दके ऐकारके स्थानमें ओ होवै । जैसे (सुरै स्) इसमें रै शब्दसे परे सकारादि सि विभक्ति परे है इसकारण रै को आ आदेश किया तो वह आदेश (षष्ठीनिर्दिष्टस्यादेशस्तदन्तस्य ज्ञेयः) इसकर ऐकारके स्थानमें हुआ । तब रूप हुआ (सुरास्) फिर (स्रोर्विसर्गः) इस कर सिद्ध हुआ (सुराः) और स्वरादिक विभक्तिमें सब जगह (ऐ आय्) इस सूत्रकर आय् आदेश किया तब द्विवचनमें रूप सिद्ध हुआ (सुरायौ) बहुवचनमें (सुरायः) सम्बोधनमें (हे सुराः) (हे सुरायौ) (हे सुरायः) द्वितीयामें (सुरायम्) (सुरायौ) (सुरायः) तृतीयाएकवचनमें (सुराया) द्विवचनमें (रैस्भि) इस सूत्रकर ऐके स्थानमें आकरनेसे रूप सिद्ध हुआ (सुराभ्याम्) बहुवचनमें (सुराभिः) चतुर्थीमें (सुराये) (सुराभ्याम्) (सुराभ्यः) पंचमीमें (सुरायः) (सुराभ्याम् । सुराभ्यः)

षष्ठीमें (सुरायः) (सुरायोः) (सुरायाम्) सप्तमीमें (सुरायि) (सुरायोः) (सुरासु) ओकारान्त पुँल्लिङ्ग गो शब्दहै प्रथमाके एकवचनमें (गो स्) ऐसा स्थितहै ॥

ओरौ ।

ओः-औ । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) ओकारस्यौकारादेशो भवति पंचसु परेषु । गौः । गावौ । गावः । हे गौः । गो अम् इति स्थिते ।

भाषार्थ-ओकारको औकार आदेश होय स्यादिक पांच वचन पर हुए संते । भाव यहहै कि, ओकारान्त शब्दसम्बन्धी ओकारके स्थानमें औकार आदेश होय सिसे लेकर पांच विभक्तिके वचनोके विषे जैसे (गो स्) इसमें ओकारान्त गो शब्दके ओकारसे परे स्यादिक पंचविभक्तिवचन सम्बन्धि सिका शुद्ध रूप स् विद्यमान है । इसकारण ओकारके स्थानमें औकार करनेसे (स्रोर्विसर्गः) इस सूत्रकर रूप सिद्ध हुआ (गौः) द्विवचनमें स्यादिक पंचविभक्तिवचनसम्बन्धी औ होनेसे ओकारके स्थानमें औकार किया तब रूप हुआ । गौ औ । फिर (औ आव्) इस् सूत्रकर सिद्ध हुआ (गावौ) इसी प्रकार बहुवचनमें (गावः) और द्वितीयाके एकवचनमें (गो अम्) ऐसा स्थितहै ॥

आम्शसि ।

आ-अम्शसि । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) ओकारस्यात्वं भवति आमि शसि च परे । गाम् । गावौ । गाः । गवा । गोभ्याम् । गोभिः । गवे । गोभ्याम् । गोभ्यः (ङस्य) इत्यकारलोपः । गोः । गोभ्याम् । गोभ्यः । गोः । गवोः गो आम् । इति स्थिते ।

भाषार्थ-ओकारको आकार होय अम् और शस् पर हुए संते । भाव यह है कि, ओकारान्त शब्दसम्बन्धी ओकारसे परे अम् अथवा शस् होवै तौ उस ओकारके स्थानमें आकार आदेश होय जैसे (गो अम्) इसमें गो शब्दके ओकारसे परे । अम् । विद्यमान है इसकारण गो शब्दके ओकारके स्थानमें आकार करनेसे रूप हुआ (गा अम्) फिर (सवर्णे दीर्घः सह) इस सूत्रकर सिद्ध हुआ (गाम्) और द्विवचनमें (ओरौ) इस सूत्रकर गो शब्दके ओकारके स्थानमें औकार करनेसे (औ आव्) इस सूत्रकर सिद्ध हुआ (गावौ) और बहुवचनमें (आम्शसि) इस सूत्रकर गोशब्दके ओकारके स्थानमें (आकार करनेसे) (सवर्णे दीर्घः सह) (स्रोर्विसर्गः) इन सूत्रोंकर सिद्ध हुआ (गाः) और तृतीयाएकवचनमें

स्यादिक पंच विभक्ति न होनेसे (ओ अव्) इस सूत्रकर सिद्धहुआ (गवा) द्विवचनमें (गोभ्याम्) वहुवचनमें (गोभिः) चतुर्थीके एकवचनमें (गवे) द्विवचनमें (गोभ्याम) वहुवचनमें (गोभ्यः) पंचमीके एकवचनमें (गो अस्) ऐसा स्थितहै इसमें (ङस्य) इस सूत्रकर अस्के अकारका लोप करनेसे (स्रोर्विसर्गः) इस सूत्रकर सिद्ध हुआ (गोः) द्विवचनमें (गोभ्याम्) वहुवचनमें (गोभ्यः) षष्ठीके एकवचनमें पंचमीके एकवचनवत् (ङस्य) इस सूत्रकर सिद्धहुआ (गोः) द्विवचनमें (गवोः) वहुवचनमें (गो आम्) ऐसा स्थितहै ॥

श्रुतौ गोरामः ।

श्रुतौ[७]—गोः[१]—आमः[६ १]। त्रिपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) श्रुतौ गोशब्दात्परस्यामो नुडागमो भवति । गोनाम् । गवाम् । गवि । गवोः । गोषु । एवं सुद्यो शब्दः । औकारान्तः पुँल्लिंगो ग्लौ शब्दस्तस्य हसादावविशेषः स्वरादावादेशः । ग्लौः । ग्लावौ । ग्लावः । इत्यादि ॥ इति स्वरान्ताः पुँल्लिङ्गाः ॥

भाषार्थ—वेदके विषे गो शब्दसे परे आम्को नुट् आगम होय जैसे (गोआम्) इसमें गो शब्दसे परे आम्को वैदिक होनेसे नुट् आगम करनेपर रूप सिद्ध हुआ (गोनाम्) और जहाँ वैदिक न होवै तहाँ (ओ अव) इस सूत्रकर सिद्ध हुआ (गवाम्) सप्तमीमें (गवि) (गवोः) (गोषु) आमन्त्रणमें (हे गोः) (हे गावौ) (हे गावः) इसी प्रकार सुद्यो शब्द साधने योग्यहै जैसे (सुद्यौः) (सुद्यावौ) (सुद्यावः) द्वितीयामें (सुद्याम्) (सुद्यावौ) (सुद्याः) तृतीयामें (सुद्यवा) (सुद्योभ्याम्) (सुद्योभिः) चतुर्थीमें (सुद्यवे) (सुद्योभ्याम्) (सुद्योभ्यः) (पंचमीमें) सुद्योः (सुद्योभ्याम्) (सुद्योभ्यः) षष्ठीमें (सुद्योः) (सुद्यवोः) (सुद्यवाम्) सप्तमीमें (सुद्यवि) (सुद्यवोः) (सुद्योषु) (हे सुद्यौः) (हे सुद्यावौ) (हे सुद्यावः) औकारान्त पुँल्लिग ग्लौ शब्दहै तिसको हसादि विभक्तिमें विशेष नहीं है और स्वरादि विभक्तिमें (औ आव्) इसकर आव आदेश होय जैसे (ग्लौः) (ग्लावौ) (ग्लावः) (ग्लावम्) (ग्लावौ) (ग्लावः) (ग्लावा) (ग्लौभ्याम्) (ग्लौभिः) (ग्लावे) (ग्लौभ्याम्) (ग्लौभ्यः) (ग्लावः) (ग्लौभ्याम्) (ग्लौभ्यः) (ग्लावः) (ग्लाव्नोः) (ग्लावाम्) (ग्लावि) (ग्लावोः) (ग्लौषु) (हे ग्लौः) (हे ग्लावौ) (हे ग्लावः) इसप्रकार स्वरान्त पुँल्लिग साधनहै ॥

अथ स्वरान्तस्त्रीलिङ्गाः ।

आकारान्तो गंगाशब्दः।तस्य नामसंज्ञायां स्यादयः। प्रथमैकवचने सि।

भाषार्थ-इसके अनन्तर स्वरान्त स्त्रीलिंग कहे जावेहैं आकारान्त गंगा शब्द है तिसकी नामसंज्ञा होनेपर स्यादिक विभक्ति होवैं हैं प्रथमाके एकवचनमें । गंगा सि । ऐसा स्थितहै-॥

आपः ।

आपः । एकपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) आबन्तात्सेर्लोपो भवति । गंगा । द्विवचनमें । गंगा औ इति स्थिते ।

भाषार्थ-आप् प्रत्ययहै अन्तमें जिसके ऐसे शब्दसे परे सि विभक्तिका लोप होय । जैसे (गंगा सि) इसमें आप् प्रत्ययान्त गंगाशब्दसे परे सि विभक्ति विद्यमानहै इसकारण लोप करनेसे रूप सिद्धहुआ (गंगा) और द्विवचनमें (गंगा औ) ऐसा स्थितहै-॥

औरी ।

औः-ई । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) आबन्तात्पर औ ईकारो भवति । गंगे । गंगाः । आमन्त्रणे । गंगा सि । इति स्थिते ।

भाषार्थ-आप्-प्रत्ययान्त शब्दसे परे जो औ सो ईकार होय । भाव यह है कि, जिस शब्दके अन्तमें आप् प्रत्यय होवै उस शब्दसे परे द्विवचनसम्बन्धी औ विद्यमान होवै तो औके स्थानमें ईकार होय जैसे (गंगा औ) इसमें आप् प्रत्ययान्त गंगा शब्दसे परे प्रथमाद्विवचनसम्बन्धी औ विद्यमान है इसकारण औके स्थानमें ई करनेसे रूप हुआ (गंगा ई) फिर (अ इ ए) इस सूत्रकर सिद्धहुआ (गंगे) और बहुवचनमें (सवर्णे दीर्घः सह) (स्रोर्विसर्गः) इन सूत्रोंकर सिद्धहुआ (गंगाः) और सम्बोधनके विषे सिकी धि संज्ञा होनेपर (गंगा सि) ऐसा स्थित हैं-॥

धिरिः ।

धिः-इः । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) आबन्तात्परोधिरिर्भवति। हे गंगे । हे गंगे । हे गंगाः ।

भाषार्थ-आप् प्रत्ययान्त शब्दसे परे जो धि सो इ होय । भाव यह है कि, आप् प्रत्ययान्त शब्दसे परे जो धिसंज्ञक सि तिसके स्थानमें इकार होय जैसे (गंगा सि) इसमें आप् प्रत्ययान्त गंगा शब्दसे परे धिसंज्ञक सि विद्यमान हैं इसकारण धिसंज्ञक सिके स्थानमें इकार करनेसे रूप हुआ (गंगा इ) फिर (अ इ ए) इस सूत्रकर रूप सिद्धहुआ (हे गंगे) द्विवचनमें (हे गंगे) बहुवचनमें (हे गंगाः) ॥

अम्बादीनां धौ ह्रस्वः।

अम्बादीनाम्-धौ-ह्रस्वः। त्रिपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) आबन्तानामम्बादीनां धौ परे ह्रस्वो भवति। हे अम्ब। हे अक्क। हे अल्ल। गंगाम्। गंगे। गंगाः। तृतीयैकवचने। गंगा टा। इति स्थिते।

भाषार्थ-आप् प्रत्यय है अन्तमें जिसके ऐसे अम्बा आदिक शब्द तिनको धि पर हुए संते ह्रस्व होय जैसे (अम्बा सि) इसमें आप् प्रत्यान्त अम्बा शब्दसे परे धिसंज्ञक सि विद्यमान है इस कारण अम्बा शब्दके आकारको ह्रस्व करनेसे रूप हुआ (अम्ब सि) फिर (समानाद्धेर्लोपः) इसकर धिसंज्ञक सिका लोप करनेसे रूप सिद्ध हुआ (हे अम्ब) द्विवचनमें (हे अम्बे) बहुवचनमें (हे अम्बाः) इसीप्रकार सम्बोधनमें (हे अक्क) तथा (हे अल्ल) इत्यादि जानने योग्य हैं। तृतीयाएकवचनमें (गंगा टा) ऐसा स्थित है-॥

टौसोरे।

टौसोः-ए। द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) आबन्तस्य टौसोः परयोरेत्वं भवति। आयादेशः। गंगया। गंगाभ्याम्। गंगाभिः। गंगा ङे इति स्थिते।

भाषार्थ-आप् प्रत्यय है अन्तमें जिसके ऐसे शब्दको टा और ओस् विभक्तिवचन पर हुए संते एकार होय। भाव यह है कि, आप् प्रत्ययान्त शब्दके अन्तस्वरको एकार होय टा और ओस् विभक्तिवचनोंके विषे जैसे (गंगा टा) इसमें आप् प्रत्ययान्त गंगा शब्दसे परे टाका शुद्ध रूप आ विद्यमान है इसकारण गंगा शब्दके आकारको (षष्ठीनिर्दिष्टस्यादेशस्तदन्तस्य ज्ञेयः) इसकर एकार आदेश करनेसे रूप हुआ (गंगे आ) फिर (ए अय्) इस सूत्रकर सिद्ध हुआ (गंगया) द्विवचनमें (गंगाभ्याम्) बहुवचनमें (गंगाभिः) चतुर्थीके एकवचनमें (गंगा ङे) ऐसा स्थित है तिसका हुआ (गंगा ए) फिर- ॥

ङितां यट्।

ङिताम्-यट्। द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) आबन्तात्परेषां ङेङसिङसुङि इत्येतेषां यडागमो भवति। गंगायै। गंगाभ्याम्। गंगाभ्यः। गंगायाः। गंगाभ्याम्। गंगाभ्यः। गंगायाः। गंगयोः। गंगानाम्। आम्ङेः। इत्याम्। गंगायाम्। गंगयोः। गंगासु। एवं खट्वा-मेधा-माला-शाला-दोलाप्रभृतयः।

भाषार्थ-आवन्त शब्दसे परे जो ङे तथा ङसि तथा ङस् तथा ङि इनको यट् आगम होय। भाव यह है कि, आप् प्रत्यय जिसके अन्तमें होवे उस शब्दसे परे जो चतुर्थीएकवचन ङे होय अथवा पंचमीएकवचन ङसि होय अथवा षष्ठीएकवचन ङस् होय अथवा सप्तमीएकवचन ङि होवै तो उस ङे अथवा ङसि अथवा ङस् अथवा ङिको यट् आगम होय जैसे (गंगा ए) इसमें गंगाशब्दसे परे ङेका शुद्ध रूप ए विद्यमानहै इसकारण ङेके शुद्धरूप एको यट् आगम किया तो वह आगम एके आदिमें हुआ क्योंकि आगम टित्संज्ञक है तव रूप हुआ (गंगाय ए) फिर (ए ऐ ऐ) इस सूत्रकर सिद्ध हुआ (गंगायै) द्विवचनमें (गंगाभ्याम्) (गंगाभ्यः) पंचमीएकवचनमें (गंगा ङसि) तिसका (गंगा अस्) ऐसा स्थितहै । इसमें आप् प्रत्ययान्त गंगा शब्दसे परे ङसिका शुद्धरूप अस् विद्यमानहै इसकारण (ङितां यट्) इस सूत्रकर ङसिके शुद्धरूप अस्को यट् आगम करनेसे रूप हुआ (गंगाय अस्) फिर (सवर्णे दीर्घः सह) (स्रोर्विसर्गः) इन सूत्रोंकर सिद्ध हुआ (गंगायाः) द्विवचनमें (गंगाभ्याम्) (गंगाभ्यः) षष्ठीएकवचनमें (गंगा ङस्) तिसका (गंगा अस्) ऐसा स्थितहै इसमें आवन्त गंगा शब्दसे परे ङस्का शुद्धरूप अस् विद्यमानहै इसकारण (ङितां यट्) इस सूत्रकर ङस्के शुद्ध रूप अस्को यट् आगम करनेसे रूप हुआ (गंगाय अस्) फिर (सर्वर्णे दीर्घः सह) (स्रोर्विसर्गः) इनकर सिद्ध हुआ (गंगायाः) द्विवचनमें (टौसोरे) (ए अय्) इन सूत्रोंकर सिद्ध हुआ (गंगयोः) वहुवचनमें (नुडामः) इस सूत्रकर सिद्ध हुआ (गंगानाम्) और सप्तमी एकवचनमें (गंगा ङि) तिसका (गंगा इ) ऐसा स्थित है इसमें आवन्त गंगा शब्दसे परे ङिका शुद्ध रूप इ विद्यमानहै इसकारण (आम्ङेः) इस सूत्रकर ङिके शुद्ध रूप इको आम् आदेश करनेसे रूप हुआ (गंगा आम्) फिर (यदा) देशस्तद्वद्भवति) इसकरके आम्के स्थानमें ङि मानकर (ङितां यट्) इस सूत्रकर-आमको यट् आगम करनेसे (सवर्णे दीर्घः सह) इस सूत्रकर सिद्ध हुआ (गंगायाम) और द्विवचनमें षष्ठीद्विवचनवत् (गंगयोः) वहुवचनमें (गंगासु) इसी प्रकार खट्वा मेधा माला शाला दोला श्रद्धा आदिक शब्द साधने योग्यहैं ॥

आबतः स्त्रियाम् ।

आँप्-अँतः-स्त्रियाम् । त्रिपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) अकारान्तात्स्त्रियां वर्तमानादाप् प्रत्ययो भवति ।

भाषार्थ-स्त्रीलिंगके विषे वर्तमान जो आकारान्त शब्द तिससे आप् प्रत्यय होवै हैं जैसे सर्व आदिक शब्द स्त्रीलिंगवाचकहैं जब इन सर्व आदिक शब्दोंका स्त्री-

लिंगमें रूप साधाजाताहै तब अकारान्त सर्व आदिक शब्दोंसे आप् प्रत्यय होजावै है यथा (सर्वा) प्रथमाएकवचनमें। सर्वास्। ऐसा स्थितहै (आपः) इस सूत्रकर सिद्ध हुआ (सर्वा) द्विवचनके विषे (औरी) इस सूत्रकर सिद्ध हुआ (सर्वे) बहुवचनमें (सवर्णेदीर्घःसह) (स्रोर्विसर्गः) इनकर सिद्ध हुआ (सर्वाः) द्वितीया-एकवचनमें (सर्वाम्) द्विवचनमें (सर्वे) बहुवचनमें (सर्वाः) तृतीयाएकवचनमें (टौसोरे) इस सूत्रकर सिद्ध हुआ (सर्वया) द्विवचनमें (सर्वाभ्याम्) (सर्वाभिः) चतुर्थीएकवचनमें (सर्वा ए) ऐसा स्थितहै फिर (ङितां यट्) इससूत्रकर रूप हुआ (सर्वा य ए) ॥

यटोच्च।

यटः-अंत्-चं। त्रिपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) आबन्तात्सर्वादेः परस्य यटः सुडागमो भवति पूर्वस्य चापोऽकारो भवति। सर्वस्यै। सर्वाभ्याम्। सर्वाभ्यः। सर्वस्याः। सर्वाभ्याम्। सर्वाभ्यः। सर्वस्याः। सर्वयोः। सर्वासाम्। सर्वस्याम्। सर्वयोः। सर्वासु।

भाषार्थ-आबन्त सर्वादिक शब्दसे परे जो यट् तिसको सुट् आगम होय और पूर्वके आप् प्रत्ययसम्बन्धी आकारको अकार होय। भाव यहहै कि, जिसके अन्तमें आप् प्रत्यय होवै उस सर्वादिक शब्दसे परे जो यट् आगम तिसको सुट् आगम होय और पूर्वके आप् प्रत्ययके आकारको अकार होय जैसे (सर्वा ए) इसमें (ङितां यट्) इस सूत्रकर यट् आगम करनेसे रूप हुआ (सर्वाय ए) फिर इसमें आप् प्रत्ययान्त सर्वा शब्दसे परे यट् आगमका शुद्ध रूप य ऐसा है इसकारण यट्के शुद्ध रूप यकारको सुट् आगम किया तो वह आगम यकारके आदिमें हुआ क्योंकि आगम टित्संज्ञकहै तब रूपहुआ (सर्वा स् य ए) फिर पूर्वके आप् प्रत्यय-सम्बन्धी सर्वा शब्दके आकारको अकार किया तब रूप हुआ (सर्वस्य ए) फिर (ए ऐ ऐ) (स्वरहीनं परेण संयोज्यम्) इस सूत्रकर सिद्ध हुआ (सर्वस्यै) द्विवचनमें (सर्वाभ्याम्) बहुवचनमें (सर्वाभ्यः) पंचमीएकवचनमें (सर्वा अस्) ऐसा स्थितहै इसमें (ङितां यट्) इस सूत्रकर रूप हुआ (सर्वाय अस्) फिर (यटोच्च) इस सूत्रकर यट्को सुट् आगम करनेसे और पूर्व सर्वाशब्दके आकारको अकार करनेसे रूप हुआ (सर्व स् य अस्) फिर (सवर्णे दीर्घः सह) (स्वरहीनं परेण संयोज्यम्) (स्रोर्विसर्गः) इनकर रूप सिद्ध हुआ (सर्वस्याः) द्विवचनमें (सर्वाभ्याम्) बहुवचनमें (सर्वाभ्यः) और षष्ठीएकवचनमें पंचमी एकवचनवत् सिद्ध हुआ (सर्वस्याः) और द्विवचनमें (टौसोरे) (ए अय) इनकर सिद्ध हुआ (सर्वयोः) और बहुवचनमें (सुडामः) इस सूत्रकर आम्को सुट् आगम करनेसे रूप सिद्ध हुआ (सर्वासाम्) सप्तमीएकवचनमें (सर्वा इ) ऐसा स्थितहै इसमें (आम्ङेः)

इस सूत्रकर ङिके शुद्ध रूप इको आम् आदेश किया तव रूप हुआ (सर्वा आम्) फिर इसमें (यदादेशस्तद्वद्भवति) इसकर आम्को ङिमानकर (ङितां यट्) इसकर यट् आगम किया तव रूप हुआ (सर्वा य इ) फिर (यटोऽच्च) इसकर यट्को सुट् आगम करनेसे और पूर्व सर्वा शब्दके आकारको अकार करनेसे रूप हुआ (सर्वस् य आम्) फिर (सवर्णे दीर्घः सह) (स्वरहीनं परेण संयोज्यम्) इनकर सिद्ध किया (सर्वस्याम्) और द्विवचनमें (टौसोरे) (ए अय्) इन करके सिद्ध हुआ (सर्वयोः) और वहुवचनमें सिद्ध हुआ (सर्वासु) और सम्बोधनके विषे गंगाशब्दवत् जानना । इसी प्रकार आप्प्रत्ययान्त विश्वादिक शब्द साधने योग्यहैं । परन्तु उभय शब्द स्त्रीलिंगमें ईप् प्रत्ययान्त होताहै उसके रूप नदीवत् जानने योग्यहैं ॥ (१)

आवन्तो जराशब्दः । जरायाः स्वरादौ जरस् वा वक्तव्यः । जरा । जरसौ । जरे । जरसः । जराः । हे जरे । हे जरसौ । हे जरे । हे जरसः । हे जराः । जरसम् । जराम् । जरे । जरसौ । जरसः । जराः । जरसा । जरया । जराभ्याम् । जराभिः । जरसे । जरायै । जराभ्याम् । जराभ्यः । जरसः । जरायाः । जराभ्याम् । जराभ्यः । जरसः । जरायाः । जरसोः । जरयोः । जरसाम् । जराणाम् । जरसि । जरायाम् । जरसोः । जरयोः । जरासु ।

भाषार्थ-आप्प्रत्ययान्त स्त्रीलिंग जराशब्दहै जरा शब्दको स्वरादि विभक्ति वचनमें जरस् आदेश विकल्प करके वक्तव्यहै । भाव यहहै कि, स्वरहै आदिमें जिसके ऐसे विभक्तिवचनके विषे जराके स्थानमें जरस् विकल्प करके होजावैहै जैसे(जरा सि) इसमें जरा शब्दसे परे हसादि विभक्तिवचन विद्यमानहै इसकारण जरस् आदेश नहीं हुआ किन्तु (आपः) इस सूत्रकर सिका लोप करनेसे रूप सिद्ध हुआ (जरा) और द्विवचनमें (जरा औ) ऐसा स्थितहै इसमें जरा शब्दसे परे स्वरादि विभक्ति

---

(१) द्वितीयातृतीयाशब्दयोर्ङित्सुवासर्वादित्वम् । अर्थ-द्वितीया और तृतीया शब्दको ङित् वचन अर्थात् ङे, ङसि, ङस्, ङि । इन विभक्ति वंचनोंमें विकल्प करके सर्वादिकता होवै है । भाव यहहै कि, द्वितीया तृतीया शब्दोंके ङे ङसि ङस् ङि इन विभक्ति वचनोंके विषे एक जगह सर्वा शब्दके समान और दूसरी जगह गंगा शब्दके समान रूप जानने योग्यहैं जैसे (द्वितीयस्यै) (द्वितीयायै) (तृतीयस्यै) (तृतीयायै) (द्वितीयस्याः) (द्वितीयायाः) (तृतीयस्याः) (तृतीयायाः) इसी-प्रकार षष्ठीएकवचनमें जानने और सप्तमीएकवचनमें (द्वितीयस्याम्) (द्वितीयायाम्) (तृतीयस्याम्) (तृतीयायाम्) और द्विशब्दको (त्यदादेष्टेरः स्यादौ) इस सूत्रकर अकार करनेपर (आवतः स्त्रियाम्) इस सूत्रकर आप् प्रत्यय कर गंगा शब्दके द्विवचनके समान रूप साधने योग्यहैं । इत्यलम् ।

वचन औ विद्यमानहै इसकारण जरा शब्दको विकल्प करके जरस् आदेश करनेसे रूप हुआ (जरस् औ) फिर (स्वरहीनं परेण संयोज्यम्) इस करके रूप सिद्ध हुआ (जरसौ) और जहाँ जरस् आदेश नहीं हुआ तहाँ (औरी) (अ इ ए) इन सूत्रोंकर रूप सिद्ध हुआ (जरे)इसी प्रकार बहुवचनमें स्वरादि विभक्ति वचन जस् होनेसे जरस् आदेश कर रूप सिद्ध किया (जरसः) और जहाँ नहीं हुआ तहाँ गंगा शब्दवत् सिद्ध हुआ (जराः) सम्बोधनमें धिके विषे (धिरिः) इस सूत्रकर रूप सिद्ध हुआ (हे जरे) और द्विवचनमें (हे जरसौ, हे जरे) और बहुवचनमें (हे जरसः) (हे जराः) इससे पश्चात् अन्य विभक्तिवचनोंमें जहाँ कि, जरस् आदेश न होवै तहाँ गंगाशब्दवत् साधने योग्यहैं और जहाँ स्वरादि विभक्तिवचनोंमें विकल्प करके जरा शब्दको जरस् आदेश होजावै तहाँ (स्वरहीनं परेण संयोज्यम्) इसकर साधने योग्यहैं यह जराशब्द आप् प्रत्ययान्तहै इसकारण इसकी साधना गंगाशब्दवत्है और सोमपा क्षीरपा आदिक आप् प्रत्ययान्त नहीं किन्तु आकारान्त क्विप्प्रत्ययान्तहैं इसकारण इनका साधन पुँल्लिगवत् होताहै ॥

इकारान्तः स्त्रीलिंगो बुद्धिशब्दः । तस्य च प्रथमाद्वितीययोर्हरिशब्दवत्प्रक्रिया । बुद्धिः । बुद्धी । बुद्धयः । हे बुद्धे । हे बुद्धी । हे बुद्धयः । बुद्धिम् । बुद्धी । बुद्धीः । बुद्ध्या । बुद्धिभ्याम् । बुद्धिभिः ।

भाषार्थ-इकारान्त स्त्रीलिंग बुद्धि शब्द है उसकी प्रथमा और द्वितीया विभक्तियोंके विषे हरिशब्दवत् प्रक्रिया है । भाव यह है कि, बुद्धि शब्दके रूप प्रथमा द्वितीया विभक्तियोंमें हरि शब्दवत् जानने जैसे प्रथमाएकवचनमें (स्रोर्विसर्गः) इस सूत्रकर सिद्ध हुआ (बुद्धिः) द्विवचनमें) (औ यू) (सवर्णे दीर्घः सह) इन करके सिद्ध हुआ (बुद्धी) बहुवचनमें (ए ओ जसि) (ए अय्) (स्रोर्विसर्गः) इन कर सिद्ध हुआ (बुद्धयः) और सम्बोधनके विषे (समानाद्धेर्लोपोऽधातोः) (धौ)इन करके सिद्ध हुआ (हे बुद्धे) द्विवचनमें (हे बुद्धी) बहुवचनमें (हे बुद्धयः) द्वितीया एकवचनमें (अम्शसोरस्य) इसकर सिद्ध हुआ (बुद्धिम्) और द्विवचनमें प्रथमाद्विवचनवत् (बुद्धी) और बहुवचनमें (बुद्धि अस्) ऐसा स्थित है इसमें (अम्शसोरस्य) इसकर अस्के अकारका लोप करनेसे रूप हुआ (बुद्धि स्) फिर (सोनः पुंसः) इस सूत्रकी नहीं प्राप्ति हुई क्योंकि बुद्धि शब्द स्त्रीलिंग है किन्तु (शसि) इस सूत्रकर बुद्धि शब्दको दीर्घ करनेसे (स्रोर्विसर्गः) इसकर सिद्ध हुआ (बुद्धीः) तृतीया एकवचनमें (बुद्धि आ) ऐसा स्थित है इसमें (टानास्त्रियाम्) इस सूत्रकी स्त्रीलिंग होनेसे नहीं प्राप्ति हुई किन्तु (इयं स्वरे) इस सूत्रकर रूप सिद्ध

हुआ (बुद्ध्या) द्विवचनमें (बुद्धिभ्याम्) वहुवचनमें (बुद्धिभिः) चतुर्थीएकवचनमें (बुद्धि ए) ऐसा स्थित है ॥

इदुद्भ्याम् ।

ईदुद्भ्याम् । एकपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) स्त्रियांवर्त्तमानाभ्यामिकारोकाराभ्यां परेषां ङितां वचनानां वा अडागमो भवति । बुद्ध्यै । बुद्धये । बुद्धिभ्याम् । बुद्धिभ्यः । बुद्ध्याः । बुद्धेः । बुद्धिभ्याम् । बुद्धिभ्यः । बुद्ध्याः । बुद्धेः । बुद्ध्योः बुद्धीनाम् ।

भाषार्थ–स्त्रीलिंगके विषे वर्त्तमान जो इकार और उकार तिनसे परे जो ङित् वचन अर्थात् ङे, ङसि, ङस्, ङि यह विभक्ति वचन तिनको विकल्प करके अट् आगम होय जैसे (बुद्धि ए) इसमें स्त्रीलिंगके विषे वर्त्तमान जो बुद्धि शब्दका इकार तिससे परे ङेका शुद्ध रूप ए विद्यमान है इसकारण ङेके शुद्ध रूप एको अट् आगम किया तो वह आगम एके आदिमें हुआ क्योंकि आगम टित्संज्ञक है तव रूप हुआ (बुद्धि अ ए) फिर (इ यं स्वरे) (ए ऐ ऐ) इन सूत्रोंकर सिद्ध हुआ (बुद्ध्यै) और जहाँ अट् आगम नहीं हुआ तहाँ (ङिति) (ए अय्) इनकर सिद्ध हुआ (बुद्धये) द्विवचनमें (बुद्धिभ्याम्) वहुवचनमें (बुद्धिभ्यः) पंचमीएकवचनमें (इदुद्भ्याम्) इस सूत्रकर ङसिके शुद्ध रूप अस्को अट् आगम करनेपर (इ यं स्वरे) (सवर्णे दीर्घः सह) (स्रोर्विसर्गः) इन सूत्रोंकर रूप सिद्ध हुआ (बुद्ध्याः) और जहाँ अट् आगम नहीं हुआ तहाँ (ङिति) (ङस्य) (स्रोर्विसर्गः) इन सूत्रोंकर रूप सिद्ध हुआ (बुद्धेः) द्विवचनमें (बुद्धिभ्याम्) वहुवचनमें (बुद्धिभ्यः) षष्ठी एकवचनमें पंचमी एकवचनवत् (बुद्ध्याः) (बुद्धेः) द्विवचनमें (इ यं स्वरे) इसकर सिद्ध हुआ (बुद्ध्योः) वहुवचनमें (नुडामः) (नामि) इन सूत्रोंकर सिद्ध हुआ (बुद्धीनाम्) सप्तमीएकवचनमें । (बुद्धि इ) ऐसा स्थित है ॥

स्त्रियां योः ।

स्त्रियाम्–योः । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) इश्च उश्च युः तस्मादिवर्णान्तादुवर्णान्ताच्च स्त्रियां वर्त्तमानात्परस्य ङेराम्वा भवति । बुद्ध्याम् । बुद्धौ । बुद्ध्योः । बुद्धिषु । एवं मतिभूतिधृतिरुचिप्रभृतयः ।

भाषार्थ–स्त्रीलिंगके विषे वर्त्तमान जो इवर्ण तथा उवर्ण तिससे परे जो ङि तिसको आम् आदेश होय । और वाके ग्रहणसे नदी वधू जम्बू आदिक शब्दोंसे भी परे ङिको

आम् होय और अट् आगमके साहचर्यसे जिस पक्षमें कि, अट् आगम होय उसीमें ङिको आम् आदेश होय (जैसे बुद्धि इ) इसमें स्त्रीलिंगके विषे वर्त्तमान बुद्धि शब्दके इकारसे सप्तमीएकवचनसम्बन्धी ङिका शुद्धरूप इ विद्यमान है इसकारण इको आम् आदेश करनेसे रूप हुआ (बुद्धि आम्) फिर (यदादेशस्तद्वद्भवति) इसकर आम्को ङिमानकर (इदुद्भ्याम्) इस सूत्रकर अट् आगम किया तब रूप हुआ (बुद्धि अ आम्) यह अट आगम जहाँ होता है तहाँही ङिको आम् आदेश होता है फिर (इ यं स्वरे) (सवर्णे दीर्घः सह) इन करके रूप सिद्ध हुआ (बुद्ध्याम्) और जहाँ कि, अट् आगम नहीं हुआ तहाँ ङिको आम् आदेश नहीं हुआ तहाँ (ङेरौ डित्) इस सूत्रकर रूप सिद्ध हुआ (बुद्धौ) द्विवचनमें (बुद्ध्योः) वहुवचनमें (किलातथः सः कृतस्य) इसकर सिद्ध हुआ (बुद्धिषु) इसीप्रकार मति तथा भूति तथा धृति तथा रुचि आदिक शब्द साधनेयोग्य हैं ॥

एवं धेनुरज्जुप्रभृतयोप्युकारान्ता एतैरेव सूत्रैः सिध्यन्ति । धेनुः । धेनू । धेनवः । हे धेनो । हे धेनू । हे धेनवः । धेनुम् । धेनू । धेनूः । धेन्वा । धेनुभ्याम् । धेनुभिः । धेन्वै । धेनवे । धेनुभ्याम् । धेनुभ्यः । धेन्वाः । धेनोः । धेनुभ्याम् । धेनुभ्यः । धेन्वाः । धेनोः । धेन्वोः । धेनूनाम् । धेन्वाम् । धेनौ । धेन्वोः । धेनुषु ।

भाषार्थ–इसीप्रकार उकारान्त स्त्रीलिंग धेनु रज्जु आदिक शब्दभी इन्हीं सूत्रोंकर सिद्ध होते हैं जैसे प्रथमा एकवचनमें (स्रोर्विसर्गः) इस सूत्रकर सिद्ध हुआ (धेनुः) द्विवचनमें (औ यू)(सवर्णे दीर्घः सह) इनकर सिद्ध हुआ (धेनू) वहुवचनमें (एओ जसि)(ओअव) इनकर सिद्ध हुआ (धेनवः) और सम्बोधनके विषे (समानाद्धेर्लोपोऽधातोः) (धौ) इन सूत्रोंकर सिद्ध हुआ (हे धेनो) द्विवचनमें (हे धेनू) वहुवचनमें (हे धेनवः) द्वितीया एकवचनमें (अम्शसोरस्य) इसकर सिद्ध हुआ (धेनुम्) द्विवचनमें प्रथमाद्विवचनवत् (धेनू) वहुवचनमें (अम्शसोरस्य)(शसि) इन सूत्रोंकर सिद्ध हुआ (धेनूः) तृतीयाएकवचनमें (उ वम्) इस सूत्रकर सिद्ध हुआ (धेन्वा) द्विवचनमें (धेनुभ्याम्) वहुवचनमें (धेनुभिः) चतुर्थीएकवचनमें (इदुद्भ्याम्) इसकर अट् आगम करनेसे (उ वम्) (ए ऐ ऐ) इन सूत्रोंकर सिद्ध हुआ (धेन्वै) और जहाँ अट् आगम नहीं हुआ तहाँ (ङिति) (ङस्य) (ओ अव) इनकर सिद्ध हुआ (धेनवे) द्विवचनमें (धेनुभ्याम्) वहुवचनमें (धेनुभ्यः) पंचमीएकवचनमें (इदुद्भ्याम्) इस सूत्रकर अट् आगम करनेसे (उ वम्) (सवर्णे दीर्घः सह) (स्रोर्विसर्गः) इनकर सिद्ध हुआ (धेन्वाः) और जहाँ अट् आगम नहीं हुआ तहाँ (ङिति) (ङस्य) (स्रोर्विसर्गः) इन सूत्रोंकर सिद्ध

हुआ (धेनोः) द्विवचनमें (धेनुभ्याम्) बहुवचनमें (धेनुभ्यः) षष्ठीएकवचनमें पंचमीएकवचनवत् (धेन्वाः) (धेनोः) द्विवचनमें (उ वम्) इस सूत्रकर सिद्ध हुआ (धेन्वोः) बहुवचनमें (नुडामः) (नामि) इन सूत्रोंकर सिद्ध हुआ (धेनूनाम्) सप्तमीएकवचनमें (स्त्रियां योः) इस सूत्रकर ङिको आम् आदेश करनेपर (इदुद्भ्यामू) इस सूत्रकर अट् आगम करनेसे (उ वम्) (सवर्णे दीर्घः सह) इन सूत्रोंकर रूप सिद्ध हुआ (धेन्वाम्) और जहाँ अट् आगम नहीं किया तहाँ ङिको आम् आदेश भी नहीं हुआ किन्तु (ङेरौ डित्) इस सूत्रकर सिद्ध हुआ (धेन्वोः) और बहुवचनमें (किलातषः सः कृतस्य) इसकर सिद्ध हुआ (धेनुषु) ॥

ईकारन्तः स्त्रीलिंगो नदीशब्दः (हसेपः सेर्लोपः) नदी । नद्यौ नद्यः ।

भाषार्थ-ईकारान्त स्त्रीलिंग नदी शब्द है । प्रथमाएकवचनमें (हसेपः सेर्लोपः) इस सूत्रकर सिद्ध हुआ (नदी) द्विवचनमें (इ यं स्वरे) इस सूत्रकर सिद्ध-हुआ (नद्यौ) बहुवचनमें (नद्यः) सम्बोधनमें सिकी धिसंज्ञा करनेसे (नदी स) ऐसा स्थित है- ॥

धौ ह्रस्वः ।

धौ[१]-ह्रस्वः । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) इवर्णोवर्णयोरधातोः स्त्रियां धौ परे ह्रस्वो भवति । हे नदि । हे नद्यौ । हे नद्यः । नदीम् । नद्यौ । नदीः नद्या । नदीभ्याम् । नदीभिः ।

भाषार्थ-अधातु अर्थात् धातुवर्जित शब्दके जो इवर्ण तथा उवर्ण तिनको स्त्री-लिंगके विषे धि परहुए संते हस्व होय । भाव यह है कि, जिस शब्दके धातुवाचक क्विप् आदिक प्रत्यय अन्तमें न होवें और जिस शब्दके इवर्ण तथा उवर्णके स्थानमें इय् तथा उव् नहीं होतेहै उस शब्दके तथा स्त्री शब्दके (१) इवर्ण तथा उवर्णको स्त्रीलिंगमें हस्व होजावे धि विषयमें जैसे (नदीस्) इसमें अक्विप् प्रत्ययाद्यन्त नदीशब्दके ईकारसे परे धिसंज्ञक सि विद्यमानहै इसकारण नदी शब्दके ईकारको स्त्रीलिंग होनेसे हस्व करनेपर रूप हुआ (नदिस्) फिर (समानाद्धेर्लोपो धातोः) इसकर सिद्धहुआ (हे नदि) द्विवचनमें (हे नद्यौ) बहुवचनमें (हे नद्यः) द्वितीया-एकवचनमें (अम्शसोरस्य) इससूत्र कर सिद्धहुआ (नदीम्) द्विवचनमें (नद्यौ) बहुवचनमें (अम्शसोरस्य) (स्रोर्विसर्गः) इन सूत्रोंकर सिद्धहुआ (नदीः) तृतीया-

---

(१) ह्रस्वकरनेपर (धौ) इस सूत्रकी प्राप्तिके निषेध करनेके लिये वृत्तिमें ईकारके स्थानमें इवर्ण तथा ऊकारके स्थानमें उवर्णका ग्रहणहै । इति ॥

एकवचनमें (इ यं स्वरे) इसकर सिद्धहुआ (नद्या) द्विवचनमें (नदीभ्याम्) बहुवचनमें (नदीभिः) चतुर्थीएकवचनमें (नदी ए) ऐसा स्थितहै ॥

ङितामट्।

ङितांम्–अट्। द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) स्त्रियामीकारान्तादूकारान्ताच्च ङितां वचनानामडागमो भवति। नद्यै । नदीभ्याम् । नदीभ्यः । नद्याः। नदीभ्याम्। नदीभ्यः। नद्याः। नद्योः। नदीनाम्। नद्याम्। नद्योः। नदीषु । एवं गौरी–सरस्वती–ब्राह्मणी–कुमारी–प्रभृतयः। (१)

भाषार्थ–स्त्रीलिंगके विषे वर्त्तमान जो ईकारान्त तथा ऊकारान्त शब्द तिससे परे जो ङित् वचन अर्थात् ङे, ङसि, ङस्, ङि। यह विभक्तिवचन तिनको अट् आगम होय जैसे (नदी ए) इसमें स्त्रीलिंग ईकारान्त नदी शब्दसे परे ङेका शुद्ध रूप ए विद्यमानहै इसकारण ङेके शुद्ध रूप एको अट् आगम किया तब वह आगम एके आदिमें हुआ क्योंकि आगम टित्संज्ञकहै तब रूप हुआ (नदी अ ए) फिर (इ यं स्वरे) (ए ऐ ऐ) इन सूत्रोंकर सिद्धहुआ (नद्यै) द्विवचनमें (नदीभ्याम्) बहुवचनमें (नदीभ्यः) पंचमीके एकवचनमें (ङितामट्) इस सूत्रकर अट् आगम करनेपर (इ यं स्वरे) (सवर्णे दीर्घः सह) (स्रोर्विसर्गः) इन सूत्रोंकर रूप सिद्धहुआ (नद्याः) द्विवचनमें (नदीभ्याम्) बहुवचनमें (नदीभ्यः) षष्ठीएकवचनमें पंचमीएकवचनवत् सिद्ध हुआ (नद्याः) द्विवचनमें (इ यं स्वरे) इसकर सिद्ध हुआ (नद्योः) बहुवचनमें (नुडामः) इस सूत्रकर सिद्ध हुआ (नदीनाम्) सप्तमीएकवचनमें (नदी इ) ऐसा स्थितहै इसमें (स्त्रियां योः) इस सूत्रकर ङिके शुद्ध रूप इको आमादेश किया तब रूप हुआ (नदी आम्) फिर (यदादेशस्तद्वद्भवति) इस करके आम्को ङिमानकर (ङितामट्) इस सूत्रकर अट् आगम करनेपर (इ यं स्वरे) (सवर्णे दीर्घः सह) इन सूत्रोंकर सिद्ध हुआ (नद्याम्) द्विवचनमें (इ यं स्वरे) इसकर सिद्ध हुआ (नद्योः) बहुवचनमें (किलातषः सः कृतस्य) इसकर सिद्ध हुआ (नदीषु) इसी प्रकार गौरी–सरस्वती–ब्राह्मणी–कुमारी आदि स्त्रीलिंग शब्द साधने योग्यहैं ॥

लक्ष्मीशब्दस्य ईबन्तत्वाभावात्सेर्लोपोनास्ति। लक्ष्मीः । लक्ष्म्यौ । लक्ष्म्यः। हे लक्ष्मि। शेषं नदीवत्। स्त्रीशब्दस्य ईबन्तत्वात्सेर्लोपोस्ति–स्त्री।

---

(१) (अवीतंत्रीतरीलक्ष्मीह्रीधीश्रीणामुणादितः। अपि स्त्रीलिंगवृत्तानां सिलोपो न कदाचन) अर्थ–स्त्रीलिंगके विषे वर्त्तनेवालेभी उणादिक अवी–तंत्री–तरी–लक्ष्मी। ह्री–धी–श्री इन शब्दोंके सिका लोप कदापि नहीं होताहै। इति ॥

भाषार्थ-लक्ष्मी शब्दको ईप् प्रत्ययान्तत्व न होनेसे सिका लोप नहीं होता है। किन्तु (स्रोर्विसर्गः) इसकर रूप सिद्ध हुआ (लक्ष्मीः) द्विवचनके विषे (इ यं स्वरे) इस सूत्रकर सिद्ध हुआ (लक्ष्म्यौ) और बहुवचनमें (लक्ष्म्यः) और सम्बोधनके विषे (धौ ह्रस्वः) इससूत्रकर रूप सिद्धहुआ (हे लक्ष्मि) द्विवचनमें (हे लक्ष्म्यौ) वहुवचनमें (हे लक्ष्म्यः) शेष विभक्ति वचनोंमें नदीशब्दके समान रूप जानने । स्त्री शब्दको ईप् प्रत्ययान्त होनेसे सिका लोप होताहै (स्त्री) द्विवचनमें (स्त्री औ) ऐसा स्थित है ॥

स्त्रीभ्रुवोः ।

स्त्रीभ्रुवोः । एकपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) स्त्रीशब्दस्य भ्रूशब्दस्य च स्वरे परे युवौ भवतः । स्त्रियौ । स्त्रियः । हे स्त्रि ।

भाषार्थ-स्त्रीशब्द और भ्रूशब्दको स्वरपर होत संते इय् उव् होवें हैं। भाव यहहै कि, स्त्री शब्दके ईकारको स्वर पर हुए संते इय् और भ्रूशब्दके ऊकारको स्वर पर हुए संते उव् होय जैसे (स्त्री औ) इसमें स्त्री शब्दसे परे प्रथमाद्विवचनसम्वधी औ विद्यमानहै इसकारण स्त्रीशब्दके ईकारको इय् करनेसे रूप हुआ (स्त्रिय् औ) फिर (स्वरहीनं परेण संयोज्यम्) इसकरके रूप सिद्ध हुआ (स्त्रियौ) इसी प्रकार वहुवचनमें रूप सिद्ध हुआ (स्त्रियः) सम्वोधनके विषे सिकी धिसंज्ञा करनेपर (धौ ह्रस्वः) (समानाद्धेर्लोपोऽधातोः) इनसूत्रोंकर रूप सिद्ध हुआ (हे स्त्रि) द्वितीयाएकवचनमें (स्त्री अम्) ऐसा स्थितहै ॥

वाम्शसि ।

वाँ-अँम्शसि । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) स्त्रीशब्दस्य अमि शसि च परे वा इय् भवति । स्त्रियम् । स्त्रीम् । स्त्रियौ । स्त्रियः । स्त्रीः । स्त्रिया । स्त्रीभ्यां स्त्रीभिः । शेषं नदीवत् ।

भाषार्थ-स्त्री शब्दको अम् तथा शस् पर हुए संते विकल्प करके इय् होय। भाव यहहै कि, स्त्री शब्दके ईकारको विकल्प करके इय् होय अम् तथा शस् विभक्ति वचन पर हुए संते जैसे (स्त्री अम्) इसमें स्त्री शब्दसे परे अम् विद्यमानहै इसकारण विकल्प करके स्त्रीशब्दके ईकारको इय् किया तव रूप हुआ (स्त्रिय् अम्) फिर (स्वरहीनं परेण संयोज्यम्) इसकर सिद्ध हुआ (स्त्रियम्) और जहाँ इय् आदेश नहीं हुआ तहाँ (अम्शसोरस्य) इस सूत्रकर रूप सिद्ध हुआ (स्त्रीम्) द्विवचनमें प्रथमाद्विवचनवत् (स्त्रियौ) और शसके विषे (वाम्शसि) इसकर एक

जगह इयू करनेसे रूप हुआ (स्त्रियः) और जहाँ इयू आदेश नहीं हुआ तहाँ (अ-म्शसोरस्य) इसकर सिद्ध हुआ (स्त्रीः) तृतीयाएकवचनमें (स्त्रीभ्रुवोः) इस सूत्रकर रूप सिद्ध हुआ (स्त्रिया) द्विवचनमें (स्त्रीभ्याम्) वहुवचनमें (स्त्रीभिः) चतुर्थीएकवचनमें (स्त्री ए) ऐसा स्थितहै इसमें स्त्री शब्दसे परे ङेका शुद्ध रूप ए विद्यमानहै इसकारण (ङिताम‌ट्) इससूत्रकर अट् आगम करनेसे रूप हुआ (स्त्री अ ए) फिर (स्त्रीभ्रुवोः) इस सूत्रकर इयू करनेसे रूप हुआ (स्त्रि य् अ ए) फिर (स्वरहीनंपरेण संयोज्यम्) (ए ऐ ऐ) इन सूत्रोंकर सिद्ध हुआ (स्त्रियै) द्विवचनमें (स्त्रीभ्याम्) वहुवचनमें (स्त्रीभ्यः) पंचमीएकवचनमें (ङिताम‌ट्) इसकर अट् आगम करनेपर (स्त्रीभ्रुवोः) इस सूत्रकर स्त्रीशब्दके ईकारको इयू किया तब रूप हुआ (स्त्रि य् अ अस्) फिर (स्वरहीनं परेण संयोज्यम्) (सवर्णे दीर्घः सह) (स्रोर्विसर्गः) इन सूत्रोंकर रूप सिद्ध हुआ (स्त्रियाः) द्विवचन वहुवचनमें चतुर्थीके द्विवचन वहुवचनवत् रूप जानना और षष्ठीएकवचनमें पंचमीएकवचनवत् रूप जानना और द्विवचनमें (स्त्रीभ्रुवोः) (स्रोर्विसर्गः) इन सूत्रोंकर सिद्ध हुआ (स्त्रियोः) और षष्ठीवहुवचनमें (स्त्री आम्) ऐसा स्थितहै इसमें (नुडामः) तथा (स्त्रीभ्रुवोः) इन दोनों सूत्रोंकी प्राप्ति होतीहै परन्तु विशेष होनेसे (नुडामः) इस सूत्रकीही प्रथम प्राप्ति हुई फिर इस पर होनेसे (स्त्रीभ्रुवोः) इस सूत्रकी नहीं प्राप्ति हुई तब रूप हुआ (स्त्री न् आम्) फिर (स्वरहीनं परेण संयोज्यम्) (पुनोर्णोऽनन्ते) इन सूत्रोंकर सिद्ध हुआ (स्त्रीणाम्) सप्तमीके एकवचनमें (स्त्रियां योः) इस सूत्रकर ङिको आम् आदेश करनेपर (यदादेशस्तद्वद्भवति) इसकरके आम्को ङिमानकर (ङिताम‌ट्) इस सूत्रकर अट् आगम किया तब रूप हुआ (स्त्री अ आम्) फिर (स्त्रीभ्रुवोः) इस सूत्रकर इयू करनेपर (स्वरहीनं परेण संयोज्यम्) (सवर्णे दीर्घः सह) इनकरके सिद्ध हुआ (स्त्रियाम्) द्विवचनमें (स्त्रियोः) वहुवचनमें (क्विलात्षः सः कृतस्य) इस सूत्रकर सिद्ध हुआ (स्त्रीषु) ॥

ईकारान्तः स्त्रीलिंगः श्रीशब्दः । अनीवन्तत्वात्सेर्लोपो नास्ति । श्रीः । श्रियौ । श्रियः । श्रियम् । श्रियौ । श्रियः । श्रिया । श्रीभ्याम् । श्रीभिः ।

भाषार्थ–ईकारान्त स्त्रीलिंग श्रीशब्दहै ईप् प्रत्ययान्त न होनेसे सिका लोप नहीं होताहै (श्रीः) द्विवचनमें क्विप् प्रत्ययान्त होनेसे (य्वोर्धातोरियुवौ स्वरे) इसकर श्रीशब्दके ईकारको ईप् करनेसे रूप हुआ (श्रियौ) वहुवचनमें (श्रियः) द्विती-यामें (श्रियम्) (श्रियौ) (श्रियः) तृतीयामें (श्रिया) (श्रीभ्याम्) (श्रीभिः) चतुर्थीएकवचनमें (श्री ङे) ऐसा स्थितहै ॥

वेयुवः ।

अं॰ वा–ईयुवः । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) इयुवन्तात् नित्यं स्त्रियां

वर्त्तमानाद्वा ङितां वचनानामडागमो भवति । श्रियै । श्रिये । श्रीभ्याम् । श्रीभ्यः । श्रियाः । श्रियः । श्रीभ्याम् । श्रीभ्यः । श्रियाः । श्रियः । श्रीभ्याम् । श्रीभ्यः । श्रियाः । श्रियः । श्रियोः । श्र्यादीनां वामो नुड्वक्तव्यः । श्रियाम् । श्रीणाम् । श्रियाम् । श्रियि । अडागमाभावे आमोप्यभावः । श्रियोः । श्रीषु । एवं धी—ह्रीप्रभृतयोप्यनीबन्ताः ।

भाषार्थ–नित्यही स्त्रीलिंगके विषे वर्त्तमान जो इयुवन्त शब्द तिससे परे जो ङित्वचन तिनको विकल्प करके अट् आगम होय नकि, स्त्री शब्दको । भाव यह है कि, नित्यही स्त्रीलिंगके विषे वर्त्तनेवाला जो इयन्त तथा उवन्त शब्द उनसे परे ङे ङसि ङस् ङि इनको विकल्पकर अट् आगम होय जैसे (श्री ए) इसमें (य्वोर्धातोरियुवौ स्वरे) इस सूत्रकर श्रीशब्दके ईकारको इय् करनेसे रूप सिद्ध हुआ (श्रि य् ए) अव इसमें इय् है अन्तमें जिसके ऐसे श्रिय् शब्दसे परे ङेका शुद्ध रूप ए विद्यमान है इसकारण ङेके शुद्ध रूप एको विकल्प करके अट् आगम करनेसे रूप हुआ (श्रिय् अ ए) फिर (स्वरहीनं०) (ए ऐ ऐ) इनकर रूप सिद्ध हुआ (श्रियै) और जहाँ अट् आगम नहीं हुआ तहाँ सिद्ध हुआ (श्रिये) द्विवचनमें (श्रीभ्याम्) वहुवचनमें (श्रीभ्यः) पंचमीके एकवचनमें (य्वोर्धातोरियुवौ स्वरे) इस सूत्रकर श्रीशब्दके ईकारको इय् करनेपर (वेयुवः) इस सूत्रकर अट् आगम करनेसे रूप हुआ (श्रिय् अ अस्) फिर (स्वरहीनं०) (सवर्णे दीर्घः सह) इनकर रूप सिद्ध हुआ (श्रियाः) और जहाँ अट् आगम नहीं हुआ तहाँ सिद्ध हुआ (श्रियः) और द्विवचन वहुवचनमें चतुर्थीके द्विवचन वहुवचनवत् जानना । षष्ठीएकवचनमें पंचमीके एकवचनवत् (श्रियाः) (श्रियः) और द्विवचनमें (य्वोर्धातोरियुवौस्वरे) इस करके सिद्धहुआ (श्रियोः) वहुवचनमें (श्री आम्) ऐसा स्थितहै । श्रीआदिक अर्थात् श्री, धी, भी, भ्रू आदिक शब्दोंके षष्ठीवहुवचनसम्वन्धी आम्को विकल्प करके नुट् आगम होय इस करके (श्री आम्) इसमें आम्को नुट् आगम करनेसे (पुर्नोणोऽनन्ते) इस सूत्रकर रूप सिद्ध हुआ (श्रीणाम्) और जहाँ नुट आगम नहीं हुआ तहाँ (य्वोर्धातोरियुवौ स्वरे) इस सूत्रकर सिद्ध हुआ (श्रियाम्) सप्तमीके एकवचनमें (स्त्रियां योः) इस करके ङिको आम् आदेश करनेसे (य्वोर्धातोरियुवौस्वरे) इस सूत्रकर ईकारको इय् आदेश किया तव रूप हुआ (श्रि य् आम्) फिर (यदादेशस्तद्वद्भवति) इसकरके आम्को ङिमानकर (वेयुवः) इस कर अट् आगम करनेपर (स्वरहीनं०)(सवर्णे दीर्घःसह) इनकर सिद्ध हुआ (श्रियाम्) और जहाँ(वेयुवः)

इस करके अट् आगम नहीं हुआ तहाँ ङिको आम् आदेशभी नहीं होता क्योंकि कहाहै । अट् आगमके अभावमें आम्का भी अभाव होताहै; भाव यहहै कि, जहाँ अट् आगम नहीं होताहै तहाँ ङिको आम् आदेशभी नहीं होताहै । तब रूप सिद्ध हुआ (श्रियि) द्विवचनमें (श्रियोः) वहुवचनमें (श्रीषु) और सम्बोधनके विषे सिकी धिसंज्ञा करनेपर धातु होनेसे अर्थात् क्विप् प्रत्ययान्त होनेसे (समानाद्धेर्लोपोऽधातोः) तथा (धौ ह्रस्वः) इन दोनों सूत्रोंकी प्राप्ति नहीं हुई । किन्तु (स्रोर्विसर्गः) इसकर रूप सिद्ध हुआ (हे श्रीः) द्विवचनमें (हे श्रियौ) वहुवचनमें (हे श्रियः) इसीप्रकार धी-ह्री-भी आदिक ईप् प्रत्ययवर्जित स्त्रीलिंग शब्द साधने योग्यहैं । और सुधी सुश्री सेनानी ग्रामणी आदिक शब्द पुँल्लिगवत् साधने योग्यहैं जो शब्द विशेषण होनेसें स्त्रीलिंगवाचक होवै तौ उस शब्दके रूप स्त्रीलिङ्गमें पुँल्लिगवत् जानने ॥

एवं भूशब्दो भ्रूशब्दश्च । वधूकरभोरूकच्छूकण्डूजम्बादीनां तु नदीशब्दवद्रूपं ज्ञेयम् । वधूः । वध्वौ । वध्वः । हे वधु । इत्यादि ।

भाषार्थ-इसीप्रकार भू शब्द है । अर्थात् इसीप्रकार भूशब्दके रूप होवैं हैं जैसे प्रथमाएकवचनमें (स्रोर्विसर्गः) इसकर सिद्ध हुआ (भूः) और द्विवचनमें (य्वोर्धातोरियुवौ स्वरे) इसकर सिद्ध हुआ (भुवौ) और वहुवचनमें (भुवः) इसीप्रकार अन्य रूप जानने । जैसे (भुवम्) (भुवौ) (भुवः) (भुवा) (भूभ्याम्) (भूभिः) (भुवै) (भुवे) (भूभ्याम्) (भूभ्यः) (भुवाः) (भुवः) (भूभ्याम्) (भूभ्यः) (भुवाः) (भुवः) (भुवोः) (भूनाम्) (भुवाम्) (भुवि) (भुवोः) (भूषु) (हे भूः) (हे भुवौ) (हे भुवः) इसीप्रकार भ्रू शब्द साधने योग्यहै । जैसे प्रथमाएकवचनमें (भ्रूः) और द्विवचनमें (स्त्रीभ्रुवोः) इस सूत्रकर सिद्ध हुआ (भ्रुवौ) वहुवचनमें (भ्रुवः) द्वितीयामें (भ्रुवम्) (भ्रुवौ) (भ्रुवः) तृतीयामें (भ्रुवा) (भ्रूभ्याम्) (भ्रूभिः) और चतुर्थीएकवचनमें (भ्रू ए) ऐसा स्थितहै इसमें (स्त्रीभ्रुवोः) इस सूत्रकर भ्रूशब्दके अकारको उव् करने पर (वेयुवः) इस सूत्रकर अट् आगम किया तब रूप हुवा (भ्रुव् अ ए) फिर (स्वरहीनं०) (ए ऐ ऐ) इनकर सिद्ध हुआ (भ्रुवै) और जहां अट् आगम नहीं हुआ तहाँ (भ्रुवे) ऐसा सिद्ध हुआ द्विवचनमें (भ्रूभ्याम्) वहुवचनमें (भ्रूभ्यः) पंचमीके एकवचनमें (स्त्रीभ्रुवोः) (वेयुवः) इन सूत्रोंकर सिद्ध हुआ (भ्रुवाः) (भ्रुवः) द्विवचनमें (भ्रूभ्याम्) वहुवचवमें (भ्रूभ्यः) और षष्ठी एकवचनमें (स्त्रीभ्रुवोः) (वेयुवः) इनकर सिद्ध हुआ (भ्रुवाः) (भ्रुवः) द्विवचनमें (भ्रुवोः) और षष्ठीवहुवचनमें (श्र्यादीनां वामो नुड्वक्तव्यः)

इसकर सिद्ध हुआ (भ्रूणाम्) (भ्रुवाम्) और सप्तमीएकवचनमें (स्त्रियां योः) इसकर ङिको आम् आदेश करनेपर (वेयुवः) इस सूत्रकर अट् आगम किया फिर (स्त्रीभ्रुवोः) इस सूत्रकर उव् करनेपर रूप सिद्ध हुआ (भ्रुवाम्) और जहाँ (वेयुवः) इस सूत्रकर अट् आगम नहीं हुआ तहाँ (स्त्रियां योः) इसकर ङिको आम् आदेश भी नहीं हुआ। तब रूप हुआ (भ्रुवि) द्विवचनमें (भ्रुवोः) बहुवचनमें (भ्रूषु) सम्बोधनमें सिकी धिसंज्ञा करनेपर (धौ ह्रस्वः) इस सूत्रकर ह्रस्व नहीं हुआ क्योंकि (स्त्रीभ्रुवोः) इस सूत्रकर भ्रू शब्दको स्वरमें उव् होताहै तब रूप हुआ (हे भ्रूः) (१) द्विवचनमें (हे भ्रुवौ) (हे भ्रुवः) और वधू करभोरू कुरू कच्छू कंडू चम्बू इत्यादि शब्दोंके रूप नदीशब्दवत् जाननेयोग्यहैं। परन्तु सि विषयमें (स्रोर्विसर्गः) इसकर सिद्ध हुआ (वधूः) द्विवचनमें (वध्वौ) बहुवचनमें (वध्वः) द्वितीयामें (वधूम्) (वध्वौ) (वधूः) तृतीयामें (वध्वा) (वधूभ्याम्) (वधूभिः) चतुर्थीमें (ङितामट्) इसकर सिद्ध हुआ (वध्वै) द्विवचनमें (वधूभ्याम्) बहुवचनमें (वधूभ्यः) पंचमीमें (वध्वाः) (वधूभ्याम्) (वधूभ्यः) षष्ठीमें (वध्वाः) (वध्वोः) (वधूनाम्) सप्तमीएकवचनमें (स्त्रियां योः) इसकर ङिको आम् आदेश करनेपर (ङितामट्) इस सूत्रकर अट् आगम किया फिर (उ वम्) (सवर्णे दीर्घः सह) इन सूत्रोंकर सिद्ध हुआ (वध्वाम्) द्विवचनमें (वध्वोः) बहुवचनमें (वधूषु) और संबोधनमें सिकी धिसंज्ञा करनेपर (धौ ह्रस्वः) (समानाद्धेर्लोपोऽधातोः) इन सूत्रोंकर सिद्ध हुआ (हे वधु) द्विवचनमें (हे वध्वौ) बहुवचनमें (हे वध्वः) इसी प्रकार करभोरू आदिक जानने और स्वयंभू आदिक पुँल्लिंगवत् जानने ॥

ऋकारान्तस्य मातृशब्दस्य पितृशब्दवत्प्रक्रिया। मातृ सि। इति स्थिते। सैरा। आत्वम् (डिति टेः) माता। मातृ औ। इति स्थिते। (अर् पंचसु) मातरौ। मातरः। (धेरर्) हे मातः। हे मातरौ। मातरः। मातरम्। मातरौ। शसि इति दीर्घत्वम्। मातॄः। मात्रा। मातृभ्याम्। मातृभिः। मात्रे। मातृभ्याम्। मातृभ्यः। (ऋतो ङ उः) इति उकारः। मातुः। मातृभ्याम्। मातृभ्यः। मातुः। मात्रोः। मातॄणाम्। ङौ। अर्। मातरि। मात्रोः। मातृषु। स्वसृशब्दस्तु कर्तृशब्दवत् स्त्रीलिंगत्वान्नत्वाभावो विशेषः।

---

(१) (भ्रूशब्दस्य धौ वा ह्रस्वता) भाषार्थ-भ्रूशब्दको धिके विषे विकल्पकरके ह्रस्वहोय जैसे (हेभ्रुभ्रूः) और जहाँ ह्रस्वहुआ तहाँ (समानाद्धेर्लोपोऽधातोः) इसकर सिद्धहुआ हेभ्रु।

भाषार्थ-ऋकारान्त स्त्रीलिंग मातृ शब्दहै उसकी पितृ शब्दवत् प्रक्रियाहै प्रथमा-एकवचनमें (सेरा) इस सूत्रकर सिको आ करनेसे (डिति टेः) इससूत्रकर टिका लोप किया तव रूप सिद्ध हुआ (माता) द्विवचनमें (अर् पंचसु) इससूत्रकर सिद्ध हुआ (मातरौ) वहुवचनमें (मातरः) और सम्बोधनमें सिकी धिसंज्ञा करनेपर (धेरर्) इस सूत्रकर सिद्ध हुआ (हे मातः) द्विवचनमें (हे मातरौ) बहुवचनमें (हे मातरः) द्वितीयाएकवचनमें (मातरम्) द्विवचनमें (मातरौ) बहुवचनमें (शसि) इस सूत्रकर दीर्घही किया नकि (सो नः पुंसः) इस सूत्रकर शस्के सकारको नकार हुआ । तव रूप हुआ (मातॄः) तृतीयाएकवचनमें (मात्रा) द्विवचनमें (मातृभ्याम्) बहुवचनमें (मातृभिः) चतुर्थीएकवचनमें (मात्रे) द्विवचनमें (मातृभ्याम्) वहुवचनमें (मातृभ्यः) पंचमीएकवचनमें (ऋतो ङ उः) इस सूत्रकर उकार किया तव रूप हुआ (मातुः) द्विवचनमें (मातृभ्याम्) बहु-वचनमें (मातृभ्यः) षष्ठीएकवचनमें पंचमीएकवचनवत् (मातुः) द्विवचनमें (मात्रोः) बहुवचनमें (मातॄणाम्) और सप्तमीएकवचनमें (ङौ) इस सूत्रकर ऋकारके स्थानमें अर् करनेसे रूप सिद्ध हुआ (मातरि) द्विवचनमें (मात्रोः) बहुवचनमें (मातृषु) ऋकारान्त स्त्रीलिंग स्वसृ शब्दहै यह कर्तृ शब्दवत् साधने-योग्यहै । जिसप्रकार कि, कर्तृ शब्दके रूप होते हैं तिसीप्रकार स्वसृ शब्द साधने योग्य है परन्तु स्त्रीलिंग होनेसे (सो नः पुंसः) इस सूत्रकर शस्के सकारको नकार नहीं होताहै ॥

ऐकारान्तः स्त्रीलिंगो रैशब्दः । तस्य च सुरैशब्दवत्प्रक्रिया । रै सि । इति स्थिते । रैस्भि । इत्यात्वम् । राः । रै औ । इति स्थिते । स्वरादौ सर्वत्रायादेशः । रायौ । रायः । इत्यादि । गोशब्दः पूर्ववत् । नौशब्दस्य ग्लौ-शब्दवत्प्रक्रिया ॥

इति स्वरान्ताः स्त्रीलिंगाः ।

भाषार्थ-ऐकारान्त स्त्रीलिंग रै शब्द है उसकी सुरै शब्दवत्प्रक्रियाहै । प्रथमा-एकवचनमें (रै सि) ऐसा स्थितहै (रैस्भि)इस सूत्रकर रैशब्दके ऐकारको आकार करनेसे (स्रोर्विसर्गः) इससूत्र कर रूप सिद्ध हुआ (राः) द्विवचनमें (रै औ) ऐसा स्थितहै स्वरादिक समस्त विभक्ति वचनोंमें (ऐ आय्) इस सूत्रकर आय् आदेश होताहै तब रूप सिद्धहुआ (रायौ) बहुवचनमें (रायः) द्वितीयामें (रायम्) (रायौ) (रायः) तृतीयाएकवचनमें (राया) द्विवचनमें (रैस्भि) इस सूत्रकर रूप सिद्ध हुआ (राभ्याम्) बहुवचनमें (राभिः) इत्यादिक इसी प्रकार साधने योग्यहैं और गोशब्द पुँल्लिगवत् साधनेयोग्य है जैसे (गौः)(गावौ)

(गावः) (गाम्) (गावौ) (गाः) (गवा) (गोभ्याम्) (गोभिः) इत्यादिक और नौ शब्दकी ग्लौ शब्दवत् प्रक्रिया है। जैसे (नौः) (नावौ) (नावः) इत्यादि। इसप्रकार स्वरान्त स्त्रीलिंग शब्द सिद्ध होतेहैं ॥

॥ इति स्वरान्ताः स्त्रीलिंगाः ॥

अथ स्वरान्ता नपुंसकलिंगाः प्रदर्श्यन्ते। अकारान्तः कुलशब्दः। प्रथमाद्वितीयैकवचने सूत्रम्।

भाषार्थ-इसके अनन्तर स्वरान्त नपुंसकलिंग दिखाये जातेहैं। अकारान्त कुल शब्दहै। उसकी प्रथमा तथा द्वितीयाके एकवचनमें सूत्रोक्त प्रक्रिया है ॥

अतोऽम्।

अतः-अम्। द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) अकरान्तान्नपुंसकलिंगात्परयोः स्यमोरम् भवत्यधौ। अमोमग्रहणं लुग्व्यावृत्त्यर्थम्। अम्शसोरस्य इत्यकारलोपः। द्विवचने। कुल औ। इति स्थिते।

भाषार्थ-अकार है अन्तमें जिसके ऐसे नपुंसकलिंग शब्दसे परे जो सि और अम् तिनको अम् आदेश होय परन्तु धिके विषयमें नहीं होय। भाव यह है कि, जिस नपुंसकलिंग शब्दके अन्तमें अकार होय उस शब्दसे परे जो प्रथमाएकवचन सि और द्वितीया एकवचन अम् तिन दोनोंके स्थानमें अम् (१) होजावै परन्तु धिसंज्ञक सिके स्थानमें अम् नहीं होय और अम्के स्थानमें जो अम्का ग्रहण किया है वह लुक्की निवृत्तिके अर्थ है भाव यहहै कि, द्वितीयाएकवचन अम्के स्थानमें फिर जो अम्का करना है वह (नपुंसकात्स्यमोर्लुक्) इस सूत्रके निषेधके अर्थ है जैसे (कुल सि) इसमें अकारान्त नपुंसकलिंग कुल शब्दसे परे प्रथमाएकवचन सि विद्यमानहै इसकारण सिके स्थानमें अम् करनेसे रूप हुआ (कुल अम्) फिर (अम्शसोरस्य) इस सूत्रकर अकारका लोप किया तव रूप सिद्ध हुआ (कुलम्) और द्विवचनमें (कुल औ) ऐसा स्थित है ॥

ईमौ।

ईम्-औ। द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) नपुंसकलिंगात्पर औ ईकारमापद्यते (अ इ ए) कुले। कुल जस्। इति स्थिते।

---

(१) यदि कहो कि, सि और अम्को (म्) ऐसाही क्यों न आदेश किया जो अम् करनेमें वृथा अकारका ग्रहण किया यह शंका सत्यहै परन्तु अजर शब्दका नपुंसकलिंगमें प्रथमाएकवचनमें (जरायाः स्वरादौ जरस् वा) इसकर जरस् आदेश करनेपर (अजरसम्) इसके सिद्ध करनेके अर्थ है।

भाषार्थ–नपुंसक लिंग शब्दसे परे जो प्रथमा द्वितीया द्विवचन सम्बन्धी औ सो ईकारको प्राप्त होय अर्थात् औकारके स्थानमें ईकार होय जैसे (कुल औ) इसमें नपुंसक लिंग कुल शब्दसे परे औ विद्यमानहै इसकारण औके स्थानमें ईकार करनेसे (अ इ ए) इस सूत्रकर रूप सिद्ध हुआ (कुले) वहुवचनमें (कुल जस्) तिसका (कुल अस्) ऐसा स्थित है ॥

जश्शसोः शिः ।

जश्शसोः–शिः । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) नपुंसकलिंगात्परयोः जश्शसोः शिर्भवति । शकारः सर्वादेशार्थः । गुरुः शिच्च सर्वस्य वक्तव्यः ।

भाषार्थ–नपुंसकलिंगसे परे जो जस और शस तिनको शि आदेश होय अर्थात् जस् तथा शस्के स्थानमें शि होय शि इसमें जो शकार है वह सर्व आदेशके अर्थ है। भाव यह है कि, (षष्ठीनिर्दिष्टस्यादेशस्तदन्तस्य वक्तव्यः) इसकर जस्के अन्तको होना चाहिये सो (शि) इसमें शकारके होनेसे सर्व जस्के स्थानमें शि यह आदेश हुआ क्योंकि ,गुरु अर्थात् वहुत अक्षरवाला तथा शित् अर्थात् शकार इत् वाला आदेश समस्तको वक्तव्य है जैसे (कुल अस्) इसमें नपुंसकलिंग कुल शब्दसे परे जस्का शुद्ध रूप अस् विद्यमान है इसकारण जस्के शुद्ध रूप अस्के स्थानमें शि आदेश किया तव रूप हुआ (कुल शि) इसमें शकार सर्वादेशके अर्थ होनेसे इत्संज्ञक है तव रूप हुआ (कुल इ) फिर– ॥

नुमयमः ।

नुम्–अयमः । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) नपुंसकलिंगस्य नुमागमो भवति शौपरे यमप्रत्याहारान्तस्य न भवति । मिदन्त्यात्स्वरात्परो वक्तव्यः। उकार उच्चारणार्थः । मकारः स्थाननियमार्थः ।

भाषार्थ–नपुंसकलिंग शब्दको नुम् आगम होय शि पर हुए संते परन्तु यम प्रत्याहार है अन्तमें जिसके ऐसे नपुंसकलिंग शब्दको नुम् आगम नहीं होय मित् आगम अन्तमें स्थित हुए स्वरसे परे वक्तव्य है । भाव यह है कि, जिस् आगमका मकार इत्संज्ञक होवै वह आगम शब्दके अन्तमें स्थित हुए स्वरसे परे होता है इस नुम् आगममें मकार स्थान नियमके अर्थ है और उकार उच्चारणार्थ है । आगमका रूप तो न् ऐसा है जैसे (कुल इ) इसमें नपुंसक लिंग कुल शब्दसे परे शिका शुद्ध रूप इ विद्यमान है इसकारण कुल शब्दको नुम् आगम किया तो वह आगम कुल शब्दके अन्तस्वर अकारसे परे हुआ तब रूप हुआ (कुलन् इ) फिर–॥

नोपधायाः ।

नोपधायाः । एकपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) नान्तस्योपधाया दीर्घो भवति शौपरे धिवर्जितेषु पञ्चसु परेषु । नामि च । कुलानि । एवं कुलम् । कुले । कुलानि । शेषं पुँल्लिंगवत् । एवं मूल-फल-पत्र-पुष्प--कुंड-कुटुम्बादयः ।

भाषार्थ-नकार है अन्तमें जिसके ऐसे शब्दके उपधा संज्ञा सम्बन्धी स्वरको दीर्घ होय शि पर हुए संते और पुँल्लिगके विषे धिवर्जित स्यादिक पांच वचन परहुए संते और नाम् पर हुए संते अर्थात् नुद् आगम सहित आम् परहुए संते जैसे (कुल न् इ) इसमें (यदागमास्तद्गुणीभूतास्तद्ग्रहणेनैव गृह्यन्ते) इस करके नकारागमपर्यन्त शब्द मानकर नकारान्त कुलन् शब्दसे परे शिका शुद्धरूप विद्यमान है इसकारण कुलन शब्दके उपधासंज्ञक अकारको दीर्घ करनेपर (स्वरहीनं०) इस करके रूप सिद्ध हुआ (कुलानि) इसीप्रकार द्वितीयामें (कुलम्)(कुले) (कुलानि) और शेष विभक्ति वचनोंमें देवशब्दवत् रूप जानने योग्य हैं ॥

सर्वादीनामकारान्तानामन्यादिपंचशब्दव्यतिरिक्तानां प्रथमाद्वितीययोः कुलशब्दवत्प्रक्रिया । सर्वम् । सर्वे । सर्वाणि । २ । शेषन्तु पूर्ववद्रूपम् । तत्रापि अन्यादेर्विशेषमाह ।

भाषार्थ-अन्यादि पांच शब्दोंसे वर्जित जो अकारान्त सर्वादिक शब्द तिनकी प्रथमा द्वितीया विभक्तियोंमें कुल शब्दवत्प्रक्रिया है जैसे (सर्वम् । सर्वे । सर्वाणि) इसी प्रकार द्वितीयामें होते हैं और शेष पूर्ववत् जानना । उन सर्वादिकोंमें अन्यादि पांच शब्दोंकी विशेष प्रक्रिया कहते हैं ॥

श्वन्यादेः ।

श्तु-अन्यादेः । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) अन्यादेर्गणात्परयोः स्यमोः श्तुर्भवति । शकारः सर्वादेशार्थः । उकार उच्चारणार्थः ।

भाषार्थ-अन्यादिगणसे परे सि अम्को श्तु आदेश होय । भाव यह है कि नपुंसक लिंगके विषे वर्त्तमान जो अन्य-अन्यतर-इतर-कतर-कतम । यह शब्द तिनसे परे सि और अम्के स्थानमें श्तु आदेश होय । आदेशमें शकार सर्व आदेशके अर्थ हैं और उकार उच्चारणार्थ है जैसे (अन्य सि) नपुंसकलिंग अन्य शब्दसे परे सि विद्यमान है इसकारण सिके स्थानमें श्तु आदेश करनेसे रूप हुआ (अन्यत्) फिर-॥

वावसाने ।

वा अवसाने । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) अवसाने वर्त्तमानानां झसानां जबा भवंति चपा वा । अन्यत् । अन्यद् । अन्ये । अन्यानि । पुनस्तथैव । अन्यतरत् । अन्यतरद् । अन्यतरे । अन्यतराणि । इतरत् । कतरत् । कतमत्–शब्दाः । शेषं सर्ववत् ॥ इकारान्तोऽस्थिशब्दः ।

भाषार्थ–अवसानके विषे वर्त्तमान जो झस् तिनको जब होय और विकल्प करके चप होय भाव यह है कि, जिसके अगाडी वर्ण न होवै वह अवसान होता है उसके विषे जो चप प्रत्याहार तिसके स्थानमें जब तथा चप प्रत्याहार होय जैसे (अन्यत्) इसमें अवसानके विषे वर्त्तमान झस प्रत्याहारसम्बन्धी तकारहै इसकारण तकारके स्थानमें जब किये तो, तकारको दकार हुआ क्योंकि, जब प्रत्याहारमें तकारका सवर्ग दकारहै तब रूप हुआ (अन्यद्) और जहाँ चप प्रत्यार हुआ तहाँ तकारही रहा तव रूप हुआ (अन्यत्) द्विवचनमें (अन्ये) बहुवचनमें (अन्यानि) इसी प्रकार द्वितीयामें होतेहैं । इसीप्रकार (अन्यतरत्) (अन्यतरद्) (इतरत्) (इतरद्) (कतरत्) (कतरद्) (कतमत्) (कतमद्) यह शब्द सिद्ध हैं शेष सर्ववत् होता है (१)॥ इकारान्त नपुंसकलिंग अस्थि शब्द है। प्रथमाएकवचनमें (अस्थि सि) ऐसा स्थित है ॥

नपुंसकात्स्यमोर्लुक् ।

नपुंसकात्–स्यमोः–लुक् । त्रिपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) नपुंसकलिंगात्परयोः स्यमोर्लुक् भवति । अस्थि ।

भाषार्थ–नपुंसक लिंगसे परे जो सि और अम् तिनका लुक् होय। भाव यहहै कि, अवर्णान्त वर्जित जो नपुंसक लिंग उससे परे जो सि और अम् तिनका लुक् होय जैसे (अस्थि सि) इसमें नपुंसकलिंग अस्थि शब्दसे परे सि विद्यमान है इस-

(१) आकारान्तो नपुंसकलिंगः सोमपाशब्दः । सोमपा सि । इतिस्थिते । नपुंसकस्य ह्रस्वः । नपुंसकस्य ह्रस्वो भवति सर्वासु विभक्तिषु परतः । अतोम् । सोमपम् । सोमपे । सोमपानि । हे सोमप । (शेषं कुलवत् इति पाठः) भाषार्थ–आकारान्त नपुंसकलिंग सोमपा शब्दहै प्रथमाएकवचनमें । सोमपा सि । ऐसा स्थितहै । सूत्रम्–(नपुंसकस्य०)वृत्यर्थ–नपुंसकलिंगको ह्रस्व होय समस्त विभक्तिवचन परहुए संते जैसे (सोमपा सि) इसमें नपुंसक लिंग सोमपा शब्दसे सि विभक्ति परमें विद्यमान है इसकारण सोमपाको ह्रस्व करनेसे रूपहुआ (सोमप सि) फिर (अतोऽम्) इस सूत्रकर सिद्ध हुआ (सोमपम्) द्विवचनमें (सोमपे) बहुवचनमें (सोमपानि) सम्बोधनमें (हे सोमप) (हे सोमपे) (हे सोमपानि) शेष कुल शब्दवत् होताहै ॥

कारण सिका लुक् करनेसे रूप सिद्ध हुआ (अस्थि) और सम्बोधनमें सिकी धिसंज्ञा करनेपर विशेष कहतेहैं ।

य्वृर्णां धौ गुणो वा ।

य्वृर्णाम्--धौ--गुणः--वा । चतुष्पदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) इ उ ऋ इत्येतेषां नपुंसके धौ वा गुणो भवति । हे अस्थे। हे अस्थि । उक्तं हि-

भाषार्थ-इकार उकार ऋकार इनको नपुंसक लिंगमें धिके विषे विकल्प करके गुण होय जैसे सिकी धिसंज्ञा करनेपर (अस्थि सि) इसमें नपुंसक लिङ्गके अस्थि शब्दके इकारसे परे धिसंज्ञक सि विद्यमान है इसकारण (नपुंसकात्स्यमोर्लुक्) इसकर धिसंज्ञक सिका लोप करनेपर इकारके स्थानमें एकार गुण करनेसे रूप सिद्ध हुआ (हे अस्थे) और जहाँ इकारको एकार गुण नहीं हुआ तहाँ (हे अस्थि) ऐसा सिद्ध हुआ । ऐसाही पूर्वजनोंने कहा है-

सम्बोधने तूशनसस्त्रिरूपं सांतं तथा नान्तमथाप्यदन्तम् ।
माध्यंदिनिर्वष्टि गुणं त्विगन्ते नपुंसके व्याघ्रपदां वरिष्ठः ॥

भाषार्थ-माध्यंदिनिनाम आचार्य उशनस् शब्दके सम्वोधनमें धिके विषे तीन रूपोंकी इच्छा करते हैं कौनसे तीन रूप कि, सान्त तथा नान्त तथा अदन्त और इगन्त अर्थात् इकारान्त और उकारान्त ऋकारान्त नपुंसकलिंग शब्दमें धिके विषे विकलप करके गुणका इच्छा करते हैं; कैसे हैं वह माध्यदिनि नाम आचार्य कि,व्याघ्रपद गोत्रीय ब्राह्मणोंके मध्यमें श्रेष्ठ हैं, भाव यह है कि उशनस् शब्दके सम्वोधनमें धिकें विषे तीन रूप होते हैं एक सान्त जैसे (हे उशनः) दूसरा नान्त जैसे (हे उशनन्) तीसरा अदन्त अर्थात् अकारान्त जैसे (हे उशन) और नपुंसकलिंगके इकारान्त तथा उकारान्त तथा ऋकारान्त शब्दको सम्वोधनमें धिके विषे गुण होता है जैसे (हे अस्थे) (हे अस्थि) (हे वारे) (हे वारि) (हे मधो । हे मधु) (हे कर्तः) (हे कर्तृ) ऐसा माध्यंदिनि नाम आचार्य कहते हैं ॥

नामिनः स्वरे ।

नामिनः--स्वरे । नाम्यन्तस्य नपुंसकस्य नुमागमो भवति विभक्तिस्वरे परे । अस्थिनी । अस्थीनि । पुनरपि । अस्थि । अस्थिनी । अस्थीनि ।

भाषार्थ-नामि संज्ञक स्वरहै अन्तमें जिसके ऐसे नपुंसकलिंग शब्दको नुम् आगम होय विभक्ति सम्वन्धी स्वर पर हुए संते जैसे (अस्थि औ) द्वितीयाके द्विवचनमें (अस्थि औ) ऐसा स्थित है (ईमौ) इस सूत्रकर औकारके स्थानमें ईकार

करनेसे रूप हुआ (अस्थि ई) इसमें नाम्यन्त नपुंसकलिंग अस्थि शब्दसे परे विभक्ति सम्वन्धी स्वर ईकार विद्यमान है इसकारण अस्थि शब्दको नुम्‌का आगम किया तो वह आगम (मिदन्त्यात्स्वरात्परो वक्तव्यः) इसकर अस्थि शब्दके इकारके परे हुआ तव रूप हुआ (अस्थि न् ई) फिर (स्वरहीनं परेण संयोज्यम्) इसकर सिद्ध हुआ (अस्थिनी) वहुवचनमें (जस्शसोः शिः) इसकर शस्‌के स्थानमें शि करनेपर रूपं हुआ (अस्थि इ) फिर (नुमयमः) इस सूत्रकर नुम् आगम कर (नोपधायाः) इस सूत्रकर रूप सिद्ध हुआ (अस्थीनि) इसीप्रकार द्वितीयामें (अस्थि) (अस्थिनी) (अस्थीनि) तृतीयाके एकवचनमें (अस्थि आ) ऐसा स्थित है ॥

अच्चास्थ्नां टादौ ।

अत्[1]—च[1]—अस्थ्नाम्[अ०६|३]—टादौ[७|१] । चतुष्पदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) अस्थ्यादीनां नुमागमो भवति इकारस्याकारो भवति । (१) टादौ स्वरे परे ।

भाषार्थ—अस्थि आदिक शब्दोंको नुम् आगम होय और अस्थि आदिक शब्दोंके इकारको आकार होय टादिक स्वर परे संते जैसे (अस्थि आ) इसमें अस्थि शब्दसे परे टाका शुद्ध रूप आ विद्यमान है इसकारण अस्थि शब्दको नुम् आगम करनेसे और इकारके स्थानमें अकार करनेसे रूप हुआ (अस्थिन् आ) फिर—॥

अल्लोपः स्वरेऽम्वयुक्ताच्छसादौ ।

अल्लोपः[१|१]—स्वरे[७|१]—अम्वयुक्तात्[५|१]—शसादौ[७|१] । चतुष्पदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) नान्तस्योपधाया अकारस्य लोपो भवति शसादौ स्वरे परे मकारवकारान्तसंयोगादुत्तरस्य न भवति । अस्थ्ना । अस्थिभ्याम् । अस्थिभिः । अस्थ्ने । अस्थिभ्याम् । अस्थिभ्यः । अस्थ्नः । अस्थिभ्याम् । अस्थिभ्यः । अस्थ्नः । अस्थ्नोः अस्थ्नाम् ।

भाषार्थ—नान्त शब्दकी उपधाके अकारका लोप होय शसादिक स्वर परे संते परन्तु मकार वकारान्त संयोगसे उत्तर अकारका लोप नहीं होय । भाव यहहै कि, जिस शब्दके अन्तमें नकार होय उसके उपधासंज्ञक अकारका लोप होजावै परन्तु

(१) किसी २ पुस्तकोंमें (शसादौ स्वरे परे) ऐसा भी पाठ है । ऐसे पाठ होनेका यह अभिप्राय है कि, जहाँ अस्थि आदिक शब्द गौण होवैंगे तहाँ शस् आदिक सम्बन्धी स्वर परे संते भी अस्थि आदिक शब्दको नुम् आगम तथा इकारको अकार होवैगा जैसे । प्रियस्थ्नः . शुनकान् । प्रियदध्नः पुरुषान् । इत्यादिक इसमें अस्थि दधि शब्द समासान्त होनेसे अन्यार्थ वाचकताकर गौण हैं । इति ॥

वह नान्त शब्दका उपधा संज्ञक अकार जिसके कि, अन्तमें मकार वा वकार होवै ऐसी संयोग संज्ञासे परे न होय यदि मकारान्त तथा वकारान्त संयोगसंज्ञासे परे होवै तो उस अकारका लोप नहीं होय जैसे (अस्थन् आ) इसमें नकारान्त अस्थन् शब्दसे परे शसादिक स्वर विभक्ति सम्बन्धी आ विद्यमानहै इसकारण नकारान्त अस्थन्के उपधासंज्ञक अकारका लोप करनेसे रूप हुआ (अस्थन् आ) फिर (स्वरहीनं परण संयोज्यम्) इसकर सिद्ध हुआ (अस्थना) द्विवचनमें (अस्थिभ्याम्) वहुवचनमें (अस्थिभिः) चतुर्थीके एकवचनमें (अच्चास्थ्नां टादौ) और (अल्लोपः स्वरेम्वयुक्ताच्छसादौ) इन सूत्रोंकर सिद्ध हुआ (अस्थ्ने) द्विवचनमें (अस्थिभ्याम्) वहुवचनमें (अस्थिभ्यः) पंचमीके एकवचनमें (अच्चास्थ्नां टादौ) और (अल्लोपः स्वरेऽम्वयुक्ताच्छसादौ) इन सूत्रोंकर सिद्ध हुआ (अस्थ्नः) द्विवचनमें (अस्थिभ्याम्) बहुवचनमें (अस्थिभ्यः) इसी प्रकार षष्ठीके एकवचनमें (अस्थ्नः) द्विवचनमें (अस्थ्नोः) वहुवचनमें (अस्थ्नाम्) सप्तमीके एकवचनमें (अच्चास्थ्नां टादौ) इसकर नुम् आगम तथा इकारको अकार करनेपर रूप हुआ (अस्थन् इ) फिर-॥

वेङ्योः ।

सू० १७२ वा-ईङ्योः । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) ईङ्योः परयोर्वा अकारस्य लोपो भवति । अस्थ्नि । अस्थनि । अस्थ्नोः । अस्थिषु । एवं दधिसक्थि-अक्षिशब्दाः । वारि । वारिणी । वारीणि । पुनरपि । वारि । वारिणी । वारीणि । वारिणा वारिभ्याम् ।

भाषार्थ-ई और ङि पर हुए संते विकलपकरके अकारका लोप होय । भाव यह है कि, नकारान्त शब्दसे परे यदि औके स्थानमें उत्पन्न हुआ ई तथा सप्तमी एक-वचन ङि परे होवै तो उस नकारान्त शब्दके उपधासंज्ञक अकारका विकलपकरके लोप होय अर्थात् एक जगह लोप होय और एक जगह नहीं होय जैसे (अस्थन् इ) इसमें नकारान्त अस्थन् शब्दसे परे ङिका शुद्ध रूप इ विद्यमानहै इसकर अस्थन् शब्दके उपधासंज्ञक अकारका लोप करनेसे रूप सिद्ध हुआ (अस्थ्नि) और जहाँ अस्थन् शब्दके उपधा संज्ञक अकारका लोप नहीं हुआ तहाँ रूप सिद्ध हुआ (अस्थनि) द्विवचनमें (अस्थ्नोः) वहुवचनमें (अस्थिषु) इसीप्रकार दधि सक्थि अक्षि शब्द साधने योग्यहैं । जैसे प्रथमा द्वितीयामें (दधि) (दधिनी) (दधीनि) तृतीयामें (दध्ना) (दधिभ्याम्) (दधिभिः) और सप्तमीमें (दध्नि) (दधनि) (दध्नोः) दधिषु ॥ इकारान्त नपुंसक लिंग वारिशब्दहै । प्रथमाएकवचनमें (नपुंसकात्स्यमोर्लुक्) इसकर सिद्ध हुआ

(वारि) द्विवचनमें (ईमौ) (नामिनः स्वरे) इन सूत्रोंकर सिद्ध हुआ (वारिणी) बहुवचनमें (जश्शसोः शिः) (नुमयमः) (नोपधायाः) इन सूत्रोंकर सिद्ध हुआ (वारीणि) इसीप्रकार द्वितीयामें जानने और तृतीयाएकवचमें (नामिनः स्वरे) (षुर्नोणोऽनन्ते) इन सूत्रोंकर सिद्ध हुआ (वारिणा) द्विवचनमें (वारिभ्याम्) बहुवचनमें (वारिभ्यः) इत्यादि इसीप्रकार साधनेयोग्यहैं ॥

नपुंसकस्य ।

नपुंसकस्य । एकपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) नपुंसकस्य ह्रस्वो भवति । सर्वासु विभक्तिषु परतः । ग्रामणि । ग्रामणिनी । ग्रामणीनि । हे ग्रामणे । हे ग्रामणि ।

भाषार्थ–नपुंसकलिंगके विषे वर्त्तमान जो दीर्घस्वरान्त शब्द तिसको ह्रस्व होजावै समस्त विभक्ति वचन पर हुए संते जैसे (ग्रामणी सि) इसमें नपुंसकलिंग ईकारान्त ग्रामणी शब्दसे परे सि विभक्ति विद्यमानहै इस कारण ग्रामणी शब्दके अन्तस्वर ईकारको ह्रस्व किया तब रूप हुआ (ग्रामणि सि) फिर (नपुंसकात्स्यमोर्लुक्) इसकर सिद्ध हुआ (ग्रामणि) द्विवचनमें (नपुंसकस्य) (ईमौ) (नामिनः स्वरे) इनसूत्रोंकर सिद्ध हुआ (ग्रामणिनी) बहुवचनमें (नपुंसकस्य) (जश्शसोः शिः) (नुमयमः) (नोपधायाः) इनसूत्रोंकर सिद्धहुआ (ग्रामणीनि)इसी प्रकार द्वितीयामें हुए ॥

टादावुक्तपुंस्कं पुंवद्वा ।

टादौ–उक्तपुंस्कम्–पुंवत्–वा । चतुष्पदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) उक्तपुंस्कं नाम्यन्तं नपुंसकलिंगं टादौ स्वरे परे पुंवद्वा भवति । (१) ग्रामण्या ग्रामणिना । ग्रामणिभ्याम् । ग्रामणिभिः । ग्रामण्ये । ग्रामणिने । ग्रामणिभ्याम् । ग्रामणिभ्यः । ग्रामण्यः । ग्रामणिनः । ग्रामणिभ्याम् । ग्रामणिभ्यः । ग्रामण्यः । ग्रामणिनः । ग्रामण्योः । ग्रामणिनोः । नुमन्तस्यामिदीर्घः । ग्रामणीनाम् । ग्रामण्याम् । ग्रामणिनि । ग्रामण्योः । ग्रामणिनोः । ग्रामणिषु । हे ग्रामणे । हे ग्रामणि । सोमपम्–कुलम् । सोमपे । सोमपानि । पुनरपि । सोमपम् । सोमपे । सोमपानि । सोमपेन । सोमपाभ्याम् । सोमपैः इत्यादि ।

---

(१) (एक एव हि यः शब्दस्त्रिषुलिंगेषु जायते । एकमेवार्थमाख्याति उक्तपुंस्कं तदुच्यते) भाषार्थ–जो कोई एक शब्द आप्प्रत्ययादिसे वर्जित होकर तीनों पुंस्त्रीनपुंसक लिंगोंके विषे वर्त्तताहै और एकही अर्थको कहताहै वह उक्तपुंस्क कहाहै ।

भाषार्थ-कहाहै पुँल्लिंग जिसकरके ऐसा जो नाम्यन्त नपुंसकलिंग शब्द सो टादिक स्वर परेसंते विकल्प करके पुँल्लिंगवत् होता है। भाव यहहै कि, जो शब्द कि, अर्थरूप करके तुल्याकार हुआ पुंल्लिंग तथा नपुंसकलिंगमें वर्त्तमानहो वह उक्तपुंस्क कहाता है ऐसा नाम्यन्त नपुंसकलिंग शब्द टादिक विभक्ति सम्बन्धी स्वरपरे संते पुँल्लिंगवत् विकल्प करके जानना (ग्रामणी आ) इसमें पूर्व कहेहुए पुँल्लिङ्ग ग्रामणी शब्दसे टाका शुद्धरूप अविद्यमान है इसकारण एक जगह पुँल्लिङ्गवत् रूप किया (ग्रामण्या) और एक जगह नपुंसकलिङ्गवत् (ग्रामणिना) द्विवचनमें (ग्रामणिभ्याम्) बहुवचनमें (ग्रामणिभिः) इसीप्रकार चतुर्थीमें (ग्रामण्ये) (ग्रामणिने) (ग्रामणिभ्याम्) (ग्रामणिभ्यः) पंचमीमें (ग्रामण्यः । ग्रामणिनः) (ग्रामणिभ्याम्) (ग्रामणिभ्यः) षष्ठीमें (ग्रामण्यः) (ग्रामणिनः) (ग्रामण्योः) (ग्रामणिनोः) षष्ठीवहुवचनमें (ग्रामणी आम्) ऐसा स्थित है इसमें उक्तपुंस्क ग्रामणी शब्दसे परे आम् विद्यमानहै इसकारण पुँल्लिंग सदृशरूप करनेसे (य्वौवा) इस सूत्रकर सिद्धहुआ (ग्रामण्याम्) और (सेनान्यादीनां वामो नुट्०) इसकरके सिद्धहुआ (ग्रामणीनाम्) और नपुंसकपक्षमें (नाभिनः स्वरे) इस सूत्रकर नुम् करनेपर रूप हुआ (ग्रामणिन् आम्) फिर नुम्है आगम अन्तमें जिसके ऐसे शब्दको आम् परहुए संते दीर्घ होय जैसे (ग्रामणिन् आम्) इसमें नुमागमान्त ग्रामणिन् शब्दसे परे आम् विद्यमानहै इसकारण ग्रामणिन् शब्दके अन्तस्वर इकारको दीर्घ करनेपर (स्वरहीनं परेण संयोज्यम्) इसकर रूप सिद्धहुआ (ग्रामणीनाम्) और सप्तमीएकवचनमें पुँल्लिंग सदृश करनेसे (आम्ङेः) इस सूत्रकर रूप सिद्ध हुआ (ग्रामण्याम्) और नपुंसक पक्षमें (नाभिनः स्वरे) इस सूत्रकर रूप सिद्ध हुआ (ग्रामणिनि) द्विवचनमें (ग्रामण्योः) (ग्रामणिनोः) बहुवचनमें (ग्रामणीषु) सम्बोधनमें सिकी धिसंज्ञा करनेपर (हे ग्रामणे) (हे ग्रामणि) आकारान्त सोमपाशब्द है (नपुंसकस्य) इस सूत्रकर ह्रस्व करनेपर कुलशब्दवत् रूप जानने योग्यहैं जैसे (सोमपम्) (सोमपे) (सोमपानि) (सोमपम्) (सोमपे) (सोमपानि) (सोमपेन) (सोमपाभ्याम् (सोमपैः) इत्यादि ॥

उकारान्तो मधुशब्दः । मधु । मधुनी । मधूनि । पुनरपि । मधुना। इत्यादि । ऋकारान्तः कर्तृशब्दः । कर्तृ । कर्तृणी । कर्तॄणि । पुनरपि । कर्तृणा । कर्त्रा । कर्तृणे । कर्त्रे । इत्यादि । हे कर्तः । हे कर्तृ ।

भाषार्थ-उकारान्त मधुशब्दहै प्रथमाएकवचनमें (नपुंसकात्स्यमोर्लुक्) इस सूत्रकर सिद्धहुआ (मधु) द्विवचनमें (ईमौ) (नामिनः स्वरे) इन सूत्रोंकर सिद्ध-हुआ (मधुनी) बहुवचनमें (जश्शसोःशिः) (नुमयमः) (नोपधायाः) इनसूत्रोंकर सिद्ध-

हुआ (मधूनि) इसीप्रकार द्वितीयामें जानने । तृतीयाएकवचनमें (नामिनः स्वरे) इस सूत्रकर सिद्धहुआ (मधुना) द्विवचनमें (मधुभ्याम्) बहुवचनमें (मधुभिः) इत्यादिक इसीप्रकार साधने योग्यहैं । ऋकारान्त कर्तृ शब्दहै । प्रथमाएकवचनमें (नपुंसकात्स्यमोर्लुक्) इस सूत्रकर सिद्धहुआ (कर्तृ) द्विवचनमें (ईमौ) (नामिनः स्वरे) इनसूत्रोंकर सिद्ध हुआ (कर्तृणी) बहुवचनमें (जश्शसोः शिः) (नुमयमः) (नोपधायाः) इन सूत्रोंकर सिद्ध हुआ (कर्तॄणि) इसीप्रकार द्वितीयामें जानने और तृतीयाके एकवचनमें कर्त्तृ शब्दका उक्तपुंस्क होनेसे एक जगह पुँल्लिंगवत् रूप हुआ (कर्त्रा) और एक जगह नपुंसक लिंग पक्षमें (नामिनः स्वरे) इस सूत्रकर सिद्ध हुआ (कर्त्तृणा) द्विवचनमें (कर्त्तृभ्याम्) बहुवचनमें (कर्त्तृभिः) इत्यादिक इसीप्रकार साधनेयोग्य हैं और सम्बोधनमें सिकी धिसंज्ञा करने पर (ऋॄणां नपुंसके धौ वा गुणः) इस सूत्रकर विकल्प करके कर्त्तृ शब्दके ऋकारको अर गुण करनेसे रूप सिद्ध हुआ (हे कर्त्तः) और जहाँ गुण नहीं हुआ तहाँ रूप सिद्ध हुआ (हे कर्तृ) द्विवचनमें (हे कर्तृणी) बहुवचनमें (हे कर्त्तॄणि) ॥

ऐकारान्तः अतिरै शब्दः । रायमतिक्रान्तं कुलमिति विग्रहे॥ह्रस्वादेशे सन्ध्यक्षराणामिकारोकारौ च वक्तव्यौ ॥ अतिरि । अतिरिणी । अतिरीणि । पुनरपि । शेषं वारिशब्दवत् ।

भाषार्थ–ऐकारान्त नपुंसकलिंग अतिरै शब्दहै । ह्रस्वादेशके विषे संध्यक्षरोंको इकार और उकार वक्तव्यहै । भाव यहहै कि, नपुंसकलिंगके विषे संध्यक्षर संज्ञक एकार ऐकार ओकार औकारको (नपुंसकस्य) इस सूत्रकर ह्रस्व कियाजावै तो एकार और ऐकारके स्थानमें इकार । और ओकार तथा औकारके स्थानमें उकार होताहै जैसे (अतिरै सि) इसमें ऐकारान्त अतिरै शब्दसे सि विद्यमानहै इसकारण (नपुंसकस्य) इस सूत्रकर ह्रस्व किया तो ऐकारके स्थानमें इकार हुआ तब रूप हुआ (अतिरि सि) फिर (नपुंसकात्स्यमोर्लुक्) इसकर सिद्ध हुआ (अतिरि) शेष वारि शब्दवत् साधने योग्यहैं ॥

ओकारान्तो नपुंसकलिंग उपगोशब्दः । उपगु । उपगुनी । उपगूनि । पुनरपि । शेषं मधुशब्दवत् । औकारान्तः अतिनौ शब्दः । नावमतिक्रान्तं यज्जलं तत् । अतिनु । अतिनुनी । अतिनूनि । पुनरपि । शेषं पूर्ववत् ॥ इति स्वरान्ता नपुंसकलिंगाः ॥

भाषार्थ–ओकारान्त नपुंसकलिंग उपगो शब्दहै । प्रथमाएकवचनमें (उपगो सि) ऐसा स्थितहै (ह्रस्वादेशे सन्ध्यक्षराणामिकारोकारौ च वक्तव्यौ) इसकर

उपगोशब्दके ओकारके स्थानमें उकार करनेसे (उपगु सि) ऐसा रूप भया फिर (नपुंसकात्स्यमोर्लुक्) इसकर सिद्ध हुआ (उपगु) शेष मधु शब्दवत् साधने योग्यहैं । औकारान्त अतिनौ शब्दहै प्रथमाएकवचनमें (अतिनौ सि) ऐसी स्थितिहै (ह्रस्वादेशे सन्ध्यक्षराणामिकारोकारौ च वक्तव्यौ) इसकर अतिनौ शब्दके औकारके स्थानमें उकार करनेसे रूप हुआ (अतिनु सि) फिर (नपुंसकात्स्यमोर्लुक्) इसकरके सिद्ध हुआ (अतिनु) शेष मधुशब्दवत् साधने योग्यहै । इसप्रकार स्वरान्त नपुंसकलिंग सिद्ध किये जातेहैं ॥ स्वरान्त नपुंसकलिंग समाप्त हुए ॥

अथ हसान्ताःपुंलिंगाः । तत्र हकारान्तोऽनडुह् शब्दः । नामसंज्ञायां स्यादयः । पञ्चस्वनडुह आमागमो वक्तव्यः (१)

भाषार्थ-इसके अनन्तर हसान्तपुँल्लिंग साधे जातेहैं । तिसमें प्रथम हान्त शब्दोंको साधतेहैं । हकारान्त अनडुह् शब्दहै तिसकी नामसंज्ञा होनेपर स्यादिक विभक्ति दीजावें हैं सि आदिक पांच वचनोंके विषे अनुडुह् शब्दको आम् आगम वक्तव्यहै जैसे प्रथमाएकवचनमें (अनुडुह् सि) ऐसा स्थितहै इसमें अनडुह् शब्दसे परे सिविभक्ति विद्यमानहै इसकारण अनडुह् शब्दको आम् आगम किया तो वह आगम अनडुह् शब्दके अन्तस्वर उकारसे परे हुआ क्योंकि आगम मित्संज्ञकहै तब रूप हुआ (अनडुआह् सि) फिर (उ वम्) इस सूत्रकर हुआ (अनड्वाह् सि) फिर-

सावनडुहः ।

सौ-अनडुहः । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) अनडुह्शब्दस्य सौ परे नुमागमो भवति ।

भाषार्थ-अनडुह्शब्दको सिविभक्तिपरे संते नुम् आगम होय । जैसे (अनड्वाह् सि) इसमें अनड्वाह् शब्दसे परे सिविभक्ति विद्यमानहै इसकारण अनड्वाह् शब्दको नुम् आगम किया तो वह आगम अनड्वाह् शब्दके अन्तस्वर आकारके परे हुआ क्योंकि, आगमका मकार इत्है और उकार उच्चारणार्थ है तब रूप हुआ (अनड्वान्ह् सि) फिर (हसेपः सेर्लोपः) इस सूत्रकर सिका लोप करनेसे रूप हुआ (अनड्वान्ह्) फिर-॥

---

(१) (केचित्तु । चतुरनडुहोराम्वी च । इति सूत्रेणामागममिच्छन्ति चकारात्स्त्रीलिंगे विकल्पेनामागममिच्छन्ति (अनड्वाही । अनडुही) भाषार्थ-कोई आचार्य (चतुरनडुहोराम्वी च) इस सूत्रकर अनडुह् शब्दको पांच वचनोंके विषे आम् आगम इच्छा करतेहैं और सूत्रमें चकारके ग्रहणसे स्त्रीलिंगके विषे विकल्प करके आम् आगम इच्छा करते हैं जैसे (अनड्वाही । अनडुही) इति ॥

संयोगान्तस्य लोपः।

संयोगान्तस्य—लोपः। द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) संयोगान्तस्य रसे पदान्ते च लोपो भवति।

भाषार्थ—संयोग संज्ञाके अन्त अक्षरका लोप होय रस प्रत्याहार और पदान्तके विषे और वृत्तिमें चकारके ग्रहणसे रकारसे अगाडी संयोग संज्ञाके अन्त वर्णका लोप नहीं होय किन्तु रकारसे सकारकाही लोप होय जैसे (अनड्वान्ह्) इसमें नकार हकार दोनों व्यञ्जन एक जगह होनेसे संयोग संज्ञकहैं इसकारण संयोग संज्ञक नकार हकारमें जो अन्तवर्ण हकार तिसका लोप करदिया क्योंकि विभक्त्यन्त होनेसे पदान्त विद्यमान है तव रूप हुआ (अनड्वान्) द्विवचनमें (अनडुह् औ) ऐसा स्थितहै इसमें अनडुह् शब्दसे परे स्यादिक पंचवचन सम्वन्धी औ विद्यमान है इसकारण अनडुह् शब्दको आम् आगम करनेसे रूप हुआ (अनडुआह् औ) फिर (उ वम्) इस सूत्रकर सिद्ध हुआ (अनडाहौ) और इसीप्रकार वहुवचनमें आम् आगम करनेसे रूप हुआ (अनड्वाहः) और द्वितीयाएकवचनमेंभी आम् आगम करनेसे रूप हुआ (अनड्वाहम्) द्विवचनमें (अनड्वाहौ) और वहुवचनमें स्यादिक पंचवचन न होनेसे आम् आगम नहीं हुआ किन्तु (स्वरहीनं परेण संयोज्यम्) इसकर सिद्ध हुआ (अनडुहः) तृतीयाएकवचनमें (अनुडुहा) द्विवचनमें (अनडु-ह्भ्यां) ऐसा स्थित है॥

वसां रसे।

वसाम्—रसे। द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) वसु स्रंसु ध्वंसु भ्रंसु अनडुह् इत्येतेषां दो भवति रसे पदान्ते च। अनडुद्भ्याम्। अनडुद्भिः। अनडुहे। अनडुद्भ्याम्। अनडुद्भ्यः। अनडुहः। अनडुद्भ्याम्। अनडुद्भ्यः। अन-डुहः। अनडुहोः। अनडुहाम्। अनडुहि। अनडुहोः। अनडुत्सु। सम्बो-धने धि विषये। अनडुह् इति सि स्थिते।

भाषार्थ—वसु स्रंसु ध्वंसु भ्रंसु अनडुह इन शब्दोंको रस प्रत्याहार पर हुए संते और पदान्तके विषे दकार होय। भाव यह है कि, वसु स्रंसु ध्वंसु भ्रंसु अनडुह् इन शब्दोंसे परे यदि रस प्रत्याहार तथा पदान्त होवै तो (षष्ठीनिर्दिष्टस्यादेशस्तद-न्तस्य ज्ञेयः) इस करके इनके अन्तवर्णको दकार आदेश होय जैसे (अनडुह् भ्याम्) इसमे अनडुह् शब्दसे परे रस प्रत्याहार सम्बन्धी भकारहै इसकारण अनुडुह् शब्दके हकारके स्थानमें दकार करनेसे रूप हुआ (अनडुद्भ्याम्) इसीप्रकार बहुवचनमें

(अनडुद्भिः) चतुर्थी एकवचनमें (अनडुहे) द्विवचनमें (अनडुद्भ्याम्) बहुवचनमें (अनडुद्भ्यः) पंचमीके एकवचनमें (अनडुहः) द्विवचनमें (अनडुद्भ्याम्) बहुवचनमें (अनडुद्भ्यः) षष्ठीके एकवचनमें (अनडुहः) द्विवचनमें (अनडुहोः) बहुवचनमें (अनडुहाम्) सप्तमीके एकवचनमें (अनडुहि) द्विवचनमें (अनडुहोः) बहुवचनमें (अनडुह् सु) ऐसा स्थित है । इसमें अनडुह् शब्दसे परे रस प्रत्याहार सम्बन्धी सकार विद्यमान है इसकारण हकारके स्थानमें दकार करनेसे (खसे चपा झसानाम्) इस सूत्रकर सिद्ध हुआ (अनडुत्सु) सम्बोधनमें सिकी धिसंज्ञा करनेपर (अनडुह् सि) ऐसा स्थितहै ॥

धावम् ।

धौ-अम् । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) अनडुह्शब्दस्य धौ परे अमागमो भवति । हे अनड्वन् । हे अनड्वाहौ । हे अनड्वाहः ।

भाषार्थ–अनडुह् शब्दको धि पर हुए संते अम् आगम होय जैसे (अनडुह सि) इसमें अनडुह् शब्दसे परे धिसंज्ञक सि विद्यमानहै इसकारण अनडुह् शब्दके अन्तस्वर उकारसे परे अम् आगम करनेसे रूप हुआ (अनडुह सि) फिर (उ वम्) इस सूत्रकर हुआ (अनड्वह् सि) फिर (सावनडुहः) इस सूत्रकर नुम् आगम किया तो रूप हुआ (अनड्वन्ह् सि) फिर (हसेपः सेर्लोपः) इस सूत्रकर सिका लोप किया तो रूप हुआ (अनड्वन्ह्) फिर (संयोगान्तस्य लोपः) इस सूत्रकर संयोग संज्ञाके अन्त वर्ण हकारका लोप करनेसे रूप सिद्ध हुआ (हे अनड्वन्) (हे अनड्वाहौ) (हे अनड्वाहः) इत्यादि ॥

हकारान्तो गोदुह् शब्दः । तस्य विशेषः । गोदुह् सि । इति स्थिते । हसेपः सेर्लोपः ।

भाषार्थ–हकारान्त गोदुह् शब्दहै उसको विशेषहै । प्रथमाएकवचनमें (गोदुह् सि) ऐसा स्थितहै इसमें हसान्त गोदुह् शब्दसे परे सि विभक्ति विद्यमानहै इसकारण सिका लोप करनेसे रूप हुआ (गोदुह्) फिर– ॥

दादेर्घः ।

दादेः-घः । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) दादेर्धातोर्हकारस्य घत्वं भवति झसेपरे नाम्नश्च रसे पदान्ते च ।

भाषार्थ–दकारहै आदिमें जिसके ऐसे धातुके हकारको घकार होय झस प्रत्याहार पर हुए संते और नाम संज्ञासे रस प्रत्यार परे संते और पदान्तके विषे;भाव यहहै कि,

जिस हकारान्त धातुके आदिमें दकार होवै उस धातुसे परे यदि झस प्रत्याहार होवै तो उस धातुके हकारके स्थानमें घकार होजावै और जिस क्विबादि प्रत्ययान्त नाम संज्ञक हकारान्त शब्दके आदिमें दकार होवै उस नामसंज्ञक शब्दसे परे यदि रस प्रत्याहार तथा पदान्त होवै तो उस क्विबादि प्रत्ययान्त नामसंज्ञक शब्दके हकारके स्थानमेंभी घकार होजावै जैसे (गोदुह्) इसमें गोशब्दसे परे क्विप् प्रत्ययान्त धातु संज्ञक दकारादि हकारान्त दुह् शब्दहै इसमें परे पदान्त विद्यमानहै इसकारण हकारके स्थानमें घकार किया तब रूप हुआ (गोदुघ्) फिर-॥

आदिजबानां झभान्तस्य झभाः स्ध्वोः । (१)

आदिर्जबानाम्-झभान्तस्य-झभाः-स्ध्वोः।चतुष्पदमिदंसूत्रम् (वृत्तिः) धातोर्झभान्तस्यादौ वर्त्तमानानां जबानां झभा भवंति सकारे ध्वशब्दे च परे नाम्नश्च रसे पदान्ते च (वावसाने) गोधुक् । गोधुग् । गोदुहौ । गोदुहः । हे गोधुक् । हे गोधुग् । हे गोदुहौ । हे गोदुहः । गोदुहम् । गोदुहौ । गोदुहः । गोदुहा । भकारादौ (दादेर्घः) इतिघत्वे आदिजबस्य दकारस्य रसे धकारे कृते (झबेजबाः) गोधुग्भ्याम् । गोधुग्भिः । गोदुहे । गोधुग्भ्याम् । गोधुग्भ्यः । गोदुहः । गोधुग्भ्याम् । गोधुग्भ्यः । गोदुहः । गोदुहोः गोदुहाम् । गोदुहि । गोदुहोः । सप्तमीबहुवचने । गोधुघ् सु । इति स्थिते । खसेचपाझसानाम् । इति कत्वम् । किलात्षः कृतस्य । इति षत्वम् ।

भाषार्थ-झस् प्रत्याहारहै अन्तमें जिसके ऐसे धातुके आदिमें वर्त्तमान जो जब तिनके स्थानमें सवर्गीय झभ होय आख्यात प्रक्रियाके सकार और ध्व शब्द पर हुयेसंते और नामसे रस प्रत्याहार तथा पदान्तके विषे । भाव यहहै कि, जिस धातुके अन्तमें झभ प्रत्याहार सम्बन्धी अक्षर होय और आदिमें जब प्रत्याहार सम्बन्धी अक्षर होय तो उस धातुके जब प्रत्याहार सम्बन्धी अक्षरके स्थानमें सवर्गीय झभ प्रत्याहार सम्बन्धी अक्षर होय जो उसी धातुसे आख्यात प्रक्रिया सम्बन्धी सकार और ध्व शब्द परे होवै और जिस क्विबादि प्रत्ययान्त नामसंज्ञक शब्दके अन्तमें झभ प्रत्याहार सम्बंधी अक्षर होवै और आ-

(१) कोई आचार्य इस सूत्रको (आदिजयानां ढमान्तस्य ढमाः स्ध्वोः) ऐसा सूत्र पढतेहैं ऐसा सूत्र पढनेका यह अभिप्रायहै कि, आदि जव सम्बन्धी ज़कारके स्थानमें झकार नहीं होता । जैसे जभ् शब्दके रूपहुए । जप्-जब्-जभौ-जभः । जभम् । जभौ । जभः । जभा । जब्भ्याम् । इत्यादि।

दिमें जव प्रत्याहार सम्वन्धी अक्षर होवै तो उस क्विवादि प्रत्ययान्त नामसंज्ञक शब्दके जव प्रत्याहार सम्बन्धी अक्षरके स्थानमेंभी झभ प्रत्याहार सम्वन्धी सवर्गीय अक्षर होय जो रस प्रत्याहार सम्बन्धी अक्षर परे होवै या पदान्त होवै तो जैसे (गोदुघ्) इसमें क्विप् प्रत्ययान्त झभान्त दुघ् शब्दके आदिमें जव प्रत्याहार सम्वन्धी अक्षर दकार विद्यमानहै इसकारण दकारके स्थानमें झभ प्रत्याहार सम्वन्धी सवर्गीय धकार किया । क्योंकि पदान्त विद्यमानहै तव रूप हुआ (गोधुघ्) फिर (वावसाने) इससूत्रकर सिद्ध हुआ (गोधुक्) (गोधुग्) द्विवचनमें (गोदुहौ) वहुवचनमें (गोदुहः) सम्वोधनमें (हे गोधुक्) (हे गोधुग्) (हे गोदुहौ) (हे गोदुहः) द्वितीयामें (गोदुहम्) (गोदुहौ) (गोदुहः) तृतीया एकवचनमें (गोदुहा) और भकारादि द्विवचन वहुवचनमें (दादेर्घः) इसकर घकार करनेपर (आदिजवानां झभान्तस्य झभाः स्ध्वोः) इसकर आदि जव प्रत्याहार सम्वन्धी दकारके स्थानमें रस प्रत्याहार सम्वन्धी भकार पर होनेसे धकार किया फिर (झवे जवाः) इस सूत्रकर घकारके स्थानमें गकार करनेसे रूप हुआ (गोधुग्भ्याम्) (गोधुग्भिः) चतुर्थीमें (गोदुहे) (गोधुग्भ्याम्) (गोधुग्भ्यः) पंचमीमें (गोदुहः) (गोधुग्भ्याम्) (गोधुग्भ्यः) षष्ठीमें (गोदुहः) (गोदुहोः) (गोदुहाम्) सप्तमीके एकवचनमें (गोदुहि) द्विवचनमें (गोदुहोः) बहुवचनमें (दादेर्घः) इसकर घकार करनेपर (आदिजवानां झभान्तस्य झभाः स्ध्वोः) इसकर आदि जव दकारके स्थानमें धकार किया फिर (खसे चपा झसानाम्) इसकर घकारके स्थानमें ककार करनेपर (किलात्षः सः कृतस्य) इसकर रूप हुआ (गोधुक्षु) फिर-॥

कषसंयोगे क्षः ।

कषँसंयोगे-क्षँः । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) ककारषकारसंयोगे क्षो भवति ।

भाषार्थ-ककार और षकारके संयोगमें दोनोंके स्थानमें क्ष होवै जैसे (गोधुक् षु) इसमें ककार और षकार दोनोंका संयोगहै इसकारण दोनोंके स्थानमें क्ष करनेसे रूप सिद्ध हुआ (गोधुक्षु) ।

हकारान्तमधुलिह्-शब्दस्य विशेषः । प्रथमैकवचने । मधुलिह् सि । इति स्थिते ।

भाषार्थ-हकारान्त मधुलिह् शब्दको विशेषहै प्रथमाके एकवचनमें (मधुलिह् सि) ऐसा स्थितहै (हसेपः सेर्लोपः) इस सूत्रकर सिका लोप करनेसे रूप हुआ (मधुलिह्) फिर-॥

हो ढः ।

८१ ११
हः—ढः । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) धातोर्हकारस्य ढत्वं भवति झसेपरे नाम्नश्च रसे पदान्ते च (वावसाने) इति ढकारस्य डकारटकारौ । मधुलिट् । मधुलिड् । मधुलिहौ । मधुलिहः । हे मधुलिट् । हे मधुलिड् । मधुलिहम् । मधुलिहौ । मधुलिहः । मधुलिहा । मधुलिड्भ्याम् । मधुलिड्भिः । इत्यादि ।

भाषार्थ—धातुके हकारको ढकार होय झस प्रत्याहार पर हुए संते और नामसे रसप्रत्याहार पर हुए संते तथा पदान्तके विषे । भाव यह है कि, धातुके हकारसे यदि झस प्रत्याहार परे होवै तो उस हकारके स्थानमें ढकार होजावै और नामसंज्ञक शब्दके हकारसे यदि रस प्रत्याहार होवै या पदान्त होवै तो उस हकारके स्थानमें ढकार होय जैसे (मधुलिह्) इसमें हकारसे परे पदान्त है क्योंकि सि विभक्तिका लोप होगयाहै । तब रूप हुआ (मधुलिढ्) फिर (वावसाने) इसकर सिद्धहुआ (मधुलिट्) (मधुलिड्) द्विवचनमें (मधुलिहौ) बहुवचनमें(मधुलिहः) सम्बोधनमें (हे मधुलिट्) (हे मधुलिड्) (हे मधुलिहौ) बहुवचनमें (हे मधुलिहः) द्वितीयामें (मधुलिहम् । मधुलिहौ । मधुलिहः) तृतीयाएकवचनमें (मधुलिहा) द्विवचनमें (होढः) इस सूत्रकर हकारके स्थानमें ढकार करनेपर (झवे जवाः) इस सूत्रकर डकार किया तब रूप हुआ । (मधुलिड्भ्याम्) इसीप्रकार और भकारादि विभक्ति वचनमें जानने । सप्तमीबहुवचनमें (होढः) इस सूत्रकर ढकार करनेपर (खसेचपाझसानाम्) इस सूत्रकर टकार किया तब रूप सिद्ध हुआ (मधुलिट्सु) (१) इसी प्रकार तुरासाह् और पृत् नासाह और हव्यवाह् । इत्यादिक शब्द साधनेयोग्यहैं ।

मित्रद्रुह्शब्दस्य भेदः । द्रुहादीनां घत्वढत्वे वा । मित्रध्रुक् । मित्रध्रुग् । मित्रध्रुट् । मित्रध्रुड् । मित्रद्रुहौ । मित्रद्रुहः । धावप्येवम् । मित्रद्रुहम् । मित्रद्रुहौ । मित्रद्रुहः । मित्रद्रुहा । मित्रध्रुग्भ्याम् । मित्रध्रुड्भ्याम् । मित्रध्रुक्षु । मित्रध्रुट्सु इत्यादि । एवं तत्त्वमुहादयः ।

भाषार्थ—मित्रद्रुह् शब्दको भेद है । द्रुहादिक शब्दोंको रस प्रत्याहार और पदान्तके विषे घकार और ढकार विकल्प करके होय । भाव यह है कि, द्रुह् मुह् स्नुह् स्निह् । इन शब्दोंके हकारसे यदि रस प्रत्याहार वा पदान्त होवै तो उस

(१) यदि कहो कि (मधुलिट्सु) इसमें (ष्टुभिःष्टुः) इस सूत्रकर सकारके स्थानमें षकार क्यों नहीं किया तहाँ यह समाधानहै (क्वचिदपदान्तेपि पदान्तताश्रयणीया) अर्थ—कहीं २ अपदान्तके विषेभी पदान्तता आश्रय करने योग्यहै इस न्यायसे (ढोरत्स्यात्) इस सूत्रकर षकार नहीं हुआ इति ॥

हकारके स्थानमें एक जगह घकार और एक जगह ढकार होय जैसे (मित्रद्रुह् सि) ऐसा स्थित है (हसेपः सेर्लोपः) इस सूत्रकर सिका लोप करनेसे रूप हुआ (मित्रद्रुह्) इसमें एक जगह द्रुह् शब्दके हकारके स्थानमें घकार किया क्योंकि, पदान्त विद्यमान है तब रूप हुआ (मित्रद्रुघ्) फिर (आदिजबानां झभान्तस्य झभाः स्ध्वोः) इसकर द्रुघ् शब्दके दकरके स्थानमें धकार करनेपर हुआ (मित्रध्रुघ्) फिर (वावसाने) इसकर सिद्ध हुआ (मित्रध्रुक् (मित्रध्रुग्) और एक जगह हकारके स्थानमें ढकार करनेपर (आदि) जवानां झभान्तस्य झभाः स्ध्वोः) इसकर रूप हुआ (मित्रध्रुढ्) फिर (वावसाने) इसकर सिद्ध हुआ (मित्रध्रुट्) (मित्रध्रुड्) द्विवचनमें (मित्रद्रुहौ) बहुवचनमें (मित्रद्रुहः) इसीप्रकार सम्बोधनमें होते हैं (द्वितीयामें) मित्रद्रुहम् (मित्रद्रुहौ) (मित्रद्रुहः) तृतीयाएकवचनमें (मित्रद्रुहा) द्विवचनमें एक जगह रसप्रत्याहार सम्बन्धी भकार परे होनेसे घकार किया फिर (आदिजवानां झभान्तस्य०) इस सूत्रकर दकारके स्थानमें धकार किया फिर (झबे जबाः) इस सूत्रकर धकारके स्थानमें गकार करनेसे रूप सिद्ध हुआ (मित्रध्रुग्भ्याम्) और एक जगह हकारके स्थानमें ढकार करनेपर (आदिजवानां० इस सूत्रकर दकारके स्थानमें धकार किया फिर (झबे जबाः) इस सूत्रकर ढकारके स्थानमें डकार करनेसे रूप सिद्ध हुआ (मित्रध्रुग्भ्याम्) इसीप्रकार अन्य भकारादि विभक्तिवचनोंमें रूप साधनेयोग्य हैं और सप्तमीबहुवचनमें एकजगह हकारके स्थानमें घकार करनेपर (आदिजवानां०) इसकर दकारके स्थानमें धकार किया फिर (खसे चपा झसानाम्) इसकर घकारके स्थानमें ककार करनेपर (क्विलात्षः सः कृतस्य) इसकर सकारके स्थानमें षकार किया फिर (कषसंयोगे क्षः) इसकरके ककार षकार दोनोंके स्थानमें क्ष करनेसे रूप सिद्ध हुआ (मित्रध्रुक्षु) और एक जगह हकारके स्थानमें ढकार करनेपर (आदिजवानां झभान्तस्य०) इसकर दकारके स्थानमें धकार किया फिर (खसेचपा झसानाम्) इसकर ढकारके स्थानमें टकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ (मित्रध्रुट्सु) इसी प्रकार तत्त्वमुह्, पुत्रस्निह्, क्षीरस्नुह् शब्द साधनेयोग्य हैं।इति॥

रेफान्तश्चतुर्शब्दो नित्यं बहुवचनान्तः । प्रथमाबहुवचने । चतुर् अस् । इति स्थिते ।

भाषार्थ-रकारान्त चतुर शब्द नित्यही बहुवचनान्त है । प्रथमाबहुवचनमें । चतुर् अस् । ऐसा स्थित है ॥

चतुराम्शौ च ।

६ १ १ १ ७ १ अ०
चतुः—आम्—शौ--च । चतुष्पदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) चतुर्शब्दस्य आमा-

गमो भवति पञ्चसु परेषु शौ च । मिदन्त्यात्स्वरात्परो वक्तव्यः । चत्वारः । चतुरः । चतुर्भिः । चतुर्भ्यः । चतुर् आम् । इति स्थिते ।

भाषार्थ—चतुर् शब्दको आम् आगम होय स्यादिक (१) पांच वचन पर हुए संते और शिके विषे जैसे (चतुर् अस्) इसमें चतुर् शब्दसे स्यादिक पंचवचन-सम्बन्धी जस्का शुद्ध रूप अस् विद्यमानहै इसकारण चतुर् शब्दको आम् आगम किया तो वह आगम मित् होनेसे अन्त्यस्वर उकारसे परे हुआ तब रूप हुआ (चतुआर् अस्) फिर (उ वम्) और (स्वरहीनं परेण संयोज्यम्) (स्रोर्विसर्गः) इनकर सिद्ध हुआ (चत्वारः) और द्वितीयाबहुवचनमें स्यादिक पंचवचनसम्बधी वचन न होनेसे आम् आगम तो हुआ नहीं किन्तु (स्वरहीनं परेण संयोज्यम्) (स्रोर्विसर्गः) इनकर सिद्ध हुआ (चतुरः) तृतीयाबहुवचनमें (चतुर्भिः) चतुर्थी-बहुवचनमें (चतुर्भ्यः) पंचमीबहुवचनमें (चतुर्भ्यः) षष्ठीबहुवचनमें (चतुर् अस् आम्) ऐसा स्थितहै ॥

रः संख्यायाः ।

रः-संख्यायाः । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) रेफान्तसंख्यायाः पर-स्यामो नुडागमो भवति । णत्वं द्वित्वं च । चतुर्णाम् । चतुर्षु ॥ नकारान्तो राजन् शब्दः । नोपधायाः । इति पञ्चसु दीर्घः ।

भाषार्थ—रकारहै अन्तमें जिसके ऐसे संख्यावाची शब्दसे परे जो आम् तिसको नुट् आगम होय जैसे (चतुर् आम्) इसमें रकारान्त संख्यावाचक चतुर् शब्दसे परे आम् विद्यमानहै इसकारण आम्को नुट् आगम करनेसे रूप हुआ (चतुर्न् आम्) फिर (षुर्नोणोऽनन्ते) (राद्यपोद्विः) इन सूत्रोंकर सिद्ध हुआ (चतुर्णाम्) और सप्तमीबहुवचनमें (क्विलात्षः सः कृतस्य) इसकर सिद्ध हुआ (चतुर्षु) (२) नकारान्त राजन् शब्दहै । तिसको पांचवचनोंके विषे (नोपधायाः) इस सूत्रकर दीर्घ होना चाहिये जैसे (राजन् सि) ऐसा स्थितहै (नोपधायाः) इसकर राजन्

---

(१) यहाँपर वृत्तिमें जोकि, स्यादिक पांच वचनोंका ग्रहण कियाहै वह समासान्तत्वके सूचन करनेके लिये है । जैसे समासान्त होनेपर (प्रियचतुर् सि) ऐसा स्थितहै इसमें आम् आगम करनेसे रूप हुआ (प्रियचतुआर् सि) फिर (उ वम्) (हसेपस्सेर्लोपः) (स्रोर्विसर्गः) इनकर सिद्धहुआ (प्रियचत्वाः) द्विवचनमें (प्रियचत्वारौ) बहुवचनमें (प्रियचत्वारः)

(२) यदि कहो कि (चतुर्षु) इसमें (स्रोर्विसर्गः) इस सूत्रकर रकारके स्थानमें विसर्ग क्यों नहीं किया तहाँ यह समाधानहै कि (दोषां रः) इस सूत्रकर कियेहुए रकारके स्थानमें सप्तमी बहुवचन परे संते विसर्ग होताहै अन्यको नहीं होताहै । इति ॥

शब्दके उपधा अकारको दीर्घ करनेसे रूप हुआ (राजन् सि) फिर (हसेपः सेर्लोपः) इस सूत्रकर सिका लोप करनेसे रूप हुआ (राजान्)-फिर।

नाम्नो नो लोपशधौ ।

नाम्नः--नः--लोपश्--अधौ । चतुष्पदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) नाम्नो नकारस्यानागमजस्य लोपश् भवति रसे पदान्ते चाधौ । चकारत्क्वचिन्नाम्नो नकारस्य लोपश् न भवति । राजा । राजानौ । राजानः । अधाविति विशेषणात् हे राजन् । हे राजानौ । हे राजानः । राजानम् । राजानौ । शसि तु । राजन् अस् । इति स्थिते । अल्लोपः स्वरेऽम्वयुक्ताच्छसादौ । (स्तोः श्चुभिः श्चुः) इति चुत्वे नकारस्य ञकारः ।

भाषार्थ-नहीं आगमसे उत्पन्न हुआ जो नामसंज्ञक शब्दका नकार तिसका लोपश् होय रसप्रत्याहार परे संते और पदान्तके विषे, परन्तु धिविषयमें नहीं होय और वृत्तिमें चकारके ग्रहणसे किसी स्थानमें नामके नकारका लोपश् होवै नहीं । भाव यहहै कि, जो किं, नकार आगमसे उत्पन्न नहीं हो किन्तु स्वयं नामसंज्ञक शब्दकाही हो ऐसे नामसंज्ञक शब्दके नकारका लोपश् होजावे जो उस नकारसे रसप्रत्याहार परे होवै या पदान्त होवै तो, और धि विषयमें लोपश् होवै नहीं, जैसे प्रथमाएकवचनमें राजान् ऐसा स्थित रहाहै इसमें नकार स्वयं नामसंज्ञक राजन् शब्दका ही है न कि, आगमका इसकारण नकारका लोपश् किया क्योंकि पदान्त विद्यमान है तव रूप हुआ (राजा) द्विवचनमें (नोपधायाः) इसकर उपधाको दीर्घ करनेसे रूप हुआ (राजानौ) बहुवचनमें (राजानः) सम्बोधनमें सिकी धिसंज्ञा करनेपर रूप हुआ (राजन् सि) इसमें नोपधायाः इस सूत्रकर उपधाको दीर्घ भी नहीं हुआ क्योंकि, धिवर्जित पांच वचनोंका ग्रहणहै और (नाम्नो नो लोपशधौ) इसकर नकारका लोपशूभी नहीं हुआ क्योंकि अधौ अर्थात् धिवर्जित ऐसा सूत्रमें विशेषण है तव (हसेपः सेर्लोपः) इसकर सिका लोप्र करनेसे रूप सिद्ध हुआ (हे राजन्) द्विवचनमें (हे राजानौ) बहुवचनमें (हे राजानः) द्वितीयाके एकवचनमें (नोपधायाः) इसकर सिद्ध हुआ (राजानम्) द्विवचनमें (राजानौ) बहुवचनमें स्यादिक पंचवचनसम्बन्धी वचन न होनेसे (नोपधायाः) यह सूत्र तो प्राप्त हुआ नहीं । किन्तु (अल्लोपः स्वरेऽम्वयुक्ताच्छसादौ) इसकर राजन् शब्दके उपधासंज्ञक अकारका लोप करनेपर (स्तोः श्चुभिः श्चुः) इसकर चवर्गसम्बंधी जकारका योग होनेसे तवर्गसम्बन्धी नकारके स्थानमें ञकार होगया । तब रूप हुआ (राज्ञ् अस)-फिर-॥

जञोर्ज्ञः।

जञोः--ज्ञः। द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) जञोर्योगे ज्ञो भवति। राज्ञः। राज्ञा। लोपशि पुनर्न सन्धिः इति नियमात्। अद्धि। इत्यात्वं न भवति। राजभ्याम्। राजभिः। राज्ञे। राजभ्याम्। राजभ्यः। राज्ञः। राजभ्याम्। राजभ्यः। राज्ञः। राज्ञोः। राज्ञाम्। राज्ञि। वेङ्योः। राजनि। राज्ञोः। राजसु। एवं यज्वन् आत्मन् सुधर्मन्प्रभृतयः। यज्वा। यज्वानौ। यज्वानः। यज्वानम्। यज्वानौ। अम्वयुक्तादिति विशेषणादल्लोपो नास्ति। यज्वनः। यज्वभ्याम्। इत्यादि।

भाषार्थ–जकार और ञकारका योग होनेपर दोनोंके स्थानमें ज्ञ होजाताहै जैसे (राजूञ् अस) इसमें जकार और ञकारका योग है इसकारण दोनोंके स्थानमें ज्ञ करनेसे रूप सिद्ध हुआ (राज्ञः) तृतीयाएकवचनमें इसीप्रकार सिद्ध हुआ (राज्ञा) द्विवचनमें रसप्रत्याहारसम्बन्धी भकार परे होनेसे (नाम्नो नो लोपशधौ) इस सूत्रकर नकारका लोपश् करनेपर (लोपशि पुनर्न संधिः) इस नियमसे (अद्धि) इस सूत्रकर आकार नहीं हुआ किन्तु (राजभ्याम्) ऐसाही सिद्ध हुआ बहुवचनमें भी इसीप्रकार सिद्ध हुआ (राजभिः) चतुर्थीएकवचनमें (अल्लोपः स्वरेऽम्वयुक्ताच्छसादौ) (जञोर्ज्ञः) इनकर सिद्ध हुआ (राज्ञे) द्विवचनमें (राजभ्याम्) बहुवचनमें (राजभ्यः) पंचमीमें (राज्ञः) (राजभ्याम्) (राजभ्यः) षष्ठीमें (राज्ञः) (राज्ञोः) (राज्ञाम्) सप्तमीएकवचनमें (वेङ्योः) इस सूत्रकर विकल्प करके उपधाभूत अकारका लोप करनेसे एक जगह हुआ (राज्ञि) और एक जगह (राजनि) द्विवचनमें (राज्ञोः) बहुवचनमें (नाम्नो नो लोपशधौ) इस सूत्रकर नकारका लोपश् करनेपर रूप सिद्ध हुआ (राजसु) इसी प्रकार यज्वन्। आत्मन्। सुधर्मन्। इत्यादिक शब्द साधने योग्य हैं जैसे (यज्वा) (यज्वानौ) (यज्वानः) सम्बोधनमें (हे यज्वन्) (हे यज्वानौ) (हे यज्वानः) द्वितीयाएकवचनमें (यज्वानम्) द्विवचनमें (यज्वानौ) और बहुवचनमें (अम्वयुक्तात्) इस विशेषणसे अकारका लोप नहीं होता है जैसे (यज्वन् अस्) इसमें वकारान्त संयोग संज्ञासे उत्तरवर्त्ती अकार है इसकारण अकारका लोप नहीं होनेसे रूप सिद्ध हुआ (यज्वनः) तृतीयामें भी इसीप्रकार सिद्ध हुआ (यज्वना) (यज्वभ्याम्) (यज्वभिः) चतुर्थीमें (यज्वने) (यज्वभ्याम्) (यज्वभ्यः) इसीप्रकार अन्यरूप भी साधने योग्य हैं॥

श्वन्युवन्मघवन्शब्दानां पंचसु राजन्शब्दवत्प्रक्रिया। शसादौ तु विशेषः।

भाषार्थ–श्वन् और युवन् तथा मघवन् इन शब्दोंकी स्यादिक पंचविभक्ति वचनोंके विषे राजन् शब्दवत्प्रक्रिया है और शसादिकमें विशेष है जैसे प्रथमामें (श्वा) (श्वानौ) (श्वानः) द्वितीयाके एकवचनमें (श्वानम्) द्विवचनमें (श्वानौ) बहुवचनमें (श्वन् अस्) ऐसा स्थित है ॥

श्वादेः ।

श्वादेः । एकपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) श्वादेर्वकार उत्वं प्राप्नोति शसादौ स्वरे परे तद्धिते ईपि ईकारे च । शुनः । शुना । श्वभ्याम् । श्वभिः । इत्यादि । युवन्शब्दे तु वकारस्योत्वे कृते (सवर्णे दीर्घः सह) यूनः । यूना । युवभ्याम् । युवभिः । इत्यादि । मघोनः । मघोना । मघवभ्याम् । इत्यादि ॥ पथिन्-शब्दस्य भेदः ।

भाषार्थ–श्वादि शब्दोंका स्वर सहित वकार उकारभावको प्राप्त होवै शसादिक स्वर परहुए संते तथा तद्धित सम्बन्धी प्रत्यय और ईप् प्रत्यय तथा ईकार पर हुए संते । भाव यह है कि, श्वन् आदिक शब्दोंके स्वर सहित वकारके स्थानमें उकार होय जो शसादिक स्वर तथा तद्धित प्रत्यय और ईप् प्रत्यय और ईकार परे होवैं तो ,जैसे (श्वन् अस्) इसमें श्वन् शब्दसे परे शसादिक स्वर सम्बन्धी अस्का अकार विद्यमानहै इसकारण श्वन् शब्दके स्वर सहित वकारके स्थानमें उकार करनेसे रूप हुआ (शुन् अस्) फिर (स्वरहीनं परेण संयोज्यम्) (स्रोर्विसर्गः) इनकर सिद्ध हुआ (शुनः) इसीप्रकार तृतीयाएकवचनमें सिद्ध हुआ (शुना) द्विवचनमें (नाम्नो नो लोपशधौ) इसकर सिद्ध हुआ (श्वभ्याम्) बहुवचनमें (श्वभिः) इसीप्रकार अन्य विभक्ति वचनोंमें रूप साधनेयोग्य हैं । इसीप्रकार युवन् शब्द साधने योग्यहै जैसे प्रथमामें (युवा) (युवानौ) (युवानः) द्वितीयाएकवचन द्विवचनमें (युवानम्) (युवानौ) बहुवचनमें (युवन् अस्) ऐसा स्थित है (श्वादेः) इस सूत्रकर युवन् शब्दके स्वर सहित वकारके स्थानमें उकार करनेपर रूप हुआ (युउन् अस्) फिर (सवर्णे दीर्घः सह) (स्वरहीनं परेण संयोज्यम्) (स्रोर्विसर्गः) इनकर सिद्ध हुआ (यूनः) इसीप्रकार तृतीयाएकवचनमें सिद्ध हुआ (यूना) द्विवचनमें (नाम्नो नो लोपशधौ) इसकर सिद्ध हुआ (युवभ्याम्) इसीप्रकार अन्य विभक्ति वचनोंमें रूप साधने योग्य हैं और मघवन् शब्दके विषे शसादिक स्वरमें (श्वादेः) इसकर स्वर सहित वकारके स्थानमें पर उकार करनेसे (उ ओ) इस सूत्रकर सिद्ध हुआ (मघोनः) (मघोना) तृतीयाद्विवचनमें (मघवभ्याम्) बहुवचनमें (मघवभिः) इत्यादिक इसीप्रकार साधने योग्यहैं । पथिन् शब्दको भेद है प्रथमाएकवचनमें (पथिन् सि) ऐसा स्थित है ॥

इतोऽत्पंचसु।

इतः—अत्—पंचसु। त्रिपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) पंचसु स्यादिषु परेषु पथ्यादीनामिकारस्याकारादेशो भवति।

भाषार्थ—स्यादिक पांच वचन पर हुए संते पथ्यादिकोंके इकारको अकार आदेश होय। भाव यह है कि, पथिन् मथिन् ऋभुक्षिन् इन शब्दोंके इकारके स्थानमें अकार होजावै स्यादि पांच वचन पर हुए संते जैसे (पथिन् सि) इसमें पथिन् शब्दसे परे सि विद्यमान है इसकारण पथिन् शब्दके इकारके स्थानमें अकार करनेसे रूप हुआ। (पथन् सि) फिर—॥

थो नुट्।

थः— नुट्। द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) पथ्यादीनां थकारस्य नुडागमो भवति पञ्चसु स्यादिषु परेषु। पन्थन् सि इति स्थिते।

भाषार्थ—पथ्यादिकोंके थकारको नुट् आगम होय स्यादिक पांच वचन परे हुए संते। भाव यह है कि, पथिन् आदिक शब्दोंका जो थकार तिसको नुट् आगम होय स्यादिक पंचवचनोंमें जैसे (पथन् सि) इसमें थकारको नुट् आगम किया तो वह आगम टित् होनेसे थकारके आदिमें हुआ। आगममें उकार उच्चारणार्थ है तब रूप (पन्थन् सि) ऐसा स्थित हुआ॥

आ सौ।

आ—सौ। द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) पथ्यादीनां टेरात्वं भवति सौ परे। पन्थाः। पन्थानौ। पन्थानः। हे पन्थाः। पन्थानम्। पन्थानौ। पथिन् अस् इति स्थिते।

भाषार्थ—पथिन् आदिक शब्दोंकी टि को आकार होय सि विभक्तिवचन परहुए संते जैसे (पन्थन् सि) इसमें पथिन् शब्दके स्थानमें उत्पन्न हुए पन्थन् शब्दसे परे सि विभक्तिवचन विद्यमानहै इसकारण पन्थन् शब्दकी टि संज्ञा अन्के स्थानमें आकार करनेसे रूप हुआ (पन्था सि) फिर (सोर्विसर्गः) इसकर सिद्ध हुआ (पन्थाः) (१) द्विवचनमें (इतोऽत्पंचसु) इस सूत्रकर पथिन् शब्दके इकारके स्थानमें अकार करनेसे रूप हुआ (पथन् औ) फिर (थोनुट्) इसकर

(१) (पन्थाः) इसमें (नोपधायाः) इसीकरके दीर्घ तो होसकता परन्तु यहाँ टिको जो कि आंकारका विधान किया है वह सि प्रत्ययकेही लोप न होनेके वास्ते है॥

थकारको नुट् आगम किया तब रूप हुआ (पन्थन् औ) फिर (नोपधायाः) इसकर उपधाभूत अकारको दीर्घ करनेसे (स्वरहीनं परेण संयोज्यम्) इसकर सिद्ध हुआ (पन्थानौ) इसीप्रकार बहुवचनमें सिद्धहुआ (पन्थानः) सम्बोधनमें (हे पन्थाः) (हे पन्थानौ) (हे पन्थानः) द्वितीयाएकवचनमें (पन्थानम्) द्विवचनमें (पन्थानौ) बहुवचनमें स्यादिक पंचवचनसम्बन्धी वचन न होनेसे (इतोत्पंचसु) (थो नुट्) यह सूत्र नहीं प्राप्त होसक्ते किन्तु अंगाडीका सूत्र प्राप्त होसक्ताहै ॥

पथां टेः ।

पथाम्—टेः। द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) पथिन्-शब्दादीनां टेर्लोपो भवति शसादौ स्वरे परे । पथः । पथा । पथिभ्याम् । पथिभिः । इत्यादि । एवं मथिन् ऋभुक्षिन् शब्दौ ॥ दण्डिन्शब्दस्य भेदः ।

भाषार्थ—पथिन् शब्दादिकोंकी टिसंज्ञाका लोप होय शसादिक स्वर परहुए संते जैसे (पथिन् अस्) इसमें पथिन् शब्दसे परे शसादिस्वरसम्बन्धी अस्का अकार विद्यमान है इसकारण पथिन् शब्दके टिसंज्ञक इन्का लोप करनेसे (स्वरहीनं परेण संयोज्यम्) (स्रोर्विसर्गः) इनकर सिद्धहुआ (पथः) इसीप्रकार तृतीया-एकवचनमें सिद्ध हुआ (पथा) द्विवचनमें (नाम्नो नो लोपशधौ) इसकर नकारका लोपश् करनेपर रूप सिद्ध हुआ (पथिभ्याम्) बहुवचनमें (पथिभ्यः) इसीप्रकार चतुर्थी आदिकमें साधनेयोग्य है । और सप्तमीबहुवचनमें (नाम्नो नो लोपशधौ) इसकर नकारका लोपश् करनेपर भी (किलात्षः सः कृतस्य) इसकर सिद्धहुआ (पथिषु) इसीप्रकार मथिन् ऋभुक्षिन् यह दोनों शब्द साधने योग्य हैं जैसे (मन्थाः) (मन्थानौ) (मन्थानः) (हे मन्थाः) (मन्थानम्) (मन्थानौ) (मथः)(मथा) (मथिभ्याम्) इत्यादिक और ऋभुक्षिन् शब्दके जैसे (ऋभुक्षाः) (ऋभुक्षाणौ) (ऋभुक्षाणः) (हे ऋभुक्षाः) (ऋभुक्षाणम्) (ऋभुक्षाणौ) (ऋभुक्षः) (ऋभुक्षा) (ऋभुक्षिभ्याम्) (ऋभुक्षिभिः) इत्यादि ॥ दण्डिन् शब्दको भेद है । प्रथमाएकवचनमें (दण्डिन् सि) ऐसा स्थित है ॥

इनां शौ सौ ।

इनाम्—शौ—सौ । त्रिपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) इन् हन् पूषन् अर्य्यमन् इत्येतेषां शौ सौ चाधौ परे उपधाया दीर्घो भवति । नलोपसिलोपौ । दण्डी । दण्डिनौ । दण्डिनः । दण्डिनम् । दण्डिनौ । दण्डिनः । दण्डिना । दण्डिभ्याम् । दण्डिभिः । इत्यादि । एवं ब्रह्महन् शब्दः । ब्रह्महा । ब्रह्महणौ । ब्रह्महणः ।

हे ब्रह्महन्। हे ब्रह्महणौ। हे ब्रह्महणः। ब्रह्महणम्। ब्रह्महणौ। शसादौ तु अल्लोपः।

भाषार्थ–इन् हन् पूषन् अर्य्यमन् इनकी शि और धिवर्जित सि परहुए संते ही उपधाको दीर्घ होय। भाव यह है कि, इन् प्रत्ययान्त और इन्के उपलक्षणसे विन् प्रत्ययान्त और क्विप् प्रत्ययान्त हन् धातु और पूषन् और अर्य्यमन् इनके उपधा संज्ञक स्वरको दीर्घ होय जो शि और धिसंज्ञावर्जित सि परे होवैं तो। इसकर शि और सिके विषेही दीर्घ हो; न कि (नोपधायाः) इस सूत्रकर पांच वचनोंके विषे। इस नियमके अर्थ यह विधान किया है जैसे (दण्डिन् सि) इसमें इन् प्रत्ययान्त दण्डिन् शब्दसे परे सि विद्यमान है इसकारण दण्डिन् शब्दकी उपधा इकारके स्थानमें दीर्घ किया फिर (हसेपः सेर्लोपः) (नाम्नो नो लोपशधौ) इनकर सि और नकारका लोपकर रूप सिद्ध हुआ (दण्डी) द्विवचनमें (नोपधायाः) इस सूत्रकर दीर्घ नहीं हुआ क्योंकि (इनां शौ सौ) यह सूत्र केवल शि और धिवर्जित सिके ही विषे दीर्घताविधान करता है, न कि पांच वचनोंके विषे। तब रूप सिद्ध हुआ (दण्डिनौ) बहुवचनमें (दण्डिनः) सम्बोधनमें धिके विषे (इनां शौ सौ) (नाम्नो नो लोपशधौ) इन दोनोंकी प्राप्ति नहीं हुई क्योंकि इन दोनों सूत्रोंमें धिसंज्ञावर्जित सिका ग्रहणहै तब रूप हुआ (हे दण्डिन्) द्विवचनमें (हे दण्डिनौ) बहुवचनमें (हे दण्डिनः) द्वितीयामें (दण्डिनम्) (दण्डिनौ) (दण्डिनः) तृतीयामें (दण्डिना) (दण्डिभ्याम्) (दण्डिभिः) इत्यादिक। इसी प्रकार ब्रह्महन् शब्द साधनेयोग्य है जैसे (ब्रह्महा) (ब्रह्महणौ) (ब्रह्महणः) (हे ब्रह्महन्) (हे ब्रह्महणौ) (हे ब्रह्महणः) (ब्रह्महणम्) (ब्रह्महणौ) शसादि स्वर विभक्ति वचनोंमें (अल्लोपः स्वरेऽम्वयुक्ताच्छसादौ) इसकर ब्रह्महन् शब्दके उपधासंज्ञक अकारका लोप किया तब रूप हुआ (ब्रह्महन् अस) फिर– ॥

हनो घ्ने।

हनः–घ्–ने। त्रिपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) हन्तेर्धातोर्हकारस्य घकारो भवति नकारे ञ्णिति च परे। घसंयोगो णत्वनिषेधार्थः। ब्रह्मघ्नः। ब्रह्मघ्ना। ब्रह्महभ्याम्। ब्रह्महभिः। इत्यादि। अर्यम्णः। अर्य्यम्णा। अर्य्यमभ्याम्। अर्य्यमभिः। पूष्णः। पूष्णा। पूषभ्याम्। पूषभिः। पूष्णे। पूषभ्याम्। पूषभ्यः। इत्यादि (ङौ टिलोपो वेति केचित्) पूषि। पूषणि। पूष्णि। पूष्णोः। पूषसु ॥ संख्याशब्दाः पंचन्प्रभृतयो बहुवचनान्तास्त्रिषुलिंगेषु सरूपाः। पञ्चन्। जस्। इति स्थिते।

भाषार्थ-हन्ति अर्थात् हन् इस धातुके सम्बन्धी हकारको घकार होय नकार परहुए संते और जिसका ञकार वा णकार इतसंज्ञक होय वह परहुए संते जैसे (ब्रह्महन् अस्) इसमें क्विप् प्रत्ययान्त हन् धातुके हकारके नकार परे विद्यमानहै इसकारण हकारके स्थानमें घकार करनेसे रूप हुआ (ब्रह्मघ्न् अस्) (स्वरहीनं परेण संयोज्यम्) (स्रोर्विसर्गः) इसकर रूप सिद्ध हुआ (ब्रह्मघ्नः) यदि कहो कि इसमें (षुर्नोंणोऽनन्ते) इसकर नकारके स्थानमें णकार क्यों नहीं किया तहाँ कहते हैं । नकारके साथ घकारका संयोग णकारके निषेध करनेके अर्थ है । भाव यह है कि, घकार नकारके योग होनेपर (षुर्नोंणोऽनन्ते) इसकरके नकारको णकार नहीं होय । इसी प्रकार तृतीयाएकवचनमें (ब्रह्मघ्ना) द्विवचनमें (नाम्नो नो लोपशधौ) इसकर सिद्ध हुआ (ब्रह्महभ्याम्) इत्यादि । इसीप्रकार पूषन् अर्य्यमन् शब्द साधनेयोग्यहैं । शसादिक स्वरमें (अल्लोपः स्वरेऽम्वयुक्ताच्छसादौ) इसकर अकारका लोप करनेपर (षुर्नोंणोऽनन्ते) इसकर णकार करने योग्यहै । जैसे (अर्य्यमा) (अर्य्यमणौ) (अर्य्यमणः) (हे अर्य्यमन्) (अर्यमणम्) (अर्य्यमणौ) (अर्य्यमणा) (अर्य्यमभ्याम्) इत्यादि । (पूषा) (पूषणौ) (पूषणः) (हे पूषन्) (पूषणम्) (पूषणौ) (पूष्णः) (पूष्णा) (पूषभ्याम्) (पूषभिः) इत्यादि । सप्तमीएकवचनमें (पूषन् इ) ऐसा स्थितहै पूषन् शब्दकी टिका लोप होय विकलपरकके ङि परहुए संते ऐसा कोई आचार्य कहतेहैं इस कथनसे एक जगह पूषन् शब्दके टिसंज्ञक अन्का लोप करनेसे रूप हुआ (पूषि) और जहाँ टिका लोप नहीं हुआ तहाँ (वेङ्योः) इस सूत्रकर एक जगह (पूष्णि) एकजगह (पूषणि) द्विवचनमें (पूष्णोः) वहुवचनमें (पूषसु)॥ पंचन् आदिक संख्यावाचक शब्द बहुवचनान्त होतेहैं और तीनों लिंगोंके विषे समान रूप होतेहैं प्रथमा वहुवचनमें (पञ्चन् जस) ऐसा स्थितहै ॥

जश्शसोर्लुक् ।

जश्शसोः-लुक् । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) षकारनकारान्तसंख्यायाः परयोर्जश्शसोर्लुक् भवति ।

भाषार्थ-षकारान्त और नकारान्त संख्यावाचक शब्दसे परे जस् और शस् इन दोनोंका लुक् होय जैसे (पंचन् जस) इसमें नकारान्त संख्यावाचक शब्दसे परे जस विद्यमानहै इसकारण जस्का लुक् किया तव रूप हुआ (पञ्चन्) अब इसमें (नोपधायाः) इस सूत्रकी प्राप्ति न होनेके लिये विशेष कहतेहैं ॥

लुकि न तन्निमित्तम् ।

लुकि-न-तन्निमित्तम् । त्रिपदमिदं सूत्रम्(वृत्तिः)लुकि सति तन्निमित्तं

कार्यं न स्यात् । तेन । नोपधायाः । इति दीर्घत्वं न । पंच । पंच । पंचभिः। पंचभ्यः । पंचभ्यः । पंचन् आम् । इति स्थिते ।

भाषार्थ-लुक् होनेपर तन्निमित्त कार्य नहीं होताहै भाव यहहै कि, लुक् किये-जानेपर जिसका कि लुक् किया जाताहै वह ही है निमित्तकारण जिसका ऐसा कार्य नहीं होताहै जैसे (पंचन्) इसमें पंचन् शब्दसे परे जस्का लुक् किया गयाहै इसकारण (नोपधायाः) इसकर पंचन् शब्दकी उपधाको दीर्घ नहीं हुआ क्योंकि (नोपधायाः) इस सूत्रकर जो कार्य होताहै उसका निमित्तकारण जस् है तब (नाम्नो नो लोपशधौ) इसकर नकारका लोपश् करनेसे रूप सिद्ध हुआ(पञ्च) शस्में भी इसीप्रकार सिद्ध हुआ (पञ्च) तृतीयाबहुवचनमें (पंचभिः) और चतुर्थी और पंचमीके बहुवचनमें (पंचभ्यः) षष्ठीबहुवचनमें (पञ्चन् आम्) ऐसा स्थित है ॥

ष्णः ।

ष्णः । एकपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) षकारनकारान्तसंख्यायाः परस्या-मो नुडागमो भवति (नोपधायाः) इति दीर्घत्वम् (नाम्नो नो लोपशधौ) पंचानाम् । पंचसु । एवं सप्तन्नवन्प्रभृतयः । अष्टन्शब्दस्य भेदः ।

भाषार्थ-षकारान्त और नकारान्त संख्यावाचक शब्दसे परे आम्को नुट् आ-गम होय जैसे (पंचन् आम्) इसमें नकारान्त संख्यावाचक पंचन् शब्दसे परे आम् विद्यमानहै इसकारण आम्को नुट् आगम किया तो वह आगम टित् होनेसे आम्के आदिमें हुआ और आगममें उकार उच्चारणार्थ है तब रूप हुआ (पंचन्न् आम्) फिर (नोपधायाः) इसकर पंचन् शब्दके उपधाभूत अकारको दीर्घ करनेपर (नाम्नो नो लोपशधौ) इसकर पंचन् शब्दके नकारका लोपश् किया तब रूप सिद्ध हुआ (पंचानाम्) सप्तमीबहुवचनमें (पंचसु) इसीप्रकार सप्तन् नवन् आदिके नकारान्त संख्यावाचक शब्द साधनेयोग्यहैं परन्तु अष्टन् शब्दको भेद है (अष्टन् जस्) ऐसा स्थितहै ॥

अष्टनो डौ वा ।

अष्टनः-डौ-वा । त्रिपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) अष्टन्शब्दात्परयोर्ज-श्शसोर्वा डौ भवति । डित्वाट्टिलोपः । अष्टौ । अष्ट । अष्टौ । अष्ट ।

भाषार्थ-अष्टन् शब्दसे परे जो जस् और शस् तिनको विकल्प करके डौ होय जैसे (अष्टन् जस्) इसमें अष्टन् शब्दसे परे जस् विद्यमानहै इसकारण एक जगह

जस्के स्थानमें डौ किया इसमें डकार इत्संज्ञक है तब रूप हुआ (अष्टन् औ) फिर औको डित् होनेसे अष्टन् शब्दकी टिसंज्ञा अन्का लोप करनेसे (स्वरहीनं परेण संयोज्यम्) इसकर सिद्ध हुआ (अष्टौ) और एक जगह जहाँ डौ नहीं हुआ तहाँ (जश्शसोर्लुक्) इसकर रूप सिद्ध हुआ (अष्ट) इसीप्रकार शसमें सिद्ध हुआ (अष्टौ) (अष्ट) तृतीयावहुवचनमें (अष्टन् भिस्) ऐसा स्थितहै ॥

वासु ।

अ०
वा--आ--आसु । त्रिपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) अष्टन्शब्दस्य आसु परासु विभक्तिषु वा टेरात्वं भवति । अष्टाभिः । अष्टभिः । अष्टाभ्यः । अष्टभ्यः । अष्टानाम् । अष्टासु । अष्टसु । मकारान्त इदम् शब्दः ।

भाषार्थ-अष्टन् शब्दकी टिको आकार होय विकल्प करके तृतीयादिक विभक्ति पर हुए संते जैसे (अष्टन् भिस्) इसमें अष्टन् शब्दसे परे तृतीयावहुवचनमें भिस् विद्यमानहै इसकारण अष्टन् शब्दकी टि संज्ञा अन्के स्थानमें आकार करनेसे (स्रोर्विसर्गः) इसकर सिद्ध हुआ (अष्टाभिः) और जहाँ अष्टन् शब्दके टिको आ नहीं हुआ तहाँ (नाम्नो नो लोपशधौ) इसकर नकारका लोपश् करनेसे रूप सिद्ध हुआ (अष्टभिः) इसीप्रकार चतुर्थी और पंचमीके बहुवचनमें सिद्ध हुआ (अष्टाभ्यः) (अष्टभ्यः) षष्ठीबहुवचनमें (अष्टन् आम्) इसमें (ष्णः) इस सूत्रकर आम्को नुट् आगम करनेपर एकजगह (वासु) इस सूत्रकर अष्टन् शब्दके टिसंज्ञक अन्के स्थानमें अकार करनेसे रूप सिद्ध हुआ (अष्टानाम्) और एक जगह जहाँ अष्टन् शब्दके टिसंज्ञक अन्को आकार नहीं हुआ तहाँ (नोपधायाः) (नाम्नो नो लोपशधौ) इनकर सिद्ध हुआ (अष्टानाम्) पूर्ववत् ही और सप्तमीबहुवचनमें जहाँ टिको आकार होगया तहाँ सिद्ध हुआ (अष्टासु) और जहाँ टिको आकार नहीं हुआ तहाँ (नाम्नो नो लोपशधौ) इसकर सिद्ध हुआ (अष्टसु) मकारान्त इदम् शब्दहै । प्रथमाएकवचनमें (इदम् सि) ऐसा स्थितहै ॥

इदमोयं पुंसि ।

इदमः--अयम्--पुंसि । त्रिपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) इदम्शब्दस्य पुंसि विषये अयम् भवति । सिसहितस्य । अयम् । इदम् औ । इति स्थिते । द्विवचनादौ (त्यदादेष्टेरः स्यादौ) इत्यकारः । इद औ । इति स्थिते ।

भाषार्थ–सिविभक्ति वचन सहित इदम् शब्दको पुँल्लिङ्ग विषय ही में अयम् आदेश होय । भाव यह है कि, इदम् और सिविभक्ति वचन इन दोनोंके स्थानमें अयम् आदेश होजावै जो पुँल्लिंग होवै तो जैसे (इदम् सि) इसमें इदम् शब्दसे सिविभक्ति वचन परमें विद्यमानहै इसकारण इदम् शब्द और सिविभक्ति वचन इन दोनोंके स्थानमें पुँल्लिङ्ग होनेसे अयम् आदेश करनेसे रूप सिद्ध हुआ (अयम्) द्विवचनमें (इदम् औ) ऐसा स्थितहै द्विवचनादिकमें (त्यदादेष्टेरः स्यादौ) इसकर इदम् शब्दके टिसंज्ञक अम्के स्थानमें अकार करने पर (इद औ) ऐसा स्थित हुआ ॥

दस्य मः ।

दस्य–मः । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) त्यदादीनां दकारस्य मत्वं भवति स्यादौ परे (इमौ) सर्वादित्वात् । जसी । इति ईकारः । इमे । (त्यदादीनां धेरभावः) इमम् । (१) इमौ । इमान् ।

भाषार्थ–त्यदादिकोंके दकारको मकार होय स्यादिक परहुए संते।भाव यहहै कि सर्वादिकोंमें जो त्यद् आदिक शब्दहैं उनके दकारके स्थानमें मकार होय स्यादिक समस्त विभक्तिवचन परहुए संते जैसे त्यदादिक इदम् शब्द है इसकारण (इद औ) इसमें दकारके स्थानमें मकार किया क्योंकि, स्यादिक सम्बन्धी औ विभक्तिवचन परमें विद्यमानहै तब रूप हुआ (इम औ) फिर (ओ औ औ) इसकर सिद्ध हुआ (इमौ) इसीप्रकार बहुवचनमें (त्यदादेष्टेरः स्यादौ) (दस्यमः) इनकर अकार और मकार करनेपर सर्वादिक होनेसे (जसी) इस सूत्रकर ईकार किया फिर (अ इ ए) इसकर सिद्ध हुआ (इमे) त्यदादिक शब्दोंको धिका अभाव होताहै । और द्वितीयामें (इमम्) (इमौ) (इमान्) तृतीयाएकवचनमें (इदम् आ) ऐसा स्थित है ॥

अन टौसोः ।

अन–टौसोः । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) इदमोऽनादेशो भवति टौसोः परयोः । टेन । अनेन ।

भाषार्थ–इदम् शब्दको अन आदेश होय टा और ओस् विभक्तिवचन परहुए संते जैसे (इदम् आ) इसमें इदम् शब्दसे परे टाका शुद्ध रूप आ विद्यमान है

(१) द्वितीयायां टौसोश्च परयोः इदमूशब्दस्य एन आदेशो भवति । इति पाणिनीये । भाषार्थ–द्वितीया विभक्तिमें और टा और ओस् परहुए संते इदम् शब्दको एन आदेश होय यह पाणिनीय ग्रंथमें लिखाहै जैसे । एनम् । एनौ । एनान् । एनेन । एनयोः । इति ॥

इसकारण गुरु आदेश होनेसे समस्त इदम् शब्दके स्थानमें अन आदेश करनेपर रूप हुआ (अन आ) फिर (टेन) इसकर टाके शुद्धरूप आके स्थानमें इन करनेसे (अ इ ए) इस सूत्रकर सिद्ध हुआ (अनेन) द्विवचनमें (इदम् भ्याम्) ऐसा स्थितहै ॥

स्भ्यः ।

स्भिँ-अः । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) इदमः सकारे भकारे च परे अकारो भवति कृत्स्नस्य । अद्धि । इत्यात्वम् । आभ्याम् ।

भाषार्थ-समग्र इदम् शब्दको अकार होय सकार और भकार परहुए संते । जैसे (इदम् भ्याम्) इसमें इदम् शब्दसे परे भ्यां विभक्तिवचनका भकार विद्यमानहै इसकारण समग्र इदम् शब्दके स्थानमें अकार करनेसे (अद्धि) इस सूत्रकर आ किया तब रूप सिद्धहुआ (आभ्याम्) वहुवचनमें (इदम् भिस्) ऐसा स्थित है इसमें (स्भ्यः) इस सूत्रकर इदम् शब्दके स्थानमें अकार करनेसे रूप हुआ (अ भिस्) फिर-॥

भिस् भिस् ।

भिस्-भिस् । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) इदमदसोर्भिस् भिसैव भवति । न भकारस्याकारः (एस्भि बहुत्वे) एभिः । अस्मै । आभ्याम् । एभ्यः । अस्मात् । आभ्याम् । एभ्यः । अस्य । अनयोः । एषाम् । अस्मिन् । अनयोः । एषु । किम् शब्दस्य (त्यदादेष्टेरः स्यादौ) इत्यकारे कृते सर्व-शब्दवद्रूपं ज्ञेयम् । कः । कौ । के । कम् । कौ । कान् । केन । काभ्याम् । कैः । कस्मै ! काभ्याम् । केभ्यः । कस्मात् । काभ्याम् । केभ्यः । कस्य । कयोः । केषाम् । कस्मिन् । कयोः । केषु ।

भाषार्थ-इदम् और अदस् सम्बन्धी जो तृतीयावहुवचन भिस् सो भिस् ही होय । यहां भिस्को भिस् करना (स्भ्यः) इस सूत्रकर अकारके निषेधके अर्थहै इसीको कहतेहैं कि (स्भ्यः) इस सूत्रकर भकारको आकार नहीं होय । किन्तु (ए स्भि वहुत्वे) इसकर अकारके स्थानमें एकार होय जैसे(अ भिस्)इसमें इदम् सम्बन्धी भिस्है इसकारण (स्भ्यः) इस सूत्रकर भकारके स्थानमें अकार नहीं हुआ किन्तु (ए स्भि वहुत्वे) इसकर अकारके स्थानमें एकार करनेसे (स्रोर्विसर्गः) इसकर सिद्ध हुआ (एभिः) चतुर्थीएकवचनमें (इदम् ए) ऐसा स्थितहै (त्यदादेष्टेरः स्यादौ) इसकर इदम् शब्दकी टिसंज्ञाके स्थानमें अकार करनेपर (सर्वादेः स्मट्) इसकर स्मट्

आगम करनेसे रूप हुआ (इदस्म ए) फिर (स्भ्यः) इसकर समग्र इदम् शब्दके स्थानमें अकार करनेपर (एऐऐ) इसकर सिद्ध हुआ (अस्मै) द्विवचनमें पूर्ववत् (आभ्याम्) बहुवचनमें (स्भ्यः) इसकर इदम् शब्दको अकार आदेश करनेपर (ए स्भि बहुत्वे) इसकर सिद्ध हुआ (एभ्यः) पंचमीके एकवचनमें (त्यदादेष्टेरः स्यादौ) इस-कर इदम् शब्दकी टिको अकार करनेपर (ङसिरत्) इसकर ङसिके स्थानमें अत् किया फिर (अतः) इसकर स्मट् आगम करनेसे (स्भ्यः) इसकर इदम् शब्दके स्थानमें अकार किया तब रूप हुआ (अस्म अत्) फिर (सवर्णे दीर्घः सह) इसकर सिद्ध हुआ (अस्मात्) द्विवचन बहुवचनमें चतुर्थीके द्विवचन बहुवचनवत् रूप जानने । षष्ठीएकवचनमें (त्यदादेष्टेरः स्यादौ) इसकर टिको अकार करनेपर (ङस्य) इसकर ङस्के स्थानमें स्य किया फिर (स्भ्यः) इसकर इदम् शब्दको अकार कर-नेसे रूप सिद्ध हुआ (अस्य) द्विवचनमें (अनटौसोः) इसकर इदम् शब्दको अन आदेश करनेपर (ओसि) इसकर सिद्ध हुआ (अनयोः) वहुवचनमें (त्यदादेष्टेरः स्यादौ) इसकर इदम् शब्दकी टिको अकार करनेपर (सुडामः) इसकर आम्को सुट् आगम किया फिर (स्भ्यः) इसकर इदम् शब्दको अकार करनेपर (ए स्भि बहुत्वे) इसकर एकार किया फिर (क्लिातषः सः कृतस्य) इसकर सिद्ध हुआ (एषाम्) सप्तमीएकवचनमें (त्यदादेष्टेरः स्यादौ) इसकर टिको अकार करनेपर (ङि स्मिन्) इसकर ङिके स्थानमें स्मिन् आदेश किया फिर (स्भ्यः) इसकर इदम् शब्दको अकार आदेश करनेपर रूप सिद्ध हुआ (अस्मिन्) द्विवचनमें षष्ठीद्विवचनवत् (अनयोः) सप्तमीबहुवचनमें (स्भ्यः) इसकर इदम् शब्दको अकार करनेपर (एस्भि बहुत्वे) इसकर एकार किया फिर (क्लिातषः सः कृतस्य) इसकर सिद्ध हुआ (एषु) किम् शब्दः (त्यदादेष्टेरः स्यादौ) इसकर टिको अकार करनेपर सर्व शब्दवत् रूप जानना । जैसे (कः) (कौ) (के) इत्यादि ॥

धकारान्तस्तत्त्वबुध् शब्दः । तस्य रसे पदान्ते बकारस्य (आदि जबानां झभान्तस्य झभाः स्ध्वोः) इति भकारः (वावसाने) तत्त्वभुत् । तत्त्वभुद् । तत्त्वबुधौ । तत्त्वबुधः । हे तत्त्वभुत् । हे तत्त्वभुद् । तत्त्वबुधम् । तत्त्वबुधौ । तत्त्वबुधः । तत्त्वबुधा । तत्त्वभुद्भ्याम् । तत्त्वभुद्भिः । इत्यादि । जका-रान्तः सम्राज् शब्दः ।

भाषार्थ–धकारान्त तत्त्वबुध् शब्दहै उसके वकारको रस प्रत्याहार और पदांतके विषे (आदिजबानां झभान्तस्य झभाः स्ध्वोः) इस सूत्रकर भकार होगया । प्रथमा-एकवचनमें (हसेपः सेर्लोपः) इसकर सिका लोप करनेपर (वावसाने) इस सूत्रकर सिद्ध हुआ (तत्त्वभुत्) (तत्त्वभुद्) द्विवचनमें (तत्त्वबुधौ) बहुवचनमें (तत्त्वबुधः) सम्बोधनमें

धिके विषे (हे तत्त्वभुत्) (हे तत्त्वभुद्) द्वितीयामें (तत्त्वबुधम्) (तत्त्वबुधौ) (तत्त्वबुधः) तृतीयाएकवचनमें (तत्त्वबुधा) द्विवचनमें रसप्रत्याहार सम्बन्धी भकार परे होनेसे (आदिजबानां झभान्तस्य झभाःस्ध्वोः) इसकर बकारके स्थानमें भकार कर (झवे जवाः) इसकर सिद्ध हुआ (तत्त्वभुद्भ्याम्) इसीप्रकार (तत्त्वभुद्भिः) सप्तमीवहुवचनमें बकारके स्थानमें भकारकर (खसे चपा झसानाम्) इसकर सिद्ध हुआ (तत्त्वभुत्सु) जकारान्त सम्राज् शब्दहै । प्रथमाएकवचनके विषे (सम्राज्) ऐसा स्थितहै (हसेपः सेर्लोपः) इसकर सिका लोप करनेसे (सम्राज्) ऐसा स्थितहै ॥

छशषराजादेः षः ।

छशषराजादेः—षः । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) छकारान्तस्य शकारान्तस्य षकारान्तस्य च राज्यज्सृज्मृज्भ्राजादेश्च षकारो भवति धातोर्झसे परे नाम्नश्च रसे पदान्ते च । षस्य षत्वं डत्वनिषेधार्थम् ।

भाषार्थ—छकारान्त और शकारान्त और षकारान्त तथा राज् यज् सृज मृज भ्राज् आदि शब्दसे व्रश्च् भ्रस्ज् परिव्राज् । इनके अन्तवर्णको षकार होय धातुसे झस प्रत्याहार परहुए संते और नामसंज्ञक शब्दसे रस प्रत्याहार परे संते और पदान्तके विषे । भाव यह है कि, इन धातुओंसे यदि झस प्रत्याहार परे होवे तो इन धातुओंके अन्तवर्णके स्थानमें षकार होय और इन्ही क्विबादि प्रत्ययान्त नामसंज्ञक शब्दोंसे रस प्रत्याहार परे होवै या पदान्तहोवै तो भी इनके अन्तवर्णके स्थानमें षकार होय । षकारको जो कि, षकारका करनाहै वह डकारके निषेधके अर्थहै अर्थात् षकारके स्थानमें षकार करने पर (षोडः) इस सूत्रकर डकार नहीं होताहै परन्तु जो कि, षकारको षकारका करना डकारके निषेधार्थ है सोभी (द्वेष्टि) इत्यादिके विषेही जानना, न कि सब जगह । जैसे प्रथमाएकवचनमें (सम्राज्) ऐसा स्थित रहाहै इसमें क्विप् प्रत्यान्त नाम संज्ञक राज् शब्दके अन्त वर्ण जकारके स्थानमें षकार किया क्योंकि सि विभक्तिका लोप होनेसे पदान्त विद्यमानहै तब रूप हुआ (सम्राष्)॥

षोडः । (१)

षः—डः । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) षकारस्य डत्वं भवति धातोर्झसे

---

(१) कोई आचार्य (षोडः) इस सूत्रको व्यर्थ कहते हैं क्योंकि (ऋटुरषाणां मूर्द्धा) इसकर स्थान सवर्ण मानकर पदान्तके विषे (वावसाने) इसकरकेही षकारके स्थानमें टकार डकार और भकारादिकमें (झवे जबाः) इसकर डकार और सुप्में (खसे चपा झसानाम्) इस कर टकारका होना कहतेहैं ।

परे नाम्नश्च रसे पदान्ते च (वावसाने) इति टकारः । डकारश्च । सम्राट् । सम्राड् । सम्राजौ । सम्राजः । हे सम्राट् । हे सम्राड् । सम्राजम् । सम्राजौ । सम्राजः । सम्राजा । सम्राड्भ्याम् । सम्राड्भिः । इत्यादि एवं विराजादयः ।

भाषार्थ–षकारको डकार होय धातुसे झस प्रत्याहार पर हुए संते और नामसे रस प्रत्याहार पर हुए संते तथा पदान्तके विषे । जैसे क्विप् प्रत्ययान्त नामसंज्ञक सम्राष् शब्दमें पदान्त विद्यमानहै इसकारण सम्राष् शब्दके षकारके स्थानमें डकार करने पर (वावसाने) इसकर रूप सिद्ध हुआ (सम्राट्) (सम्राड्) द्विवचनमें (सम्राजौ) बहुवचनमें (सम्राजः) सम्बोधनमें (हे सम्राट्) (हे सम्राड्) (हे सम्राजौ) (हे सम्राजः) द्वितीयामें (सम्राजम्) (सम्राजौ) (सम्राजः) तृतीयाएकवचनमें (सम्राजा) द्विवचनमें रसप्रत्याहारसम्बन्धी भकार पर होनेसे (छशषराजादेः षः) इसकर जकारके स्थानमें षकार करने पर (षा डः) इसकर डकार किया तब रूप सिद्ध हुआ (सम्राड्भ्याम्) बहुवचनमें इसीप्रकार सिद्ध हुआ (सम्राड्भिः) इत्यादि । और सप्तमीबहुवचनमें (छशषराजादेः षः) इसकर जकारके स्थानमें षकार करने पर (षो डः) इसकर डकार किया फिर (खसे चपा झसानाम्) इसकर टकार होकर सिद्ध हुआ (सम्राट्सु) (१) इसीप्रकार (विराज् देवेज् विश्वसृज् परिमृज् विभ्राज् परिव्राज् तरुवृश्च् यवभृज्ज्) इत्यादिक क्विप् प्रत्ययान्त शब्द साधने योग्यहैं । जैसें (विराट् । विराड्) (विराजौ) (विराजः) (विराड्भ्याम्) (विराट्सु) (देवेट्) (देवेड्) (देवेजौ) (देवेजः) तृतीयाद्विवचनमें (देवेड्भ्याम्) सप्तमीबहुवचनमें (देवेट्सु) (विश्वसृट् । विश्वसृड्) (विश्वसृजौ) (विश्वसृजः) तृतीयाद्विवचनमें (विश्वसृड्भ्याम्) सप्तमीबहुवचनमें (विश्वसृट्सु) (तरुवृट्) (तरुवृड्) (तरुवृश्चौ) (तरुवृश्चः) तृतीयाद्विवचनमें (तरुवृड्भ्याम्) सप्तमीबहुवचनमें (तरुवृट्सु) (यवभृट्) (यवभृड्) (यवभृज्जौ) (यवभृज्जः) तृतीयाद्विवचनमें (यवभृड्भ्याम्) सप्तमी बहुवचनमें (यवभृट्सु) और अन्य जान्त (भूभुज् बलिभुज् हुतभुज् वणिज् भिषज् अश्वयुज्) आदिकमें (चोः कुः) इस सूत्रकर जकारके स्थानमें ककार कर रूप साधने योग्य हैं । और (ऋत्विज्) इसमें (दिशांकः) इस सूत्रकर जकारके स्थानमें ककार कर रूप साधने योग्य हैं ॥

---

(१) क्वचिदपदान्तेऽपि पदान्तताश्रयणीया । इसकर इत्यादि प्रयोगोंमें पदान्त मानकर (टोरन्त्यात्) इस सूत्रकर षकार नहीं हुआ इति ॥

दकारान्तास्त्यद्तद्यद्एतद्शब्दाः । एतेषां (त्यदादेष्टेरः स्यादौ) इत्यकारे कृते सर्वत्र सर्वशब्दवद्रूपं ज्ञेयम् ।

भाषार्थ–दकारान्त त्यद्–तद्–यद्–एतद्–शब्द हैं इनकी टिको (त्यदादेष्टेरः स्यादौ) इसकर अकार करनेपर सब जगह सर्वशब्दवत् रूप जानने चाहिये । जैसे प्रथमाएकवचनमें (त्यद् सि) ऐसा स्थित है इसमें त्यद्के टिसंज्ञक अद्के स्थानमें (त्यदादेष्टेरः स्यादौ) इसकर अकार किया तब रूप हुआ (त्य सि) ॥

स्तः ।

सू०–तः । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) त्यदादेस्तकारस्य सौ परे सत्वं भवति । स्यः । त्यौ । त्ये । त्यम् । त्यौ । त्यान् । त्येन । त्याभ्याम् । त्यैः । त्यस्मै । इत्यादि । सः । तौ । ते यः । यौ । ये । एषः । एतौ । एते (एतदोऽन्वादेशे द्वितीयाटौस्स्वेनो वा वक्तव्यः) एतम् । एनम् । एतौ । एनौ । एतान् । एनान् । एतेन । एनेन । एतयोः । एनयोः ।

भाषार्थ–त्यदादिकोंके तकारको सि विभक्ति वचन पर हुए संते सकार होय जैसे (त्य सि) इसमें त्यद् शब्दसे परे सिविभक्ति विद्यमान है इसकारण त्यके तकारके स्थानमें सकार कर (स्रोर्विसर्गः) इसकर सिद्ध हुआ (स्यः) द्विवचनादिकमें (त्यदादेष्टेरः स्यादौ) इसकर टिको अकार कर सर्वशब्दवत् रूप करने चाहिये जैसे (त्यौ) (त्ये) (त्यम्) (त्यौ) (त्यान्) (त्येन) (त्याभ्याम्) (त्यैः) (त्यस्मै) इत्यादिक और तद् शब्दमें भी (त्यदादेष्टेरः स्यादौ) इसकर टिके स्थानमें अकार कर प्रथमाएकवचनमें (स्तः) इसकरके तकारके स्थानमें सकार करनेपर (स्रोर्विसर्गः) इसकर सिद्ध हुआ (सः) द्विवचनमें (तौ) बहुवचनमें (ते) इत्यादि रूप सर्ववत् साधने योग्य हैं और (यद्) शब्दमें भी (त्यदादेष्टेरः स्यादौ) इसकर टिका अकार कर सर्वशब्दवत् रूप जानना जैसे (यः) (यौ) (ये) इत्यादिक । और एतद् शब्दमें (त्यदादेष्टेरः स्यादौ) इसकर टिको अकार कर (स्तः) इसकर प्रथमाएकवचनमें तकारके स्थानमें सकार करनेपर (किलात्षः सः कृतस्य) इसकर रूप सिद्ध हुआ (एषः) द्विवचनमें (एतौ) बहुवचनमें (एते) और द्वितीयाएकवचनमें (त्यदादेष्टेरः स्यादौ) इसकर टिके स्थानमें अकार करनेपर रूप हुआ (एत अम्) एतद् शब्दको अन्वादेशमें (१)

---

(१) उक्तस्य पुनः कथनमन्वादेशः । अर्थ—कहेहुएका फिर दूसरी बार जो कहना है वह अन्वादेश कहाताहै । यथा--एषराजायाति एनं पश्य, एषः पठति एनं व्याकरणं पाठय । अथैनं वेदमध्यापय ॥

द्वितीया विभक्ति और टा और ओस् पर हुए संते एन आदेश विकल्प करके वक्तव्यहै । इसकर एक जगह एन आदेश करनेपर (अम्शसोरस्य) इसकर सिद्ध हुआ (एनम्) और जहाँ एन आदेश नहीं हुआ तहाँ रूप हुआ (एतम्) इसीप्रकार द्विवचन बहुवचनमें रूप सिद्ध हुए (एनौ) (एतौ) (एनान्) (एतान्) इसी प्रकार तृतीयाएकवचनमें (एनेन) (एतेन) और षष्ठी सप्तमीके द्विवचनोंमें (एनयोः) (एतयोः) अन्यविभक्ति वचनोंमें सर्वशब्दवत् रूप जानने योग्यहैं और अन्य दकारान्त (बलभिद्–दिविषद्–सर्वविद्–सुहृद्) आदिक शब्द इसप्रकार साधने योग्य हैं । जैसे प्रथमाएकवचनमें (वावसाने) इसकर (बलभित्–बलभिद्) द्विवचनमें (बलभिदौ) बहुवचनमें (बलभिदः) तृतीयाद्विवचनमें (बलभिद्भ्याम्) सप्तमीबहुवचनमें (खसे चपा झसानाम्) इसकर दकारके स्थानमें तकार करनेसे रूप सिद्ध हुआ (बलभित्सु) और भी दकारान्त इसी प्रकार जानने योग्यहैं ।

छकारान्तस्तत्त्वप्राच्छ्शब्दः । तत्त्वप्राट् । तत्त्वप्राड् । तत्त्वप्राच्छौ । तत्त्वप्राच्छः । इत्यादि । थकारान्तः अग्निमथ् शब्दः (वावसाने) चपाजबाश्च । अग्निमत् । अग्निमद् । सम्बोधनेऽप्येवम् । अग्निमथौ । अग्निमथः । अग्निमथम् । अग्निमथौ । अग्निमथः । अग्निमथा । अग्निमद्भ्याम् । इत्यादि । चकारान्तः प्रत्यच् शब्दः (अंचेः पुंसि पंचसु नुमागमो वक्तव्यः) प्रत्यन्च् सि । इति स्थिते । (स्तोः श्चुभिः श्चुः) इति चुत्वेन ञकारः (संयोगान्तस्य लोपः) ।

भाषार्थ–छकारान्त तत्त्वप्राच्छ् शब्द है । प्रथमाएकवचनमें (तत्त्वप्राछ् सि) ऐसा स्थित है इसमें हसान्तसे परे सि विद्यमान है इसकारण (हसेपः सेर्लोपः) इसकर सिका लोप करनेसे रूप हुआ (तत्त्वप्राछ्) इसमें छकारान्त तत्त्वप्राछ शब्दसे परे पदान्त विद्यमानहै इसकारण (छशषराजादेः षः) इसकरके अन्तवर्ण छकारके स्थानमें षकार करनेसे रूप हुआ (तत्त्वप्राष्) फिर (षो डः) इसकर षकारके स्थानमें डकार कर (वावसाने) इसकर सिद्ध हुआ (तत्त्वप्राट्–तत्त्वप्राड्) द्विवचनमें (तत्त्वप्राछौ) बहुवचनमें (तत्त्वप्राछः) तृतीयाद्विवचनमें रसप्रत्याहार सम्बन्धी भकार पर होनेसे (छशषराजादेः षः) इसकर छकारके स्थानमें षकार कर (षो डः) इसकर डकार करनेसे रूप सिद्ध हुआ (तत्त्वप्राड्भ्याम्) सप्तमीबहुवचनमें (छशषराजादेः षः) इसकर षकार करनेपर (षो डः) इसकर डकार कर (खसे चपा झसानाम्) इसकर सिद्ध हुआ (तत्त्वप्राट्सु) । थकारान्त अग्निमथ् शब्द है प्रथमाएकवचनमें (वावसाने) इसकर थकारके स्थानमें दकार और तकार कर रूप सिद्ध हुआ (अग्निमत्–अग्निमद्) सम्बोधनमें धि विषयमें भी इसी प्रकार हुआ

द्विवचनमें (अग्निमथौ) वहुवचनमें (अग्निमथः) द्वितीयामें (अग्निमथम्) (अग्निमथौ) (अग्निमथः) तृतीयाएकवचनमें (अग्निमथा) द्विवचनमें (झवे जवाः) इसकर थकारके स्थानमें दकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ (अग्निमद्भ्याम्) बहुवचनमें (अग्निमद्भिः) सप्तमीवहुवचनमें (खसे चपा झसानाम्) इसकर थकारके स्थानमें तकार कर रूप सिद्ध हुआ (अग्निमत्सु) चकारान्त प्रत्यच् शब्द है प्रथमाएकवचनमें (प्रत्यच् सि) ऐसा स्थित है। अंचुधातुको स्यादिक पंच वचनोंमें नुम् आगम वक्तव्य है भाव यह है कि, अंचु धातुके क्विप्प्रत्ययान्त शब्दको नुम् आगम स्यादिक पंचवचनोंमें होय इसकर प्रतिपूर्व अच् शब्दको नुम् आगम किया तो वह आगम मित् होनेसे अकारके परे हुआ। आगममें उकार उच्चारणार्थ है तब रूप हुआ (प्रत्यन् च् सि) फिर (स्तोः श्चुभिः श्चुः) इसकर चवर्गके योगसे नकारके स्थानमें ञकार करनेपर रूप हुआ (प्रत्यञ्च् सि) फिर (हसेपः सेर्लोपः) इसकर सिका लोप करनेपर पदान्त होनेसे (संयोगान्तस्य लोपः) इसकर संयोगसंज्ञक ञकार चकारके अन्त चकारका लोप करनेसे रूप हुआ (प्रत्यञ्) फिर-॥

चोः कुः।

चोः--कुः। द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) चवर्गस्य कवर्गादेशो भवति धातोर्झसे परे नाम्नश्च रसे पदान्ते च यथासंख्येन। प्रत्यङ्। प्रत्यञ्चौ। प्रत्यञ्चः। प्रत्यञ्चम्। प्रत्यञ्चौ।

भाषार्थ-चवर्गको कवर्ग आदेश होय यथाक्रमकर धातुसे झस प्रत्याहार पर हुए संते और नामसे रस प्रत्याहार पर हुए संते। भाव यह है कि, धातुके चवर्गसे परे झस प्रत्याहार होवे तो उस धातुके चवर्गके स्थानमें क्रमानुसार कवर्ग होय और नामके चवर्गसे परे रसप्रत्याहार वा पदान्त होवै तो उस नामके चवर्गके स्थानमें क्रमानुसार कवर्ग होय जैसे (प्रत्यञ्) इसमें नामके चवर्गसे परे पदान्त विद्यमानहै इसकारण चवर्गसम्बन्धी ञकारके स्थानमें क्रमानुसार कवर्गसम्बन्धी ङकार करनेसे रूप सिद्ध हुआ (प्रत्यङ्) (१) द्विवचनमें (अंचेः पुंसि पञ्चसु नुमागमो वक्तव्यः) इस कर नुम् आगम

---

(१) प्रत्यङ्। यहाँपर कोई आचार्य (स्तोः श्चुभिः श्चुः) इसकर नकारके स्थानमें ञकारका करना नहीं योग्य समझते हैं क्योंकि, (संयोगान्तस्य लोपः) इसकर चकारका लोप करनेपर (स्तोः श्चुभिः श्चुः) इसकर पूर्व किया हुआ जो नकारके स्थानमें ञकार है उसको नकार ही फिर होताहै क्योंकि, (निमित्ताभावे नैमित्तिकस्याप्यभावः) अर्थ-निमित्तके अभाव होनेपर नैमित्तिककाभी अभाव होजाताहै तिससे (चोः कुः) यह सूत्रभी नहीं प्राप्त होसक्ता किन्तु (प्रत्यन्) ऐसाही सिद्ध होता है इति॥

करनेपर (स्तोः श्चुभिः श्चुः) इसकर चवर्गसम्बन्धी चकारका योग होनेसे नकारके स्थानमें ञकार किया तब रूप सिद्धहुआ (प्रत्यञ्चौ) इसीप्रकार बहुवचनमें सिद्ध हुआ (प्रत्यञ्चः) द्वितीयाके एकवचन द्विवचनमें इसीप्रकार रूप सिद्ध हुआ (प्रत्यञ्चम्) (प्रत्यञ्चौ) बहुवचनमें स्यादिक पंचवचनसम्बन्धी वचन न होनेसे नुम आगम तो हुआ नहीं किन्तु प्रथम (प्रत्यच् अस्) ऐसा स्थित हुआ ॥

अंचेरलोपो दीर्घश्च।

अंचेः—अलोपः—दीर्घः—च। चतुष्पदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) अञ्चतेरलोपो भवति पूर्वस्य च दीर्घः शसादौ स्वरे परे तद्धिते प्रत्यये ईपि ईकारे च परे। प्रतीचः। प्रतीचा। प्रत्यग्भ्याम्। प्रत्यग्भिः। एवं तिर्यच्प्रभृतयः। तिर्यङ्। तिर्यञ्चौ। तिर्यञ्चः। तिर्यञ्चम्। तिर्यञ्चौ।

भाषार्थ—अंचु धातुके अकारका लोप होय और उस अंचु धातुके पूर्ववर्त्ती स्वरको दीर्घ होय शसादिक स्वर पर हुए संते तथा तद्धित प्रत्यय और ईप् तथा नपुंसकलिङ्गके प्रथमा द्वितीया द्विवचनसम्बन्धी ईकार पर हुए संते जैसे (प्रत्यच् अस्) इसमें अंचु धातुके क्विप् प्रत्ययान्त अच् शब्दसे परे शस्का शुद्ध रूप अस् विद्यमानहै इसकारण अंचु धातुके क्विप्प्रत्ययान्त अच् शब्दके लोप करनेसे रूप हुआ (प्रत्यच् अस्) प्रथम इसके स्थानमें यकार होनेका निमित्त अच् शब्दका अकार था उसका जब लोप होगया तो निमित्तके किये कार्य इके स्थानमें यकारके होने रूपका भी अभाव होगया अर्थात् फिर यकारके स्थानमें इ होगया तब रूप हुआ (प्रति च् अस्) अब इसमें अंचु धातुके क्विप् प्रत्ययान्त अच् शब्दसे पूर्ववर्त्ती स्वर प्रति शब्दका इकारहै इसकारण इकारके स्थानमें ईकार कर (स्वरहीनं परेण संयोज्यम्) (स्रोर्विसर्गः) इनकर सिद्धहुआ (प्रतीचः) तृतीयाएकवचमें इसीप्रकार सिद्धहुआ (प्रतीचा) द्विवचनमें (चोः कुः) इसकर चकारके स्थानमें ककार कर (झबे जबाः) इसकर सिद्ध हुआ (प्रत्यग्भ्याम्) और सप्तमीबहुवचनमें (चोः कुः) इसकर ककार कर (किलात्षः सः कृतस्य) इसकर सकारके स्थानमें षकार किया फिर (कषसंयोगे क्षः) इसकर क्षकार करनेपर रूप सिद्धहुआ (प्रत्यक्षु) और जहाँ क्विबादि प्रत्ययमें पूजार्थ अंचु धातुके नकारका लोप नहीं होताहै तहाँ (प्राङ्) (प्राञ्चौ) (प्राञ्चः) (प्राञ्चम्) (प्राञ्चौ) (प्राञ्चः) (प्राञ्चा) (प्राङ्भ्याम्) (प्राङ्भिः) इत्यादिक रूप जानने। इसीप्रकार तिर्यच् प्रभृति शब्दसे उदच् सध्र्यच् सम्यच् शब्द स्यादिक पांच वचनोंमें साधनेयोग्य हैं जैसे (तिर्यङ्) (तिर्यञ्चौ) (तिर्यञ्चः) (तिर्यञ्चम्) (तिर्यञ्चौ) और द्वितीयाबहुवचनमें (तिर्यच् अस्) ऐसा स्थितहै ॥

तिरश्चादयः ।

तिरश्चादयः । एकपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) तिरश्चादयो निपात्यन्ते शसादौ स्वरे परे तद्धिते ईपि ईकारे च । तिरश्चः । तिरश्चा । तिर्यग्भ्याम् । एवम् । उदङ् । उदश्चौ । उदश्चः । उदश्चम् । उदश्चौ । उदीचः । उदीचा । उदग्भ्याम् । सम्यङ् । सम्यश्चौ । सम्यश्चः । सम्यश्चम् । सम्यश्चौ । समीचः । समीचा । सम्यग्भ्याम् । इत्यादि ।

भाषार्थ-तिरश्चादिक निपातसे सिद्ध होतेहैं शसादिक स्वर और तद्धित प्रत्यय और ईप् तथा ईकार पर हुए संते । भाव यह है कि, (तिर्यच् । उदच् । सध्र्यच् सम्यच्) इन शब्दोंको यथाक्रमसे (तिरश्च् । उदीच् । सध्रीच् । समीच्) यह आदेश निपातसे सिद्ध होतेहैं शसादि स्वर परे संते और तद्धित प्रत्यय तथा ईप् और ईकार पर हुए संते जैसे (तिर्यच् अस्) इसमें तिर्यच् शब्दसे शस्का शुद्धरूप अस विद्यमानहै इसकारण तिर्यच् शब्दके स्थानमें तिरश्च् आदेश करनेपर (स्वरहीनं परेण संयोज्यम्) (स्रोर्विसर्गः) इनकर सिद्ध हुआ (तिरश्चः) तृतीयाएकवचनमें (तिरश्चा) द्विवचनमें (चोः कुः) इसकर चकारके स्थानमें ककार करनेपर (झबे जबाः) इसकर सिद्ध हुआ (तिर्यग्भ्याम्) और सप्तमीबहुवचनमें (चोः कुः) इसकर चकारके स्थानमें ककार करनेपर (किलात्षः सः कृतस्य) इसकर सकारके स्थानमें षकार किया फिर (कषसंयोगे क्षः) इसकर क्ष करनेसे रूप सिद्ध हुआ (तिर्यक्षु) इसीप्रकार (उदङ्) (उदश्चौ) (उदश्चः) (उदश्चम्) (उदश्चौ) (उदीचः) (उदीचा) (उदग्भ्याम्) इत्यादि । (सम्यङ्) (सम्यश्चौ) (सम्यश्चः) सम्यश्चम्) (सम्यश्चौ) (समीचः) (समीचा) (सम्यग्भ्याम्) इत्यादि । (सध्र्यङ्) (सध्र्यश्चौ) (सध्र्यश्चः) (सध्र्यश्चम्) (सध्र्यश्चौ) (सध्रीचः) (सध्रीचा) (सध्र्यग्भ्याम्) इत्यादि ॥

तकारान्तो मरुत् शब्दः (वावसाने) मरुत् । मरुद् । मरुतौ । मरुतः । मरुतम् । मरुतौ । मरुतः । मरुता । मरुद्भ्याम् । मरुद्भिः । इत्यादि । एवमग्निचित्प्रभृतयः । अग्निचित् । अग्निचिद् । अग्निचितौ । अग्निचितः । इत्यादि तकारान्त उकारानुबन्धो महत् शब्दः ।

भाषार्थ-तकारान्त मरुत् शब्दहै । प्रथमा एकवचनमें (वावसाने) इसकर तकारके स्थानमें तकार दकार करनेसे रूप सिद्ध हुआ (मरुत्-मरुद्) द्विवचनमें

(मरुतौ) बहुवचनमें (मरुतः) द्वितीयामें (मरुतम्) (मरुतौ) (मरुतः) तृतीयामें (मरुता) (मरुद्भ्याम्) (मरुद्भिः) इत्यादिक । इसीप्रकार अग्निचित् आदिक शब्द साधने योग्यहैं जैसे (अग्निचित्) (अग्निचिद्) (अग्निचितौ) (अग्निचितः) इत्यादि । तकारान्त उकारानुबन्ध महत् शब्दहै । प्रथमाएकवचनमें (महत् सि) ऐसा स्थितहै ॥

उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः — उगितो नुम् ।

उगितः—नुम् । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) उकारानुबन्धस्य ऋकारानुबन्धस्य नुमागमो भवति पुंसि विषये पञ्चसु परेषु ।

भाषार्थ—उकारहै अनुबन्ध (१) अर्थात् इत् जिसका और ऋकारहै अनुबन्ध जिसका ऐसे शब्दको नुम् आगम होय पुँल्लिंग विषयमें स्यादिक पांचवचन परहुए संते जैसे (महत् सि) इसमें उकारानुबन्ध महत् शब्दसे पुँल्लिंगमें सिविभक्ति वचन परमें विद्यमानहै । इसकारण महत् शब्दको नुम्का आगम किया तो वह आगम मित् होनेसे महत् शब्दके अन्त्यस्वर अकारसे परे हुआ आगममें उकार उच्चारणार्थ है तब रूप स्थित हुआ (महन्त् सि) फिर—॥

न्सम्महतोऽधौ दीर्घः शौ च ।

न्सम्महतः—अधौ—दीर्घः—शौ—च । पंचपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) न्सन्तस्याप्शब्दस्य महच्छब्दस्य च दीर्घो भवति पंचसु । धिवर्जितेषु शौ परे च । महान् महान्तौ । महान्तः । हे महन् । महान्तम् । महान्तौ । महतः । महता ॥ महद्भ्याम् । महद्भिः । इत्यादि । उकारानुबन्धो भवच्छब्दः ।

भाषार्थ—न्सन्त शब्द और अप् शब्द और महत् शब्दको दीर्घ होय धिवर्जित स्यादिक पंचवचन और शि परहुए संते । भाव यहहै कि, नुमागमसहित सकारान्त शब्दके और जलवाची अप् शब्दके और उकारानुबन्ध महत् शब्दके अन्त्यस्वरको दीर्घ होय पुलिङ्गमें धिवर्जित स्यादिक पांचवचन पर हुए संते और नपुंसकलिङ्गमें शिपरेहुएसंते जैसे (महन्त् सि) इसमें महत् शब्दसे परे सिविभक्तिवचन विद्यमानहै इसकारण महत् शब्दके अन्त्यस्वर हकार उत्तरवर्ती अकारको दीर्घ करनेसे रूप हुआ (महान्त् सि) फिर (हसेपः सेर्लोपः) इसकर सिका लोप करनेपर (संयोगान्त-

---

(१) उच्चरितप्रध्वंसोह्यनुबन्धः । अर्थ—जो किसी कार्यके अर्थ उच्चारण होकर लोप होजाताहै वह अनुबन्ध कहाताहै । इति ॥

स्य लोपः) इसकर तकारका लोप किया तब रूप सिद्ध हुआ (महान्) द्विवचनमें (ब्रितो नुम्) इसकर नुम् आगम करनेपर (न्सम्महतोऽधौ दीर्घः शौ च) इसकर महत् शब्दके अन्त्यस्वरको दीर्घ किया तब रूप सिद्ध हुआ (महान्तौ) इसी- प्रकार बहुवचनमें रूप सिद्ध हुआ (महान्तः) और सम्बोधनमें सिकी धिसंज्ञा करनेपर (ब्रितो नुम्) इसकर नुम् आगम किया फिर (न्सम्महतोऽधौ दीर्घः शौ च) इस सूत्रकी प्राप्ति तो हुई नहीं क्योंकि, वृत्तिमें धिवर्जित पांच वचनोंके विषे ही दीर्घ होना कहाहै तब (हसेपः सेर्लोपः) और (संयोगान्तस्य लोपः) इनकर सिद्ध हुआ (हे महन्) द्विवचनमें (हे महान्तौ) बहुवचनमें (हे महान्तः) द्वितीयाके एकवचन द्विवचनमें सिद्ध हुआ (महान्तम्) (महान्तौ) और बहुवचनमें स्यादि पंचवचन सम्बन्धी वचन न होनेसे (ब्रितो नुम्) तथा (न्सम्महतोऽधौ दीर्घः शौ च) इन दोनों सूत्रोंकी प्राप्ति हुई नहीं तब रूप सिद्ध हुआ (महतः) तृतीयाएकवचनमें (महता) द्विवचनमें (झबे जबाः) इसकर तकारके स्थानमें दकार होकर रूप सिद्ध हुआ (महद्भ्याम्) बहुवचनमें (महद्भिः) इत्यादि इसीप्रकार साधने योग्यहैं। उकारानुबन्धो भवच्छब्दः। प्रथमाएकवचनमें (भवत् सि) ऐसा स्थितहै इसमें भवत् शब्द उकारा- नुबन्धहै इसकारण भवत् शब्दको नुम् आगम किया तो वह आगम अन्त्य स्वर वकार उत्तरवर्ती अकारसे परे हुआ तब रूप स्थित हुआ (भवन्त् सि) ॥

अत्वसोः सौ।

अत्वसोः–सौ। द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) अत्वन्तस्यासन्तस्य च दीर्घो भवति धिवर्जिते सौ परे। भवान्। भवन्तौ। भवन्तः। हे भवन्। भवन्तम्। भवन्तौ। भवतः। भवता। भवद्भ्याम्। भवद्भिः। इत्यादि ऋकारनुबन्धः पचत् शब्दः। तस्य नुमागम एव न दीर्घो भवति। पचन्। पचन्तौ। पचन्तः। पचन्तम्। पचन्तौ। पचतः। पचता। पचद्भ्याम्। इत्यादि। एवं ऋकारानुबन्धो भवत् शब्दः।

भाषार्थ–अत्वन्त शब्द और असन्त शब्दको दीर्घ होय धिवर्जित सि परहुए संते भाव यहहै कि, जिसका उकार अनुबन्ध होय और अन्तमें जिसके अत् विद्यमान होय ऐसे शब्दके और जिसके अन्तमें अस् विद्यमान होय ऐसे शब्दके अन्त्यस्वरको दीर्घ होय सिविभक्तिमें, और धिसंज्ञक सिमें नहीं दीर्घ होय जैसे (भवन्त् सि) इसमें जो भवत् शब्द है उसमें उकारभी अनुबन्धहै और उसके अन्तमें अत्भी विद्यमानहै इस- कारण भवत् शब्दके अन्त्यस्वर वकार उत्तरवर्ती अकारको दीर्घ किया तब रूप हुआ

(भवान्त् सि) फिर (हसेपः सेर्लोपः) इसकर सिका लोप करने पर (संयोगान्तस्य लोपः) इसकर तकारकाभी लोप करदिया तब रूप सिद्ध हुआ (भवान्) द्विवचनमें (त्रितो नुम्) इसकर नुंम् आगम हुआ। और अन्त्यस्वरको दीर्घ हुआ नहीं, क्योंकि, (अत्वसोः सौ) इसमें केवल सिविभक्ति वचनकाही ग्रहणहै तब रूप सिद्ध हुआ (भवन्तौ) इसी प्रकार बहुवचनमें रूप सिद्ध हुआ (भवन्तः) और सम्बोधनमें सिकी धिसंज्ञा करने पर (त्रितो नुम्) इसकर नुम् आगम किया। और (अत्वसोः सौ) इसकर दीर्घ हुआ नहीं क्योंकि वृत्तिमें धिसंज्ञावर्जित सिका ग्रहण है तब (हसेपः सेर्लोपः) (संयोगान्तस्य लोपः) इनकर सिद्ध हुआ (हे भवन्) द्विवचनमें (हे भवन्तौ) बहुवचनमें (हे भवन्तः) द्वितीयाएकवचनमें (भवन्तम्) द्विवचनमें (भवन्तौ) बहुवचनमें स्यादिक पंचवचन सम्बन्धी वचन न होनेसे (त्रितो नुम्) इसकर नुम् आगम नहीं हुआ तब रूप सिद्ध हुआ (भवतः) तृतीयामें (भवता) (भवद्भ्याम्) (भवद्भिः) इत्यादिक। ऋकारानुबन्ध पचत् शब्द है उसको स्यादिक पंचवचनोंके विषे (त्रितो नुम्) इस करके नुम् आगमही हुआ और दीर्घ नहीं हुआ जैसे (पचत् सि) इसमें नुम् आगम करनेसे रूप हुआ (पचन्त् सि) फिर (हसेपस्सेर्लोपः) इसकर सिका लोपकर (संयोगान्तस्य लोपः) इसकर तकारका भी लोप करदिया तब रूप सिद्ध हुआ (पचन्) द्विवचनमें (पचन्तौ) बहुवचनमें (पचन्तः) सम्बोधनमें (हे पचन्) (हे पचन्तौ) (हे पचन्तः) द्वितीयामें (पचन्तम्) (पचन्तौ) (पचतः) द्वितीयाबहुवचनमें स्यादिक पंचवचन सम्बन्धी वचन न होनेसे (त्रितो नुम्) इसकर नुम् आगम नहीं हुआ। तृतीयामें (पचता) (पचद्भ्याम्) (पचद्भिः) इसी प्रकार ऋकारानुबन्ध भवत् शब्द है। (भवन्) (भवन्तौ) (भवन्तः) इत्यादि ॥

शकारान्तो विश् शब्दः (छशषराजादेः षः) इति षत्वम् (षो डः) इति डत्वम् (वावसाने) चपाजबाश्च । विट् । विड् । विशौ । विशः । इत्यादि ॥ षकारान्तः षष्शब्दः नित्यं बहुवचनान्तस्त्रिषु सरूपः (जश्शसोर्लुक्) (षो डः) (वावसाने) षट् । षड् । षड्भिः । षड्भ्यः । षड्भ्यः । षष् आम् । इति स्थिते (ष्णः) इति नुट् । षड्नाम् । इति स्थिते ।

भाषार्थ–शकारान्त विश् शब्द है (विश् सि) ऐसा स्थित है (हसेपः सेर्लोपः) इसकर सिका लोप करनेपर (छशषराजादेः षः) इसकर शकारके स्थानमें षकार किया। फिर (षो डः) इसकर षकारके स्थानमें डकार किया। फिर (वावसाने) इसकर चप प्रत्याहार सम्बन्धी सवर्गीयटकार और जब प्रत्याहार

सम्वन्धी डकार करनेसे रूप सिद्ध हुआ (विट्) (विड्) द्विवचनमें (विशौ) वहुवचनमें (विशः) इसीप्रकार अन्य विभक्ति वचनोंमें जानने । और भकारादि-कमें (छशषराजादेः षः) इसकर षकारकर (षो डः) इसकर डकार किया तव रूप सिद्ध हुए (विड्भ्याम्) (विड्भिः) इत्यादिक और सप्तमीवहुवचनमें (छश-षराजादेः षः) इसकर षकार (षो डः) इसकर डकार किया फिर (खसे चपा झसानाम्) इसकर डकारके स्थानमें टकार करनेसे रूप हुआ (विट्सु) षकारान्त षष् शब्द नित्यही वहुवचनान्त होता है और तीनों लिंगोंमें समान रूप होते हैं जैसे प्रथमावहुवचनमें (षष् अस्) ऐसा स्थित है (जश्शसोर्लुक्) इसकर जस्के शुद्ध रूप अस्का लुक् करनेपर (षो डः) इस सूत्रकर डकार किया । फिर (वाव-साने) इसकर सिद्ध हुआ (षट्) (षड्) इसी प्रकार द्वितीयावहुवचनमें हुआ और तृतीयावहुवचनमें (षो डः) इसकर डकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ (षड्भिः) चतुर्थी पंचमीके वहुवचनमें (षड्भ्यः) (षड्भ्यः) षष्ठीवहुवचनमें (षष् आम्) ऐसा स्थित है (ष्णः) इसकर आम्को नुट् आगम करनेपर (षो डः) इसकर षकारके स्थानमें डकार किया तव रूप स्थित हुआ (षड्नाम् ॥

ड्णः ।

ड्[1]–णः[1] । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) षान्तसंख्यासम्बन्धिनो डका-रस्य णत्वं भवति नामि परे । षण्णाम् । षट्सु । क्वचिदपदान्तेपि पदान्तता-श्रयणीया ॥ दोष्शब्दस्य भेदः ।

भाषार्थ–षकारान्त संख्या सम्वन्धी डकारको णकार होय नाम् पर हुए संते जैसे (षड्नाम्) इसमें षकारान्त संख्या सम्वन्धी डकारके स्थानमें णकार किया क्योंकि, नाम् परे विद्यमान है तव रूप स्थित हुआ (षण् नाम्) फिर (ष्टुभिः ष्टुः) इसकर नाम्के नकारके स्थानमें णकार करनेसे रूप सिद्ध हुआ (षण्णाम्) और सप्तमीवहुवचनमें (षो डः) इसकर षकारके स्थानमें डकार करनेपर खसे चपा झसानाम्) इसकर डकारके स्थानमें टकार करनेसे रूप सिद्ध हुआ (षट्सु) यदि कहो कि, इसमें (ष्टुभिः ष्टुः) इसकर सकारके स्थानमें षकार क्यों नहीं हुआ । तहाँ कहते हैं कि, कहीं प्रयोगान्तरके विषे अपदान्तमें भी पदान्तता आश्रय करने योग्य है । इसकारण यहाँ पदान्तता मानकर (टोरन्त्यात्) इस सूत्रकर सकारके स्थानमें षकार नहीं हुआ ॥ षकारान्त दोष् शब्दको भेद है प्रथमाएकवचनमें (दोष् सि) ऐसा स्थित है (हसेपः सेर्लोपः) इसकर सिका लोप करनेपर स्थित हुआ रूप (दोष्)–॥

दोषां रः ।

दोषाम्-रः । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) दोष्-सजुष्-आशिष्-हविष्-प्रभृतीनां षकारान्तस्य रेफो भवति रसेपरे पदान्तेच । दोः । दोषौ । दोषः । दोषम् । दोषौ । (शसादौ स्वरे परे (१) नान्तता वा वक्तव्या) दोष्णः । दोषः । दोष्णा । दोषा । दोर्भ्याम् । दोर्भिः । दोष्णे । दोषे । दोर्भ्याम् । दोर्भ्यः । दोष्णः । दोषः । दोर्भ्याम् । दोर्भ्यः । दोष्णः । दोःषः । दोष्णोः । दोषोः । दोष्णाम् । दोषाम् । दोष्णि । दोषि । दोष्णोः । दोषोः । दो षु । सजूः । सजुषौ । सजुषः । सजुषम् । सजुषौ । सजुषः । सजुषा । (सजुषाशिषो रसे पन्दान्ते च दीर्घो वक्तव्यः) सजूर्भ्याम् ॥ सकारान्तः पुंस् शब्दः ।

भाषार्थ-दोष् सजुष् आशिष् हविष् आदिक शब्दोंके षकारको रकार होय जो रस प्रत्याहार पर होवै या पदान्त होवै तो जैसे (दोष्) इसमें दोष् शब्दके षकारसे विभक्त्यन्त होनेसे पदान्त विद्यमान है इसकारण षकारके स्थानमें रकार कर (स्रोर्विसर्गः) इसकर विसर्ग करनेसे रूप सिद्ध हुआ (दोः) द्विवचनमें (दोषौ) बहुवचनमें (दोषः) द्वितीयाएकवचनमें (दोषम्) द्विवचनमें (दोषौ) बहुवचनमें (दोष् अस्) ऐसा स्थित है । दोष् शब्दको शसादि स्वर पर हुए संते । नान्तता विकल्प करके वक्तव्य है । भाव यह है कि, दोष् शब्दके अन्तमें न् यह आगम होय शसादिक स्वर पर हुए संते । जैसे (दोष् अस्) इसमें दोष् शब्दसे परे शसादिक स्वर सम्बन्धी अकार विद्यमान है इसकारण एकजगह दोष् शब्दके अन्तमें न् आगम करनेसे रूप हुआ (दोषन् अस्) फिर (षुर्नोणोऽनन्ते) (स्वरहीनं परेण संयोज्यम) इन

---

(१) कोई आचार्य यहाँपर (शसादावनन्तन्ता वा वक्तव्या). ऐसा कहते हैं अर्थ-दोष शब्दको शसादि विभक्ति मात्र पर हुए संते विकल्प करके अनन्तता वक्तव्य है । भाव यहहै कि, कोई आचार्य दोष् शब्दके अन्तमें अन् आगम कहतेहैं विकल्पकरके शसादिक समस्त विभक्ति मात्र परहुएसंते । जहाँ कि, स्वर विभक्तिमें अन् आगम होय तहाँ (अल्लोपः स्वरेऽम्वयुक्ताच्छसादौ) इसकर अकारका लोप कर (षुर्नोणोऽनन्ते) इसकर सिद्धहुआ (दोष्णः । दोष्णा) और जहाँकि, हसादि विभक्तिमें अन् आगम होय तहाँ (नाम्नोनो लोपशधौ) इसकर नकारका लोपश् करनेपर रूप सिद्ध हुआ (दोषभ्याम्) और जहाँ अन् आगम न स्वरादिकमें होय और न हसादिकमें होय तहाँ (दोषः) (दोषा) (दोर्भ्याम्) इत्यादि । और सप्तमीएकवचनमें अन् आगम करनेपर (वेङ्योः) इसकर सिद्ध हुआ (दोषणि) (दोष्णि) और जहाँ अन् आगम नहीं हुआ तहाँ (दोषि) सप्तमी बहुवचनमें जहाँ अन् आगम हुआ तहाँ (नाम्नो नो लोपशधौ) इसकर (दोषसु) और जहाँ अन् आगम नहीं हुआ तहाँ पूर्ववत् । इत्यलम् ॥

करके सिद्ध हुआ (दोष्णः) और जहाँ न् आगम नहीं हुआ तहाँ सिद्ध हुआ (दोषः) तृतीयाएकवचनमें (दोष्णा-दोषा) द्विवचनमें (दोषां रः) इसकर षकारके स्थानमें रकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ (दोर्भ्याम्) इसी प्रकार अन्य भकारादि विभक्ति वचनोंमें रूप जानने। और सप्तमीबहुवचनमें (दोषां रः) इसकर रकारकर (किलातषः सः कृतस्य) इसकर सकारके स्थानमें षकार करनेसे रूप सिद्ध हुआ (दोर्षु) और कोई आचार्य यहाँपर (विसर्जनीयस्यः सः) इसकर विसर्गकर (शषसे वा) इसकर विसर्गके स्थानमें षकार और विसर्ग करते हैं तब रूप सिद्ध हुआ (दोष्षु) (दोःषु)। और षकारान्त सजुष् शब्दहै । प्रथमाएकवचनमें (सजुष् सि) (ऐसा स्थितहै) हसेपः-सेर्लोपः) इसकर सिका लोप करनेपर (दोषां रः) इसकर पदान्त होनेसे षकारके स्थानमें रकार किया । तब रूप स्थितहुआ (सजुर्) फिर सजुष्के अन्त्यस्वर उकारको दीर्घ किया । क्योंकि सजुष् और आशिष् शब्दोंको दीर्घ वक्तव्य है रस प्रत्याहार पर हुए संते या पदान्तकेविषे । भावयहहै कि, सजुष् और आशिष् शब्दसे पर रस प्रत्याहार वा पदान्त होवै तो सजुष् और आशिष् शब्दके अन्त्यस्वरको दीर्घ होय। जैसे (सजुर्) इसमें सजुष्के सजुर् रूपसे पदान्त विद्यमानहै इसकारण सजुष्के अन्त्यस्वर उकारको दीर्घकर (खरोर्विसर्गः) इसकर रकारके स्थानमें विसर्ग करनेसे रूप सिद्धहुआ (सजूः) द्विवचनमें (सजुषौ) बहुवचनमें (सजुषः) द्वितीयामें (सजुषम्) (सजुषौ) (सजुषः) तृतीयामें (सजुषा) द्विवचनमें (दोषां रः) इसकर रकार कर (सजुषाशिषो रसे पदान्ते च दीर्घो वक्तव्यः) इसकर अन्त्यस्वर उकारको दीर्घ किया तब रूप सिद्ध हुआ (सजूर्भ्याम्) बहुवचनमें (सजूर्भिः) इत्यादि । सकारान्त पुंस् शब्दहै । प्रथमाएकवचनमें (पुंस् सि) ऐसा स्थितहै ॥

पुंसोऽसुङ् ।

पुंसः-असुङ् । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) पुंस्शब्दस्य पंचस्वसुङादेशो भवति । ङकारोऽन्त्यादेशार्थः । उकारो नुम्विधानार्थः (पुमस् सि) इति स्थिते (उगितो नुम्) इति नुमागमः (न्सम्महतोऽधौ दीर्घः शौ च) दीर्घः । (हसेपः०) इति सेर्लोपः (संयोगान्तस्य लोपः) पुमान् । पुमांसौ । पुमांसः । हे पुमन् । पुमांसम् । पुमांसौ । पुंसः । पुंसा । पुंभ्याम् । पुंभिः । इत्यादि ।

भाषार्थ-पुंस् शब्दको असुङ् आदेश होय स्यादिक पांच वचन पर हुए संते आदेशमें ङकार अन्त्यादेशके अर्थहै और उकार नुम् आगमके विधानके अर्थ है।भाव यहहै कि, आदेशमें ङकार इत् होनेके कारण आदेश पुंस् शब्दके अन्त्य वर्ण सकारके स्थानमें होय और आदेशोंमें उकार इत् होनेके कारण (उगितो नुम्) इसकर नुम्

आगम भी होय जैसे (पुंस् सि) इसमें पुंस् शब्दसे परे सि विभक्ति वचन विद्यमान है इसकारण पुंस् शब्दके अन्त्यवर्ण सकारके स्थानमें असुङ् आदेश करनेसे रूप स्थित हुआ (पुंअस् सि) फिर (स्वरेमः) इसकर अनुस्वारके स्थानमें मकार करनेसे रूप स्थित हुआ (पुमस् सि) फिर (व्रितोनुम्) इसकर नुम् आगम किया क्योंकि, आदेशमें उकार नुम् विधानार्थ है तब रूप हुआ (पुमन्स् सि) फिर (न्सम्महतोऽधौ दीर्घः शौच) इसकर न्सन्त होनेसे अन्त्यस्वर अकारको दीर्घ किया तब रूप हुआ (पुमान्स्सि) फिर (हसेपः सेर्लोपः) इसकर सिका लोपकर (संयोगान्तस्य लोपः) इसकर रूप सिद्ध हुआ (पुमान्) द्विवचनमें असुङ् आदेशकर (व्रितो नुम्) इसकर नुम् आगम करनेपर रूप हुआ (पुमन्स्औ) फिर (न्सम्महतोऽधौ दीर्घः शौच) इसकर अन्त्यस्वर अकारको दीर्घकर रूप हुआ (पुमान्स् औ) फिर (नश्चापदान्तेझसे) इसकर नकारको अनुस्वार करनेपर रूप सिद्ध हुआ (पुमांसौ) इसीप्रकार बहुवचनमें सिद्ध हुआ (पुमांसः) द्वितीया-एकवचन द्विवचनमें रूप सिद्ध हुआ (पुमांसम् । पुमांसौ) बहुवचनमें स्यादिक पंचवचन सम्बन्धी वचन न होनेसे असुङ् आदेश नहीं हुआ । इसकारण रूप सिद्ध हुआ (पुंसः) तृतीयाएकवचनमें (पुंसा) द्विवचनमें (संयोगान्तस्यलोपः) इसकर सकारका लोप करनेपर रूप सिद्ध हुआ (पुंभ्याम्) सप्तमीबहुवचनमेंभी (संयोगान्तस्यलोपः) इसकर रूप सिद्ध हुआ (पुंसु) (१) सम्बोधनमें सिकी धिसंज्ञा करनेपर (न्सम्महतोऽधौ दीर्घः शौच) इसकर दीर्घ नहीं हुआ क्योंकि, धिसंज्ञा वर्जित सिका ग्रहणहै तब रूप सिद्ध हुआ (हेपुमन्) द्विवचनमें (हेपुमांसौ) बहुवचनमें (हेपुमांसः) ॥

असंभवे पुंसः कक्सौ ।

अ॒सं॑भवे॒–पुं॒सः॒–क॒क्–सौ॑ । चतुष्पदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) वेदान्तैकवेद्यस्यात्मनोबहुत्वासंभवेर्थे वाच्येसति पुंस्शब्दस्य कगागमो भवति सुपि परे ।

भाषार्थ–असंभव अर्थ वाच्य हुएसंते पुंस शब्दको कक् आगम होय सुप् विभक्ति वचन पर हुए संते। भाव यहहै कि,वेदान्त शास्त्रकर एक जानने योग्य आत्माका बहुवचन नहीं होताहै क्योंकि आत्मा ब्रह्म तो एकही है (एकमेवाद्वितीयं ब्रह्म नेहनानास्ति किंचन) इस श्रुतिके प्रमाणसे यदि कदाचित् बहुवचन होजावे तो यही असंभव अर्थहै इसी असंभव अर्थके कहेजानेपर पुंस शब्दको कक् आगम होय सप्तमी बहुवचन पर हुए संते। जैसे (पुंस्सु) असंभव अर्थमें पुंस शब्दसे परे सुप विभक्ति वचन विद्यमानहै इसकारण पुंस शब्दको कक् आगम किया तो वह आगम पुंस् शब्दके

(१) लौकिकेषु पुरुषेषु पुंस्सु इति प्रयोगः ॥

परे हुआ क्योंकि, आगम कित्‌है और आगममें अकार उच्चारणार्थहै तव रूप स्थित हुआ । (पुंस्‌क् सु) फिर-॥

स्कोराद्योश्च ।

स्कोः-आद्योः-च । त्रिपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) संयोगाद्योः सकारककारयोर्लोपो भवति धातोर्झसेपरे नाम्नश्चरसेपदान्तेच । इति सकारलोपः । कषसंयोगेक्षः । पुंक्षु । एवं विद्वान् । विद्वांसौ । विद्वांसः । हे विद्वन् । विद्वांसम् । विद्वांसौ ।

भाषार्थ-संयोग संज्ञाके आदिमें वर्त्तमान जो सकार ककार तिनका लोप होय धातुसे झस प्रत्याहार पर हुए संते और नामसे रस प्रत्याहार पर हुए संते वा पदान्तके विषे । भाव यह है कि, धातुकी संयोग संज्ञासे परे यदि झस प्रत्याहार होवै और उस संयोगके आदिमें यदि सकार होवै तो उस सकारका ही लोप हो जावै और नामकी संयोग संज्ञासे परे यदि रस प्रत्याहार होवै या पदान्त होवै और उस संयोगके आदिमें यदि सकार होवै तो भी उस सकारकाही लोप हो जावै । जैसे (पुंस्‌क् सु) इसमें नामके संयोगसंज्ञक स्क्‌से परे रस प्रत्याहार सम्बन्धी सुप्‌का सकार है इसकारण संयोग संज्ञक स्क्‌के आदिके सकारका लोप करनेसे रूप स्थित हुआ (पुंक्‌सु) फिर (क्लिात्षः सः कृतस्य) इसकर सकारके स्थानमें षकार कर (कषसंयोगेक्षः) इसकर दोनों ककार षकारके स्थानमें क्षकार किया तव रूप सिद्ध हुआ (पुंक्षु) (१) इसी प्रकार स्यादिक पाँच वचनोंमें उकारानुबन्ध विद्वस् शब्द साधनेयोग्यहै जैसे (विद्वन् सि) इसमें (ब्रितोनुम्) इसकर नुम् आगम करनेसे रूप स्थित हुआ (विद्वन्‌स् सि) फिर (न्सम्महतोधौदीर्घः शौच) इसकरके अन्त्यस्वर वकार उत्तरवर्त्ती अकारको दीर्घ कर रूप स्थित हुआ (विद्वान्‌स्‌सि) फिर (हसेपः सेर्लोपः) इसकर सिका लोपकर (संयोगान्तस्य लोपः) इसकर सकारका लोप करनेसे रूप सिद्ध हुआ (विद्वान्) द्विवचनमें (विद्वस् औ) ऐसा स्थित है इसमें (ब्रितोनुम्) इसकर नुम् आगम कर (न्सम्महतोऽधौ दीर्घः शौच) इसकर दीर्घ किया । फिर (नश्चापदान्ते झसे) इसकर नकारको अनुस्वार कर रूप सिद्ध हुआ (विद्वांसौ) इसी प्रकार बहुवचनमें सिद्ध हुआ (विद्वांसः) सम्बोधनमें सिकी धि संज्ञा करनेपर (न्सम्महतोधौदीर्घः शौच) इसकर दीर्घ नहीं हुआ। किन्तु रूप सिद्ध हुआ (हे विद्वन्) द्वितीयाएकवचन द्विवचनमें (विद्वांसम् । विद्वांसौ) बहुवचनमें स्यादिक पंच वचन सम्बन्धी वचन न होनेसे (ब्रितोनुम्) (न्सम्महतोऽधौ०) इन दोनों सूत्रोंकी प्राप्ति नहीं हुई किन्तु प्रथम (विद्वस् अस्) स्थित हुआ ॥

(१) परमपुरुष पुंक्षु इति वैदिकः प्रयोग: ॥

वसोर्व उः।

वसोः—वः—उः। त्रिपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) वसोः सम्बन्धी वकार उत्वं प्राप्नोति शसादौ स्वरे तद्धिते ईपि ईकारे च परे। विदुषः। विदुषा। वसांरसे। विद्वद्भ्याम्। विद्वद्भिः। इत्यादि।

भाषार्थ–वसु प्रत्यय सम्बन्धी वकार उकारको प्राप्त होय शसादिक स्वर और तद्धित प्रत्यय यण् और ईप् तथा ईकार पर हुए संते। भाव यह है कि, कृदन्तके वसु प्रत्ययके वकारके स्थानमें उकार होजावै जो शसादि स्वर और तद्धित प्रत्यय यण् तथा ईप् और ईकार पर होवैं तो जैसे (विद्वस् अस्) इसमें जो कि, विद्वस् शब्द है उसमें जो कि, वस् प्रत्ययका वकार है उसके स्थानमें उकर किया क्योंकि, शसादिक स्वर सम्बन्धी अस्का अकार विद्यमान है तब रूप स्थित हुआ (विदुस् अस्) (क्लिलात्षः सः कृतस्य) इसकर सकारके स्थानमें षकार करनेपर रूप सिद्धहुआ (विदुषः) इसी प्रकार सिद्ध हुआ तृतीयाएकवचनमें (विदुषा) द्विवचनमें (वसांरसे) इसकर सकारके स्थानमें दकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ (विद्वद्भ्याम्) बहुवचमें (विद्वद्भिः) इत्यादि॥

सुवचस्शब्देतु। अत्वसोः सौ इति दीर्घः। सुवचाः। सुवचसौ। सुवचसः। हे सुवचः। सुवचसम्। सुवचसौ। सुवचसः। सुवचसा। स्रोर्विसर्गः। हवे। उ ओ। सुवचोभ्याम्। सुवचोभिः। इत्यादि। एवं चंद्रमस्शब्दः। उशनस्शब्दस्य विशेषः।

भाषार्थ–सुवचस् शब्दके विषे (अत्वसोः सौ) इसकर दीर्घ किया जैसे (सुवचस् सि)ऐसा स्थित है इसमें असन्त सुवचस् शब्दके अन्त्यस्वर अकारको(अत्वसोः सौ) इसकर दीर्घ करने पर (सुवचास् सि) ऐसा स्थितरहा फिर (हसेपः सेर्लोपः) इसकर सिका लोप करनेपर (स्रोर्विसर्गः) इसकर सकारके स्थानमें विसर्ग किया तब रूप सिद्ध हुआ (सुवचाः) द्विवचनमें (सुवचसौ) बहुवचनमें (सुवचसः) सम्बोधनमें सिकी धिसंज्ञा करने पर (अत्वसोः सौ) इसकर अन्त्यस्वरको दीर्घ नहीं हुआ क्योंकि, धिसंज्ञावर्जित सिका ग्रहणहै तब रूप सिद्ध हुआ (हे सुवचः) द्वितीयामें (सुवचसम्) (सुवचसौ) (सुवचसः) तृतीयाएकवचनमें (सुवचसा) द्विवचनमें (स्रोर्विसर्गः) इसकर सकारके स्थानमें विसर्ग करनेपर (हवे) इसकर विसर्गके स्थानमें उकार किया। फिर (उ ओ) इसकर सिद्ध हुआ (सुवचोभ्याम्) बहुवचनमें (सुवचोभिः) सप्तमीबहुवचनमें (सुवचस्सु)

इसीप्रकार चन्द्रमस् शब्दके रूपसिद्ध होतेहैं जैसे (चंद्रमाः) (चंद्रमसा) (चंद्रमसः) इत्यादि ॥ उशनस् शब्दको विशेषहै । प्रथमा एकवचनमें (उशनस् सि) ऐसा स्थितहै ॥

उशनसाम् ।

उशनसाम् । एकपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) उशनस् पुरुदंसस् अनेहस् इत्येतेषां सेरधेर्डा भवति । डकारष्टिलोपार्थः । उशना । उशनसौ । उशनसः । उशनसम् । उशनसौ । उशनसः । उशनसा । उशनोभ्याम् । उशनोभिः । (उशनसोधौ सान्तता नान्तता अदन्तता च वक्तव्या) हे उशनः । हे उशनन । हे उशन । हे उशनसौ । हे उशनसः ॥ अदस्शब्दस्य भेदः । त्यदादेष्टेरः स्यादौ । इति सर्वत्राकारः । अद सि । इति स्थिते ।

भाषार्थ–उशनस्–पुरुदंसस्–अनेहस्–इन शब्दोंके धिवर्जित सिको डा होय भावयहहै कि, उशनस् । पुरुदंसस् । अनेहस् । इन शब्दोंसे परे जो धिसंज्ञावर्जित सि तिसके स्थानमें डा होय डकार टिलोपके अर्थ है । जैसे (उशनस् सि) इसमें उशनस् शब्दसे परे सि विभक्ति वचन विद्यमानहै इसकारण सिके स्थानमें डा किया तो स्थित हुआ रूप (उशनस् आ) इसमें डकार (डितिटेः) इसकर टिके-लोप करनेके अर्थ है फिर (डितिटेः) इसकर टिका लोप करनेसे रूप सिद्ध हुआ (उशना) द्विवचनमें (उशनसौ) बहुवचनमें (उशनसः) द्वितीयामें (उशनसम्) द्विवचनमें (उशनसौ) बहुवचनमें (उशनसः) तृतीयामें (उशनसा) (उशनोभ्याम्) (उशनोभिः) इत्यादि । सम्बोधनमें सिकी धिसंज्ञा करनेपर (उशनसाम्) इसकी प्राप्ति तो हुई क्योंकि, धिसंज्ञावर्जित सिका ग्रहणहै तब रूप स्थित हुआ । (उशनस् सि) उशनस् शब्द को धि विषयमें सकारान्तता तथा नकारान्तता और अकारान्तता वक्तव्यहै, भाव यह है कि, उशनस् शब्द एक जगह तो सम्बोधनमें धिके विषे सकारान्त हो और एकजगह नकारान्तहो और एक जगह अकारन्तहो । जैसे एकजगह सकारान्त हुआ तहाँ (उशनस् सि) ऐसा स्थितहै (हसेपःसेर्लोपः) (स्रोर्विसर्गः) इनकर सिद्ध हुआ (हे उशनः) और एक जगह नकारान्त हुआ तहाँ (उशनन् सि) ऐसा स्थितहै (हसेपःसेर्लोपः) इसकर सिद्ध हुआ (हे उशनन) और एक जगह अकारान्त हुआ तहाँ (उशन सि) ऐसा स्थितहै । (समानाद्धेर्लोपोऽधातोः) इसकर सिद्ध हुआ (हे उशन) ॥ सकारान्त पुरुदंसस् अनेहस् शब्दहैं (पुरुदंसाः) (पुरुदंससौ) (पुरुदंससः) (हे पुरुदंसः) (पुरुदंससम्) (पुरुदंससौ) (पुरुदंससः) (पुरुदंससा) (पुरुदंसोभ्याम्) (पुरुदंसोभिः) । इसी प्रकार अनेहस् शब्दके रूप जानने ॥ अदस् शब्दको भेदहै ।

(त्यदादेष्टेरः स्यादौ) इसकर समस्त विभक्तिवचनोंमें अकार किया तब रूप स्थित हुआ । अद सि ॥

सौ सः।

सौ—सः । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) अदसोदकारस्य सो भवति सौ परे ।

भाषार्थ—अदस् शब्दके दकारको सकार होय सि विभक्ति पर हुए संते । जैसे अद सि । इसमें अदस् शब्दके दकारके स्थानमें सकार किया क्योंकि परे सि विभक्ति वचन विद्यमान है तब रूप स्थित हुआ । अस सि । फिर–॥

सेरौ ।

सेः—औ । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) अदसः सेरौकारादेशो भवति । असौ । द्विवचने । अदऔ । इति स्थिते । दस्यमः ।

भाषार्थ—अदस् शब्दसे परे जो सि तिसको औकार आदेश होय जैसे (अस सि) इसमें अदस् शब्दके अस् रूपसे परे सि विभक्ति वचन है इसकारण सिके स्थानमें औकार करनेसे (ओ औ औ) इसकर रूप सिद्ध हुआ (असौ) द्विवचनमें (अदऔ) ऐसा स्थितहै (दस्यमः) इसकर दकारके स्थानमें मकार करनेसे रूप हुआ (अम औ) फिर (ओ औ औ) इसकर रूप स्थित हुआ (अमौ) फिर–॥

मादू ।

मात्–ऊँ । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) उश्च ऊश्च ऊ । अदसो मकारात्परस्य ह्रस्वस्य ह्रस्व उकारो भवति दीर्घस्य च दीर्घ ऊकारो भवति । अमू । बहुवचने सर्वादित्वात् । जसी । अइए । अमे इति स्थिते ।

भाषार्थ—अदस् शब्दके मकारसे परे ह्रस्व को ह्रस्व उकार होय और दीर्घको दीर्घ ऊकार होय । भाव यह है कि, अदस् शब्दके मकारसे परे यदि ह्रस्व स्वर होय तो उस ह्रस्व स्वरको ह्रस्व उकार होय और यदि दीर्घ स्वर होय तो उस दीर्घ स्वरको दीर्घ ऊकार होय जैसे (अमौ) इसमें अदस् शब्दके मकारसे परे औकार है इसकारण औकारके स्थानमें दीर्घ ऊकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ (अमू) बहुवचनमें (दस्यमः) इसकर दकारके स्थानमें मकार किया तब रूप स्थित हुआ (अम जस्) फिर सर्वादिक होनेसे (जसी) इसकर जस्के स्थानमें ईकार करनेपर (अइए) इसकर स्थित हुआ रूप (अमे) फिर–॥

एरी बहुत्वे ।

एः—ई—बहुत्वे । त्रिपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) बहुत्वे अदस एकारस्य ईकारादेशो भवति । अमी । अमुम् । अमू । अमून् । तृतीयादौ मत्वे उत्वे च कृते । टानाऽस्त्रियाम् । अमुना । द्विवचने । अद्धि । इत्यात्वं पश्चादूकारः । अमूभ्याम् । अमीभिः । अमुष्मै । अमूभ्याम् । अमीभ्यः । अमुष्मात् । अमूभ्याम् । अमीभ्यः । अमुष्य । ओसि । एत्वे कृते अयादेशे च कृते पश्चादुकारः । अमुयोः । अमीषाम् । अमुष्मिन् । अमुयोः । अमीषु । सामान्येऽदसः कः स्यादिवच्च । अमुकः । पुँल्लिंगे सर्ववत् ॥ इति हसान्तपुँल्लिंगप्रक्रिया ॥

भाषार्थ–अदस् शब्दके एकारको ईकार आदेश होय । भाव यह है कि, बहुवचनमें अदस् शब्दके मकारसे परे एकारके स्थानमें ईकार होय । जैसे (अमे) इसमें बहुवचन होनेसे । अदस् शब्दके मकारसे परे एकारके स्थानमें ईकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ (अमी) द्वितीयाएकवचनमें (दस्यमः) इसकर दकारके स्थानमें मकार कर (अम्शसोरस्य) इसकर अम्के अकारका लोप किया । फिर (मादू) इसकर मकारसे परे अकारके स्थानमें उकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ (अमुम्) द्विवचनमें पूर्ववत् सिद्ध हुआ (अमू) द्वितीयाबहुवचनमें (दस्यमः) इसकर दकारके स्थानमें मकार किया और (अम्शसोरस्य) इसकर शस्के अकारका लोप किया फिर (सोनः पुंसः) इसकर शस्के सकारको नकार किया फिर (शशि) इसकर दीर्घकर (मादू) इसकर सिद्ध हुआ (अमून्) तृतीयाएकवचनमें (दस्यमः) इसकर मकार (मादू) इसकर उकार करनेपर (टानाऽस्त्रियाम्) इसकर रूप सिद्ध हुआ (अमुना) द्विवचनमें (अद्धि) इसकर आकार पीछे (मादू) इसकर ऊकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ (अमूभ्याम्) बहुवचनमें (भिस् भिस्) (ए स्भि बहुत्वे) इनकरके एकार करनेपर (एरी बहुत्वे) इसकर एकारके स्थानपर ईकार किया तब रूप सिद्ध हुआ (अमीभिः) चतुर्थीएकवचनमें (सर्वादेःस्मट्) इसकर स्मट् आगम कर पीछे (मादू) इसकर उकार किया फिर (क्विलात्षः सः कृतस्य) इसकर रूप सिद्ध हुआ (अमुष्मै) द्विवचनमें (अमूभ्याम्) बहुवचनमें (अमीभ्यः) पंचमीएकवचनमें (अतः) इसकर स्मट् आगम करनेपर (मादू) इसकर उकार किया फिर (क्विलात्षः सः कृतस्य) इसकर सिद्ध हुआ (अमुष्मात्) द्विवचनमें (अमूभ्याम्) बहुवचनमें (अमीभ्यः) षष्ठीएकवचनमें (ङस्य) इसकर ङस्को स्य

आदेश करनेपर पीछे (मादू) इसकर उकार किया । फिर (किलात्षः सः०) इसकर रूप सिद्ध हुआ (अमुष्य) द्विवचनमें (ओसि) इसकर एकार कर (एअय्) इसकर अय् आदेश किया फिर (मादू) इसकर उकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ (अमुयोः) और बहुवचनमें (सुडामः) इसकर आमुको सुट् आगम किया फिर (एस्भि बहुत्वे) इसकर एकार किया फिर (एरीबहुत्वे) इसकर एकारके स्थानमें ईकार करनेपर (किलात्षःसः कृतस्य) इसकर रूप सिद्ध हुआ (अमीषाम्) सप्तमीएकवचनमें (ङिस्मिन्) इसकर ङिके स्थानमें स्मिन् आदेश कर (मादू) इसकर उकार किया फिर (किलात्षःसः कृतस्य) इसकर सकारके स्थानमें षकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ (अमुस्मिन्) द्विवचनमें पूर्ववत् (अमुयोः) बहुवचनमें (एस्भि बहुत्वे) इसकर एकार कर (एरी बहुत्वे) इसकर एकारके स्थानमें ईकार किया फिर (किलात्षः सः कृतस्य) इसकर रूप सिद्ध हुआ (अमीषु) अदस् शब्दके सम्बोधनमें रूप नहीं होते क्योंकि, त्यदादिकोंको धिका अभाव है । सामान्य अर्थमें अदस् शब्दसे क प्रत्यय होवै है वह क प्रत्यय स्यादिवत् जानने योग्यहै भाव यहहै कि, अदस् शब्दको स्यादि विभक्ति परे जो कार्य होताहै वही कार्य क प्रत्यय परे होताहै जैसे अदस् शब्दसे कः प्रत्यय करनेपर रूप हुआ) अदस् क) फिर (त्यदादेष्टेरःस्यादौ) इसकर टिको अकार करनेपर (दस्यमः) इसकर मकार किया फिर (मादू) इसकर मकार उत्तरवर्त्ती अकारके स्थानमें उकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ । अमुक । फिर स्यादिक विभक्ति परमें युक्तकर प्रथमाएकवचनमें (स्रोर्विसर्गः) इसकर रूप सिद्ध हुआ (अमुकः) द्विवचनमें (अमुकौ) बहुवचनमें (अमुके) द्वितीयामें (अमुकम्) (अमुकौ) (अमुकान्) तृतीयामें (अमुकेन) (अमुकाभ्याम्) (अमुकैः) (अमुकस्मै) (अमुकाभ्याम्) (अमुकेभ्यः) (अमुकस्मात्) (अमुकाभ्याम्) (अमुकेभ्यः) (अमुकस्य) (अमुकयोः) (अमुकेषाम्) (अमुकस्मिन्) (अमुकयोः) (अमुकेषु) ॥ इति हसान्तपुँल्लिङ्गप्रक्रिया ॥

अथ हसान्ताः स्त्रीलिङ्गाः ॥ हकारान्त उपानह् शब्दः । उपानह् सि । इति स्थिते ।

भाषार्थ–इसके अनन्तर हसान्त स्त्रीलिङ्ग साधन कहते हैं । हकारान्त उपानह् शब्द है । प्रथमाएकवचनमें (उपानह् सि) ऐसा स्थित है (हसेपः सेर्लोपः) इसकर सिका लोप करनेपर रूप स्थित हुआ । उपानह्–॥

नहो धः ।

नहः–१धः । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) नहो हकारस्य धकारादेशो भवति रसे परे पदान्ते च ५ वावसाने । इति तत्वं दत्वं च । उपानत् ।

उपानद् । उपानहौ । उपानहः । हे उपानत् । हे उपानद् । हे उपानहौ । हे उपानहः । उपानहम् । उपानहौ । उपानहः । उपानहा । उपानद्भ्याम् । इत्यादि ॥ वकारान्तो दिव् शब्दः ।

भाषार्थ-नह् धातुके हकारको धकार आदेश होय रस प्रत्याहार पर हुए संते तथा पदान्तके विषे जैसे (उपानह्) ऐसा स्थित है इसमें क्विप्प्रत्ययान्त नह धातुके हकारमें पदान्तत्व विद्यमान है इसकारण हकारके स्थानमें धकार करनेपर (वावसाने) इसकर तकार दकार किया तव रूप सिद्ध हुआ (उपानत्-उपानद्) द्विवचनमें (उपानहौ) वहुवचनमें (उपानहः) सम्बोधनमें (हे उपानत्) (हे उपानद्) (हे उपानहौ) (हे उपानहः) भकारादिकमें (नहोधः) इसकर धकार आदेश करनेपर (झबेजवाः) इसकर रूप सिद्ध हुआ (उपानद्भ्याम्) (उपानद्भिः) इत्यादि । सुप्में (नहोधः) इसकर धकार करनेपर (खसेचपा झसानाम्) इसकर तकार करनेसे रूप सिद्ध हुआ (उपानत्सु) गोदुह् आदिक पुँल्लिङ्गवत् जानने और (उष्णिह्) इसके हकारको (दिशांकः) इसकर ककार करनेपर रूप सिद्ध हुआ (उष्णिक्) (उष्णिग्) (उष्णिहौ) (उष्णिहः) इत्यादि ॥ वकारान्त दिव् शब्दहै (दिव् सि) ऐसा स्थितहै ॥

दिव औ सौ ।

दिवः-औं-सौ । त्रिपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) दिव्शब्दस्य औकारादेशो भवति सौपरे । द्यौः । दिवौ । दिवः । दिव् अम् । इति स्थिते ।

भाषार्थ-दिव् शब्दके वकारको औकार आदेश होय सिविभक्ति वचन परहुए संते जैसे । दिव् सि । इसमें दिव् शब्दके वकारसे परे सिविभक्ति वचन विद्यमानहै इसकर वकारके स्थानमें औकार करनेपर रूप स्थित हुआ । दिऔसि । फिर (इयं स्वरे) इसकर दकार उत्तरवर्ती इकारके स्थानमें यकार करनेपर रूप स्थित हुआ । (द्यौसि) (यदादेशस्तद्वद्भवति) इसकर औकारके स्थानमें वकार मानकर (हसेपस्सेर्लोपः) इसकर सिका लोप नहीं हुआ क्योंकि वर्णमात्र विधिमें जिसका आदेश उसीके समान नहीं होताहै । इसकारण (स्रोर्विसर्गः) इसकर रूप सिद्ध हुआ (द्यौः) द्विवचनमें (दिवौ) वहुवचनमें (दिवः) द्वितीयाएकवचनमें (दिव् अम्) ऐसा स्थित है-॥

वाम्या ।

वां-अमि-आ । त्रिपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) दिवो वकारस्य अमि परे

आ भवति वा । द्याम् । दिवम् । दिवौ । दिवः । दिवा । दिव्भ्याम् । इति स्थिते ।

भाषार्थ–दिव्के वकारको अम् पर हुए संते आ होय विकल्प करके । जैसे । दिव् अम् । इसमें दिव् शब्दके वकारसे परे अम् विद्यमानहै इसकारण एक जगह वकारके स्थानमें आ करनेपर (इयंस्वरे) इसकर रूप सिद्ध हुआ (द्याम्) और जहाँ एक जगह वकारको आ नहीं हुआ तहाँ रूप सिद्ध हुआ (दिवम्) द्विवचन बहुवचनमें (दिवौ) (दिवः) तृतीयाएकवचनमें (दिवा) द्विवचनमें (दिव्भ्याम्) ऐसा स्थितहै ॥

ऊरसे ।

१ १ ७ १

उः–रसे । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) दिवोवकारस्य उकारो भवति रसे परे । द्युभ्याम् । द्युभिः । दिवे । द्युभ्याम् । द्युभ्यः । इत्यादि । रकारान्तश्चतुर्शब्दः ।

भाषार्थ–दिव्के वकारको उकार होय रस प्रत्याहार पर हुए संते । जैसे (दिव्भ्याम्) इसमें दिव्के वकारसे परे रस प्रत्याहारसम्बन्धी भकारहै इसकारण वकारके स्थानमें उकार करनेपर (इयंस्वरे) इसकर रूप सिद्ध हुआ (द्युभ्याम्) और बहुवचनमें (द्युभिः) इत्यादि ॥ रकारान्त चतुर् शब्दहै–॥

त्रिचतुरोः स्त्रियां तिसृचतसृवत् ।

६ २ ७ १ १ २ अ०

त्रिचतुरोः–स्त्रियाम्–तिसृचतसृ–ऋवत् । चतुष्पदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) स्त्रियांवर्त्तमानयोस्त्रिचतुर्शब्दयोस्तिसृ चतसृ इत्येतावादेशौ भवतः । ऋकारश्च ऋकारवत् । ततः । स्तुरार् । इत्यादि सूत्रैः ऋदन्तकार्यं न भवति । किन्तु । ऋरम् । भवति । तिस्रः । तिस्रः । चतस्रः । चतस्रः । तिसृभिः । चतसृभिः । तिसृभ्यः २ । चतसृभ्यः २ । बहुवचने । नुडामः । इति नुट् । तिसृनाम् । चतसृनाम् । इति स्थिते ।

भाषार्थ–स्त्रीलिंगके विषे वर्त्तमान जो त्रि और चतुर् शब्द तिनको क्रमसे तिसृ और चतसृ यह आदेश होयँ अर्थात् त्रिशब्दको तिसृ और चतुर् शब्दको चतसृ आदेश होय । इनके ऋकार ऋकारकेही तुल्य जानने योग्यहैं । इसकारण(स्तुरार्) इत्यादिक सूत्रोंकर ऋकारान्त शब्दोंका कार्य नहीं होय किन्तु स्वरमात्र पर हुए संते (ऋरम्) इसकर ऋकारके स्थानमें रकार ही होय जैसे । त्रि अस् । चतुर् अस् । इनमें क्रमसे । तिसृ और चतसृ यह आदेश करनेपर रूप स्थित हुए । तिसृ

अस् । चतसृ अस् । फिर (ऋरम्) इसकर ऋकारके स्थानमें रकार करनेपर रूप सिद्ध हुए (तिस्रः) (चतस्रः) इसीप्रकार द्वितीयाबहुवचनमें सिद्ध हुए । तृतीयामें (तिसृभिः) (चतसृभिः) चतुर्थीमें (तिसृभ्यः) (चतसृभ्यः) इसी प्रकार पंचमीबहुवचनमें सिद्ध हुए । षष्ठीबहुवचनमें (नुडामः) इसकर नुट् आगम करनेपर रूप स्थित हुए । तिसृनाम् । चतसृनाम् ॥

न नामि दीर्घस्तिसृचतसृ छन्दसि वा ।

न—नामि—दीर्घः—तिसृचतसृ—छन्दसि—वा । षट्पदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) तिसृ चतसृ इत्येतयोर्दीर्घो न भवति नामि परे छन्दसि वा । षुर्नोणोऽनन्ते । तिसृणाम् । चतसृणाम् । तिसृषु । चतसृषु ॥ गिर्—शब्दस्य भेदः ।

भाषार्थ—तिसृ चतसृ इन शब्दोंको दीर्घ नहीं होय नाम पर हुए संते और वेदमें विकल्प करके नाम पर हुए संते दीर्घ होता है । जैसे (तिसृनाम्) (चतसृनाम्) इनमें तिसृ और चतसृ शब्दसे परे नाम् विद्यमान है. इसकारण तिसृ और चतसृ इनको दीर्घ नहीं हुआ किन्तु (षुर्नोणोऽनन्ते) इसकर रूप सिद्ध हुए (तिसृणाम्) (चतसृणाम्) और वेदमें एक जगह दीर्घ होनेसे रूप सिद्ध हुए (तिसॄणाम्) (चतसॄणाम्) और एक जगह (तिसृणाम्) (चतसृणाम्) और सप्तमीबहुवचनमें (किलातषः सः कृतस्य) इसकर सिद्ध हुए (तिसृषु) (चतसृषु) ॥ रकारान्त गिर् शब्दको भेद है । प्रथमाएकवचनमें । गिर् सि । ऐसा स्थित है ॥

य्वोर्वि हसे ।

य्वो—र्वि—हसे । त्रिपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) धातोरिकारोकारयोर्दीर्घो भवति रेफवकारयोर्हसपरयोः । गीः । गिरौ । गिरः । गीर्भ्याम् । गीर्भिः । गीर्षु । एवं पुर्धुरादयः । धकारान्तः समिध् शब्दः । वावसाने । समित् । समिद् । समिधौ । समिधः । हे समित् । हे समिद् । समिधम् । समिधौ । समिधः।समिधा । समिद्भ्याम् । इत्यादि । भकारान्तः ककुभ् शब्दः । वावसाने । ककुप् । ककुब् । ककुभौ । ककुभः । ककुभम् । ककुभौ । ककुभः । ककुभा । ककुब्भ्याम् । इत्यादि ।

भाषार्थ—धातु सम्बन्धी इकार उकारको दीर्घ होय हस अक्षर है परे जिसके ऐसा रकार वा वकार पर हुए संते । भाव यह है कि; धातुके इकार उकारसे परे रकार वा

वकार होय और उस रकार वा वकारसे परे हस प्रत्याहार होय तो उस धातुके इकार और उकारको दीर्घ होय जैसे । गिर् सि । इसमें क्विप् प्रत्ययान्तधातुके इकारसे परे रकार विद्यमानहै और रकारसे परे हस प्रत्याहारसम्बन्धी सि का सकार विद्यमान है इसकारण क्विप् प्रत्ययान्त धातु गिर्के इकारके स्थानमें दीर्घ करनेपर रूप स्थित हुआ । गीर् सि । फिर (हसेपः सेर्लोपः) इसकर सिका लोप करनेपर (रुोर्विसर्गः) इसकर रूप सिद्ध हुआ (गीः) द्विवचनमें (गिरौ) बहुवचनमें (गिरः) भकारादिकमेंभी इकारके स्थानमें ईकार किया क्योंकि इकारसे परे रकार और रकारसे परे हस प्रत्याहार सम्बन्धी भकार विद्यमान है तब रूप सिद्ध हुए (गीर्भ्याम्) (गीर्भिः) और सप्तमीबहुवचनमें (खोर्विहसे) इसकर इकारको दीर्घ करनेपर (क्लिलात्षः सः कृतस्य) इसकर रूप सिद्ध हुआ (गीर्षु) धकारान्त समिध् शब्द है (वावसाने) इसकर धकारके स्थानमें तकार दकार करनेपर रूप सिद्ध हुए (समित्–समिद्) द्विवचन बहुवचनमें (समिधौ) (समिधः) सम्बोधनमें (हे समित्) (हे समिद्) (हे समिधौ) (हे समिधः) (समिधम्) (समिधौ) (समिधः) (समिधा) भकारादिकमें (झबेजबाः) इसकर धकारके स्थानमें दकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ (समिद्भ्याम्) (समिद्भिः) इत्यादि । भकारान्त ककुभ् शब्द है (वावसाने) इसकर भकारके स्थानमें वकार पकार करनेपर रूप सिद्ध हुए । (ककुब्–ककुप्) द्विवचन बहुवचनमें (ककुभौ) (ककुभः) (ककुभम्) (ककुभौ) (ककुभः) (ककुभा) भकारादिकमें (झबे जबाः) इसकर भकारके स्थानमें बकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ (ककुब्भ्याम्) (ककुब्भिः) और सप्तमीबहुवचनमें (खसेचपाझसानाम्) इसकर भकारके स्थानमें पकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ (ककुप्सु) ॥

दकारान्ताः त्यद् तद् यद् एतद् शब्दाः । त्यदादेष्टेरः स्यादौ इति सर्वत्राकारः । आबतः स्त्रियाम् । इत्याप् । स्तः । इति तकारस्य सकारः । स्या । त्ये त्याः । त्याम् । त्ये । त्याः । त्यया । त्याभ्याम् । त्याभिः । त्यस्यै । त्याभ्याम् । त्याभ्यः । इत्यादि । सा । ते । ताः । या । ये । याः । एषा । एते । एताः । अन्वादेशे । एताम् । एनाम् । एते । एने । एताः । एनाः । एतया । एनया । एतयोः । एनयोः । एवं किम् । का । के काः । इत्यादि । इदम्शब्दस्य सौ भेदः ।

भावार्थ–दकारान्त त्यद् तद् यद् एतद् शब्द हैं (त्यदादेष्टेरःस्यादौ) इसकर टिके स्थानमें अकार करनेपर (आबतः स्त्रियाम्) इसकर आप् प्रत्यय किया फिर

(स्तः) इस सूत्रकर त्यदादिकोंके तकारके स्थानमें सकार कर सर्वाशब्दवत् रूप साधनेयोग्य हैं। जैसे (त्यद् सि) इसमें (त्यदादेष्टेरः स्यादौ) इसकर टिके स्थानमें अकार कर (आबतःस्त्रियाम्) इसकर आप् प्रत्यय किया फिर (स्तः) इसकर तकारके स्थानमें सकार कर (आपः) इस सूत्रकर सिका लोप किया। तब रूप सिद्ध हुआ (स्या) द्विवचनादिकोंमें सर्वाशब्दवत् साधने योग्य हैं। जैसे (त्ये) (त्याः) (त्याम्) (त्ये) (त्याः) (त्यया) (त्याभ्याम्) त्याभिः (त्यस्यै) (त्याभ्याम्) (त्याभ्यः) इत्यादि। इसीप्रकार तद् शब्दके रूप जानने। जैसे (सा) (ते) (ताः) (ताम्) (ते) (ताः) (तया) (ताभ्याम्) (ताभिः) (तस्यै) (ताभ्याम्) (ताभ्यः) इत्यादि। इसी प्रकार यद् शब्दके जानने। जैसे (या) (ये) (याः) (याम्) (ये) (याः) (यया) (याभ्याम्) (याभिः) (यस्यै) (याभ्याम्) (याभ्यः) इत्यादि। इसी प्रकार एतद् शब्दके रूप जानने (एषा) (एते) (एताः) द्वितीयामें (एताम्) (एते) (एताः) (अन्वादेशे द्वितीयाटौस्स्वेनो वा वक्तव्यः) इसकर एन आदेश करनेपर रूप सिद्ध हुआ द्वितीयामें (एनाम्) (एने) (एनाः) तृतीयामें (एतया) अन्वादेशमें (एनया) (एताभ्याम्) (एताभिः) चतुर्थीमें (एतस्यै) (एताभ्याम्) (एताभ्यः) पंचमीमें (एतस्याः) (एताभ्याम्) (एताभ्यः) षष्ठीमें (एतस्याः) (एतयोः) अन्वादेशमें (एनयोः) (एतासाम्) सप्तमीमें (एतस्याम्) (एतयोः) (एनयोः) (एतासु)। इसीप्रकार किम् शब्दके रूप साधने योग्य हैं जैसे। (का) (के) (काः) (काम्) (के) (काः) (कया) (काभ्याम्) (काभिः) (कस्यै) (काभ्याम्) (काभ्यः) इत्यादि ॥ मकारान्त इदम् शब्दको सि विभक्तिमें भेद है ॥

इयं स्त्रियाम्।

ईयम्-स्त्रियाम्। द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) इदमूशब्दस्य स्त्रियामियम् भवति सौ परे। इयम्। इमे। इमाः। इमाम्। इमे। इमाः। अनया। आभ्याम्। आभिः। अस्यै। आभ्याम्। आभ्यः। अस्याः। आभ्याम्। आभ्यः। अस्याः। अनयोः। आसाम्। अस्याम्। अनयोः। आसु। चकारान्तः त्वच्शब्दः। चोःकुः। इति कुत्वम्। त्वक्। त्वग्। त्वचौ। त्वचः। त्वचम्। त्वचौ। त्वचः। त्वचा। त्वग्भ्याम्। त्वग्भिः। एवं ऋच्-वाच्प्रभृतयः। पकारान्तोऽप्शब्दो नित्यं बहुवचनान्तः। अप् जस्। इति स्थिते। न्सम्महतोऽधौ दीर्घः शौच। इति दीर्घः। आपः। द्विती-

याबहुवचने पंचस्विति विशेषणात् न दीर्घः । अपः । तृतीयाबहुवचने अप् भिस् इति स्थिते ।

भाषार्थ–इदम् शब्दको स्त्रीलिंगके विषे सिविभक्ति वचनपर हुएसंते इयम् आदेश होय । (गुरुशिच्च सर्वस्य वक्तव्यः) इस करके समस्त इदम् शब्दको इयम् आदेश करनेपर (हसेपःसेर्लोपः) इसकर सिका लोप किया तव रूप सिद्ध हुआ (इयम्) द्विवचनादिकमें (त्यदादेष्टेरःस्यादौ) इसकर टिको अकार करनेपर (आवतः स्त्रियाम्) इसकर आप् प्रत्यय किया फिर (दस्यमः) इसकर दकारके स्थानमें मकार करनेपर सर्वा शब्दके समान सिद्ध हुआ (इमे) (इमाः) (इमाम्) (इमे) (इमाः) तृतीयाएकवचनमें (अनटौसोः) इसकर अन आदेश करनेपर (आवतःस्त्रियाम्) इसकर आप् प्रत्यय किया । फिर (टौसोरे) इसकर रूप सिद्ध हुआ (अनया) द्विवचन बहुवचनमें (स्भ्यः) इसकर इदम् शब्दको अकार आदेश करनेपर (आवतः स्त्रियाम्) इसकर आप् प्रत्यय किया तव रूप सिद्ध हुआ (आभ्याम्) (आभ्यः) चतुर्थीएकवचनमें प्रथम (आवतः स्त्रियाम्) इसकर आप् प्रत्यय करनेपर (ङितां यट्) (यटोच्च) इनकर यट् सुट् आगम किया तव रूप हुआ । इदास्यूए । फिर (स्भ्यः) इसकर अकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ (अस्यै) द्विवचन बहुवचनमें पूर्ववत् सिद्ध हुए (आभ्याम्) (आभ्यः) पंचमीएकवचनमें (आवतःस्त्रियाम्) इसकर आप् प्रत्यय करने पर (ङितांयट्) (यटोच्च) इनकर यट् सुट् आगम किया फिर (स्भ्यः) इसकर अकार आदेश करनेपर रूप सिद्ध हुआ (अस्याः) द्विवचन बहुवचनमें पूर्ववत् । षष्ठीएकवचनमें पंचमीएकवचनवत् । द्विवचनमें प्रथम (अनटौसोः) इसकर अन आदेश करनेपर (आवतःस्त्रियाम्) इस करके आप् प्रत्यय किया फिर (टौसोरे) इसकर रूप सिद्ध हुआ (अनयोः) बहुवचनमें प्रथम (सुडामः) इसकर सुट् आगम करनेपर (स्भ्यः) इसकर अकार आदेश किया । फिर (आवतः स्त्रियाम्) इस करके आप् प्रत्यय किया तव रूप सिद्ध हुआ (आसाम्) सप्तमीएकवचनमें (आवतः स्त्रियाम्) इसकर आप् प्रत्यय करनेपर (आम्ङेः) इसकर आम् आदेश किया फिर (ङितांयट्) (यटोच्च) इनकर यट् सुट् आगम किया फिर (स्भ्यः) इसकर अकार आदेश करनेपर रूप सिद्ध हुआ (अस्याम्) द्विवचनमें षष्ठीद्विवचनवत् (अनयोः) सप्तमीबहुवचनमें (स्भ्यः) इसकर इदम् शब्दको अकार आदेश करनेपर (आवतः स्त्रियाम्) इसकर आप् प्रत्यय किया तव रूप सिद्ध हुआ (आसु)॥चकारान्त त्वच् शब्दहै । रस प्रत्याहारके विषे तथा पदान्तमें (चोः कुः) इसकर चकारके स्थानमें ककार करने योग्य है । जैसे प्रथमाएकवचनमें (वावसाने) इसकर रूप सिद्ध हुआ (त्वक्–त्वग्) द्विवचनमें

(त्वचौ) बहुवचनमें (त्वचः) द्वितीयामें (त्वचम्) (त्वचौ) (त्वचः) तृतीया-एकवचनमें (त्वचा) भकारादिकमें (चोः कुः) इसकर ककार करने पर (झबे जबाः) इसकर गकार किया तब रूप सिद्धहुआ (त्वग्भ्याम्) (त्वग्भिः) इत्यादि । सप्तमीबहुवचनमें (चोः कुः) इसकर ककार करनेपर (किलात्षः सः कृतस्य) इसकर सकारके स्थानमें षकार किया फिर (कषसंयोगे क्षः) इसकर क्ष करने पर रूप सिद्ध हुआ (त्वक्षु)इसी प्रकार ऋच् वाच् आदिक चकारान्त शब्द साधने योग्यहैं । पकारान्त अप् शब्द नित्यही बहुवचनान्त होताहै । अप् जस् । ऐसा स्थितहै (न्सम्महतोऽधौ दीर्घः शौ च) इसकर दीर्घ करने पर रूप सिद्ध हुआ (आपः) द्वितीयाबहुवचनमें (पंचसु) इस विशेषणसे अर्थात् स्यादिक पंचवच-नसम्बन्धी वचन न होनेसे दीर्घ नहीं हुआ तब रूप सिद्ध हुआ (अपः) तृतीया बहुवचनमें । अप् भिस् । ऐसा स्थितहै ॥

भिदपाम् ।

भि[७]-द्[१]-अपाम्[११][३] । त्रिपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) अपां भकारे परे दत्वं भवति । अद्भिः । अद्भ्यः २ । अपाम् । अप्सु । शकारान्तो दिश्शब्दः ।

भाषार्थ-अप् शब्दसम्बन्धी पकारको दकार होय स्यादिक विभक्तिसम्बन्धी भकार पर हुए संते जैसे । अप् भिस् । इसमें अप् शब्दसे परे स्यादिक विभक्ति-सम्बन्धी भिस्का भकार विद्यमानहै इसलिये अप् शब्दके पकारके स्थानमें दकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ (अद्भिः) चतुर्थी पंचमी बहुवचनमें भी इसीप्रकार सिद्ध हुआ (अद्भ्यः) (अद्भ्यः) षष्ठीबहुवचनमें (अपाम्) सप्तमीबहुवचनमें (अप्सु) शकारान्त दिश् शब्द है प्रथमाएकवचनमें । दिश् सि । ऐसा स्थित है । इसमें (हसेपः सेर्लोपः) इसकर सिका लोप करने पर । दिश् । ऐसा स्थितहै ॥

दिशां कः ।

दिशाम्[६][३]-कः[१] । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) दिश्-दृश्-स्पृश्-मृश्-इत्या-दीनां रसे पदान्ते च कत्वं भवति । दिक् । दिग् । दिशौ । दिशः । दिशम् । दिशौ । दिशः । दिशा । दिग्भ्याम् । इत्यादि । षकारान्तः त्विष् शब्दः । (षोडः) इति डत्वम् (वावसाने) इति टकारडकारौ । त्विट्-त्विड् । त्विषौ । त्विषः । त्विषम् । त्विषौ । त्विषः । त्विषा । त्विड्भ्याम् । इत्यादि । आशिष्-शब्दः सजुष् शब्दवत् । आशीः । आशिषौ । आशिषः । इत्यादि । स्त्री-

लिंगस्य अदस्शब्दस्य सौ न विशेषः । असौ । द्विवचनादौ तु टेरत्वे कृते अनन्तरम् । आवतः स्त्रियाम् । इत्याप् । दीर्घत्वं विभक्तिकार्यं च । पश्चात् । मादू इति ह्रस्वस्य ह्रस्वः दीर्घस्य च दीर्घः उकार ऊकारश्च । अमू । अमूः । अमूम् । अमू । अमूः । अमुया । अमूभ्याम् । अमूभिः । अमुष्यै । अमूभ्याम् । अमूभ्यः । अमुष्याः । अमूभ्याम् । अमूभ्यः । अमुष्याः । अमुयोः । अमूषाम् । अमुष्याम् । अमुयोः । अमूषु । सामान्येऽदसःकः । अमुका । अमुके । अमुकाः । इत्यादि स्त्रीलिंगे सर्वाशब्दवद्रूपं ज्ञेयम् ॥ इति हसान्ताः स्त्रीलिङ्गाः ॥

भाषार्थ–दिश्–दृश्–स्पृश्–मृश् इत्यादिकोंके अन्तवर्णको क आदेश होय रस प्रत्याहार पर हुए संते तथा पदान्तके विषे । भाव यह है कि, दिश्–दृश्–स्पृश्–मृश्–ऋत्विज्–दधृष्–सृज्–उष्णिह्–अंच्–युज्–क्रुंच–असृज् इत्यादिकोंके अन्त्य वर्णको ककार आदेश होय जो रस प्रत्याहार परे होवै या पदान्त होवै तो । जैसे प्रथमाएकवचनमें सिके लोप करनेपर । दिश् । ऐसा स्थित हुआ । इसमें दिश शब्दसे परे पदान्त विद्यमान है इसकारण शकारके स्थानमें ककार किया क्योंकि पदान्त विद्यमान है फिर (वावसाने) इसकर ककार तथा गकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ (दिक्–दिग्) द्विवचनादिकोंमें (दिशौ) (दिशः) (दिशम्) (दिशौ) (दिशः) (दिशा) भकारादिकोंमें रस प्रत्याहार पर होनेसे (दिशांकः) इसकर शकारके स्थानमें ककार करनेपर (झवेजबाः) इसकर गकार किया तब रूप सिद्ध हुए (दिग्भ्याम्) (दिग्भिः) सप्तमीबहुवचनमें (दिशांकः) इसकर ककार करनेपर (किलात्षः सः कृतस्य) इसकर सकारको षकार किया फिर (कषसंयोगे क्षः) इसकर रूप सिद्ध हुआ (दिक्षु) इसीप्रकार दृश् आदिक साधने योग्य हैं । षकारान्त त्विष् शब्द है (षोडः) इसकर पदान्त तथा रस प्रत्याहारके विषे डकार करनेपर प्रथमाएकवचनमें (वावसाने) इसकर टकार डकार हुए तब रूप सिद्ध हुए (त्विट्, त्विड्) द्विवचनादिकोंमें (त्विषौ) (त्विषः) (त्विषम्) (त्विषौ) (त्विषः) (त्विषा) भकारादिकोंमें (षोडः) इसकर डकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ (त्विड्भ्याम्) (त्विड्भिः) इत्यादि । और सप्तमीबहुवचनमें (षोडः) इसकर डकार करनेपर (खसेचपाझसानाम्) इसकर सिद्ध हुआ (त्विट्सु) इसी प्रकार अन्य षकारान्त प्रावृष् । विपुष् । तृष् । शब्द साधनेयोग्य हैं । आशिष् शब्द सजुष् शब्दके समान साधने योग्य है (दोषांरः) इसकर षकारके स्थानमें रकार करनेपर (सजुषाशिषोरसे पदान्ते च दीर्घः) इसकर दीर्घ करनेपर

रूप सिद्ध हुआ (आशीः) द्विवचनादिकोंमें (आशिषौ) (आशिषः) (आशिषम्) (आशिषौ) (आशिषः) (आशिषा) (आशीर्भ्याम्) (आशीर्भिः) इत्यादि। स्त्रीलिंग अदस् शब्दको सि विभक्ति वचनमें विशेष नहीं है । किन्तु पुँल्लिङ्गवत् साधने योग्य है जैसे (असौ) द्विवचनादिकोंमें (त्यदादेष्टेरः स्यादौ) इसकर टिको अकार करने पर (आवतः स्त्रियाम्) इसकर आप् प्रत्यय किया फिर विभक्तिकार्य कर पश्चात् (मादू) इसकर ह्रस्वको ह्रस्व उकार दीर्घको दीर्घ ऊकार करने योग्य है जैसे । (अदस् औ) इसमें टिको अकार कर आप् प्रत्यय किया फिर (दस्यमः) इसकर दकारको मकार कर (औरी) इसकर औकारके स्थानमें ईकार किया फिर (अ इ ए) इसकर एकार करने पर (मादू) इसकर एकारके स्थानमें दीर्घ ऊकार किया तव रूप सिद्ध हुआ (अमू) बहुवचनमें टिको अकार कर आप् प्रत्यय किया (दस्यमः) फिर (सवर्णे दीर्घः सह) (स्रोर्विसर्गः) इनकर (अमाः) ऐसा स्थित हुआ। फिर (मादू) इसकर दीर्घ आकारके स्थानमें दीर्घ ऊकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ (अमूः) इसीप्रकार द्वितीयामें (अमूम्) (अमू) (अमूः) तृतीया-एकवचनमें (टौसोरे) इसकर एकार करनेपर (एअय्) इसकर अय् आदेश किया। फिर (मादू) इसकर अकारको उकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ (असुया) द्विवच-नमें (अभूभ्याम्) बहुवचनमें (अमूभ्यः) चतुर्थीएकवचनमें (ङितांयट्) (यटोच्च) इनकर यट् सुट् आगम किया और पूर्व आप् प्रत्ययके आकारको अकारकर (मादू) इसकर अकारको ह्रस्व उकार किया फिर (किलातषः सः कृतस्य) इसकर सकारके स्थानमें षकार कर रूप सिद्ध हुआ (अमुष्यै) द्विवचन-बहुवचनमें (अमूभ्याम्) (अमूभ्यः) पंचमीएकवचनमें (ङितांयट्) (यटोच्च) इनकर यट् सुट् आगम किया और पूर्व आपके आकारको अकार कर (मादू) इसकर ह्रस्व अकारको उकार करनेसे (किलातषः सः०) इसकर रूप सिद्ध हुआ (अमुष्याः) द्विवचन बहुवचनमें (अमूभ्याम्) (अमूभ्यः) षष्ठीके एकवचनमें पंचमीके एकवचनवत् (अमुष्याः) द्विवचनमें (टौसोरे) इसकर एकार करनेपर (एअय्) इसकर अय् आदेश किया फिर (मादू) इसकर अकारको उकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ (अमुयोः) बहुवचनमें (सुडामः) इसकर सुट् आगम-कर (मादू) इसकर उकार किया । फिर (किलातषः०) इसकर रूप सिद्ध हुआ (अमूषाम्) सप्तमीएकवचनमें (आम्ङेः) इसकर ङिको आम् आदेशकर (ङितांयट्) (यटोच्च) इनकर यट् सुट् आगम किया पूर्वको ह्रस्व अकार किया । फिर (मादू) इस कर उकारकर (किलातषः०) इसकर रूप सिद्ध हुआ (अमुष्याम्) द्विवचनमें (अमुयोः) बहुवचनमें (मादू) इसकर ऊकार कर (किला-तषः सः कृतस्य) इसकर रूप सिद्ध हुआ (अमूषु) सामान्य अर्थमें अदस् शब्दसे

क प्रत्यय कर (आवतः स्त्रियाम्) इसकर आप् प्रत्यय लाकर सर्वाशब्दवत् साधने योग्यहै (जैसे) (अमुका) (अमुके) (अमुकाः) इत्यादि ॥ इति हसान्ताः स्त्रीलिंगाः॥

अथ हसान्ता नपुंसकलिंगाः। रेफान्तोवार्शब्दः । नपुंसकात्स्यमोर्लुक्। वाः । वारी । वारि । अयम् इति विशेषणात् नुम् न भवति । वारा । वार्भ्याम्। वार्भिः । वार्षु । इत्यादि । चतुर्शब्दो नित्यं बहुवचनान्तः । चतुराम्शौच । इत्याम् । चत्वारि २ । इत्यादि ॥ नकारान्तोऽहन्शब्दः ।

भाषार्थ–इसके अनन्तर हसान्त नपुंसक लिंग साधे जातेहैं । रकारान्त वार् शब्दहै प्रथमाएकवचनमें (नपुंसकात्स्यमोर्लुक्) इसकर सिका लुक् करनेपर (स्रोर्विसर्गः) इसकर रूप सिद्ध हुआ (वाः) द्विवचनमें (ईमौ) इसकर रूप सिद्ध हुआ (वारी) बहुवचनमें (जश्शसोः शिः) इसकर जस्के स्थानमें शिकरनेपर (नुमयमः) इसकर नुम् आगम नहीं हुआ क्योंकि यम प्रत्याहारान्तको नुम् आगमका निषेध है अयम् इस विशेषणसे । तब रूप सिद्ध हुआ (वारी) इसी प्रकार द्वितीयामें रूप सिद्ध हुये हैं (वाः) (वारी) (वारि) तृतीयामें (वारा) (वार्भ्याम्) (वार्भिः) (वारे) (वार्भ्याम्) (वार्भ्यः) (वारः) (वार्भ्याम्) (वार्भ्यः) (वारः) (वारोः) (वाराम्) (वारि) (वारोः) (वार्षु) चतुर् शब्द नित्यही बहुवचनान्तहै । चतुर् जस् । ऐसा स्थितहै (चतुराम्शौच) इसकर आम् आगम करनेपर रूप सिद्ध हुआ (चत्वारि) द्वितीयाबहुवचनमेंभी (चत्वारि) तृतीयादिकमें (चतुर्भिः) (चतुर्भ्यः २) (चतुर्णाम्) (चतुर्षु) (१) नकारान्त अहन् शब्दहै । प्रथमाएकवचनमें (नपुंसकात्स्यमोर्लुक्) इसकर सिका लुक् करनेपर रूप स्थित हुआ । अहन् ॥

---

(१) मुख्य वृत्तिकर हकारान्त शब्द नपुंसक लिंग नहीं है किन्तु गौणभावमें स्वनडुह् गोदुह् अनुपानह् आदिक नपुंसकलिंगभी हो सक्ते हैं जैसे । प्रथमाएकवचनमें । स्वनडुह् सि । ऐसा स्थित है (नपुंसकात्स्यमोर्लुक्) इसकर सिका लुक् करनेपर (वसांस्से) इसकर दकार किया । फिर (वावसाने) इसकर रूप सिद्ध हुआ । स्वनडुत् । स्वनडुद् । द्विवचनमें (ईमौ) इस कर सिद्ध हुआ । स्वनडुही । बहुवचनमें (जश्शसोः शिः) इसकर जस्के स्थानमें शिकरनेपर (चतुरनडुहो-रामूशौच) इसकर आम् आदेश कर (नुमयमः) इसकर नुम् आगम किया तब रूप सिद्ध हुआ (स्वनड्वांहि) इसीप्रकार द्वितीयामें हुए । तृतीयामें (स्वनडुहा) (स्वनडुद्भ्याम्) इत्यादि (गोधुक्) (गोधुंग्) (गोदुही) (गोदूंहि २) तृतीयामें (गोदुहा) (गोधुग्भ्याम्) इत्यादि (अनुपानत्) (अनुपानद्) (अनुपानही) (अनुपानांहि २) तृतीयामें (अनुपानहा) (अनुपानद्भ्याम्) इत्यादि । गौणभावमें नपुंसकलिंग प्रियचतुर् शब्द है । प्रथमामें (नपुंसकात्स्यमोर्लुक्) (स्रोर्विसर्गः) इसकर सिद्ध हुआ (प्रियचतुः) द्वितीयामें (ईमौ) इसकर औके स्थानमें ई करनेपर रूप सिद्ध हुआ (प्रियचतुरी) बहुवचनमें (प्रियचत्वारि) इत्यादि । गौणभावमें नपुंसकलिंग प्रियचतसृ शब्द है (प्रियचतसृ) प्रियचतसृणी) प्रियचतसृणि) इत्यादि ॥

अह्नः सः ।

अह्नः-सः । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) अहन्शब्दस्य नकारस्य सकारो भवति रसे पदान्ते च । स्रोर्विसर्गः । अहः । ईमौ । वेङ्चोः । अह्नी । अहनी । अहानि २ । अह्ना । अहोभ्याम् । अहोभिः । अह्ने । अहोभ्याम् । अहोभ्यः । अह्नः । अहोभ्याम् । अहोभ्यः । अह्नः । अह्नोः । अह्नाम् । अहनि । अह्नि । अह्नोः । अहःसु । ब्रह्मन्शब्दस्य भेदः । नाम्नो नो लोपशधौ । ब्रह्म । ब्रह्मणी । ब्रह्माणि २ । ब्रह्मन्शब्दस्य सम्बोधने धौ नपुंसके नलोपो वा वाच्यः । हे ब्रह्म । हेब्रह्मन् । ब्रह्मणा । ब्रह्मभ्याम् । ब्रह्मभिः । इत्यादि । एवं चमन् वर्मन् पर्वन्प्रभृतयः ।

भाषार्थ-अहन् शब्दके नकारको सकार होय रस प्रत्याहार परे संते और पदान्तके विषे । जैसे (ब्रह्मन्) इसमें सिका लुक् करनेपर पदान्त विद्यमानहै इसकारण नकारके स्थानमें सकार किया फिर (स्रोर्विसर्गः) इसकर रूप सिद्ध हुआ (अहः) द्विवचनमें (ईमौ) इसकर औकारके स्थानमें ईकार करनेपर (वेङ्चोः) इसकर एक जगह अहन् शब्दके उपधाभूत अकारका लोप किया । तब रूप सिद्ध हुआ (अह्नी) और जहाँ अकारका लोप नहीं हुआ । तहाँ रूप सिद्ध हुआ (अहनी) बहुवचनमें (जश्शसोः शिः) इसकर जस्के स्थानमें शि करनेपर (नोपधायाः) इसकर रूप सिद्ध हुआ (अहानि) इसी प्रकार द्वितीयामें रूप सिद्ध हुए । तृतीयाएकवचनमें (अल्लोपः स्वरेऽम्वयुक्ताच्छसादौ) इसकर अहन् शब्दके उपधाभूत अकारका लोप करनेपर सिद्ध हुआ (अह्ना) द्विवचनमें (अह्नः सः) इसकर नकारके स्थानमें सकार करनेपर (स्रोर्विसर्गः) (हवे) (उ ओ) इन सूत्रोंकर रूप सिद्ध हुआ (अहोभ्याम्) बहुवचनमें (अहोभिः) इसीप्रकार अन्य विभक्ति वचनोंमें रूप साधनेयोग्यहैं । ब्रह्मन् शब्दको भेदहै । प्रथमाएकवचनमें । ब्रह्मन् सि । ऐसा स्थितहै (नपुंसकात्स्यमोर्लुक्) इसकर सिका लुक् करनेपर (नाम्नो नो लोपशधौ) इसकर नकारका लोपश् किया तब रूप सिद्ध हुआ (ब्रह्म) द्विवचनमें (ईमौ) इसकर औकारके स्थानमें ईकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ (ब्रह्मणी) इसमें उपधाभूत अकारका लोप नहीं हुआ क्योंकि मकारान्त वा वकारान्त संयोगसे उत्तर नकारान्त शब्दके उपधाभूत अकारका लोप नहीं होताहै । बहुवचनमें (शश्शसोः शिः) इसकर जसके स्थानमें शि करने पर (नोपधायाः) इसकर सिद्ध हुआ (ब्रह्माणि) सम्बोधनमें धिके विषे (नपुंसकात्स्यमोर्लुक्)

इसकर धिसंज्ञक सिका लुक् किया फिर ब्रह्मन् शब्दके नकारका लोप सम्बोधनमें नपुंसकके विषे धि विषयमें विकल्पकरके वक्तव्यहै। इसकर एक जगह नकारका लोप करने पर रूप सिद्ध हुआ (हे ब्रह्म) और जहाँ नकारका लोप नहीं हुआ तहाँ सिद्ध हुआ (हे ब्रह्मन्) द्विवचनमें (हे ब्रह्मणी) बहुवचनमें (हे ब्रह्माणि) द्वितीयामें भी प्रथमावत् जानने योग्यहै। तृतीयादिकम (ब्रह्मणा) (ब्रह्मभ्याम्) (ब्रह्मभिः) इत्यादि। इसीप्रकार चर्मन् वर्मन् पर्वन् आदिक साधनेयोग्यहैं जैसे (चर्म) (चर्मणी) (चर्म्माणि २) (हेचर्म) (हेचर्मणी) (हे चर्म्माणि) (चर्मणा) (चर्मभ्याम्) चर्मभिः। इत्यादि॥

नान्तादहन्ताच्छन्दसि ङिश्योर्वा लोपः । छन्दस्यागमजानागमजयोर्लोपालोपौ च वक्तव्यौ। परमेव्योमन् सर्वा भूतानि। दीर्घत्वं न निवर्त्तते।

भाषार्थ—नकारान्त तथा अकारान्त शब्दसे परे जो ङि और शि तिनका लोप वेदमें विकल्पकरके वक्तव्यहै। छन्दस् नाम वेदके विषे आगमसे उत्पन्नहुए तथा नहीं आगमसे उत्पन्नहुए अर्थात् स्वयं सिद्ध हुए नकारका लोप तथा नहीं लोप भी वक्तव्य है जैसे (परमे व्योमनि) इनमें एक जगह ङिका लोप नहीं हुआ तहाँ रहा (परमे) और जहाँ ङिका लोप होगया तहाँ हुआ (व्योमन्) इसमें (नाम्नो-नोलोपशधौ) इसकरके नकारका लोप नहीं हुआ। क्योंकि वैदिक प्रयोगमें स्वयं सिद्ध नकारका लोप होताहै और नहीं भी होताहै यहाँ पर वैदिक प्रयोग होनेसे नकारका लोप नहीं हुआ है और (सर्वाणि भूतानि) इनमें एक जगह शिका लोप करनेपर रूप स्थित हुआ (सर्वान्) इसमें नकार आगमसे उत्पन्न हुआ है तथापि नकारका लोप करदिया क्योंकि वेदमें आगमसे उत्पन्न हुए नकारका लोप होताहै और नहीं भी होताहै जब कि, नकारका लोप करदिया तब रूप सिद्ध हुआ (सर्वा) यदि कहो कि, जब नकार और शिका लोप होगया तब। निमित्ताभावे नैमित्तिकस्याप्यभावः। इसकर दीर्घता भी निवृत्त होनी चाहिये तहाँ कहते हैं कि। वैदिक प्रयोग होनेसे दीर्घता नहीं निवृत्त होवै है और (भूतानि) इसमे शिका लोप हुआ नहीं इसकारण यथावत् स्थित रहा॥

दकारान्तास्त्यदादयः। त्यदादीनांस्यमोर्लुकिकृतेटेरत्वंनभवति। स्यादाविति विशेषणात्। द्विवचनादौतुटेरत्वेकृतेनपुंसकेसर्ववद्रूपं ज्ञेयम्। त्यत्। त्यद्। त्ये। त्यानि २। तत्। तद्। ते। तानि। यत्। यद्। ये यानि। एतत्। एतद्। एते। एतानि। किम्। के। कानि। इदम्। इमे। इमानि। तृतीयादौ सर्वत्र पुंवत्।

भाषार्थ–दकारान्त त्यदादिकहैं । त्यदादिकोंके सि अम्‌का लुक् करने पर टिको अकार नहीं होय और (स्यादौ) इस विशेषणसे द्विवचनादिकमें टिको अकार करने पर सर्वशब्दवत् रूप जानने योग्यहैं जैसे । त्यद् सि । इसमें (नपुंसकात्स्यमोर्लुक्) इसकर सिका लुक् करने पर (त्यदादेष्टेरःस्यादौ) इसकर टिको अकार नहीं हुआ । क्योंकि लुक्‌के विषे तन्निमित्त कार्य नहीं होताहै तब रूप सिद्ध हुआ (वावसाने) इसकर । त्यत् । त्यद् । द्विवचनमें (त्यदादेष्टेरःस्यादौ) इसकर टिको अकार करने पर (ईमौ) इसकर रूप सिद्ध हुआ (त्ये) बहुवचनमें (त्यदादेष्टेरःस्यादौ) इसकर टिको अकार कर (जश्शसोः शिः) इसकर जस्‌के स्थानमें शि आदेश किया । फिर (नुमयमः) इसकर नुम् आगम करने पर (नोपधायाः) इसकर रूप सिद्ध हुआ (त्यानि) इसीप्रकार द्वितीयामें सिद्ध हुए । तृतीयादिकमें पुँल्लिङ्गवत् रूप जानने । जैसे (त्येन) (त्याभ्याम्) (त्यैः) त्यस्मै (त्याभ्याम्) (त्येभ्यः) (त्यस्मात्) (त्याभ्याम्) (त्येभ्यः) (त्यस्य) (त्ययोः) (त्येषाम्) (त्यस्मिन्) (त्ययोः) (त्येषु) इसप्रकार तद् यद् (१) एतद् किम् शब्द साधने योग्य हैं । मकारान्त इदम् शब्द है (नपुंसकात्स्यमोर्लुक्) इसकर सिका लुक् करनेपर रूप सिद्ध हुआ (इदम्) द्विवचनमें (त्यदादेष्टेरः स्यादौ) इसकर टिको अकार किया (ईमौ) इसकर औको ई किया (दस्यमः) इसकर दकारको मकार किया तब रूप सिद्ध हुआ (इमे) बहुवचनमें (त्यदादेष्टेरः स्यादौ) इसकर टिको अकार किया (दस्यमः) इसकर दकारको मकार किया (जश्शसोःशिः) इसकर जस्‌को शि आदेश करनेपर (नुमयमः) इसकर नुम् आगम किया फिर (नोपधायाः) इसकर रूप सिद्ध हुआ (इमानि) द्वितीयामें (इदम्) (२) (इमे) (इमानि) तृतीयादिकमें पुँल्लिङ्गवत् रूप जानने ॥

चकारान्तः प्रत्यच्शब्दः । चोः कुः । प्रत्यक्–प्रत्यग् । प्रतीची । प्रत्यञ्चि २ । तकारान्तो जगत् शब्दः । जगत्–जगद् । जगती । जगंति २ । महत्–महद् । महती । महान्ति २ । न्सम्महतोर्धौ दीर्घः शौच । इति दीर्घत्वम् । सकारान्ताः पयस्तेजस्वचस्प्रभृतयः । पयः । पयसी । पयांसि २ । पयसा । पयोभ्याम् । पयोभिः । इत्यादि । अदस्शब्दस्य स्यमोर्लुकिकृते । स्रोर्विसर्गः ।

---

(१) (नपुंसके एतदोन्वादेशेऽमि एनदिति वक्तव्यम्) अर्थ–नपुंसकलिंगमें एतद् शब्दको अन्वादेशके विषे अम् पर हुए संते एनत् यह आदेश वक्तव्य है । एनत् । एनद् । एने । एते । एनानि । एतानि । (२) केचित्तु इदम्शब्दस्यान्वादेशेनंपुसकेऽमिएनदितीच्छन्ति । अर्थ–कोई आचार्य इदम् शब्दकोभी अन्वादेशमें नपुंसकलिंगके विषे अम् पर हुए संते एनत् यह आदेश इच्छा करते हैं । एनत् ॥

द्विवचनादौ टेरत्वे कृते मत्वोत्वे च । अदः । अमू । अमूनि २ । शेषं पूर्ववत् ॥ इति हसान्ता नपुंसकलिङ्गाः ॥

भाषार्थ–चकारान्त प्रत्यच् शब्दहै । प्रथमाएकवचनमें (नपुंसकात्स्यमोर्लुक्) इसकर सिका लुक् करनेपर पदान्त होनेसे (चोःकुः) इसकर चकारके स्थानमें ककार कर (वावसाने) इसकर रूप सिद्ध हुआ (प्रत्यक्–प्रत्यग्) द्विवचनमें (ईमौ) इसकर औकारके स्थानमें ईकार करनेपर (अच्चेरलोपो दीर्घश्च) इसकर रूप सिद्ध हुआ (प्रतीची) बहुवचनमें (जश्शसोः शिः) इसकर जस्के स्थानमें शि आदेश करनेपर (नुमयमः) इसकर नुम् आगम किया तब रूप सिद्ध हुआ (प्रत्यञ्चि) इसीप्रकार द्वितीयामें सिद्ध हुए । तृतीयादिकमें पुँल्लिङ्गवत् साधने योग्य हैं इसीप्रकार अन्वच् आदिक साधने योग्य हैं (अन्वक्) (अन्वग्) (अनूची) (अन्वंचि) । चकारान्त गवाच् शब्द है । प्रथमाएकवचनमें (गवाक्) (१) गवाग् (द्विवचनमें) (अच्चेरलोपो दीर्घश्च) इसकर अंच् धातुके क्विप् प्रत्ययान्त अच्के अकारका लोप किया । फिर (निमित्ताभावेनैमित्तिकस्याप्य-

---

(१) गवाक्शब्दस्य रूपाणि क्री ऽर्चांगतिभेदतः । असन्ध्यगागमाल्लोपैर्नवाधिकशतं मतम् ॥ १ ॥ स्यम्सुप्सुनवषड्भादौषट्केस्युर्स्त्रीणिजश्शसोः । चत्वारिशेषेदशके रूपाणीति विभावय ॥ २ ॥ अर्थ–गवाक् शब्दके रूप पूजार्थ तथा गत्यर्थके भेदसे असन्धि और अगागम और अल्लोप इनकरके नव अधिक सौ अर्थात् एक सौ नौ जानने योग्य हैं ॥ १ ॥ सि और अम् और सुप् इनके विषे नौ जानिये और भकारादि विभक्तिवचनोंमें छः २ रूप जानिये और तीन २ जस् और शस्के विषे जानिये । और शेष दश विभक्तिवचनोंमें चार २ रूप जानिये । जैसे गति अर्थमें अगागम करनेपर रूप हुआ (गवाक्) (गवाग्) और सन्धि न करने पर रूप हुआ (गोअक्) (गो अग्) और अकारका लोप करनेपर रूप हुआ (गोक्) (गोग्) और पूजार्थमें (गवाङ्) (गोअङ्) (गोङ्) द्विवचनमें गत्यर्थके विषे (गोची) पूजार्थमें (गवांची) (गोअंची) (गोंची) बहुवचनमें गत्यर्थ तथा पूजार्थ दोनोंके विषे सदृश रूप हुए (गवांचि) गोअंचि (गोंचि) इसी प्रकार द्वितीयामें हुए । तृतीयाके प्रथम वचनमें गत्यर्थके विषे (गोचा) और पूजार्थमें (गवाञ्चा) (गोअंचा) (गोंचा) द्विवचनमें गत्यर्थके विषे (गवाग्भ्याम्) (गोअग्भ्याम्) (गोग्भ्याम्) पूजार्थमें (गवाङ्भ्याम्) (गोअङ्भ्याम्) (गोऽङ्भ्याम्) इसीप्रकार अन्य भकारादिक विभक्तिवचनोंमें रूप जानने । चतुर्थी-एकवचनमें गत्यर्थके विषे (गोचे) पूजार्थमें (गवांचे) गोअंचे (गोंचे) पंचमीएकवचनमें गत्यर्थके विषे (गोचः) पूजार्थमें (गवांचः) (गोअंचः) (गोंचः) इसीप्रकार षष्ठीएकवचनमें रूप जानने । द्विवचनमें गत्यर्थके विषे (गोचोः) पूजार्थमें । (गवांचोः) (गोअंचोः) (गोंचोः) बहुवचनमें गत्यर्थके विषे (गोचाम्) पूजार्थमें (गवांचाम्) (गोअंचाम्) (गोंचाम्) सप्तमीएकवचनमें गत्यर्थके विषे (गोचि) पूजार्थमें (गवांचि) (गोअंचि) (गोंचि) द्विवचनमें षष्ठीद्विवचनवत् । बहुवचनमें गत्यर्थके विषे (गवाक्षु) (गोअक्षु) (गोक्षु) पूजार्थमें (गवाङ्षु) (गोअङ्षु) (गोङ्षु) ङसे ङ्णोः कुक्टुकौ वा । इसकर सिद्ध हुआ (गवाङ्क्षु) (गोअङ्क्षु) गोङ्क्षु) इति ॥

भावः) इसकर (गवादेरवर्णागमोक्षादौ वक्तव्यः) इसकर किये अवर्ण आगमका भी अभाव होगया फिर (ओ अव्) इसकर किये अव् आदेशका भी अभाव होगया तव रूप सिद्ध हुआ (गोची) वहुवचनमें (गवाञ्चि) इसी प्रकार द्वितीयामें जानने । तृतीयादिकमें (अञ्चेरलोपो दीर्घश्च) इसकर सिद्ध हुआ (गोचा) (गवाग्भ्याम्) (गवाग्भिः) इत्यादि । तकारान्त जगत् शब्द है (जगत्-जगद्) (जगती) (जगन्ति २) इत्यादि । (महत्-महद्) (महती) (महान्ति) वहुवचनमें (जश्शसोः शिः) इसकर शि आदेश करनेपर (नुमयमः) इसकर नुम् किया (न्सम्महतोऽधौ दीर्घः शौच) इसकर शिके विषे दीर्घ होगया । इसीप्रकार द्वितीयामें जानने । तृतीयादिकमें पुँल्लिङ्गवत् जानने । सकारान्त पयस् तेजस् वचस् आदिक शब्द हैं (पयः) (पयसी) वहुवचनके विषे जस्के स्थानमें शि करनेपर नुम् आगम किया फिर न्सन्त शब्द होनेसे (न्सम्महतोधौ दीर्घः शौच) इसकर दीर्घहो रूप सिद्ध हुआ (पयांसि) इसी प्रकार द्वितीयामें रूप हुए । और षकारान्त हविष् शब्दसे सिका लुक् करनेपर (दोषांरः) इसकर रकार किया फिर (स्रोर्विसर्गः) इसकर विसर्ग करनेपर रूप सिद्ध हुआ (हविः) द्विवचनमें (हविषी) वहुवचनमें जसके स्थानमें शि करनेपर (नुमयमः) इसकर नुम् आगम किया फिर (न्सम्महतोऽधौ दीर्घः शौच) इसकर दीर्घ करनेसे रूप सिद्ध हुआ (हवींषि) यदि कहो कि, सूत्रमें तो न्सन्तका ग्रहण है न्षन्तका तो ग्रहण है नहीं फिर कैसे दीर्घ करदिया तहाँ यह समाधान है कि, सूत्रमें चकारके ग्रहणसे न्षन्तका भी ग्रहण किया है । द्वितीयामें (हविः) (हविषी) (हवींषि) तृतीयादिकमें (हविषा) (हविर्भ्याम्) (हविर्भिः) इत्यादि । सकारान्त अदस्शब्दके सि अम् का लुक् करनेपर (स्रोर्विसर्गः) इसकर सिद्ध हुआ (अदः) द्विवचनादिकमें टिको अकार (त्यदादेष्टेरःस्यादौ) इस सूत्रकर करनेपर (दस्यमः) इसकर मकार करने योग्य है और (मादू) इसकर उकार तथा ऊकार करनें योग्यहै । जैसे द्विवचनके विषे (ईमौ) इसकर औके स्थानमें ईकार करनेपर (त्यदादेष्टेरः स्यादौ) इसकर टिको अकार किया । फिर (दस्यमः) इसकर दकारको मकार किया फिर (अइए) इसकर एकार करनेपर (मादू) इसकर दीर्घ ऊकार किया तव रूप सिद्ध हुआ (अमू) वहुवचनमें जस्के स्थानमें शि कर टिको अकार किया फिर नुम् आगम किया फिर (दस्यमः) इसकर दकारको मकार किया । फिर (नोपधायाः) इसकर मकार उत्तरवर्ती अकारको दीर्घ किया । फिर (मादू) इसकर ऊकार करनेपर रूप सिद्ध हुआ (अमूनि) द्वितीयामें भी इसीप्रकार सिद्ध हुए । तृतीयादिकमें पुँल्लिगवत् रूप जानने योग्य हैं । इसप्रकार हसान्त नपुंसकलिंगसाधन है ॥ इति हसान्ता नपुंसकलिङ्गाः ॥

अथ युष्मदस्मदोः स्वरूपं निरूप्यते । तयोश्च वाच्यलिंगत्वात्त्रिष्वपि लिंगेषु समानं रूपम् ।

भाषार्थ–संज्ञा और सन्धि तथा स्वरान्त हसान्त लिङ्गत्रय साधनके अनन्तर युष्मद् और अस्मद्का मुख्य स्वरूप निरूपण किया जाता है तिन दोनों युष्मद् और अस्मद्को वाच्यलिंग अर्थात् विशेष्य पुरुष स्त्री कुलादिके लिंगवाले होनेसे तीनों लिंगोंके विषे तिनका एक सदृश रूप होताहै अथवा तिन युष्मद् अस्मद्का वाचि नाम वचन अर्थात् वाणीके व्यवहारकालके विषे अलिंगत्व अर्थात् लिंगभाव न होनेसे तीनों स्त्रीपुं० नपुंसक लिंगोंमें उनका एक सदृश रूप होताहै । प्रथमा एकवचनमें । युष्मद् सि । अस्मद् सि । ऐसा स्थित है ॥

त्वमहं सिना ।

त्वमहम्--सिना । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) युष्मदस्मदोः सिसहितयोः त्वम् अहम् इत्येतावादेशौ भवतः यथासंख्येन । त्वम् । अहम् ।

भाषार्थ–सि विभक्ति वचनसहित युष्मद् और अस्मद् शब्दोंको यथाक्रमसे त्वम् और अहम् यह आदेश होय । भाव यह है कि, सि सहित युष्मद्को त्वम् और सि सहित अस्मद्को अहम् आदेश होयँ जैसे (युष्मद् सि । अस्मद् सि) इनमें युष्मद् शब्दसे परे और अस्मद् शब्दसे परे सि विभक्ति वचन विद्यमान है इसकारण युष्मद् सि । के स्थानमें त्वम् आदेश होकर (त्वम्) और (अस्मद् सि) के स्थानमें अहम् आदेश होकर (अहम्) सिद्ध हुआ । द्विवचनमें । युष्मद् औ । अस्मद् औ । ऐसा स्थित है ॥

युवावौ द्विवचने ।

युवावौ--द्विवचने । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) युष्मदस्मदोर्द्विवचने परे युव आव इत्येतावादेशौ भवतः ।

भाषार्थ–युष्मद् अस्मद्को यथाक्रमसे द्विवचन पर हुए संते युव आव यह आदेश होयँ अर्थात् द्विवचन परहुए संतें युष्मद्के स्थानमें युव और अस्मद्के स्थानमें आव आदेश होय जैसे (युष्मद् औ । अस्मद् औ) इनमें युष्मद् अस्मद्से परे द्विवचन सम्बन्धी औ विद्यमानहै इसकारण युष्मद्के स्थानमें युव और अस्मद्के स्थानमें आव आदेश करनेसे रूप स्थित हुए (युव औ । आव) औ ॥

आमौ ।

आमं--औ । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) युष्मदस्मदोः पर औ आम् भवति । युवाम् । आवाम् ।

भाषार्थ-युष्मद् और अस्मद् शब्दसे परे जो औ सो आम् होय । जैसे (युव औ) (आव औ) इनमें औके स्थानमें आम् किया तब रूप स्थित हुए (युव- आम् । आवआम्) यदि कहो कि इनमें युष्मद् तथा अस्मद् शब्दसे परे औ नहीं है किन्तु युव और आवसे परे औ है फिर औ को आम् आदेश कैसे किया तहां यह समाधानहै जो जिसका आदेशहै वह उसीके समान होताहै (यदादेशस्तद्वद्भवति) इस वचनसे फिर (सवर्णे दीर्घः सह) इसकर सिद्ध हुए (युवाम्) (आवाम्) वहुवचनमें । युष्मद् अस् । अस्मद् अस् । ऐसा स्थितहै ॥

यूयं वयं जसा ।

यूयं वयम्--जसा । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) जसा सहितयोर्युष्मदस्म- दोर्यूयम् वयम् इत्येतावादेशौ भवतः । यूयम् । वयम् ।

भाषार्थ-जस् सहित युष्मद् अस्मद्को क्रमसे यूयम् वयम् यह आदेश होयँ । भाव यहहै कि, जस्सहित युष्मद् शब्दको यूयम् और जस्सहित अस्मद् शब्दको वयम् आदेश होय । जैसे । युष्मद् अस् । अस्मद् अस् । इनमें जस्के शुद्ध रूप अस् सहित युष्मद्के स्थानमें सिद्ध हुआ (यूयम्) और अस्मद्के स्थानमें सिद्ध हुआ (वयम्) द्वितीयाएकवचनमें । युष्मद् अम् । अस्मद् अम् । ऐसा स्थितहै ॥

त्वन्मदेकत्वे ।

त्वन्मत्--एकत्वे । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) युष्मदस्मदोः त्वत् मत् इत्येतावादेशौ भवतः एकत्वे गम्यमाने ।

भाषार्थ-युष्मद् और अस्मद् शब्दको क्रमसे त्वत् मत् यह आदेश होयँ एक- वचन प्राप्त हुए संते । भाव यह है कि, एकार्थवाचकता प्राप्त होनेपर युष्मद्के स्थानमें त्वत् और अस्मद्के स्थानमें मत् आदेश होतेहैं । जैसे (युष्मद् अम् । अस्मद् अम्) इनमें द्वितीयाका एकवचन विद्यमानहै इसकारण युष्मद्के स्थानमें त्वत् और अस्मद्के स्थानमें मत् आदेश करनेपर रूप स्थित् हुए । त्वत् अम् । मत् अम् ॥

आम्स्भौ ।

आं--अमूँस्भौ । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) युष्मदस्मदोष्टेरात्वंभवति अमिसकारे भिसि च परे । त्वाम् । माम् । युवाम् । आवाम् । त्यदादेष्टेरः-

स्यादौ इत्यकारे कृते । शसि । इति दीर्घत्वम् । शसोनोवक्तव्यः । युष्मान् । अस्मान् ।

भाषार्थ–युष्मद् अस्मद्‌की टिको आकार होय अम् और सकार तथा भिस् परहुएसंते । जैसे । त्वत् अम् । मत् अम् । इनमें । यदादेशस्तद्वद्भवति । इसकर त्वत्‌के स्थानमें युष्मद् और मत्‌के स्थानमें अस्मद् मानकर त्वत् तथा मत्‌के टिको आकार किया क्योंकि परे अम् विद्यमानहै तब रूप हुआ। त्वाअम् । मा अम् । फिर (अम्शसोरस्य) इसकर सिद्ध हुए (त्वाम्) (माम्) द्विवचनमें प्रथमाद्विवचनवत् सिद्ध हुए (युवाम् । आवाम्) बहुवचनमें (त्यदादेष्टेरःस्यादौ) इसकर टिके स्थानमें अकार करनेपर (अम्शसोरस्य) इसकर शस्‌के अकारका लोप करदिया । फिर (शसि) इसकर दीर्घता की । फिर वाच्यलिंग होनेसे केवल पुँलिङ्ग न होनेके कारण (सोनः पुंसः) इसकर शस्‌के सकारको नकार नहीं हुआ किन्तु युष्मद् अस्मद्‌से परे शस्‌के सकारको नकार वक्तव्यहै । इससे शस्‌के सकारके स्थानमें नकार करनेपर रूप सिद्ध हुए (युष्मान्) (अस्मान्) तृतीयाएकवचनमें युष्मद्‌को (त्वन्मदेकत्वे) इसकर त्वत् आदेश और अस्मद्‌को मत् आदेश करनेपर रूप स्थित हुए। त्वत् आ । मत् आ ।

ए टाङ्योः ।

ए[१]–टाङ्योः[१७]। द्विपदमिदं सूत्रम्[२] (वृत्तिः) युष्मदस्मदोष्टेरेत्वं भवति टाङि इत्येतयोः परयोः । अयादेशः । त्वया । मया । युवाभ्याम् । आवाभ्याम् । युष्माभिः । अस्माभिः ।

भाषार्थ–युष्मद् और अस्मद्‌की टिको एकार होय तृतीयाएकवचनसम्बन्धी टा और सप्तमीएकवचनसम्बधी ङि पर हुए संते जैसे । त्वत् आ । मत् आ । इनमें (यदादेशस्तद्वद्भवति) इसकर त्वत्‌के स्थानमें युष्मद् और मत्‌के स्थानमें अस्मद् मानकर त्वत् और मत्‌की टिको एकार किया क्योंकि टाका शुद्ध रूप आकार परे विद्यमान है तब रूप स्थित हुआ। त्वे आ । मे आ । फिर (ए अय्) इसकर सिद्ध हुआ (त्वया) (मया) द्विवचनमें (युवावौ द्विवचने) इसकर युव आव आदेश करनेपर (अद्भि) इसकर रूप सिद्ध हुए (युवाभ्याम्) (आवाभ्याम्) बहुवचनमें (आम्भौ) इसकर युष्मद् अस्मद् शब्दकी टिको आकार करनेपर रूप सिद्ध हुए (युष्माभिः) (अस्माभिः) चतुर्थीएकवचनमें । युष्मद्ङे । अस्मद्ङे । ऐसे स्थित हैं ॥

तुभ्यं मह्यं ङ्या ।

तुभ्यंमह्यम्-ङ्या । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) ङ्यासहितयोर्युष्मदस्मदोः तुभ्यम् मह्यम् एतावादेशौ भवतः । तुभ्यम् । मह्यम् । युवाभ्याम् । अवाभ्याम् ।

भाषार्थ-ङे सहित युष्मद् अस्मद्को । तुभ्यम् । मह्यम् । यह आदेश होयँ युष्मद्ङे । अस्मद् ङे । इनमें ङे सहित युष्मद्के स्थानमें सिद्ध हुआ (तुभ्यम्) और ङे सहित अस्मद्के स्थानमें सिद्ध हुआ (मह्यम्) द्विवचनमें तृतीया द्विवचनवत् (युवाभ्याम्) (आवाभ्याम्) बहुवचनमें (त्यदादेष्टेरः स्यादौ) इसकर टिको अकार करनेपर रूप स्थित हुआ (युष्मभ्यस्) (अस्मभ्यस्)-॥

भ्यस्शभ्यम् ।

भ्यस्-शभ्यम् । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) युष्मदस्मदोः परो भ्यस् शभ्यम् भवति । शकारो भकारादित्वव्यावृत्त्यर्थः । तेनात्वैत्वे न भवतः । युष्मभ्यम् । अस्मभ्यम् ।

भाषार्थ-युष्मद् अस्मद्से परे जो भ्यस् सो शभ्यम् होय अर्थात् गुरु आदेश होनेसे समस्त भ्यस्के स्थानमें शभ्यम् होय आदेशमें जो कि, शकार है वह भकारादित्वकी निवृत्तिके अर्थ है तिसकरके आकार और एकार नहीं होयं । भाव यह है कि, जो कि,आदेशमें प्रथम शकारका उच्चारण किया है उसकरके आदेशको भकारादि होने परभी (अद्धि) इस सूत्रकर आकार और (एस्भिबहुत्वे) इसकर एकार नहीं होवै जैसे । युष्मभ्यस् । अस्मभ्यस् । इनमें भ्यस्के स्थानमें शभ्यम् आदेश करनेपर रूप सिद्ध हुए (युष्मभ्यम्) (अस्मभ्यम्) पंचमीएकवचनमें (त्वन्मदेकत्वे) इसकर त्वत् मत् आदेश करनेपर (त्यदादेष्टेरः स्यादौ) इसकर त्वत् मत्की टिको अकार किया तब रूप स्थित हुए । त्व अस् । म अस् ॥

ङसिभ्यसोः श्तुः ।

ङसिभ्यसोः-श्तुः । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) पंचम्या ङसिभ्यसो श्तुर्भवति । शकारः सर्वादेशार्थः । उकार उच्चारणार्थः । त्वत् । मत् । युवाभ्याम् । आवाभ्याम् । युष्मत्-अस्मत् ।

भाषार्थ-युष्मद् अस्मद्से परे पंचमीके ङसि और भ्यस् इन दोनोंके स्थानमें श्तुः आदेश होय आदेशमें शकार सर्वादेशके अर्थ है और उकार सुखपूर्वक आदेशके उच्चा-

रणार्थ है । जैसे (त्व अस् । म अस्) इनमें पंचमीएकवचनसम्वन्धी अस्के स्थानमें श्तु आदेश करनेपर रूप सिद्ध हुए (त्वत्) (मत्) द्विवचनमें (युवाभ्याम्) (आवाभ्याम्) वहुवचनमें (त्यदादेष्टेरः स्यादौ) इसकर टिके स्थानमें अकार करनेपर रूप स्थित हुए (युष्मभ्यस्) (अस्मभ्यस्) फिर भ्यस्के स्थानमें श्तु आदेश करनेपर रूप सिद्ध हुए (युष्मत्) (द्) (अस्मत्) (द्) षष्ठीएकवचनमें (युष्मद् अस्) अस्मद् अस् ऐसा स्थित है ॥

तवममङसा ।

तवमम–ङसा । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) ङसा सहितयोर्युष्मदस्मदोः तव मम इत्येतावादेशौ भवतः । तव । मम । युवयोः । आवयोः । सर्वादित्वात् सुट् ।

भाषार्थ–ङस् सहित जो युष्मद् अस्मद् तिनको क्रमसे । तव । मम । यह आदेश होयँ अर्थात् ङस् सहित युष्मद्के स्थानमें तव और ङस् सहित अस्मद्के स्थानमें मम आदेश होयँ जैसे । युष्मद् अस् । अस्मद् अस् । इनमें ङस्के शुद्ध रूप अस्के सहित युष्मद्के स्थानमें सिद्ध हुआ (तव) और अस्मद्के स्थानमें सिद्ध हुआ (मम) द्विवचनमें (युवावौ द्विवचने) इसकर युव आव आदेश करनेपर (ओसि) इसकर रूप सिद्ध हुआ (युवयोः) (आवयोः) वहुवचनमें (त्यदादेष्टेरः स्यादौ) इसकर टिके स्थानमें अकार करनेपर सर्वादिक होनेसे (सुडामः) इसकर सुट् आगम किया तव रूप स्थित हुए । युष्मसाम् । अस्मसाम् ॥

सामाकम् ।

साम्–आकम् । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) युष्मदस्मदोः परः साम् आकम् भवति । युष्माकम् । अस्माकम् । त्वयि । मयि । युवयोः । आवयोः । युष्मासु–अस्मासु ।

भाषार्थ–युष्मद् अस्मद् शब्दोंसे परे जो साम् सो आकम् होय । भाव यह है कि, युष्मद् अस्मद्से परे सुट् आगम सहित आम्के स्थानमें आकम् होय जैसे । युष्म साम् । अस्म साम् । इनमें युष्मद् अस्मद् शब्दसे परे साम्के स्थानमें आकम् करनेपर (सवर्णे दीर्घः सह) इसकर सिद्ध हुए (युष्माकम्) (अस्माकम्) सप्तमीएकवचनमें (त्वन्मदेकत्वे) इसकर त्वत् मत् आदेश करनेपर (एटाङ्च्योः) इसकर टिके स्थानमें एकार किया फिर (ए अय्) इसकर सिद्ध हुए (त्वयि) (मयि) द्विवचनमें षष्ठीद्विवचनवत् (युवयोः) (आवयोः) बहुवचनमें (आम्स्भौ) इसकर टिको आकार करनेपर रूप सिद्ध हुए (युष्मासु). (अस्मासु) त्यदादिक होनेसे

युष्मद् अस्मद्का सम्बोधनमें रूप नहीं होताहै । (१) यह पूर्वोक्त आदेश क्रमसे होते हैं और सि जस् ङे ङस् वर्जित अन्य सत्रह वचनोंके विषे एकके अतिक्रममें (त्व-म) और दोके अतिक्रममें (युव-आव) बहुतोंके अतिक्रममें (युष्म-अस्म) यह आदेश होते हैं सो लिखा भी है- ॥

समस्यमाने द्व्येकत्ववाचिनी युष्मदस्मदी ॥
समासार्थोन्यसंख्यश्चेद्युवावौ त्वन्मदावपि ॥ १ ॥
सिजस्ङेङस्सु परत आदेशाःस्युस्सदैवते ॥
त्वाहौ यूयवयौ तुभ्यमह्यौ तवममावपि ॥ २ ॥
एते परत्वाद्बाधन्ते युवावौ विषये स्वके ॥
त्वन्मदावपि बाधन्ते पूर्व्ववद्विषये स्वतः ॥ ३ ॥
द्व्येकसंख्यस्समासार्थो बह्वर्थे युष्मदस्मदी ॥
तयोरद्व्येकतार्थत्वाद्युवावौ त्वन्मदौ च न ॥ ४ ॥

भाषार्थ-समास किये गये युष्मद् अस्मद् समासमें द्विवचन वा एकवचन वाची हों और समासार्थ अन्यपद प्रधान अन्य संख्यावाला होवै अर्थात् भिन्न वचनवाची होवै तो जो समास करनेपर युष्मद् अस्मद् द्विवचन हो तो युष्मद्के स्थानमें युव और अस्मद्के स्थानमें आव आदेश होते हैं और जो समास करनेपर युष्मद् अस्मद् एकवचनवाची हों तो युष्मद्के स्थानमें त्वत् और अस्मदके स्थानमें मत् आदेश होतेहैं ॥ १ ॥ सि और जस् और ङे और ङस् यह पर हुए संते क्रमसे सदा ही वही आदेश होवैं जो कि, मुख्य स्वरूप युष्मद् अस्मद्के विषे सिमें (त्वम्) (अहम्) जस्में (यूयम्) (वयम्) ङेमें (तुभ्यम्) (मह्यम्) ङस्में (तव) (मम) आदेश हुए थे ॥ २ ॥ त्वम् । अहम् । यूयम् । वयम् । तुभ्यम् । मह्यम् । तव । मम । यह आदेश अपनेही स्थानमें युव आवको बाधा करते हैं और अपनेही स्थानमें पूर्ववत् त्वत् मत्को बाधा करते हैं किस कारणसे कि, पर कार्य होनेसे । भाव यह है कि, प्रथम श्लोकानुसार युस्मद् अस्मद्के स्थानमें आदेश किये हुए युव आव तथा त्वत् मत् के स्थानमें अपनी २ ही जगह । त्वम् । अहम् । यूयम् । वयम् । तुभ्यम् । मह्यम् । तव । मम ।

---

(१) समासान्तत्वे प्राधान्ये च युष्मदस्मदोः सिजस्ङेङस्सु । त्वम् । अहम् । यूयम् । वयम् । तुभ्यम् । मह्यम् । तव । मम । इत्यादेशाः पूर्वोक्ताभवन्ति अन्यत्रतुसिजस्ङेङस्वर्जितेषु सप्तदश वचनेषु एकस्यातिक्रमेत्वमौ । द्वयोरतिक्रमे युवावौ । बहुनामतिक्रमे युष्मास्मौ । भाषार्थ-समासान्त होनेपर गौणता अर्थके विषे युष्मद् अस्मद्को सिजस्ङेङस् इन विभक्ति वचनोंके विषे । त्वम् । अहम् । यूयम् । वयम् । तुभ्यम् । मह्यम् । तव । मम ॥

यह आदेश होजाते हैं समासार्थ अन्य पद प्रधान दो अथवा एक संख्यावाला हो अर्थात् द्विवचन वा एकवचन होय और युष्मद् अस्मद् समास किये जानेपर बहुवचनमें विद्यमान हो तो उन युष्मद् अस्मद्को द्विवचनार्थभाव वा एकवचनार्थभाव न होनेसे युव । आव । त्वत् । मत् । यह आदेश नहीं होते हैं किन्तु युष्मद् अस्मद् स्वयंही विद्यमान रहते हैं परन्तु पर कार्य होनेसे अपने २ स्थानोंके विषे युष्मद् अस्मद्के स्थानमें । त्वम् । अहम् । यूयम् । वयम् । तुभ्यम् । मह्यम् । तव । मम । यह आदेश तो होई जातेहैं ॥ ४ ॥ समासके विषे एकवचनवाचक युष्मद् अस्मद्का उदाहरण (त्वां मां वा अतिक्रान्त इति विग्रहे) (अतित्वम्) (अत्यहम्) समासमें युष्मद् अस्मद्को एकवचन-वाचक होनेसे द्विवचनमें त्वत् मत् आदेश करने पर (त्यदादेष्टेरः स्यादौ) इसकर टिको अकार किया । फिर (आमौ) इसकर सिद्ध हुए(अतित्वाम्) (अतिमाम्) बहुवचनमें (अतियूयम्) (अतिवयम्) इसी प्रकार अन्य विभक्ति वचनोंमें साधने योग्यहैं । समासके विषे । द्विवचनवाचक युष्मद् अस्मद्का उदाहरण । (युवामावामतिक्रान्त इति विग्रहे) सिके विषे (त्वम्-अहम्) आदेश करनेपर रूप सिद्ध हुए (अतित्वम्) (अत्यहम्) समासके विषे युष्मद् अस्मद्को द्विवचनवाचक होनेसे द्विवचनमें । युव । आव । आदेश करनेपर (आमौ) इसकर सिद्ध हुए (अतियुवाम्)(अत्यावाम्) बहुवचनमें जस्के विषे (यूयम् । वयम्) आदेश करनेपर सिद्ध हुए (अतियूयम्) (अति वयम्) । इत्यादि । समासके विषे बहुवचनवाचक युष्मद् अस्मद्का उदाहरण । युष्मानस्मान्वाऽतिक्रान्त इति विग्रहे । सिके विषे । त्वम् । अहम् । आदेश करनेपर सिद्ध हुए (अतित्वम्) (अत्यहम्) समासके विषे युष्मद् अस्मद्को बहुवचन वाचक होनेसे द्विवचनमें । युष्मद् अस्मद् । स्वयंही विद्यमान रहने पर (त्यदादेष्टेरः-स्यादौ) इसकर टिको अकार किया फिर (आमौ) इसकर सिद्ध हुए (युष्मान्) (अस्मान्) बहुवचनमें जस्के विषे (यूयम् । वयम्) आदेश करनेपर (अतियूयम्) (अतिवयम्) इत्यादि इसीप्रकार समासके विषे एकवचन द्विवचन बहुवचनवाचक अस्मद्के अन्य विभक्ति वचनोंमें रूप साधने योग्यहैं ग्रंथके विस्तर भयसे हमने नहीं लिखेहैं । इत्यलम् ॥

अथानयोरादेशविशेषविधिर्निरूप्यते ॥

भाषार्थ-युष्मद् अस्मद् साधनके अनन्तर इन युष्मद् अस्मद् शब्दोंका आदेशविशेष विधि निरूपण किया जावै है ॥

युष्मदस्मदोः षष्ठीचतुर्थीद्वितीयाभिस्तेमेवांनौवस्नसौ ।

युष्मदस्मदोः-षष्ठीचतुर्थीद्वितीयाभिः-तेमे-वांनौ-वस्नसौ-पंचपदमिदंसूत्रम् (वृत्तिः) युष्मदस्मदोर्यथासंख्येनामी आदेशा भवन्ति षष्ठीचतुर्थीद्वि-

तीयासहितयोः । तत्रैकवचनेन सह ते मे भवतः । द्विवचनेन सह वांनौ । बहुवचनेन सह वस्नसौ ।

भाषार्थ-षष्ठी चतुर्थी द्वितीया सहित युष्मद् अस्मद्को यथाक्रम करके तेमे वांनौ वस् नस् यह आदेश होयँ तहाँ षष्ठी चतुर्थीके एकवचन सहित युष्मद् अस्मद्को । ते मे और षष्ठी चतुर्थी द्वितीयाके द्विवचन सहित युष्मद् अस्मद्को (वान्नौ) और षष्ठी चतुर्थी द्वितीयाके बहुवचन सहित युष्मद् अस्मद्को वस् नस् आदेश होतेहैं भाव यह है कि, षष्ठी चतुर्थीके एकवचन सहित युष्मद्को ते और अस्मद्को मे आदेश होय और द्वितीयाके एकवचन सहित अगाडी कही जानेवाली विधानताके अनुसार युष्मद्को त्वा और अस्मद्को मा आदेश होय और षष्ठी चतुर्थी द्वितीयाके द्विवचन सहित युष्मद्को (वां) और अस्मद्को (नौ) आदेश होंय और षष्ठी चतुर्थी द्वितीयाके बहुवचन सहित युष्मद्को वस् और अस्मद्को नस् आदेश होय। उदाहरणोंको अगले श्लोकोंकर कहतेहैं ॥

उक्तंच । स्वामीतेससमायातः स्वामीमेसांप्रतंगतः ॥
नमस्तेभगवन्भूयोदेहिमेमोक्षमव्ययम् ॥ १ ॥
स्वामीवांसजहासोच्चैर्दृष्ट्वानौदानयाचनाम् ॥
राजावांदास्यतेदानंज्ञानंनौमधुसूदनः ॥ २ ॥
देवोवामवताद्विष्णुर्नरकान्नौजनार्दनः ॥
स्वामीवोबलवान्राजास्वामीनोसौजनार्दनः ॥ ३ ॥
नमोवोब्रह्मविज्ञेभ्योज्ञानंनोदीयतांधनम् ।
सानंदान्वःप्रपश्यामःपश्यामोनःसुदुखिनः ॥ ४ ॥

भाषार्थ-(स्वामी ते स समायातः) इसमें षष्ठी एकवचनमें युक्त युष्मद्के सिद्ध हुए रूप तवके स्थानमें ते आदेश हुआहै । अर्थ । सो तुम्हारा स्वामी भली प्रकार आकर प्राप्त हुआहै (स्वामी मे सांप्रतं गतः) इसमें षष्ठीएकवचन युक्त सिद्ध हुए रूप ममके स्थानमें मे आदेश हुआहै । अर्थ । सो मेरा स्वामी इससमय गयाहै ॥ (नमस्ते भगवन्भूयः) इसमें चतुर्थीएकवचनयुक्त युष्मद्के सिद्ध हुए रूप तुभ्यम्के स्थानमे ते आदेश हुआ है । अर्थ । हे भगवन् ! तुम्हारे अर्थ वारंवार प्रणाम है (देहि मे मोक्षमव्ययम्) इसमें चतुर्थीएकवचन युक्त अस्मद्के सिद्ध हुए रूप मह्यम्के स्थानमें मे आदेश हुआ है । अर्थ । मेरे अर्थ नहीं नाश होनेवाला मोक्ष दीजिये ॥ १ ॥ (स्वामी वां स जहासोच्चैः) इसमें षष्ठी

द्विवचन सहित युष्मद्के सिद्ध हुए रूप युवयोः के स्थानमें वां आदेश हुआहै। अर्थ। तुमदोनोंका स्वामी अति ऊंचे स्वरसे हँसता हुआ (दृष्ट्वा नौ दानयाचनाम्) इसमें षष्ठी द्विवचन सहित अस्मद्के सिद्ध हुए रूप आवयोः के स्थानमें नौ आदेश हुआ है। अर्थ। क्या करके कि, हम दोनोंकी दानयाचना देख करके (राजा वां दास्यते दानम्) इसमें चतुर्थी द्विवचन सहित युष्मद्के सिद्ध हुए रूप आवाभ्यांके स्थानमें वां आदेश हुआहै। अर्थ। राजा तुमदोनोंके अर्थ दान देवैगा (ज्ञानं नौ मधुसूदनः) इसमें चतुर्थी द्विवचन सहित अस्मद्के सिद्ध हुए रूप आवाभ्यांके स्थानमें नौ आदेश हुआहै। अर्थ। मधुसूदन विष्णु हम दोनोंके अर्थ ज्ञान देवैंगे ॥ ॥ २ ॥ (देवो वामवताद्विष्णुर्नरकान्नौ जनार्दनः) इसमें द्वितीया द्विवचन सहित युष्मद्के सिद्ध हुए रूप युवांके स्थानमें वां और अस्मद्के सिद्ध हुए रूप आवांके स्थानमें नौ आदेश हुआहै। अर्थ। विष्णु देव तुम दोनोंकी नरकसे रक्षा करे और जनार्दन हम दोनोंकी नरकसे रक्षा करे (स्वामी वो बलवान् राजा स्वामी नोसौ जनार्दनः) इसमें षष्ठीबहुवचनयुक्त युष्मद्के सिद्ध हुए रूप युष्माकंके स्थानमें वः और अस्मद्के सिद्ध हुए रूप अस्माकंके स्थानमें नः आदेश हुआ है। अर्थ। तुम बहुतोंका स्वामी राजा बलयुक्तहै। हम बहुतोंके स्वामी वह जनार्दन बलयुक्तहैं ॥ ॥ ३ ॥ (नमो वो ब्रह्मविज्ञेभ्यो ज्ञानं नो दीयतां धनम्) इसमें चतुर्थीबहुवचन युक्त युष्मद्के सिद्ध हुए रूप युष्मभ्यम्के स्थानमें वः और अस्मद्के सिद्ध हुए रूप अस्मभ्यंके स्थानमें नः आदेश हुआहै। अर्थ। तुम ब्रह्मवेत्ताओंके अर्थ प्रणामहै हमारे अर्थ ज्ञान रूप धन तुमकर दिया जावै (सानन्दान्वः प्रपश्यामः पश्यामो नः सुदुःखिनः) इसमें द्वितीयाबहुवचन युक्त युष्मद्के सिद्ध हुए रूप युष्मान्के स्थानमें वः और अस्मद्के सिद्ध हुए रूप अस्मान्के स्थानमें नः आदेश हुआहै। अर्थ। हम तुमको आनन्द युक्त देखतेहैं और हम अपनेको दुःखयुक्त देखतेहैं ॥

त्वामामा।

त्वामौ-अमौ। द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) अमासहितयोर्युष्मदस्मदोः त्वा मा इत्येतावादेशौ भवतः। पश्यामि त्वा मदालीढं पश्य मा मदभेदकम्।

भाषार्थ-अम्सहित युष्मद् अस्मद्को क्रमसे त्वा मा आदेश होतेहैं अर्थात् अम्सहित युष्मद्के स्थानमें त्वा और अस्मद्के स्थानमें मा आदेश होतेहैं जैसे (पश्यामि त्वा मदालीढं पश्य मा मदभेदकम्) इसमें अम् सहित युष्मद्के सिद्ध हुए रूप त्वांके स्थानमें त्वा और अस्मद्के सिद्ध हुए रूप मांके स्थानमें मा

आदेश हुआ है । अर्थ । मैं तुझको मदसे परिपूरित देखताहूं तू मुझको मदके भेदन करनेवाला देख ॥

नादौ ।

अ० ७ १
न-आदौ । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) पादादौ वर्त्तमानयोर्युष्मदस्मदोनते आदेशा भवन्ति ।

भाषार्थ-श्लोकके पादके आदिमें वर्त्तमान जो युष्मद् अस्मद् तिनको ते मे वां नौ वः नः यह आदेश नहीं होयँ जैसे ।

तवयेशत्रवोराजन्ममतेप्यतिशत्रवः ॥
तवमित्राणियानिस्युर्ममित्राणितान्यपि ॥ १ ॥
रुद्रोविश्वेश्वरोदेवोयुष्माकंकुलदेवता ॥
सएवभगवान्नाथोअस्माकंपापनाशनः ॥ २ ॥

भाषार्थ-प्रथम श्लोकके विषे प्रत्येक पादके आदिमें तव तथा ममको (ते) (मे) यह आदेश नहीं हुए और द्वितीय श्लोकमें द्वितीय और चतुर्थपादके आदिमें युष्माकं तथा अस्माकं को (वः)(नः) यह आदेश नहीं हुए । अर्थ । हेराजन् ! तुम्हारे जो शत्रुहैं वह मेरेभी अति शत्रुहैं और तुम्हारे जो मित्रहैं वह मेरेभी मित्रहैं ॥ १ ॥ जगत्के स्वामी रुद्रदेव तुम्हारे कुलदेवहैं और वह ही भगवान्नाथ हमारे पापनाशकहैं ॥ २ ॥

पादादौकिम् । पान्तुवोनरसिंहस्यनखलांगलकोटयः ॥
हिरण्यकशिपोर्वक्षःक्षेत्रासृक्कर्दमारुणाः ॥ ३ ॥

भाषार्थ-इसमें युष्मान्के स्थानमें जो कि, (वः) आदेश हुआहै वह श्लोकके पादके आदिमें नहीं है । अर्थ । नृसिंहके नख रूप हलोंके कोटि अर्थात् अग्रभाग तुम्हारी रक्षा करैं कैसे हैं वह नखरूप हलोंके अग्रभाग कि, हिरण्यकशिपुके वक्षःस्थलरूप क्षेत्रमें जो रुधिररूप कीचहै उसकरके अरुण नाम लाल हैं ॥ (१)

---

(१) (विशेष्यपूर्वं सम्बोधनेतरपूर्वं सम्बोधनं च हित्वाऽन्यस्मात्सम्बोधनात्परयोर्नैते । देवास्मान्पाहित्वहरे विष्णोस्मान्रक्ष सर्वदा । विशेष्यपूर्वात् संबोधनेतरपूर्वात्तु भवन्ति । हरे कृपालो नः पाहि सर्वदा रक्ष देव नः ।) भाषार्थ-विशेष्य पूर्व है जिसके ऐसे विशेषणरूप सम्बोधनको त्यागि और सम्बोधनसे अन्यपद पूर्व है जिसके ऐसेसम्बोधनको त्यागि अन्य सम्बोधनसे परे यह आदेश नहीं होय जैसे (देवास्मान्पाहि) इसमें सम्बोधनवाचक देव पदसे परे और सम्बोधनवाचक विष्णोपदसे परे अस्मद्का द्वितीयाबहुवचनान्त रूपहै इसकारण नः आदेश नहीं हुआ । अर्थ । हे देव तुम हमारी रक्षाकरो-

चादिभिश्च।

चादिभिः[३]--च[अ०]। द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) चादिभिरपियोगेनैते आदेशा भवंति। तव चायं प्रभुर्विष्णुर्मम चायं तथैव च।

भाषार्थ–चादिक अव्ययोंकर योग होनेपर यह आदेश नहीं होते हैं। भाव यह है कि, च–वा–ह–अह–एव–इन पांच अव्ययोंको समीप वर्ती होनेपर युष्मद् अस्मद्को ते मे वां नौ वस् नस् यह आदेश नहीं होते हैं जैसे (तव चायं) इसमें तवके समीप च अव्ययका योग है इसकारण तवके स्थानमें ते आदेश नहीं हुआ (ममचायन्तथैवच) इसमें ममके समीप भी च अव्ययका योग है इसकारण ममके स्थानमें मे आदेश नहीं हुआ। अर्थ। यह विष्णु तुम्हारे स्वामी हैं और यह विष्णु मेरे भी स्वामी हैं॥

चादिर्निपातः।

चादिः[१]--निपातः[१]। द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) (च) (वा) (ह) (अह) (एव) (इह) (एवम्) (नूनम्) (पृथक्) (विना) (नाना) (स्वस्ति) (अस्ति) (दोषा) (मृषा) (मिथ्या) (मिथस्) (वृथा) (अथ) (अथो) (ह्यस्) (श्वस्) (उच्चैस्) (स्वर्) (अन्तर्) (प्रातर्) (पुनर्) (भूयस्) (आहोस्वित) (उत) (सह) (ऋते) (अन्तरेण) (अन्तरा) (नमस्) (अलम्) (कृतम्) (अ-मा-नो-ना प्रतिषेधे) (ईषत्) (किल) (खलु) (वै) (आरात्) (दूरात्) (भृशम्) (यत्) (तत्) (स्वराश्च) इत्येवंचादिर्गणो निपातसंज्ञो भवति।

भाषार्थ–चसे लेकर स्वर अर्थात् चतुर्दश स्वर पर्यन्त आदि शब्दसे (साकं)

हे नृसिंहावतार हे विष्णो तुम हमारी सर्वदा रक्षाकरो॥ विशेष्य पूर्व सम्बोधनसे सम्बोधनेतरपूर्व सम्बोधनसे यह आदेश होतेहैं (हरे कृपालो नः पाहि) इसमें सम्बोधनवाचक विशेषण रूप कृपालोपदसे पूर्व विशेष्यरूप। हरे। यह विद्यमानहै इसकारण कृपालोपदसे परे अस्मद्के द्वितीयाके बहुवचनान्त रूपको (नः) आदेश हुआहै। और सम्बोनवाचक देवपदसे पूर्व अन्यपद (रक्ष) यह विद्यमानहै इसकारण सम्बोधनवाचक देवपदसे अस्मद्के द्वितीया बहुवचनान्त रूपको (नः) आदेश हुआ है। अर्थ। हेहरे हे कृपालो तुम हमारी रक्षाकरो हे देव तुम सदैवही हमारी रक्षाकरो। इति॥

(सार्द्धं) (सत्रा) (अमा) (कच्चित्) (अयि) (अये) (ननु) (तु) (नु) (नक्तम्) (इति) (नाम) (मन्ये) (इव) इत्यादि गण निपात संज्ञकहैं ॥ (१)

तत्रादिर्विभक्त्यर्थे निपात्यते ।

तस्मिन्निति तत्र । यस्मिन्निति यत्र । कस्मिन्निति कुह क कुत्र । तस्मिन् काले तदा । यस्मिन्काले यदा । कस्मिन्काले कदा । तेन प्रकारेण तथा । केन प्रकारेण कथम् । अनेन प्रकारेण इत्थम् । तस्मादिति ततः । कुतः ।

---

(१) (च) यह पुनरर्थ तथा समुच्चयादिकमें वर्ते है (वा) यह विकल्पार्थ तथा उपमानार्थमें वर्ते है (ह) (अह) यह दोनों खेदार्थ तथा पादपूरणार्थकहैं (अह) यहभी खेदार्थ और आश्चर्यमें वर्त्ते है (एव) निश्चयार्थ और औपम्यमें वर्त्ते है (एवम्) यह इसप्रकार कर इस अर्थमें तथा अंगीकरण और पूर्वोक्त स्मरण तथा उपमाके विषे होताहै (नूनम्) निश्चयमें होताहै (पृथक्) भिन्नार्थवाचकहै (विना) अभावार्थ तथा वर्जनार्थमें होताहै (नाना) बहुप्रकारवाचकहै (स्वस्ति) कल्याणार्थवाचकहै (अस्ति) सत्तार्थवाचकहै (दोषा) रात्रिवाचकहै (मृषा—मिथ्या) यह दोनों असत्यार्थवाचक हैं (मिथस्) परस्परार्थ वाचकहै (अथ—अथो) यह दोनों आनन्तर्य्यार्थमें तथा मंगल और आरंभमें तथा अर्थान्तरके कहनेमें वर्त्ते हैं (ह्यस्) बीते हुए दिनका वाचकहै (श्वस्) आनेवाले दिनका वाचकहै (उच्चैः) उच्चतावाचकहै (तथा) अतिशयार्थवाचकहै (नीचैस्) नीचनार्थ तथा हीनतार्थकहै (स्वर्) स्वर्गवाचकहै (अन्तर्) मध्यार्थकहै (प्रातः) प्रभातवाचकहै (पुनर्—भूयस्) यह दोनों द्वितीयवारार्थक हैं (अहोस्वित्) यह वितर्कमें वर्ते हैं (उत) अथवार्थ वाचकहै (स्वित्) यहभी वितर्कमें वर्त्ते है (सह) सहार्थवाचकहै (ऋते) यह विनार्थमें होताहै (अन्तरेण) यहभी विनार्थमें होताहै (अन्तरा) यह मध्यार्थवाचकहै (नमस्) नमस्कारार्थवाचकहै (अलम्) भूषणार्थ तथा निवारण और पर्याप्त तथा सामर्थ्यमें वर्त्ते है (कृतम्) निवारण और पूरणार्थमें वर्त्ते है (अ) (मा) (नो) (ना) यह चारों प्रतिषेधार्थ अर्थात् वर्जमार्थवाचकहैं (ईषत्) यह अल्पार्थवाचकहै (किलखलु—वै) यह तीनों निश्चयार्थ तथा स्मरणार्थमें वर्त्ते हैं (आरात्) यह निकटार्थवाचकहै (दूरात्) दूरार्थवाचकहै (भृशम्) अत्यर्थवाचकहै (यत्) जिसकारणसे इस अर्थमें होताहै (तत्) तिसकारणसे इस अर्थमें होताहै और (स्वराश्च) अर्थात् अआ इई उऊ ऋॠ ऌॡ एऐ ओऔ यह चौदह निपात संज्ञक स्वर अर्थान्तर वाचकहैं जैसे (अ) सम्बोधन तथा निर्भत्सनमें होताहै (आ) वाक्यस्मरणमें होताहै (इ) सम्बोधनमें होताहै (ई) दुःख चिन्तनमें होताहै (उ) क्रोधोक्ति तथा निवारणमें होताहै (ऊ) प्रश्न तथा निश्चय और क्रोधमें होता है (ऋ—ऌ) यह दोनों क्षोभवाचक तथा लोभवाचकहैं (ए) सम्बोधनमें होताहै (ऐ) आश्चर्यमें होताहै (ओ) अनुनयमें होताहै (औ) भवत्यर्थमें होताहै (अं) अंगीकारमें होताहै (अः) भय और आश्चर्यमें होताहै (साकं—सार्द्धं—सत्रा—अमा) यह चारों सहार्थमें होतेहैं (अयि—अये) यह दोनों मृदु सम्बोधनमें होते हैं (ननु) निश्चय और वितर्कमें होताहै (तु) पादपूरणमें और निश्चयार्थमें होवैहै (नु) विकल्पार्थ तथा प्रश्नमें होताहै (नक्तं) रात्रि वाचकहै (इति) समाप्त्यर्थमें होताहै (नाम) कोमलामन्त्रणमें होवैहै (मन्ये) यह वितर्कमें होवैहै (इव) उपमार्थवाचक है । इसीप्रकार और भी अव्ययोंके अर्थ कोशादिकसे जानने योग्यहैं यहाँपर विस्तारभयसे शेष अव्यय नहीं लिखेहैं। इति॥

अतः। इतः। यतः। सार्वविभक्तिकस्तसिरित्यके। पूर्वस्मिन्निति पुरस्तात्। परस्मिन्निति परेण। आहिचदूरे। दक्षिणाहि वसन्तिचाण्डालाः।

भाषार्थ–तत्रादि गण विभक्त्यर्थमें निपातसे सिद्ध होता है। जैसे तस्मिन् इस अर्थमें निपातसे (तत्र) यह रूप होता है। यस्मिन् इस अर्थमें निपातसे (यत्र) यह रूप होताहै। कस्मिन् इस अर्थमें निपातसे (कुह–क्व–कुत्र) यह रूप होते हैं। इसी प्रकार युष्मद् अस्मद् शब्दोंको त्यागि सर्वादिगणसे सप्तम्यर्थमें (त्र) यह होता है। जैसे (सर्वत्र) (उभयत्र) (अन्यत्र) (एकत्र) (पूर्वत्र) (परत्र) इत्यादि॥ तस्मिन्काले। इस अर्थमें निपातसे (तदा) यह रूप होता है। यस्मिन्काले इस अर्थमें निपातसे (यदा) यह रूप होता है। कस्मिन्काले। इस अर्थमें निपातसे (कदा) यह रूप होता है। इसी प्रकार (एकदा) (सर्वदा) (सदा) (अन्यदा) यह रूप निपातसे होते हैं। तेन प्रकारेण इस अर्थमें निपातसे (तथा) यह रूप होता है। येन प्रकारेण इसअर्थमें निपातसे (यथा) यह रूप होता है। केन प्रकारेण इस अर्थमें निपातसे (कथम्) यह रूप होता है. अनेन प्रकारेण इस अर्थमें निपातसे (इत्थम्) यह रूप होता है। सर्वेण प्रकारेण इस अर्थमें निपातसे (सर्वथा) यह रूप होता है। इसी प्रकार (अन्यथा) (इतरथा) (अपरथा) यह रूप निपातसे होते हैं। तस्मात् इस अर्थमें निपातसे (ततः) यह रूप होता है। यस्मात् इस अर्थमें निपातसे (यतः) यह रूप होता है। कस्मात् इस अर्थमें निपातसे (कुतः) यह रूप होता है। अस्मात् इस अर्थमें निपातसे (अतः) (इतः) यह रूप होते हैं। अमुष्मात् इस अर्थमें निपातसे (अमुतः) यह रूप होताहै। इसी प्रकार पंचम्यर्थमें समस्त नामोंसे तस् प्रत्यय करने योग्य है जैसे (ग्रामतः) (लोकतः) (सर्वतः) इत्यादि॥ एक आचार्य यह कहते हैं कि, तस् प्रत्यय सार्वविभक्तिक होता है अर्थात् तस् प्रत्यय सर्व विभक्त्यर्थोंसे होता है। जैसे (अयम्) इस अर्थमें (अतः) और (क्व) इस अर्थमें (कुतः) और (पार्श्वे) इस अर्थमें (पार्श्वतः) और पूर्वस्याम् इस अर्थमें (पूर्वतः) इसी प्रकार (सर्वतः) (इतः) इत्यादि जानने योग्य हैं। पूर्वस्मिन्काले वा पूर्वस्मिन् देशे वा पूर्वस्यां दिशि। इन अर्थोंके विषे (पुरस्तात्) यह रूप निपातसे होता है। परस्मिन् काले वा परस्मिन्देशे वा परस्यांदिशि। इन अर्थोंमें निपातसे (परेण) यह रूप होता है। अधः। इस अर्थमें निपातसे (अधस्तात्) यह रूप होता है (उपरि) इस अर्थमें निपातसे (उपरिष्टात्) यह रूप होता है। दूर अर्थमें आहि प्रत्यय होता है। जैसे (दक्षिणाहि वसन्ति चाण्डालाः) दक्षिणस्यांदिशि दूरे चाण्डाला वसन्ति। अर्थ–दक्षिणदिशामें दूर चाण्डाल वसते हैं (उत्तराहि वसन्ति कौरवाः) उत्तरस्यां दिशि दूरे कौरवा वसन्ति। अर्थ–उत्तर दिशाके विषे दूर कौरव वसते हैं॥

किमः सामान्ये चिदादिः । कश्चित् । कौचित् । केचित् । काचित् । कश्चन । क्वचित् । क्वचन । तदधीनकात्स्र्न्ययोर्वासात् । राजाधीनम् । राजसात् । भस्मसात् । ऊर्युररर्यंगीकरणे । ऊरीकृत्य । उररीकृत्य । सद्यादिः काले निपात्यते । सद्यः । अद्य । सपदि । अधुना । इदानीम् । सांप्रतम् । संप्रति । आशु । शीघ्रम् । झटिति । तूर्णम् । पूर्वेद्युः । परेद्युः । यर्हि । तर्हि । यर्हि । कर्हि । इत्यादि ।

भाषार्थ–किम् शब्दसे सामान्य अर्थमें चिदादि प्रत्यय होवें हैं। भाव यह है कि, तीनों लिंगोंके विषे सिद्ध हुए अथवा निपातसे सिद्ध हुए किम् शब्दसे अनिश्चयार्थमें समस्त विभक्तियोंमें चित् चन प्रत्यय होवै हैं। जैसे पुँल्लिगमें प्रथमाविभक्तिके विषे सिद्ध हुए किम् शब्दसे चित् प्रत्यय अज्ञातार्थमें करनेसे रूप हुआ (कश्चित्) इसीप्रकार (कौचित्) (केचित्) आदिक जानने। स्त्रीलिंगमें प्रथमाविभक्तिके विषे सिद्ध हुए किम् शब्दसे चित् प्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ (काचित्) इसी प्रकार समस्त विभक्तियोंके रूप जानने। और सप्तम्यर्थमें. निपातसे सिद्ध हुए किम् शब्दसे क्व रूपसे चित् चन प्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुए (क्वचित्) (क्वचन) इत्यादि। तदधीन और कात्स्र्न्य इन अर्थोंके विषे विकल्प करके सात् प्रत्यय होवै है। भाव यह है कि जो जिसके अधीन हो वह तदधीन होताहै इस अर्थमें और समग्रतार्थमें सात् प्रत्यय होवै है विकल्प करके। राज्ञोधीनम् इस अर्थमें राजन् शब्दसे सात् प्रत्यय करनेपर (नाम्नोनोलोपशधौ) इसकर सिद्ध हुआ (राजसात्) सर्वं भस्म भवति । इस अर्थमें भस्मन् शब्दसे सात् प्रत्यय करनेपर (नाम्नोनोलोपशधौ) इसकर सिद्ध हुआ (भस्मसात्) ऊरी और उररी यह दोनों अंगीकरण अर्थमें होवै हैं जैसे। अंगीकृत्य। इस अर्थमें (ऊरीकृत्य) (ऊररीकृत्य) यह होवै हैं सद्यआदिगण काल अर्थमें निपातसे सिद्ध होताहै। भाव यह है कि, (सद्यः) (अद्य) (सपदि) (अधुना) (इदानीम) (सांप्रतम्) (संप्रति) (आशु) (शीघ्रम्) (झटिति) (तूर्णम्) (पूर्वेद्युः) (परेद्युः) (यर्हि) (तर्हि) आदि शब्दसे (परुत्) (परारि) (ऐषमः) (अपरेद्युः) (अन्येद्युः) (उत्तरेद्युः) (उभयेद्युः) इत्यादिक काल अर्थमें निपात हैं ॥ (१)

---

(१) (सद्यः) यह तत्कालार्थवाचकहै (अद्य) यह सांप्रत दिनमें वर्त्तै है (सपदि) यह शीघ्रार्थवाचकहै (अधुना)(इदानीम्)(सांप्रतम्)(सम्प्रति) यह वर्त्तमान क्षणमें होवें हैं(आशु)(शीघ्रम्)(झटिति) (तूर्णम्) यह शीघ्रार्थवाचकहैं (पूर्वेद्युः) यह पूर्वदिनवाचक है (परेद्युः) यह परदिनवाच-

प्रादिरुपसर्गः ।

प्रादि[1]ः—उपसर्गः । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) प्र । परा । अप । सम् । अनु । अव । निस् । निर् । दुस् । दुर् । अभि । वि । आङ् । नि । अधि । अपि । अति । सु । उत् । प्रति । परि । उप । अत् । अन्तर । प्रादुः । आविः । अयं गण उपसर्गसंज्ञकः ।

भाषार्थ—(प्र) इससे लेकर (आविः) इस पर्यन्त यह गण उपसर्गसंज्ञक है ॥

प्राग्धातोः ।

प्राक्—धातोः । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) उपसर्गा धातोः प्राक् प्रयोक्तव्याः ।

भाषार्थ—उपसर्ग धातुसे पूर्व प्रयुक्त करने योग्य हैं । भाव यह है कि, प्रसे लेकर जो उपसर्ग हैं वह भ्वादि धातुसे पूर्व प्रयुक्त होते हैं जैसे भू धातुसे क्रिया योगमें प्र उपसर्ग पूर्वप्रयुक्त करनेपर (प्रभवति) ऐसा होता है ॥

तदव्ययम् ।

तत्—अव्ययम् । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) तदिदं चादि शब्दरूपमव्ययसंज्ञं भवति । क्त्वाद्यन्तं च ।

भाषार्थ—सो यह पूर्वोक्त चादि शब्दरूप अव्ययसंज्ञक होता है और क्त्वादिक प्रत्यय हैं अन्तमें जिसके ऐसा शब्दभी अव्ययसंज्ञक होताहै । भाव यह है कि, (च) इससे लेकर (आविः) उपसर्ग पर्यन्त जो शब्दरूप है उनकी अव्यय संज्ञा है और जिसके अन्तमें (क्त्वा) और आदि शब्दसे (तुम्) (ल्यप्) (धा) (कृत्वस्) (णम्) (वत्) (आम्) (सु) (शस्) (डा) (च्वि) यह प्रत्यय होवैं वहभी अव्ययसंज्ञक होता है ॥

अव्ययाद्विभक्तेर्लुक् ।

अव्ययात्—विभक्तेः—लुक् । त्रिपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) अव्ययात्परस्या

क है (यर्हि) (तर्हि) (यदि) यह क्रमसे यदा तदा यदा वाचकहैं और (परुत्) यह बीते हुए वर्षका वाचकहै (परारि) यह बीते हुए वर्षसे पूर्ववर्षका वाचकहै (ऐषमः) यह वर्त्तमान वर्षका वाचकहै (अपरेद्युः) यह अपर दिनका वाचकहै (अन्येद्युः) यह अन्य दिनका वाचकहै (उत्तरेद्युः) यह उत्तर दिनका वाचकहै (उभयेद्युः) यह उभय दिनका वाचकहै । कालार्थवाचक अन्य अव्ययोंका अर्थ कोशसे जानना । इति ॥

विभक्तेर्लुग्भवति न शब्दनिर्देशे । अव्ययानां न च लिंगादिनियमः । उक्तं च-"सदृशं त्रिषु लिंगेषु सर्वासु च विभक्तिषु । वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम् ॥ १ ॥" उक्तान्यलिंगान्यव्ययानि ॥

भाषार्थ-अव्ययसे परे विभक्तिमात्रका लुक् होता है परन्तु शब्दनिर्देशके विषे अव्ययसे विभक्तिका लुक् नहीं होताहै अर्थात् अव्ययको शब्दादेश करनेपर विभक्तिका लुक् नहीं होता है और अव्ययोंको लिंगादि भेद भी नहीं है अर्थात् लिंग विभक्ति वचन भेद भी नहीं हैं यह कहाभीहै शास्त्रान्तरमें-जो कि, तीनों स्त्रीपुंनपुंसकलिंगोंमें सदृश अर्थात् एक समान रूप और समस्त विभक्तियोंमें एक समान रूप और समस्त वचनोंके विषे एक समान रूप होकर नहीं रूपान्तरको प्राप्त होताहै वह अव्यय कहाजाता है ॥ १ ॥ कहे हुए अव्यय अलिंग अर्थात् पुं स्त्री नपुंसक लिंगभेद वर्जित हैं　　॥ इत्यव्ययप्रकरणम् ॥

अधुना लिंगविशेषविजिज्ञापयिषया स्त्रीप्रत्ययाः प्रस्तूयन्ते ।

भाषार्थ-अव्यय कहनेके अनन्तर अब लिंगविशेषको विशेषकर जनानेकी इच्छासे स्त्रीलिंगके जनानेवाले जो प्रत्यय हैं वह प्रारम्भ किये जाते हैं। भाव यह है कि, स्त्रीलिंग भेदके जनानेके अर्थ स्त्रीलिंगके जनानेवाले प्रत्यय कहे जाते हैं ॥

आबतः स्त्रियाम् ।

आप्-अतः-स्त्रियाम् । त्रिपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) अकारान्तात्स्त्रियां वर्त्तमानादाप् प्रत्ययो भवति । जाया । माया । मेधा । श्रद्धा । धारा-इत्यादि ।

भाषार्थ-स्त्रीलिंगके विषे वर्त्तमान जो अकारान्त नाम उससे आप् प्रत्यय होवेहै । भाव यह है कि, जो नाम कि स्त्रीलिंगत्व कर विवक्षित हो और अकार जिसके अन्तमें होय तो उससे आप् प्रत्यय होवेहै । जैसे आप् प्रत्यय करनेसे रूप सिद्ध हुए (जाया) (माया) (मेधा) (श्रद्धा) (धारा) (इत्यादि ॥

(१) अजादेश्चाब्वक्तव्यः । अजा । एडका । कोकिला । बाला । शूद्रा । गणिका ।

---

(१) यदि कहो कि, अजादिक शब्दसे आप् प्रत्यय (आबतः स्त्रियाम्) इस सूत्रकर होसक्ताहै फिर यह सूत्र क्यों लिखाहै तहाँ यह जानना चाहिये कि, यदि इस सूत्रका विधान न किया जाता तो (जातेरयोपधात्) इस सूत्रकर ईप् प्रत्यय होनेकी संभावना होती अतः ईप् प्रत्ययके निषेधके लिये यह सूत्र है ॥

भाषार्थ-अजादिगणसे जातिवाची होनेपरभी आप् प्रत्यय वक्तव्य है। जैसे अकारान्त अज शब्दसे स्त्रीलिंगके विषे आप् प्रत्यय करनेपर (सवर्णे दीर्घः सह) इसकर सिद्ध हुआ (अजा) इसीप्रकार (एडका) (कोकिला) (वाला) (शूद्रा) (गणिका)(अश्वा) (चटका)(मूषिका) (बलाका) (मत्या) यह अजादिक हैं ॥

काप्यतः ।

काँपि--ई-अतः । त्रिपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) कापि परे पूर्वस्थाकारस्य इकारो भवति । कारिका । पाचिका । पाठिका इत्यादि ।

भाषार्थ-काप् पर हुए संते पूर्वके अकारको इकार होय। भाव यह है कि,जिस अकारसे परे क सहित आप् प्रत्यय विद्यमान हो उस अकारके स्थानमें इकार होय। जैसे कारकमें (आबतः स्त्रियाम्) इसकर आप् प्रत्यय करनेपर रकार उत्तरवर्त्ती अकारसे परे कसहित आप् प्रत्यय विद्यमान हुआ। इस कारण उस अकारके स्थानमें इकार करनेपर सिद्ध हुआ (कारिका)इसीप्रकार (पाचिका) (पाठिका) इत्यादिक जानने और कहीं काप् प्रत्यय पर हुए संते अकार को इकार होताभी नहीं है जैसे (बहुव्राजका) (वहुपाठका) और कन्या शब्दसे काप् प्रत्यय हुए संते ह्रस्व होताहै जैसे (कन्यका) ॥

"वष्टिभागुरिरल्लोपमवाप्योरुपसर्गयोः । आपं चैव हसान्तानां यथा वाचा निशा दिशा ॥" अपिधानम् । पिधानम् । अवगाहः । वगाहः । वाच्--वाचा । निश्--निशा । दिश्--दिशा ।

भाषार्थ-भागुरि नाम आचार्य (अव) तथा (अपि) इन उपसर्गोंके अकारके लोपकी इच्छा करतेहैं और हसान्तस्त्रीलिंग शब्दोंको आप् प्रत्ययकी इच्छा करतेहैं। जैसे (अवगाहः) (अपिधानम्) इनमें अव और अपि उपसर्गके अकारका लोप करनेसे रूप हुए (वगाहः) (पिधानम्) और हसान्त दिश् शब्दसे आप् प्रत्यय करनेपर रूप हुआ। (दिशा) इसीप्रकार (वाचा) (निशा) यह शब्द जानने ॥

ह्रस्वो वा ।

ह्रस्वः-वा । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) स्त्रियां कापि परे तरादौ च पूर्वस्य ह्रस्वो वा भवति । वेणिका--वेणीका । नदिका--नदीका । श्रेयसितरा--श्रेयसीतरा । नौकादौ तु ह्रस्वो न भवति । निपातानामनेकार्थत्वात् । निश्चयेन पतंत्यनेकेष्वर्थेष्विति निपाताः ।

भाषार्थ-स्त्रीलिंगके विषे काप् पर हुए संते और तरादिक अर्थात् तर तम यह तद्धित प्रत्यय पर हुए संते पूर्वको ह्रस्व विकल्प करके होय। जैसे नदी शब्दसे (स्वार्थे कः) इस तद्धित सूत्रकर क प्रत्यय किया फिर (आबतः स्त्रियाम्) इसकर आप् प्रत्यय करनेपर नदी शब्दके दकार उत्तरवर्त्ती ईकारसे काप् परे विद्यमान रहा इसकारण एक जगह उस ईकारको ह्रस्व किया तब रूप हुआ (नदिका) और जहाँ ह्रस्व नहीं हुआ तहाँ रूप हुआ (नदीका) और श्रेयसी शब्दसे (तरतमेय-स्विष्ठाः प्रकर्षे) इस तद्धित सूत्रकर तर प्रत्यय किया फिर (आबतः स्त्रियाम्) इसकर आप् प्रत्यय करनेपर श्रेयसी शब्दके सकार उत्तरवर्त्ती ईकारसे परे तर युक्त आप् प्रत्यय वर्त्तमान हुआ इसकारण एक जगह उस ईकारको ह्रस्व किया तब रूप हुआ (श्रेयसितरा) और जहाँ ह्रस्व नहीं हुआ तहाँ रूप हुआ (श्रेयसीतरा) और नौका आदिकके विषे ह्रस्व नहीं होताहै। सूत्रमें वाके ग्रहणसे यहभी विवक्षाहै यदि कहो कि, विकल्पार्थसूचक वा शब्द कैसे निषेधार्थको सूचन करता है तहाँ कहतेहैं कि, निपातोंको अनेकार्थवाचक होनेसे निश्चय कर अनेक अर्थोंके विषे जो प्रवृत्त होते हैं वह निपात होतेहैं। जैसे (च) शब्द पुनरर्थ तथा समुच्चयादिकोंमें होताहै तिसी प्रकार (वा) शब्द कहीं २ विकल्पार्थ और कहीं २ निषेधार्थको सूचन करताहै॥

न्रण ईप्।

न्रणः- ईप्। द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) नकारान्तादृकारान्तादणन्ताच्च (१) स्त्रियामीप्प्रत्ययो भवति। दंडिनी। दंतिनी। कारिणी। मालिनी। ईपि राज्ञोऽल्लोपो वक्तव्यः। राज्ञी। शुनी। कर्त्री। हर्त्री। औपगवी।

भाषार्थ-नकारान्त और ऋकारान्त और अण् प्रत्ययान्त शब्दसे स्त्रीलिंगके विषे ईप् प्रत्यय होवै है। भाव यह है कि, जिस शब्दके अन्तमें नकार होय अथवा ऋकार होय अथवा अण् प्रत्यय होय उससे स्त्रीलिंगमें ईप् प्रत्यय होता है। जैसे। दण्डिन् यह शब्द नकारान्तहै इसकारण स्त्रीलिंगके विषे ईप् प्रत्यय करनेसे रूप हुआ (दण्डिनी) इसीप्रकार। दन्तिन्। इसका स्त्रीलिङ्गके विषे हुआ (दन्तिनी) करिन्। इसका स्त्रीलिंगके विषे हुआ (करिणी) और। मालिन्। इसका स्त्री-लिंगके विषे हुआ (मालिनी) और नकारान्त राजन् शब्दसे ईप् प्रत्यय करनेपर

(१) चकार ग्रहणसे पंचादिकोंको नकारान्त होनेपरभी और स्वस्रादिकोंको ऋकारान्त होनेपर भी ईप् प्रत्यय नहीं होवै। जैसे (पंच) (सप्त) (स्वसा) (दुहिता) (ननांदा) (माता) (तिस्रः) (चतस्रः) इत्यादि॥

रूप स्थित हुआ। राजन् ई। फिर ईप् प्रत्यय हुए संते राजन् शब्दके अकारका लोप वक्तव्य है। इससे राजन् शब्दके अकारका लोप करनेपर रूप स्थित हुआ। राजन् ई। फिर (स्तोः श्चुभिः श्चुः) इसकर नकारके स्थानमें ञकार करनेपर (ज्ञञोर्ज्ञः) इसकर ज्ञ किया तब रूप सिद्ध हुआ (राज्ञी) और श्वन् शब्दसे स्त्रीलिंगके विषे ईप् प्रत्यय करनेपर (श्वादेः) इसकर वकारके स्थानमें उकार करनेपर रूप हुआ (शुनी) और ऋकारान्त कर्तृ शब्दसे स्त्रीलिंगके विषे ईप् प्रत्यय करनेपर (ऋरम्) इसकर रूप सिद्ध हुआ (कर्त्री) और इसी प्रकार (हर्त्री) और अण् प्रत्ययान्त औपगव शब्दसे ईप् प्रत्यय करनेपर रूप स्थित हुआ। औपगव ई-॥

यस्य लोपः।

यस्य-लोपः। द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) इश्च अश्च यः तस्य लोपो भवति तद्धिते स्वरे यकारे ईपि च परे।

भाषार्थ-इवर्ण तथा अवर्णका लोप होय तद्धित स्वर और यकार पर हुए संते और चकारसे ईप् प्रत्यय पर हुए संते। भाव यह है कि, अकार आकार इकार ईकार इनका लोप होवै है तद्धितसम्बन्धी स्वर और यकार तथा ईप् प्रत्यय पर हुए संते। जैसे। औपगव ई। इसमें औपगव शब्दके अकारसे ई प्रत्यय परे विद्यमान है इस कारण अकारका लोप करने पर रूप हुआ (औपगवी)॥

ष्ट्वितः।

ष्ट्वितः। एकपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) षकारटकारउकारऋकारानुबन्धात्स्त्रियामीप्प्रत्ययो भवति। ष्। वराकी। ट्। कुरुचरी। उ। गोमती। ऋ। पचन्ती।

भाषार्थ-षकार वा टकार वा उकार वा ऋकार है अनुबन्ध अर्थात् इत् जिसका ऐसे शब्दसे स्त्रीलिङ्गके विषे ईप् प्रत्यय होवै है। भाव यह है कि, जिस शब्दका कि, षकार इत् होवै वा टकार इत् होवै वा उकार इत् होवै वा ऋकार इत् होवै ऐसे शब्दसे स्त्रीलिङ्गके विषे ईप् प्रत्यय होता है। जैसे षकार इत्वाला। वराक। शब्द है इस कारण स्त्रीलिंगमें वराक शब्दसे ईप् प्रत्यय करने पर (यस्य लोपः) इसकर रूप हुआ (वराकी) और टकार इत्वाला। कुरुचर। शब्द है इसकारण स्त्रीलिंगके विषे ईप् प्रत्यय करनेपर (यस्य लोपः) इसकर रूप सिद्ध हुआ (कुरुचरी) और उकार इत्वाला। गोमत्। शब्दहै इसकारण स्त्रीलिंगमें ईप् प्रत्यय करनेपर

रूप हुआ (गोमती) और ऋकार इत्वाले । पचत् । शब्दसे स्त्रीलिंगमें ईप् प्रत्यय करनेपर रूप स्थित हुआ पचत् । ई ॥

अप्ययोरान्नित्यम् ।

अप्ययोः-आत्-नित्यम् । त्रिपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) अप्प्रत्ययय-प्रत्ययसम्बन्धिनोऽवर्णात्परस्य शतुर्नित्यं नुमीकारे ईपि च परे । पचन्ती । पठन्ती इत्यादि ।

भाषार्थ-अप् प्रत्यय तथा य प्रत्ययसम्बन्धी अवर्णसे परे जो शतृ प्रत्यय तिसको नुम् आगम होय ईकार तथा ईप् प्रत्ययपर हुए संते । जैसे । पचत् ई । इसमें अप् प्रत्ययसम्बन्धी अकारसे परे शतृ प्रत्यय विद्यमानहै इसकारण शतृ प्रत्ययको नुम् आगम किया क्योंकि परे ईप् प्रत्यय विद्यमान है। तब नुम् आगम स्वरसे पिछाडी होनेसे रूप स्थित हुआ। पचन्त् ई। फिर (स्वरहीनं परेण संयोज्यम्) इसका सिद्ध हुआ (पचन्ती) इसी प्रकार (पठन्ती) आदिक जानने ॥

नदादेः ।

नदादेः । एकपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) नदादेर्गणात्स्त्रियामीप्प्रत्ययो भवति । नदी । गौरी । गौतमी । देवी ।

भाषार्थ-नदादि गणसे स्त्रीलिङ्गके विषे ईप् प्रत्यय होवैहै । अर्थात् नद । गौर । गौतम आदिकसे स्त्रीलिङ्गके विषे ईप् प्रत्यय होताहै । जैसे नद शब्दसे स्त्रीलिंगके विषे ईप् प्रत्यय करनेपर (यस्य लोपः) इसकर रूप हुआ (नदी) इसी प्रकार (गौरी) (गौतमी) (देवी) (नर्त्तकी) (तैषी) (पौषी) (मत्स्यी) (अनडुही) (अनड्वाही) (मातामही) (पितामही) (महिषी) (सूकरी) (आगस्ती) (त्रिदेशी) यह समस्त जानने योग्य हैं ॥

इंद्रादेरानीप् ।

इंद्रादेः-आनीप्-द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) इंद्रादेर्गणात्स्त्रियामानीप् प्रत्ययो भवति । इन्द्राणी । भवानी। शर्वाणी । रुद्राणी।मृडानी । वरुणानी। मातुलोपाध्यायक्षत्रियाचार्यसूर्याद्वा । मातुलानी । मातुली । उपाध्यायानी । उपाध्यायी । क्षत्रियाणी । क्षत्रिया । आचार्याणी । हिमारण्ययोराधिक्ये आनीप्प्रत्ययो भवति । महद्धिमम्-हिमानी । महदरण्यम्-अरण्यानी ।

भाषार्थ-इंद्रादिक गणसे स्त्रीलिंगके विषे आनीप् प्रत्यय होवैहै । भाव यहहै कि, इंद्र, वरुण, भव, शर्व, रुद्र, मृड, हिम, अरण्य, यव, यवन, मातुल, आचार्य

इन शब्दोंसे स्त्रीलिङ्गके विषे आनीप् प्रत्यय होय । जैसे इंद्र शब्दसे स्त्रीलिङ्गके विषे आनीप् प्रत्यय करने पर (यस्य लोपः) इसकर सिद्ध हुआ (इंद्राणी) यह इंद्रकी स्त्रीका नाम हुआ। इसी प्रकार (भवानी) (शर्वाणी) (रुद्राणी) (मृडानी) (वरुणानी) आदिक जानने । मातुल और उपाध्याय और क्षत्रिय और आचार्य और सूर्य इन शब्दोंसे स्त्रीलिङ्गके विषे विकल्पकरके आनीप् प्रत्यय होय । जैसे मातुल शब्दसे स्त्रीलिंगके विषे एक जगह आनीप् प्रत्यय करनेपर (यस्य लोपः) इसकर हुआ (मातुलानी) और जहाँ आनीप् प्रत्यय नहीं हुआ तहाँ (पुंयोगे च) इस अगले सूत्रकर ईप् प्रत्यय करनेपर (यस्य लोपः) इसकर रूप हुआ (मातुली) यह मातुली मामाकी स्त्रीका नामहै । इसीप्रकार (उपाध्यायानी) (उपाध्यायी) यह उपाध्यायकी स्त्रीका नामहै और जहाँ स्वयं व्याख्या करनेवाली स्त्री हो तहाँ यकार उपधाभूत होनेसे (जातेरयोपधात्) इसकर ईप् प्रत्यय नहीं होय । किन्तु आप् प्रत्यय होय । तब रूप हुआ (उपाध्याया) यह स्वयं व्याख्या करनेवाली स्त्रीका नामहै । और (आचार्यानी) (आचार्यी) यह आचार्यकी स्त्रीका नामहै और जहाँ स्वयं यज्ञकरानेवाली स्त्री होय तहाँ यकार उपधाभूत होनेसे ईप् प्रत्यय नहीं होय किन्तु आप् प्रत्यय होय तब रूप हुआ (आचार्या) यह स्वयं यज्ञ करानेवाली स्त्रीका नामहै । और (क्षत्रियाणी) (क्षत्रियी) यह क्षत्रियकी स्त्रीके नाम हैं और जहाँ स्वयंही जातिवाची होय तहाँ यकार उपधाभूत होनेसे ईप् प्रत्य नहीं होय किन्तु आप् प्रत्यय होय तहाँ रूप हुआ (क्षत्रिया) यह क्षत्रिय जाति स्त्रीका नामहै । हिम और अरण्य शब्दसे आधिक्य अर्थमें आनीप् प्रत्यय होताहै जैसे महत् हिम होय सो कहिये (हिमानी) और महत् अरण्य नाम वन होय सो कहिये (अरण्यानी) ॥

ईप् समाहारे गुणश्च । त्रयी । पुंयोगे च । शूद्री । गणकी ।

भाषार्थ–समाहार अर्थके विषे ईप् प्रत्यय होय पूर्व नामि संज्ञक स्वरके स्थानमें गुण होय । जैसे । त्रयाणां समाहारः तीनोंका जो इकठा होनाहै इस अर्थमें त्रिशब्दसे ईप् प्रत्यय करनेपर पूर्व नामि संज्ञक इकारके स्थानमें एकार गुण किया तब रूप स्थित हुआ । त्रेई । फिर (ए अय्) इस सूत्रकर सिद्ध हुआ (त्रयी) इसीप्रकार सिद्ध हुआ (द्वयी) पुरुषके योग होनेपर ईप् प्रत्यय होताहै । जैसे शूद्रस्य भार्या–शूद्रकी स्त्री इस अर्थमें शूद्र शब्दसे ईप् प्रत्यय करने पर (यस्य लोपः) इसकर सिद्ध हुआ (शूद्री) इसीप्रकार गणकस्य भार्या–गणककी स्त्री इस अर्थमें ईप् प्रत्यय करने पर (यस्यलोपः) इसकर सिद्ध हुआ (गणकी) ॥

जातेरयोपधात् ।

जातेः--अयोपधात् । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) जातिवाचिनोऽयकारो-

पधादकारान्तात् स्त्रियामीप्प्रत्ययो भवति। मेषी । सूकरी । हंसी । कुक्कुटी । ब्राह्मणी । अयकारोपधग्रहणात् । क्षत्रिया । वैश्या ।

भाषार्थ–नहीं है यकार उपधा संज्ञक जिसके विषे ऐसे (१) जातिवाची अकारान्त शब्दसे स्त्रीलिंगके विषे ईप् प्रत्यय होताहै । जैसे । मेष शब्दमें यकार उपधाभूत नहीं है और मेषशब्द जातिवाची तथा अकारान्तभी है इसकारण मेष शब्दसे स्त्रीलिंगके विषे ईप् प्रत्यय करनेपर (यस्य लोपः) इस कर सिद्ध हुआ (मेषी) इसी प्रकार (सूकरी) (हंसी) (कुक्कुटी) (ब्राह्मणी) आदिक जानने । अयकारोपध ग्रहणसे क्षत्रिय, वैश्य इत्यादिकसे स्त्रीलिंगके विषे ईप् प्रत्यय नहीं होय किन्तु आप् प्रत्यय होय तव रूप सिद्ध हुए (क्षत्रिया) (वैश्या) इत्यादि । भाव यह है कि, जिसका यकार उपधाभूत होवै ऐसे जातिवाची अकारान्त शब्दसे ईप् प्रत्यय नहीं होय किन्तु स्त्रीलिंगके विषे आप् प्रत्यय होय । जैसे । क्षत्रिय इसमें यकार उपधाभूतहै । इसकारण इसको जातिवाची तथा अकारान्त होनेपरभी ईप् प्रत्यय नहीं हुआ किन्तु आप् प्रत्यय करनेसे रूप सिद्ध हुआ (क्षत्रिया) इसीप्रकार (वैश्या) आदिक जानने ॥

प्रथमवयोवाचिनोऽत ईब्वक्तव्यः । कुमारी । किशोरी । कलभी इत्यादयः।प्रथमवयोग्रहणात् । वृद्धा । स्थविरा । इत्यादौ न ईप् । अद्-ग्रहणात् शिशुः ।

भाषार्थ–प्रथम शरीरावस्थावाची अकारान्त शब्दसे ईप् प्रत्यय वक्तव्यहै । जैसे कुमार । किशोर । कलभ इत्यादिक प्रथम शरीरावस्थावाची हैं और इनके अन्तमें अकारभीहै इसकारण इन शब्दोंसे स्त्रीलिंगके विषे ईप् प्रत्यय करनेपर (यस्य लोपः) इसकर सिद्ध हुए (कुमारी) (किशोरी) (कलभी) इत्यादिक यह तीनों अतिथोडी अवस्थावाली स्त्रीके नामहैं और प्रथमवयोग्रहणसे वृद्धा । स्थविरा । इत्यादिकमें ईप् न होवै । भाव यह है कि, प्रथमशरीरावस्थाका जो ग्रहण किया है इससे वृद्ध । स्थविर इत्यादिक अकारान्त शब्दसे ईप् प्रत्यय नहीं हो । किन्तु आप् प्रत्यय होय तव रूप सिद्ध हुए (वृद्धा) (स्थविरा) और अकारके ग्रहणसे (शिशुः) इत्यादिकसे ईप् प्रत्यय नहीं होय क्योंकि यह शब्द प्रथम शरीरावस्था वाचक तो है परन्तु अकारान्त नहीं ॥

स्वांगाद्वा ।

स्वांगात्–वा–द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) स्वांगवाचिनो वा स्त्रियामी-

(१) (नित्या एका अनेकसमवेता सामान्यरूपा जातिः) (अर्थ) जाति उसको कहते हैं कि, जो आप एकहो और अनेक रूपोंमें व्याप्त होकर नित्य रहे वह सामान्य रूप जाति होवैहै ॥

प्प्रत्ययो भवति । सुमुखी । मृगाक्षी । तन्वंगी । वाग्रहणात् पद्मवदना । कमलनयना इत्यादौ न ईप् ।

भाषार्थ–स्वांगवाची (१) शब्दसे स्त्रीलिङ्गके विषे ईप् प्रत्यय होवै है । भाव यहहै कि, जिस नामकें कि समासकें अन्तमें अपने अंगवाचक मुखकर्णादि शब्द आयाहो उससे स्त्रीलिङ्गके विषे ईप् प्रत्यय होताहै । जैसे बहुव्रीहि समासान्त सुमुख नामसे स्त्रीलिङ्गके विषे ईप् प्रत्यय करने पर (यस्य लोपः) इसकर रूप सिद्ध हुआ (सुमुखी) यह सुन्दर मुखवाली स्त्रीका नाम है । इसीप्रकार मृगाक्ष नामसे स्त्रीलिङ्गके विषे ईप् प्रत्यय करने पर (यस्य लोपः) इसकर सिद्ध हुआ (मृगाक्षी) यह मृगके नेत्रके समान नेत्रोंवाली स्त्रीका नामहै । और तन्वंग नामसे स्त्रीलिङ्गके विषे ईप् प्रत्यय करने पर (यस्य लोपः) इसकर सिद्ध हुआ (तन्वंगी) और सूत्रमें वाके ग्रहणसे पद्मवदन । कमलनयन इत्यादिमें ईप् प्रत्यय नहीं होय किन्तु स्त्रीलिङ्गके विषे आप् प्रत्यय करने पर रूप सिद्ध हुए (पद्मवदना) (कमलनयना) ॥

कृदिकारादक्तेरीब्वा वक्तव्यः । अंगुलिः । अंगुली । धूलिः । धूली । आजिः । आजी । अक्तेरिति विशेषणात् । कृतिः । भूतिः ।

भाषार्थ–क्तिप्रत्यय वर्जित कृदन्तके इकारसे ईप् प्रत्यय विकल्प करके वक्तव्यहै । भाव यह है कि, नहीं है क्ति प्रत्यय अंतमें जिसके ऐसे कृन्दन्तमें सिद्ध हुए स्त्रीलिंग इकारान्त शब्दसे ईप् प्रत्यय विकल्प करके होताहै । जैसे । अंगुलि । यह कृदन्तमें सिद्ध हुआ स्त्रीलिंग इकारान्त शब्दहै इस कारण इससे ईप् प्रत्यय करनेपर एक जगह (यस्य लोपः) इसकर सिद्ध हुआ (अंगुली) और जहाँ ईप् प्रत्यय नहीं हुआ तहाँ रूप हुआ । (अंगुलिः) इसी प्रकार (धूलिः) इसका एक जगह ईप् प्रत्यय करनेपर रूप हुआ (धूली) और जहाँ ईप् प्रत्यय नहीं हुआ तहाँ रहा (धूलिः) इसी प्रकार आजि । इसका हुआ (आजी) (आजिः) अक्तेः ।

---

(१) प्राणिस्थमद्रवन्मूर्त्तं स्वांगं स्यादविकारजम्–तत्तत् दृष्टमतत्स्थं चेत्स्थितं तद्वच्च तादृशि ॥ भाषार्थ–जो कि चेतन शरीरमें वर्त्तमान होकर स्वेदादिवर्जित आकार सहित और शोकादि विकारहीन जो होवै वह स्वांग कहाहै ॥ और जो पहिले प्राणीमें देखा गयाहो पीछे अचेतनमेंभी स्थितहो वहभी स्वांग कहा है और जो प्राणीके ही समान अचेतनरूप होवै उसमेंभी जो स्थित होवै वहभी स्वांग कहाहै । जो कि अचेतनमें स्थित होकर द्रवरूप आकारहीन विकारसे उत्पन्न हो वह स्वांग नहीं होताहै । जैसे (सुमुखाशाला) (बहुस्वेदापत्नी) यहाँ द्रवरूप होनेसे ईप् नहीं हुआ (बहुशोफा) यहाँ बिकारज होनेपर ईप् नहीं हुआ (सुकेशी सुकेशा वा रथ्या) यहाँ चेतनस्थरूपका अचेतनमें दीखनेसे विकल्प करके ईप् होताहै । सुस्तनी । सुस्तना वा प्रतिमा । यहाँ चेतनसदृश अचेतनमें स्थित होनेसे ईप् प्रत्यय विकल्प करके होताहै इति ॥

इस विशेषणसे । कृति । भूति इत्यादिकसे ईप् प्रत्यय नहीं होय । भाव यह है कि, कृति । भूति इत्यादि कृदन्तमें सिद्ध हुए स्त्रीलिंग इकारान्त शब्द क्तिप्रत्ययान्तहैं इसकारण ईप् प्रत्यय नहीं हुआ तब रूप रहै (कृतिः) (भूतिः) ॥

ऐ च मन्वादेः ।

ऐ--च--मन्वादेः । त्रिपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) मन्वादेर्गणात्स्त्रियामीप्प्रत्ययो भवति ऐकारादेशश्च । मनायी । वृषाकपायी । आदिशब्दात् । अग्नेर्भार्या स्वधा अग्नायी कुसितस्य भार्या कुसितायी । पूतक्रतोर्भार्या पूतक्रतायी । चकारात् मनोरौ वा । मनावी ।

भाषार्थ–मन्वादिक गणसे स्त्रीलिंगके विषे ईप् प्रत्यय होय और अन्त्य वर्णको ऐकारादेश होय । भाव यह है कि, मनु आदिक शब्दोंसे स्त्रीलिंगके विषे ईप् प्रत्यय होवै और अन्त्य वर्णके स्थानमें ऐकार आदेश होय जैसे मनु शब्दसे स्त्रीलिङ्गके विषे ईप् प्रत्यय किया और अन्त्य वर्ण उकारके स्थानमें ऐकार किया तब रूप हुआ मनै ई । फिर (ऐ आय्) इसकर रूप सिद्ध हुआ (मनायी) यह मनुकी स्त्रीका नाम है और इसी प्रकार (वृषाकपि) शब्दसे स्त्रीलिंगके विषे ईप् प्रत्यय किया और अन्त्यवर्ण इकारके स्थानमें ऐकार किया फिर (ऐ आय्) इसकर सिद्ध हुआ (वृषाकपायी) यह वृषाकपिकी स्त्रीका नाम है । इस प्रकार अग्नि शब्दका स्त्रीलिंगके विषे रूप हुआ (अग्नायी) यह अग्निकी स्त्रीका नामहै । और कुसित शब्दका स्त्रीलिंगके विषे रूप हुआ (कुसितायी) और पूतक्रतु शब्दका स्त्रीलिंगके विषे हुआ (पूतक्रतायी) और सूत्रमें चकारके ग्रहणसे मनु शब्दके उकारको औकार होय विकल्प करके ईप् प्रत्यय पर हुए संते । जैसे मनु शब्दसे एक जगह ईप् प्रत्यय करनेपर उकारको औकार किया फिर (औ आव्) इसकर रूप सिद्ध हुआ (मनावी) और एक जगह (मनायी) ऐसा हुआ ॥

पत्न्यादयः ।

पत्न्यादयः । एकपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) पत्न्यादयः शब्दा ईप्प्रत्ययान्तानिपातात्साधवः । समानैकवीरपिंडपुत्रदासेभ्यो बहुव्रीहौ पत्युर्नादेश ईप्च । समानः पतिर्यस्याः सा । सपत्नी । एकः पतिर्यस्याःसा । एकपत्नी । वीरः पतिर्यस्याः सा । वीरपत्नी । पिण्डः पतिर्यस्याः सा । पिंडपत्नी । एवम् । पुत्रपत्नी । भ्रातृपत्नी । दासपत्नी । इत्यादि अन्तर्वत्नी । पतिवत्नी । सखी ।

अशिश्वी। अर्धजरती। युवती। प्रतीची। प्राची इत्यादयः। दारशब्दो नित्यं बहुवचनान्तः पुँल्लिंगः। दाराः। दारान्। दारैः। दारेभ्यः २। दाराणाम्। दारेषु।

भाषार्थ-पत्नी आदिक ईप्प्रत्ययान्त शब्द निपातसे सिद्ध हैं। जैसे (पत्नी) यह भार्याका नाम है। समान, एक, वीर, पिंड, पुत्र, भ्रातृ, दास, इन शब्दोंसे परे जो पति शब्द तिसके अन्त्य वर्णको न् यह आदेश होय और ईप् प्रत्यय होय जैसे समानः पतिर्यस्याः सा। इस बहुव्रीहिसमासमें (सहादेःसादिः) इसकर समानको स आदेश किया और समानसे परे पति शब्दके इकारके स्थानमें न् यह आदेश करनेपर ईप् प्रत्यय किया तब रूप सिद्ध हुआ (सपत्नी) यह समानपतिवाली स्त्रीका नाम है इसी प्रकार सिद्ध हुआ (एकपत्नी) यह एक पतिवाली स्त्रीका नाम है और (वीरपत्नी) यह वीरपतिवाली स्त्रीका नाम है और (पिंडपत्नी) यह पिंडपतिवाली स्त्रीका नाम है (पुत्रपत्नी) यह पुत्रपतिवाली स्त्रीका नाम है (भ्रातृपत्नी) यह भ्रातृपतिवालीका नाम है (अन्तर्वत्नी) यह गर्भवालीका नाम है (पतिवत्नी) यह जीते भर्त्तावालीका नाम है (सखी) यह प्रसिद्ध है (अशिश्वी) यह अप्रसूत स्त्रीका नामहै (अर्धजरती) यह अर्धवृद्धाका नामहै (युवती) यह प्रसिद्धहै (प्रतीची) यह पश्चिमदिशाका नाम है (प्राची) यह पूर्वदिशाका नाम है। इत्यादिक समस्त शब्द निपातसेसिद्ध हैं॥ दारशब्द नित्यही बहुवचनान्त और पुँल्लिङ्ग होता है जैसे प्रथमाबहुवचनमें (दाराः) द्वितीयाबहुवचनमें (दारान्) तृतीयाबहुवचनमें (दारैः) इत्यादि॥

वोर्गुणात्।

वा--ओः--गुणात्। त्रिपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) उकारान्ताद्गुणवाचिनो वा स्त्रियामीप्प्रत्ययो भवति। पट्वी। पटुः। मृद्वी। मृदुः। तन्वी। तनुः। ऋज्वी। ऋजुः।

भाषार्थ-गुण (१) वाची उकारान्त शब्दसे स्त्रीलिंगके विषे विकल्प करके ईप् प्रत्यय होता है। जैसे। पटु। यह चातुर्यगुणवालेका नाम है इसकारण चातुर्य

१ सत्त्वे निवसतेऽपैति पृथग्जातिषु दृश्यते। आधेयश्चाक्रियाजश्च सोऽसत्त्वप्रकृतिर्गुणः। अर्थ। सत्त्वनाम द्रव्यके विषे वसता है और जो उस द्रव्यसे निकलकर चलाजाता है औ द्रव्यत्वके अवान्तर जातियोंमें दीखता है और जो किसीके संयोगसे किसीमें उत्पन्न किये जाने योग्य होताहै और जो किसीके विषे अक्रियाज अर्थात् स्वयंसिद्ध रहता है और जो अद्रव्य स्वभाव होताहै। वह गुण कहा जाता है। इति॥

गुणवाचक उकारान्त पटु शब्दसे स्त्रीलिंगके विषे एक जगह ईप् प्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ (पट्वी) और जहाँ ईप् प्रत्यय नहीं हुआ तहाँ हुआ (पटुः) यह चातुर्यगुणयुक्त स्त्रीके नाम हैं इसी प्रकार मृदु शब्दका स्त्रीलिंगमें सिद्ध हुआ (मृद्वी) (मृदुः) यह कोमलतागुणयुक्त स्त्रीके नाम हैं । और । तनु इसका स्त्रीलिंगमें सिद्ध हुआ (तन्वी) (तनुः) ऋजु इसका स्त्रीलिंगमें सिद्ध हुआ (ऋज्वी) (ऋजुः) (लघ्वी) (लघुः) सूत्रमें वाके ग्रहणसे (पांडुः) इत्यादिकमें गुणवाचक उकारान्त होनेपर भी ईप् प्रत्यय नहीं होय । और गुणके ग्रहणसे । (धेनुः) (रज्जुः) (अणुः) इत्यादिकमें ईप् प्रत्यय नहीं होय ॥

उत ऊः ।

उतः ऊः । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) उकारान्तान्मनुष्यजातेः स्त्रियामूप्प्रत्ययो वा भवति । पंगूः । पंगुः । वामोरूः । वामोरुः ।

भाषार्थ–उकारान्त गुणवाची मनुष्यजातिशब्दसे स्त्रीलिंगके विषे विकल्प करके ऊप् प्रत्यय होय जैसे । पंगु । इस गुणवाचक मनुष्यजाति उकारान्त शब्दसे स्त्रीलिंगके विषे एक जगह ऊप् प्रत्यय करनेपर (सवर्णे दीर्घः सह) इसकर सिद्ध हुआ (पंगूः) और जहाँ ऊप् प्रत्यय नहीं हुआ तहाँ रूप हुआ (पंगुः) और इसी प्रकार । वामोरु । तिसका हुआ (वामोरूः) (वामोरुः) इत्यादि ॥

यूनस्तिः ।

यूनः तिः । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) युवन्शब्दात्स्त्रियां तिप्रत्यो भवति । नाम्नोनो लोपशधौ । युवतिः । एभ्यो नामत्वात्स्यादयः । आबन्तात् । आपः इति सेर्लोपः । ईबन्तात् हसेपः सेर्लोपः । पूर्ववत्प्रक्रिया ॥

॥ इति स्त्रीप्रत्ययाः समाप्ताः ॥

भाषार्थ–युवन्शब्दसे स्त्रीलिंगमें तिप्रत्यय होय । जैसे युवन् शब्दसे स्त्रीलिंगके विषे तिप्रत्यय करनेपर (नाम्नोनो लोपशधौ) इसकर सिद्ध हुआ (युवतिः) इन पूर्व कहेहुए स्त्रीप्रत्ययान्त शब्दोंसे (अविभक्तिनाम) इसकर नाम संज्ञा होनेके कारण स्यादिक विभक्ति होवैं हैं । आप्प्रत्ययान्तसे (आपः) इस सूत्रकर सिका लोप होय आर ईप्प्रत्ययान्तसे (हसेपः सेर्लोपः) इस सूत्रकर सिका लोप होय । तिनमें आप्प्रत्ययान्त गंगावत् साधने योग्यहैं और

ईप्रत्ययान्त नदीवत् साधने योग्यहैं और इकारोकारान्त बुद्धि रज्जुवत् साधने योग्य हैं और ऊकारान्त वधूशब्दवत् साधने योग्यहैं ॥ इति स्त्रीप्रत्ययाः ॥

अथ विभक्त्यर्थो निरूप्यते ।

भाषार्थ–अथ नाम स्त्रीप्रत्ययके कहनेके अनन्तर कर्तृकर्मत्वादि जनानेवाली प्रथमादि विभक्तियोंका अर्थ निरूपण किया जाताहै। तिनमें प्रथम प्रथमाविभक्तिका कार्य कहतेहैं ॥

लिंगार्थे प्रथमा ।

लिंगार्थे–प्रथमा । द्विपदमिदंसूत्रम् (वृत्तिः) धातुप्रत्ययातिरिक्तमर्थवच्छब्दरूपं लिंगं तस्यैवार्थे सन्मात्रे प्रथमाविभक्तिर्भवति । लिंगादयोपि प्रथमार्था इति केचित् ॥ तत्सद्ब्रह्म । "रविरिव राजते राजा रोषात्कुमारी रोरूयते । बोभुज्यते भुवं भूपालः प्रागास्तां रामलक्ष्मणौ ॥" सन्ति सन्तः कियन्तः ।" कुमाराः शेरते स्वैरं रोरूयन्ते च नारकाः । जेगीयन्ते च गीतज्ञा मेम्रियन्ते रुजार्दिताः ॥ १ ॥"

भाषार्थ–धातु और प्रत्ययसे अधिक अर्थात् अन्य जो अर्थयुक्त शब्द रूपहै वह लिंगहै उस लिंगकेही सन्मात्र अर्थात् सत्तामात्र अर्थमें प्रथमा विभक्ति होवै है। भाव यह है कि, धातु भ्वादि और प्रत्यय कृदन्तमें कहे हुए तृउणादिक उनसे पृथक् जो पुं, स्त्री, नपुंसकभेदको जनानेवाला अर्थवान् शब्द रूप है वह लिंग कहा जाताहै उस लिंगका ही नाम विद्यमान मात्र हुए संते अर्थात् उस लिंगका ही नाम जनानेमें सि औ जस् रूप प्रथमाविभक्ति होवैहै । कोई एक आचार्य ऐसा कहतेहैं कि, लिंगादिक प्रथमार्थ होतेहैं। भाव यह है कि, लिंग और आदि शब्दसे वचन-परिमाण वाचक शब्दोंके अर्थमें प्रथमा विभक्ति होवै है । जैसे (देवः) (श्रीः) (ज्ञानम्) (खारी) (द्रोणः) (आढकम्) (एकः) (द्वौ) (बहवः) इनमें देव श्री ज्ञान लिंगवाचकहैं और खारी द्रोण आढक परिमाणवाचकहैं और एक, द्वि, बहु यह वचनवाचक हैं इसकारण इनके जनानेमात्र अर्थमें प्रथमा विभक्तिहै । उदाहरण (तत्सद्ब्रह्म) इसमें तत् सत्–ब्रह्मन्–यह तीनों शब्द नपुंसकलिंगहैं इसकारण इनकी नपुंसकता जनानेकें लिये इन तीनोंमें प्रथमाविभक्ति करनेपर रूप सिद्ध हुए (तत्सद्ब्रह्म) और (रविरिव राजते राजा) इसमें रवि और राजन् शब्द पुँल्लिंगहैं, इस कारण इनकी पुँल्लिगता मात्र जाननेके लिये प्रथमा विभक्तिहै ॥ और (कुमारी रोरूयते) इसमें कुमारी शब्द स्त्रीलिंगहै इसकारण इसकी स्त्रीलिंगता मात्र जनानेके लिये प्रथमा विभक्ति है ॥ (बोभुं-

ज्यते भुवं भूपालः) इसमें भूपालशब्द पुँल्लिग प्रथमैकवचनान्त है (प्रागास्तां रामलक्ष्मणौ) इसमें रामलक्ष्मण शब्द पुँल्लिग प्रथमाद्विवचनान्तहैं और (सन्ति सन्तः कियन्तः) इसमें सत् शब्द पुँल्लिग प्रथमावहुवचनान्त है (कुमाराः शेरते स्वैरम्) इस श्लोकमें कुमार और नारक और गीतज्ञ और रुजार्दित यह पुँल्लिग प्रथमावहुवचनान्तहैं । अर्थ । कुमार इच्छापूर्वक सो रहेहैं और नारक जीव अत्यन्त रोते हैं और गीतके जाननेवाले अतिशय कर गाते हैं और रोगसे कष्टित हुए अतिशयकर मरते हैं ॥ १ ॥

आमन्त्रणे च ।

आँमन्त्रणे--चँ । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) अभिमुखीकरणेपि प्रथमा विभक्तिर्भवति ॥ "मां समुद्धर गोविन्द प्रसीद परमेश्वर । कुमारौ स्वैरमासाथां क्षमध्वं भो तपस्विनः ॥ १ ॥"

भाषार्थ-अभिमुखीकरण जो सम्वोधन है उसमें प्रथमा विभक्ति होवै है । जैसे गोविन्द और परमेश्वर शब्दसे सम्वोधनमें प्रथमाएकवचन करनेसे रूप हुए (हे गोविन्द) (हे परमेश्वर) और कुमार शब्दसे सम्बोधनमें प्रथमाद्विवचन करनेसे रूप हुआ (हे कुमारौ) और तपस्विन् शब्दसे सम्बोधनमें प्रथमावहुवचन करनेसे रूप हुआ (हे तपस्विनः) अर्थ । हे गोविन्द मुझको उद्धार करिये । हे परमेश्वर तुम प्रसन्न हूजिये । हे कुमारौ तुम स्थित हूजिये । हे तपस्वियो तुम क्षमा करिये ॥१॥

भोसः ।

भोसः । एकपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) भोस् भगोस् अघोस् एते शब्दा निपात्यन्ते धिविषये ॥ "क्षमस्व भो दुराराध्य भगोस्तुभ्यं नमः सदा । अधीष्व भो महाप्राज्ञ घातयाघोः स्वघस्मरम् ॥ १ ॥"

भाषार्थ-भोस् भगोस् अघोस् यह शब्द निपातसे सिद्ध होते हैं ।भाव यह है कि, भवत् शब्दके स्थानमें धि विषयमें भोस् यह शब्द निपातसे सिद्ध होता है और भगवत् शब्दके स्थानमें धि विषयमें (भगोस्) यह शब्द निपातसे सिद्ध होताहै और अघवत् शब्दके स्थानमें धिविषयमें (अघोस्) यह शब्द निपातसे सिद्ध होता है । श्लोकार्थ । (भो दुराराध्य) क्षमा करिये (हे भगोः) अर्थात् (हे भगवन्) तुम्हारे अर्थ सदा प्रणाम है (भो महाप्राज्ञ) अर्थात् भो अतिबुद्धिवाले आप अध्ययन करिये (हे अघोः) अर्थात् (हे अघवन्) (हे पापिष्ठ) स्वघस्मर अर्थात् अपने पापोंको दूर करिये ॥

शेषाः कार्ये कर्तृसाधनयोर्दानपात्रे विश्लेषावधौ संबन्ध आधारभावयोः ॥

शेषाः—कार्ये—कर्तृसाधनयोः—दानपात्रे—विश्लेषावधौ—सम्बन्धे आधारभावयोः। सप्तपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) शेषा विभक्तयो द्वितीयाद्या एष्वर्थेषु भवंति। कार्ये कर्मकारके उत्पाद्ये आप्ये संस्कार्ये विकार्ये च द्वितीया विभक्तिर्भवति ॥ "कटं करोति कारूको रूपं पश्यति चाक्षुषः। राज्यं प्राप्नोति धर्मिष्ठः सोमं सुनोति सोमपाः ॥ १ ॥"

भाषार्थ–शेष द्वितीयादिक विभक्तियाँ इन अर्थोंके विषे होवैंहैं। भाव यहहै कि कार्यमें (द्वितीया) और कर्त्ता और साधनमें (तृतीया) और दानपात्रमें (चतुर्थी) और विश्लेषावधिमें (पंचमी) और सम्बन्धमें (षष्ठी) और आधार तथा भावमें (सप्तमी) विभक्ति होवैहै (उत्पाद्य(१)(आप्यम्) (संस्कार्य) (विकार्य) संज्ञक जो कार्य नाम कर्मकारकहै उसमें द्वितीया विभक्ति होवैहै। जैसे (कटं करोति कारूकः) इसमें उत्पाद्य कार्य कटहै इसकारण कटमें द्वितीया विभक्तिहै (रूपं पश्यति चाक्षुषः) इसमें आप्य कार्य रूपहै इसकारण रूपमें द्वितीया विभक्तिहै। (राज्यं प्राप्नोति धर्मिष्ठः) इसमें संस्कार्यकार्य राज्यहै इसकारण राज्यमें द्वितीया विभक्तिहै (सोमं सुनोति सोमपाः) इसमें विकार्य कार्य सोमहै इसकारण सोममें द्वितीया विभक्तिहै। (अर्थ) कारूक पुरुष कटको बनाताहै। और नेत्रवाला जन रूपको देखताहै और अतिधर्मिष्ठ पुरुष राज्यको प्राप्त होजाताहै। और सोम अर्थात् अमृत वल्लीरसके पीनेवाला जन सोम अमृतवल्लीको खण्डित करता है ॥ १ ॥

"अभिसर्वतसोः कार्या धिगुपर्यादिषु त्रिषु। द्वितीयाम्रेडितान्तेषु ततोऽन्यत्रापि दृश्यते ॥ १ ॥"

अभितो ग्रामं नदी वहति। सर्वतोग्रामं वनानि संति। धिग्देवदत्तजीवितम्। उपर्युपरिपर्वतं गच्छति। अधोऽधोवृक्षं याति अध्यधिग्याधं मृगाः पतन्ति।

---

(१) यन्नवीनं क्रियते (तदुत्पाद्यम्) यत्सिद्धमेव प्राप्यते (तदाप्यम्) यत्र गुणाधानं मलापकर्षो वा क्रियते तत् (संस्कार्यम्) यत्र पूर्वावस्थापरित्यागेनावस्थान्तरप्राप्तिः क्रियते (तद्विकार्यम्) (अर्थ) जो कार्य कि नवीन किया जाताहै वह कार्य उत्पाद्यसंज्ञकहै जो कार्य कि, सिद्धही प्राप्त किया जाताहै वह आप्य संज्ञक है और जिस कार्यमें कि, गुणोंका ग्रहण वा मलोंका त्याग किया जाताहै वह संस्कार्यसंज्ञक कार्य होताहै। और जिस कार्यमें कि, पूर्व अवस्थाको त्याग करके अन्य अवस्थाकी प्राप्ति कीजावै है वह विकार्यसंज्ञक कार्य होताहै ॥

समयाग्रामं तीर्थम् । निकषाग्रामं निहतः शत्रुः । प्रतिग्रामं सुलभं भैक्ष्यम् । समयाग्रामम् । निकषाग्रामम् । प्रतिग्रामम् । अभितोग्रामम् । कालाध्वनोर्नैरन्तर्ये । मासमधीते । क्रोशं पर्वतः ।

भाषार्थ–अभितः और सर्वतः इनके योगके विषे षष्ठ्यर्थमें द्वितीया करने योग्यहै और धिक् शब्दके योगके विषेभी द्वितीया करने योग्यहै । आम्रेडित अर्थात् द्वितीय भाषण है अन्तमें जिनके ऐसे आम्रेडितान्त अर्थात् दोबार उच्चारण किये हुये उपरि और अधः और अधि इन तीनोंकें योगके विषे द्वितीया विभक्ति करने योग्यहै और तिनसे अन्यत्रभी द्वितीया दीखतीहै जैसे (अभितोग्रामं नदी वहति) इसमें अभितः इसका योगहै इसकारण ग्राममें द्वितीया विभक्तिहै । अर्थ । ग्रामके चारों तरफ नदी वहतीहै (सर्वतोग्रामं वनानि सन्ति) इसमें सर्वतः का योगहै इसकारण वन शब्दमें द्वितीया विभक्तिहै । अर्थ । ग्रामके सब तरफ वन है (धिग्देवदत्तजीवितम्) इसमें धिक् शब्दका योगहै इस कारण द्वितीयाहै । अर्थ । देवदत्तके जीवितको धिक्कारहै (उपर्युपरिपर्वतं गच्छति) इसमें दोवार उच्चारण किये उपरि अव्ययका योगहै इसकारण पर्वत शब्दमें द्वितीया विभक्तिहै । अर्थ । ऊपर२पर्वतके जाताहै (अधोऽधोवृक्षं याति) इसमें दोवार उच्चारण किये अधः अव्ययका योगहै इसकारण वृक्षमें द्वितीयाहै । अर्थ । नीचे२ वृक्षके जाताहै(अध्यधिव्याधं मृगाः पतन्ति)इसमें दोवारउच्चारण किये अधि अव्ययका योगहै इसकारण व्याधशब्दमें द्वितीयाहै । अर्थ । व्याध२ के प्रति मृग पतित होतेहैं । (ततोऽन्यत्रापि दृश्यते) इस वचनसे (उभयतः) (परितः) (समया) (निकषा) (हा) (कृते) (प्राति) (अनु) इन्होंके योगमेंभी द्वितीया विभक्ति होवेहै । (जैसे समयाग्रामं तीर्थम्) अर्थ । ग्रामके समीप तीर्थ है (निकषा ग्रामं निहतः शत्रुः) अर्थ । ग्रामके समीप शत्रु माराहै (प्रतिग्रामं सुलभं भैक्ष्यम्) अर्थ । ग्राम २ प्रति भैक्ष्य सुलभहै॥ काल और अध्वन्(मार्ग) इन दोनोंके नैरन्तर्य अर्थमें द्वितीया विभक्ति होवै है । भाव यहहै कि, कालवाचक और मार्गवाचक शब्दसे निरन्तर अर्थमें द्वितीया विभक्ति करने योग्यहै जैसे (मासमधीते) इसमें मास शब्दसे निरन्तर अर्थमें द्वितीया विभक्तिहै । अर्थ । मासपर्यन्त निरन्तर पढताहै (क्रोशं पर्वतः) इसमें क्रोश शब्दसे निरन्तर अर्थमें द्वितीया विभक्तिहै । अर्थ । क्रोशपर्यन्त निरन्तर पर्वतहै । नैरन्तर्य ऐसा क्यों कियाहै तहाँ कहते हैं कि (मासस्य द्विरधीते) (क्रोशस्यैकभागे पर्वतः) इनमें निरन्तर अर्थ न होनेके कारण द्वितीया विभक्ति नहीं हुई । अर्थ । मासके दो भागोंकर पढताहै । क्रोशके एक देशमें पर्वतहै ॥

कर्त्तरि प्रधाने क्रियाश्रये साधने च । क्रियासिद्ध्युपकारके करणेऽर्थे तृतीया विभक्तिर्भवति । "भिन्नः शरेण रामेण रावणो लोकरावणः । कराग्रेण विदीर्णोऽपि वानरैर्युध्यतेपुनः॥ १ ॥"

भाषार्थ–प्रधानक्रियाका आश्रयभूत जो कर्त्ता (१) अर्थात् स्वतन्त्रता कर क्रिया करनेवाला तिसके विषे और क्रियासिद्धिका उपकार करनेवाला ऐसा जो करण अर्थात् प्रकृष्ट कारणभूत साधन तिसके विषे तृतीया विभक्ति होय । भाव यहहै कि, जो स्वयं प्रधान होकर क्रियाका आश्रय हुआ स्वतंत्रता कर कार्य करनेको प्रवृत्त होताहै वह कर्त्ता कहाजाताहै उसमें तृतीयाविभक्ति होवे है और जो कि, भेदनादि क्रियाकी सिद्धिके विषे सहायता देनेवाला प्रकृष्ट कारणहै वह साधन होताहै । उसमेंभी तृतीया विभक्ति होवे है । जैसे (भिन्नः शरेण रामेण रावणो लोकरावणः) इसमें भेदनात्मक क्रियाका आश्रयभूत प्रधानकर्त्ता राम शब्दहै इसकारण राममें तृतीया विभक्तिहै और भेदनात्मक क्रियाकी सिद्धिका उपकारक प्रकृष्ट कारणभूत साधन शर है इसकारण शरमें तृतीया विभक्तिहै । और परार्धमें प्रधान कर्ता वानर शब्दहै इसकारण वानर शब्दमें तृतीया विभक्तिहै और क्रियाकी सिद्धि करनेवाला प्रकृष्ट कारणभूत साधन कराग्र शब्दहै इस कारण कराग्र शब्दमें तृतीया विभक्तिहै । अर्थ । लोकोंका रुवानेवाला रावण रामचंद्रसे शर नाम बाणकर भिन्न किया गया है और यही रावण वानरोंकर नखाग्रसे विदीर्ण हुआ भी फिर युद्ध करता है ॥ १ ॥

दानपात्रे सम्प्रदानकारके चतुर्थी । वेदविदे गां ददाति ।

भाषार्थ–दियाजाताहै वह दान होताहै उसके अर्थ जो पात्रहै सो दानपात्रहै अर्थात् दिये वस्तुके स्वामीका नाम दानपात्रहै । कैसा वह दानपात्र हो कि, सम्प्रदान (२) कारक होय अर्थात् भली प्रकार कल्याणबुद्धिकरके पारलौकिक फलकी प्राप्तिके लिये जिसके अर्थ दियाजाता होय उसी कारकके विषे चतुर्थी विभक्ति होवे है । जैसे (वेदविदे गां ददाति) इसमें वेदविद् शब्द दानपात्रहै इसकारण वेदविद्में चतुर्थी विभक्तिहै । अर्थ–वेदवेत्ताके अर्थ कोई पुरुष गौको देताहै । दानपात्रके अभावमें (राज्ञो दण्डं ददाति) इसमें चतुर्थीका अभावहै ॥

विश्लेषावधावपादानकारके पंचमी । विश्लेषो विभागस्तत्रयोवधिश्चल-

(१) क्रिया करनेवाला कर्त्ता तीन प्रकारका होताहै –स्वतंत्र–प्रयोजक–कर्मकर्त्ता ।

(२) ददाति दण्डं पुरुषो महीपतेर्न चात्र भक्तिर्न च दानकामना ।
यद्दीयते दानतया सुपात्रे तत्संप्रदानं कथितं मुनीन्द्रैः ॥ १ ॥

अर्थ–पुरुष राजाको दण्ड देताहै इस दानमें न तो भक्तिहै और न दानकी इच्छा है । और जो दान भावकर सुपात्रके निमित्त दियाजाताहै वह मुनीन्द्रोंने सम्प्रदान कहाहै इति ।

तयाऽचलतयावा विवक्षितस्तत्रापादाने पंचमी । धावतोश्वादपतत् । भूभृतोऽवतरति गंगा ।

भाषार्थ–विश्लेष जो विभाग उसके विषे जो अवधि अर्थात् जिससे विभाग होताहै वह अपादान कारकहै उसमें पंचमी विभक्ति होवे है । विश्लेष नाम विभाग अर्थात् एकसे दूसरेका जो पृथक् होना है उसमें जो अवधि आश्रय है अर्थात् जिससे विभाग होताहै वह चलभावकर वा अचलभावकर कहनेको अपेक्षित होय उसी अपादानकारकमें पंचमी विभक्ति होवे है जैसे (धावतोऽश्वादपतत्) इसमें अपतत् क्रियात्मक विभाग है और उस विभागकी अवधि आश्रय भागताहुआ अश्व है इसकारण अश्व शब्दमें पंचमी विभक्ति है और (भूभृतोऽवतरति गंगा) इसमें अवतरतिं क्रियात्मक विभागहै और उस विभागकी स्थिरावधि पर्वतहै इस कारण पर्वत शब्दमें पंचमी है ॥

सम्बन्धेषष्ठी । संबंधिनोर्मध्येयोऽप्रधानस्तत्रषष्ठी ।
भेद्यभेदकयोःश्लिष्टिःसंबंधोऽन्योन्यमिष्यते ।
द्विष्ठोयद्यपिसंबंधःषष्ठ्युत्पत्तिस्तुभेदकात् ॥ १ ॥ (१)

एकक्रियातः परस्परापेक्षारूपः सम्बन्धः ॥ "राज्ञःसपुरुषोज्ञेयः पित्रोरेतत्प्रपूजनम् । गुरूणांवचनंपथ्यं कवीनांरसवद्वचः ॥ १ ॥"

भाषार्थ–सम्बन्धमें षष्ठी विभक्ति होवे है । व्याख्यार्थ–सम्बन्धियोंके मध्यमें जो अप्रधानहै उसमें षष्ठी विभक्ति होवे है । भेद्य प्रधान और भेदक अप्रधान इन दोनोंका जो श्लिष्टि अर्थात् मिलनाहै वह सम्बन्धहै वह सम्बन्ध परस्पर दोनों भेद्य और भेदकके विषे इच्छा कियाजाताहै यद्यपि सम्बन्ध द्विष्ठ अर्थात् दोनों भेद्यभेदकोंके विषे परस्पर स्थित रहताहै तथापि षष्ठीकी उत्पत्ति भेदक अर्थात् अप्रधान सम्बन्धीसे होवेहै । एकक्रियामें जो परस्पर अपेक्षारूपहै वह सम्बन्धहै । (राज्ञः स पुरुषो ज्ञेयः) इसमें राजन् और पुरुष शब्दका परस्पर सम्बन्धहै और पुरुष विशेष्य होनेसे प्रधानहै और विशेषण होनेसे राजन् शब्द अप्रधानहै इसकारण राजन् शब्दमें षष्ठी विभक्ति हुई है इसी प्रकार अन्य तीनों पदोंमें सम्बन्धियोंके मध्य अप्रधान पितृ गुरु कवि शब्दोंमें षष्ठी विभक्ति हुई है । अर्थ–वह पुरुष राजसम्बन्धी जाननेयोग्य है यह पूजनसामग्री मातृपितृ सम्बन्धी जाननेयोग्यहै और गुरु सम्बन्धी वचन हितकारक जानने योग्य है, कवियोंका वचन रसयुक्त जानने योग्यहै ॥ १ ॥

---

(१) भेद्यं विशेष्यमित्याहुर्भेदकं च विशेषणम् । प्रधानं च विशेष्यं स्यादप्रधानं विशेषणम् ।
अर्थ–जो विशेष्यहै;उसको भेद्य कहतेहैं जो विशेषणहै उसको भेदक कहते हैं जो प्रधानहै वह विशेष्य होताहै जो अप्रधान है वह विशेषण होताहै ।

आधारेऽधिकरणे सप्तमी । तत्र षड्विधमधिकरणम् । औपश्लेषिकं सामीपिकमभिव्यापकं वैषयिकं नैमित्तिकमौपचारिकं चेति ॥ "कटे शेते कुमारोसौ वटे गावः सुशेरते । तिलेषुविद्यतेतैलं हृदिब्रह्मामृतंपरम् ॥ १ ॥ युद्धे संनह्यतेधीरोऽगुल्यग्रेकरिणांशतम् ।"

भाषार्थ–आधार जो अधिकरणहै उसमें सप्तमी विभक्ति होवैहै । भाव यहहै कि क्रियाश्रय कर्त्ताकी क्रियाका जो आश्रयहै उसको अधिकरण कहते हैं वह अधिकरण छः प्रकारका होताहै एक औपश्लेषिक, दूसरा सामीपिक, तीसरा अभिव्यापक चौथा वैषयिक, पांचवाँ नैमित्तिक, छठा औपचारिकहै । औपश्लेषिक अधिकरण वह है कि, जिसके अत्यन्त समीपही आधेयका संयोग होवै । जैसे (कटे शेते कुमारोसौ) इसमें आधेयभूत कुमारका कटके साथ अत्यन्त समीप संयोग है इसकारण औपश्लेषिक अधिकरण कटके विषे सप्तमी विभक्ति हुईहै । अर्थ–कटके विषे यह कुमार सोताहै । और सामीपिक अधिकरण वहहै कि,जिसके समीपमात्रमें आधेयका संयोग होवै । जैसे (वटे गावः सुशेरते) इसमें वटके समीप आधेय गोजातिका संयोगहै इस कारण सामीपिक अधिकरण वटकेविषे सप्तमी विभक्ति हुई है । अर्थ–वटके समीप गाएँ सोवती हैं । अभिव्यापक अधिकरण वहहै कि, जिसके विषे नहीं पृथक् हुए आधेयके समस्त अवयवोंका सम्बन्ध होवै । जैसे (तिलेषु विद्यते तैलम्) इसमें अपृथग्भूत तैलका सर्वावयव सम्बन्ध अपृथग्भूत तिलके विषेहै इस कारण अभिव्यापक तिलके विषे सप्तमी विभक्ति हुईहै । अर्थ–तिलोंके विषे तैल विद्यमान रहता है और वैषयिक अधिकरण वहहै कि, जिसके विषयमात्रमें आधेयका संयोग होवै । जैसे (हृदिब्रह्मामृतंपरम्) इसमें आधेय ब्रह्मन् शब्दका हृद्विषयमात्रमें संयोगहै इस कारण वैषयिक अधिकरण हृद्के विषे सप्तमी विभक्ति हुईहै । अर्थ–हृद् विषयमात्रमें ब्रह्मरूप परम अमृत है और नैमित्तिक अधिकरण वहहै कि, जिसके निमित्तमात्रकर आधेयका ग्रहण होवै । जैसे (युद्धे संनह्यते धीरः) इसमें आधेय धीरका युद्ध निमित्तमात्रकर ग्रहणहै इसकारण नैमित्तिक अधिकरण युद्ध शब्दमें सप्तमी विभक्ति हुईहै । अर्थ–युद्धके निमित्त धीर संनद्ध हुआहै औपचारिक अधिकरण वहहै कि, जिसके उपचारमात्रकर आधेयका ग्रहण होवै जैसे (अंगुल्यग्रे करिणांशतम्) इसमें आधेय शत शब्दका अंगुल्यग्र उपचारमात्रकर ग्रहणहै इसकारण औपचारिक अधिकरण अंगुल्यग्र शब्दमें सप्तमी विभक्ति हुई है । अर्थ–अंगुलीके अग्रभागके उपचारमात्रमें हाथियोंका सैंकडा विद्यमानहै ।

भावः क्रियालक्षणं तत्रापि सप्तमी । प्रसिद्धक्रियया ऽप्रसिद्धक्रियाबोधनं भावः । वर्षति देवे चौर आयातः । पतत्यंशुमालिनि पतितोऽरातिः ।

भाषार्थ-भाव जो क्रियालक्षणहै उसमें सप्तमी विभक्ति होवेहै प्रसिद्ध क्रिया करके अप्रसिद्ध क्रियाके जनानेका नाम भावहै तिस भावमें सप्तमी विभक्ति होवेहै। जैसे (वर्षति देवे चौर आयातः) इसमें मेघवर्षणरूप प्रसिद्ध क्रियाकर चौराग-गमनरूप अप्रसिद्ध क्रिया जनाईहै इसकारण प्रसिद्ध क्रियात्मक विशेषणविशेष्यरूप वर्षत् देवमें सप्तमी विभक्ति हुईहै। अर्थ-देव मेघ वर्षते संते चौर आयाथा (पतत्यंशुमालिनि पतितोऽरातिः) इसमें प्रसिद्ध अंशुमालीकी पतनक्रिया करके अप्रसिद्ध शत्रुकी पतन क्रिया जनाईहै इसकारण प्रसिद्धक्रियात्मक विशेषणविशेष्यरूप पतत् अंशुमालिन् शब्दमें सप्तमी विभक्ति हुईहै। अर्थ-सूर्य अस्तको प्राप्त हुए संते अराति शत्रु युद्धके अर्थ आकर पतित हुआहै ॥

विनासहनमसृतेनिर्धारणस्वाम्यादिभिश्च।

विनासहनमसृतेनिर्धारणस्वाम्यादिभिः--च । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) एतैरपियोगे द्वितीयाद्या विभक्तयो भवन्ति।

भाषार्थ-इन विना आदिक शब्दोंकर योगहुए संते द्वितीयादि विभक्ति होवे हैं भाव यहहै कि,विनादिवाचक शब्द प्रयुक्त हुए संते तृतीया होवेहै और सहादिवाचक शब्दप्रयुक्त हुए संते तृतीया विभक्ति होवेहै और नमः आदिक शब्दप्रयुक्त हुए संते चतुर्थी विभक्ति होवेहै और ऋते आदिक शब्द प्रयुक्त हुए संते पंचमी विभक्ति होवेहै और निर्धारणादि अर्थकेविषे षष्ठी विभक्ति होवेहै और स्वाम्यादि अर्थकेविषे सप्तमी विभक्ति होवेहै ॥

विना अन्तरेण अन्तरा इत्यादियोगे द्वितीया। विना पापं सर्वं फलति। अन्तरेणाक्षिणी किं जीवितेन। अन्तरा त्वां मां हरिः।

भाषार्थ-विना, अन्तरेण, अन्तरा, इत्यादि शब्दोंका योग हुए संते द्वितीया विभक्ति होवेहै (विना पापं) इसमें विनाका योग है इस कारण पाप शब्दमें द्वितीया विभक्ति हुई है। अर्थ-पापके विना सब फलता है और अन्तरेण इसके योग होनेपर अक्षि शब्दमें द्वितीयाद्विवचन है। अर्थ-नेत्रोंके विना जीवित करके क्या है। अन्तरा इसके योग होनेपर युष्मद् अस्मद्में द्वितीया द्विवचन है। अर्थ-तेरे और मेरे मध्यमें हरि विष्णु हैं।

सहादियोगे तृतीया । सहसदृशंसाकंसार्द्धसमम्-इत्यादियोगे तृतीया विभक्तिर्भवति। सहशिष्येणागतोगुरुः । सदृशश्चैत्रोमैत्रेण । साकंनयनाभ्यांश्लक्ष्णा दन्ताः। सार्धंधनिभिर्धूर्तःसाधुः।

भाषार्थ-द्रव्यगुणक्रियाओंकरके तुल्य योग्यता विद्यमान हुए संते सह सदृश साकं सार्द्धं समं इत्यादिक शब्दोंके योगकर तृतीया विभक्ति होवै है। जैसे (सह शिष्येणागतो गुरुः) इसमें शिष्य शब्दके आगमन क्रियाकी गुरु शब्द कर समान योग्यता है इसकारण सहके योगमें शिष्य शब्दमें तृतीया विभक्ति हुई है। अर्थ- शिष्यके साथ गुरु आया। (सदृशश्चैत्रो मैत्रेण) मैत्रके गुणकी चैत्र कर तुल्ययोग्यता है इस कारण सदृशके योगमें मैत्र शब्दके विषे तृतीया विभक्ति हुई है। चैत्र नाम पुरुष मैत्र नाम पुरुषके सदृश अर्थात् तुल्य है। और नयनोंके गुणकी दन्तोंकर तुल्य योग्यता है इसकारण साकं इसके योगमें नयन शब्दके विषे तृतीया द्विवचन हुआहै। अर्थ-नेत्रोंसहित दन्त सुन्दरहैं। धनियोंके धन द्रव्यकी साधुकर तुल्ययोग्यताहै इसकारण सार्द्धं इसके योगमें धनिन् शब्दके विषे तृतीयाबहुवचन हुआहै। अर्थ-धनी पुरुषोंके साथ साधुपुरुष बद्धहै। इत्यादि ॥

नमःस्वस्तिस्वाहास्वधालंवषड्योगे चतुर्थी च वक्तव्या। नमोनारायणाय। स्वस्ति राज्ञे। सोमाय स्वाहा। पितृभ्यः स्वधा। अलं मल्लोमल्लाय। वषडिन्द्राय।

भाषार्थ-नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलं, वषट् इन अव्ययोंके योगमें चतुर्थी विभक्ति वक्तव्यहै। नमः अव्ययके योग होनेपर नारायण शब्दमें चतुर्थी हुई है। स्वस्ति अव्ययके योग होनेपर राजन् शब्दमें चतुर्थी हुईहै। स्वाहाके योगमें सोम शब्दमें चतुर्थी है। स्वधाके योगमें पितृ शब्दमें चतुर्थी है। अलंके योगमें मल्ल शब्दमें चतुर्थी है यहाँ अलं अव्यय समर्थवाचकहै। वषट्के योगमें इंद्र शब्दके विषे चतुर्थी हुई है। वषट् अव्यय हवन करने योग्य वस्तुके अर्थका वाचक है ॥

ऋतेआदियोगे पंचमी। ऋते ज्ञानान्नमुक्तिः। अन्योगृहाद्विहारः।

भाषार्थ-ऋते आदिकके योगमें पंचमी विभक्ति होवै है जैसे ऋते अव्ययका योग होनेपर ज्ञान शब्दमें पंचमी विभक्ति हुईहै और अन्य शब्दके योगमें गृह शब्दमें पंचमी विभक्ति हुई है। अर्थ-ज्ञानके विना मुक्ति नहीं होवै है। गृहसे अन्य विहार है॥

विनापृथग्योगेपि पंचमी। विना कामात्। पृथक् ग्रामात्। भिन्नो ग्रामात्।

भाषार्थ-विना और पृथक्के योगमें भी पंचमी विभक्ति होवै है जैसे विनाके योग होनेपर कामशब्दमें पंचमी विभक्ति हुई है और पृथक्के योग होनेपर ग्राम शब्दमें पंचमी विभक्ति हुई है ॥

ऋतेयोगे द्वितीयापि। ज्ञानमृते

भाषार्थ-ऋते इसके योगमें द्वितीया विभक्तिभी होवै है । जैसे ऋतेके योग होनेपर ज्ञानशब्दमें द्वितीया विभक्ति हुई है ॥

विनायोगेपि तृतीया । ज्ञानेन विना ।

भाषार्थ-विनाके योगमें तृतीया विभक्तिभी होवैहै । जैसे विनाके योग होनेपर ज्ञानशब्दमें तृतीया विभक्ति हुई है ॥

निर्द्धारणे षष्ठीसप्तम्यौ । निर्द्धारणं क्रियागुणजातिभिः समुदायात्पृथक्करणं तत्र षष्ठी सप्तमी च । क्रियापराणां भगवदाराधकः श्रेष्ठः क्रियापरेषु वा । गवां कृष्णा गौः सम्पन्नक्षीरा गोषु वा । एतेषां क्षत्रियः शूरतमः एतेषु वा ।

भाषार्थ-निर्द्धारणमें षष्ठी सप्तमी विभक्ति होवैहैं । व्याख्या-क्रिया अथवा गुण वा जातिकर बहुतोंके समूहसे एकका जो पृथक् करनाहै वह निर्धारणहै उसमें षष्ठी और सप्तमी विभक्ति होवै हैं । भाव यहहै किं, क्रिया करके वा गुण करके वा जाति करके जिस समूहसे जो कि, एकका पृथक् करनाहै उस समूहमें षष्ठी और सप्तमी दोनों विभक्ति होवै हैं । सामान्य क्रियापरोंसे भगवदाराधनात्मक विशेष-क्रियावाला पृथक् कियाहै इसकारण समूहवाचक क्रियापर शब्दमें षष्ठी विभक्ति हुई है और सप्तमी विभक्तिभी होती है । अर्थ-क्रियानिष्ठ पुरुषोंके मध्यमें भगवत्का आराधन करनेवाला श्रेष्ठ है । और जैसे सामान्य गौओंसे कृष्णत्व गुणकर कृष्णा गौ पृथक् कीगई है इसकारण समूहवाचक सामान्य गोशब्दमें षष्ठी विभक्ति हुई है और सप्तमी विभक्ति होवै है । अर्थ-गौओंके मध्यमें जो कृष्णा गौ है वह बहुत दूधवाली होती है और सामान्य सर्वजातीय पुरुषोंसे विशेष जातीय क्षत्रिय पृथक् कियागया है इसकारण सर्वजातीय वाचक एतत्शब्दमें षष्ठी विभक्ति हुई है । अर्थ-इन सर्वजातीय पुरुषोंके मध्यमें विशेषजातीय क्षत्रिय अतिशूरवीर होता है ॥

स्वाम्यादियोगे षष्ठीसप्तम्यौ भवतः । गोषु स्वामी । गवां स्वामी । गवामधिपतिः । गोष्वधिपतिः ।

भाषार्थ-स्वामिन् और आदि शब्दसे ईश्वर तथा अधिपति तथा दायाद तथा साक्षिन् तथा प्रतिभू तथा प्रसूत तथा आयुक्त तथा कुशल तथा प्रभु इन शब्दोंकर योग संते षष्ठी और सप्तमी विभक्ति होवैहै । जैसे स्वामिन् शब्दका योग होनेपर गोशब्दमें षष्ठी सप्तमी दोनों विभक्ति हुई हैं । और अधिपति शब्दका योग होनेपर गो शब्दमें षष्ठी सप्तमी दोनों विभक्ति हुई हैं ॥

कर्त्तृकार्ययोरक्तादौ कृतिषष्ठी ।

कर्त्तृकार्ययोः-अक्तादौ-कृति'-षष्ठी । चतुष्पदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः

कर्त्तरि कार्ये च षष्ठी भवति क्तादिवर्जिते कृदन्ते शब्दे प्रयुज्यमाने। व्यासस्य कृतिः । भारतस्य श्रवणम् ।

भाषार्थ–कर्त्ता और कार्य नाम कर्ममें षष्ठी विभक्ति होवै है क्तादिवर्जित कृदन्तशब्द प्रयुक्त हुए संते । भाव यह है कि, कर्त्ता और कर्ममें षष्ठी विभक्ति होय जो कृत्प्रत्ययान्त शब्द परे प्रयुक्त होवै तो परन्तु क्त और आदिशब्दसे क्तवतु, शतृ, शान, क्वसु, कान, इष्णु, स्नु, क्नु, क्त्वा, तुमु, क्यप्, उ, उकण् इत्यादि कृत्प्रत्ययान्त शब्द पर हुए संते षष्ठी विभक्ति नहीं होय । जैसे व्यास कर्त्तासे परे कृत्प्रत्ययान्त कृति शब्द प्रयुक्त है इसकारण व्यास कर्त्ताके विषे षष्ठी विभक्ति हुई है और भारत कर्मसे परे कृत्प्रत्ययान्त श्रवण शब्द प्रयुक्त है इसकारण कर्मसंज्ञक भारतशब्दमें षष्ठी विभक्ति हुई है और क्त आदिक कृत्प्रत्ययान्त शब्द प्रयुक्त हुए संते कर्त्ता और कर्ममें षष्ठी विभक्ति नहीं होवै है । जैसे (त्वया कृतम्) इसमें कर्तृवाचक युष्मद्शब्दसे परे क्तप्रत्ययान्त कृतशब्द प्रयुक्त है इसकारण कर्तृवाचक युष्मद्शब्दमें षष्ठी विभक्ति नहीं हुई किन्तु (कर्त्तरि प्रधाने) इसकर तृतीया विभक्ति हुई है (ग्रामं प्राप्तः) इसमें कर्मवाचक ग्रामशब्दसे परे क्तप्रत्ययान्त प्राप्तशब्द विद्यमानहै इस कारण कर्मवाचक ग्रामशब्दमें षष्ठी विभक्ति नहीं हुई किंतु द्वितीया हुईहै और शतृ, शान, क्वसु, कान, इष्णु, स्नु, क्नु, उ, उकण्, क्त्वा, क्यप्, तुम्–इत्यादि प्रत्ययान्तशब्द पर हुए संते षष्ठी विभक्ति नहीं होय। जैसे (ग्रामं गच्छन्) (अन्नं पचमानः) (अन्नं पेचिवान्) (शुभं चक्राणः) (देवं दिदृक्षुः) (आत्मानमलंकरिष्णुः) (दैत्यान् घातुकः) (दानवान् जिष्णुः) (देवं नत्वा) (गुरुं प्रणम्य) (कार्यं कर्त्तुम्) इत्यादिकमें द्वितीया विभक्तिहै कर्म होनेसे॥

स्मरतौ च कार्ये । स्मरतौ धातौ प्रयुज्यमाने कार्ये कर्मणि षष्ठी भवति । मातुः स्मरति । मातरं स्मरति ।

भाषार्थ–स्मरति धातु प्रयुक्त हुए संते कार्य नाम कर्मके विषे षष्ठी विभक्ति होवैहै चकारसे द्वितीया विभक्ति होवैहै । जैसे स्मरति धातुके प्रयुक्त होनेसे कर्मसंज्ञक मातृ शब्दमें षष्ठी तथा द्वितीया दोनों विभक्ति हुई हैं (१) ॥

---

(१) द्विषेःशतुर्वा षष्ठी । मुरस्य मुरं वा द्विषन् । भाषार्थ–शतृप्रत्ययान्त द्विष्धातुके योगमें कर्मके विषे विकल्प करके षष्ठी विभक्ति होवैहै । जैसे शतृप्रत्ययान्त द्विष् धातुके योगमें कर्मसंज्ञक मुर शब्दमें विकल्पकरके षष्ठी विभक्ति हुई है ।

तृप्त्यर्थानां करणे वा षष्ठी । फलैः फलानां वा तृप्तः ।

भाषार्थ–तृप्त्यर्थोंके योगमें करणके विषे विकल्पकरके षष्ठी विभक्ति होवैहै । जैसे तृप्त शब्दके योगमें करणवाचक फल शब्दमें तृतीयाबहुवचनहै । इति ॥

हेतौ तृतीया पंचमी च वक्तव्या । अनित्यः शब्दः । कृतकत्वेन कृतकत्वाद्वा ।

भाषार्थ-हेतुके विषे तृतीया और पंचमी विभक्ति वक्तव्यहै । भाव यहहै कि, प्रतिज्ञाके स्थापित करनेवालेका नाम हेतु है उस हेतुमें तृतीया और पंचमी दोनों विभक्ति होवैहैं । जैसे । अनित्यः शब्दः । यह प्रतिज्ञाहै इस प्रतिज्ञाके स्थापित करनेवाला कृतकत्व हेतुहै इसकारण कृतकत्व शब्दमें तृतीया और पंचमी विभक्ति हुई है । अर्थ-शब्द अनित्य है किस हेतु कर वा किस हेतुसे कि, कृतकत्वकर वा कृतकत्वसे ॥

भयहेतौ पंचमी । चौराद्बिभेति । व्याघ्रात्त्रस्यति । विद्युत्पाताच्चकितः ॥

भाषार्थ-भयका कारण जो रूप है उसमें पंचमी विभक्ति होवै है । जैसे भयका कारण चौर शब्दहै इसकारण चौरमें पंचमी विभक्ति हुईहै और त्रासका कारण व्याघ्रहै इसकारण व्याघ्र शब्दमें पंचमी विभक्ति हुईहै ॥

षष्ठी हेतुप्रयोगे च । कस्य हेतोरियं कन्या । चकारात्सर्वादेर्हेतुप्रयोगे तृतीयाषष्ठ्यौ स्तः । केन हेतुना ।

भाषार्थ-हेतु शब्दके प्रयोगमें षष्ठी विभक्ति होवै है चकारसे सर्वादिकसे हेतु शब्दके प्रयोगमें तृतीया षष्ठी विभक्ति होवै हैं । भाव यह है कि, हेतु यह शब्द प्रयुक्त हुए संते षष्ठी विभक्ति होवै है और चकारसे सर्वादिक शब्दसे हेतु यह शब्द प्रयुक्त हुए संते षष्ठी और तृतीया विभक्ति होवैहै । जैसे किम् शब्दसे हेतु यह शब्द प्रयुक्त है इसकारण किम् शब्द तथा हेतु शब्दमें षष्ठी विभक्ति हुई है परन्तु किम् शब्दको सर्वादिक होनेसे तृतीया विभक्ति भी हुईहै ॥ (१)

इत्थंभावे तृतीया । शिष्यं पुत्रेण पश्यति । पश्यति संसारमसारेण ।

भाषार्थ-इत्थंभावमें तृतीया विभक्ति होवैहै । भाव यहहै कि, अन्यके विषे अन्यका जो अवभास है वह इत्थंभाव है अर्थात् अन्यके विषे अन्यके तुल्य वर्त्तनेका नाम इत्थंभाव है उसमें तृतीया विभक्ति होवैहै । जैसे शिष्यको पुत्रके तुल्य होनेसे पुत्रशब्दमें तृतीया विभक्ति हुईहै । संसारको असारके तुल्य होनेसे असारमें तृतीया विभक्ति हुईहै ॥

येनांगविकारः ।

येन-अंगविकारः । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) येन विकृतेनांगेनांगिनो

(१) निमित्तकारणे हेत्वर्थप्रयोगे सर्वादेः सर्वा विभक्तयो भवन्ति । को हेतुः । कं हेतुम् । केन हेतुना । इत्यादि । भाषार्थ-निमित्तकारण हेत्वर्थप्रयोगमें सर्वादिकसे सर्वविभक्ति होवैहैं ॥

विकारो लक्ष्यते तस्मादंगात्तृतीया विभक्तिर्भवति। अक्ष्णा काणः। पादेन खंजः। शिरसा खल्वाटः।

भाषार्थ-जिस विकृत अंगकर अंगी अर्थात् शरीरधारीका विकार लक्षित होताहै उस अंगसे तृतीया विभक्ति होवैहै। भाव यहहै कि, जिस विकृत अंगसे शरीरधारीका विकार जाना जाता है उस अंगसे तृतीया विभक्ति होवैहै। जैसे विकृत अक्षि अंगकर शरीरधारीका विकार जानाजाताहै इसकारण विकृत अक्षिमें तृतीयाविभक्ति हुई है और विकृत शिरस् अंगकर शरीरधारीका विकार जाना-जाताहै इस कारण विकृतशिरस् शब्दमें तृतीयाविभक्ति हुई है॥

जनिकर्त्तुःप्रकृतिः।

जनिकर्त्तुः-प्रकृतिः। द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) जायमानस्य कार्यस्योपादानमपादानसंज्ञंभवति। तत्रापादाने पंचमी। यस्मात्प्रजाः प्रजायन्ते तद्ब्रह्मेत्यभिधीयते।

भाषार्थ-जायमान अर्थात् उत्पन्न हुआ जो कार्यहै उसका जो उपादान अर्थात् मूलकारणहै वह अपादान संज्ञक होताहै। भाव यह है कि, उत्पन्न हुआ जो कार्य है उसके मूलकारणका नाम उपादानहै वह उपादान अपादानसंज्ञक होताहै उसमें पंचमी विभक्ति होवै है। जैसे उत्पन्न हुआ कार्य प्रजा है प्रजाका उपादानकारण यत् शब्द प्रतिपादित ब्रह्महै इसकारण यत् शब्दमें पंचमी विभक्ति हुईहै। अर्थ-जिस से प्रजा उत्पन्न होतीहै वह ब्रह्म ऐसा कहा है॥

आङादियोगे च पञ्चमी। आपाटलिपुत्राद्वृष्टो देवः। पारि त्रिगर्तेभ्यो देवो वृष्टः। अप त्रिगर्तेभ्यो वृष्टो देवः।

भाषार्थ-आङ् और आदिशब्दसे परि, अप उपसर्गके योगमें भी पंचमी विभक्ति होवैहै। भाव यहहै कि, मर्यादा तथा अभिविधि अर्थमें वर्त्तनेवाले आङ् उपसर्गके योग होनेमें तथा वर्ज्जनार्थमें वर्तनेवाले परि अप उपसर्गके योग होनेमें पंचमी विभक्ति होवै है। जैसे मर्यादावाचक आङ् उपसर्गके योग होनेसे पाटलिपुत्रमें पंचमी विभक्ति हुई हैं और वर्ज्जनार्थ वाचक परि और अप उपसर्गके योग होनेसे त्रिगर्त्त शब्दमें पंचमी विभक्ति हुई है। अर्थ-पाटलिपुत्रपर्यन्त मेघ वर्षा है। त्रिगर्त्त देशोंको त्यागिकर मेघ वर्षा है॥

तादर्थ्ये चतुर्थी च वक्तव्या। "संयमाय श्रुतं धत्ते नरो धर्माय संयमम्॥ धर्मं मोक्षाय मेधावी धनं दानाय भुक्तये॥ १॥"

भाषार्थ-तादर्थ्यके विषे चतुर्थी विभक्ति वक्तव्य है। भाव यह है कि, जिसके अर्थ कार्य किया जाता है उसका नाम तदर्थ है उसीके भावमें चतुर्थी विभक्ति होवै है। जैसे श्रुतका धारण करना कार्य संयमके अर्थ कियागया है इसकारण संयम शब्दमें चतुर्थी हुई है और संयमका धारण करना कार्य धर्मके अर्थ किया गया है इसकारण धर्मशब्दमें चतुर्थी हुई है और धर्मका धारण करना कार्य मोक्षके अर्थ कियागया है इसकारण मोक्ष शब्दमें चतुर्थी हुई है और धनका धारण करना कार्य दान और भुक्तिके अर्थ कियागया है इसकारण दान शब्द और भुक्ति शब्दमें चतुर्थी विभक्ति हुई है। अर्थ-मेधावी नाम बुद्धिमान् नर श्रुत नाम शास्त्रको धारण करता है किस अर्थ कि, संयमनाम इंद्रियनिग्रहके अर्थ और बुद्धिमान् नर संयमको धारण करताहै किस अर्थ कि, धर्म्मके अर्थ और बुद्धिमान् नर धर्मको धारण करता है किस अर्थ कि, मोक्षके अर्थ और बुद्धिमान् नर धनको धारण करता है किस अर्थ कि, दान और भोगके अर्थ ॥

क्रुध्यादियोगे च। क्रूराय क्रुध्यति। विप्राय द्रुह्यति। मित्राय कुप्यति। गुणवते असूयति। भगवते श्लाघते। मदनाय शपते। मित्राय तिष्ठति।इत्यादि।

भाषार्थ-क्रुधि आदिक धातुओंके योगमें चतुर्थी विभक्ति होवै है। भाव यह है कि, क्रुधि, द्रुहि, ईर्ष्या, असूया, श्लाघ, ह्नुङ्, स्था, शप्, धारि, स्पृहि यह धातु क्रुध्यादिक हैं इनके योगमें चतुर्थी विभक्ति होवै है। जैसे क्रुध्यतिके योगसे क्रूरमें और द्रुह्यतिके योगसे विप्रमें और कुप्यतिके योगसे मित्रमें और असूयतिके योगसे गुणवत् शब्दमें और श्लाघतेके योगसे भगवत् शब्दमें और शपतेके योगसे मदनमें और तिष्ठतिके योगसे मित्र शब्दमें चतुर्थी विभक्ति हुई है ॥ इसप्रकार शेष धातुओंके योगमें चतुर्थी जानने योग्य है (१)॥

तुमर्थाच्च भाववचनाच्चतुर्थी। यागाय याति। यष्टुं यातीत्यर्थः।

भाषार्थ-तुम्प्रत्ययार्थ भाववचनसे चतुर्थी विभक्ति होय जैसे तुम्प्रत्ययार्थ भाववचन याग शब्दसे चतुर्थी विभक्ति हुईहै ॥

---

(१) लोकानां शुभाऽशुभसूचको भूतादिविकार उत्पातस्तत्रापि चतुर्थी। वाताय कपिला विद्युत्। वातोत्पातज्ञापिका इत्यर्थः। भाषार्थ-लोकोंका शुभ अशुभ जनानेवाला जो भूतादि विकारहै वह उत्पात होता है उसमें भी चतुर्थी विभक्ति होवै है। यहाँ कपिला विद्युत् वातोत्पातके जनानेवाली है इसकारण वात शब्दमें चतुर्थी विभक्ति हुई है। तुमन्तलोपेचतुर्थी फलेभ्योयाति। फलान्याहर्त्तुं [illegible] भाषार्थ-तुमुप्रत्ययान्त पदके लोपमें चतुर्थी विभक्ति होवै है जैसे तुम्प्रत्ययान्त आहर्त्तुं पदके लोप होनेमें फल शब्दसे चतुर्थी विभक्ति हुई है।

मन्यतेः कर्मण्यनादरे वा चतुर्थी। न त्वां तृणं मन्ये। न त्वां तृणाय मन्ये।

भाषार्थ–मन्यति क्रियाके अनादरार्थ कर्ममें चतुर्थी विभक्ति विकल्प करके होवै है। जैसे मन्ये क्रियाके योग होनेसे अनादरार्थ कर्मवाचक तृण शब्दमें एक जगह चतुर्थी विभक्ति हुई है॥

गत्यर्थकर्मणि द्वितीयाचतुर्थ्यौ । व्रजाय व्रजति व्रजं वा।

भाषार्थ–गत्यर्थवाचक कर्ममें द्वितीया और चतुर्थी दोनों विभक्ति होवैं हैं। जैसे गत्यर्थ कर्मवाचक व्रजमें व्रजति क्रियाके योगसे द्वितीया और चतुर्थी दोनों विभक्ति हुई हैं। इत्यलम्॥

ल्यब्लोपे पंचमी च वक्तव्या। हर्म्यात्प्रेक्षते। हर्म्यमारुह्य प्रेक्षते इत्यर्थः।

भाषार्थ–ल्यप्प्रत्ययान्त पदके लोपमें कर्म और अधिकरणके विषे पंचमी विभक्ति वक्तव्यहै। जैसे ल्यप्प्रत्ययान्त आरुह्य पदके लोप होनेपर कर्मसंज्ञक हर्म्य शब्दमें पंचमी विभक्ति हुई है। अर्थ–हर्म्यपर चढकर देखताहै। (आसनाद्वदति) आसने उपविश्य वदतीत्यर्थः। ल्यप्प्रत्ययान्त उपविश्य पदके लोप होनेपर अधिकरणसंज्ञक आसनशब्दमें पंचमी विभक्ति हुईहै। अर्थ–आसन पर बैठकर कहताहै॥

निमित्तात्कर्मयोगे सप्तमी च वक्तव्या। "चर्मणि द्वीपिनं हन्ति दन्तयोर्हंति कुञ्जरम्। केशेषु चमरीं हन्ति सीम्नि पुष्कलको हतः॥ १॥"

भाषार्थ–निमित्तसे कर्मयोग हुए संते सप्तमी विभक्ति वक्तव्यहै। भाव यहहै कि, कर्मयोग होनेपर प्रयोजनवाची शब्दसे सप्तमी विभक्ति होवै है। जैसे द्वीपीका मारना चर्मके निमित्तहै इसकारण कर्मवाचक द्वीपिन् शब्दके योगसे चर्मन् शब्दमें सप्तमी विभक्ति हुई है और कुंजरका मारना दन्तोंके निमित्तहै इसकारण कर्मवाचक कुंजर शब्दके योगसे दन्तशब्दमें सप्तमीद्विवचन हुआहै और चमरीका मारना केशोंके निमित्तहै इसकारण कर्मवाचक चमरी शब्दके योगसे केशशब्दमें सप्तमीविभक्ति हुई है और पुष्कलकका मारना सीमन्के निमित्तहै इसकारण कर्मवाचक पुष्कलक शब्दके योगसे सीमन् शब्दमें सप्तमी विभक्ति हुई है। अर्थ–चर्मके निमित्त द्वीपिन् नाम चित्रकको मारताहै और दाँतोंके निमित्त कुञ्जर नाम हाथीको मारताहै और केशोंके निमित्त चमरी गौको मारताहै और सीमन् नाम कस्तूरीके निमित्त पुष्कलक नाम गंध-मृग माराहै॥ १॥

विषये च। तर्के चतुरः।

भाषार्थ–विषय अर्थात् ग्राह्य अर्थ वाच्य हुए संते सप्तमी विभक्ति होवै है। जैसे (तर्के चतुरः) अर्थ। तर्क विषयमें चतुरहै॥

षष्ठीसप्तम्यो चानादरे । बहूनांक्रोशतांगतश्चौरः । बहुष्वसाधुषु निवारयत्स्वपि स्वयमार्योयातिसाधुमार्गेण । बहुषु साधुषु निवारयत्स्वपि स्वयमनार्यो यात्यसाधुमार्गेण । मातापित्रोरुदतोः प्रव्रजति पुत्रः ।

भाषार्थ–अनादर किये जानेपर षष्ठी और सप्तमी विभक्ति होवै है। जैसे पुकारते हुए बहुतसे जनोंका जानेवाले चौरने अपने जाने मात्रकर अनादर कियाहै इस कारण बहु और क्रोशत् शब्दमें षष्ठी विभक्ति हुई है। अर्थ–बहुतोंके पुकारते संते चौर चलागया। निवारण करनेवाले बहुतसे असाधुओंका आर्यने साधुमार्गके चलनेमात्रकर अनादर किया है इसकारण विशेष्यविशेषणात्मक साधु बहु निवारयत् शब्दोंमें सप्तमी विभक्ति हुई है। अर्थ–बहुत असाधुओंके मने करते संते भी स्वयं आर्य साधु मार्गकर जाता है और निवारण करनेवाले बहुतसे साधुओंके अनार्यने असाधु मार्गके चलने मात्रकर अनादर किया है इसकारण विशेष्यविशेषणात्मक साधु बहु निवारयत् शब्दोंमें सप्तमी विभक्ति हुई है । अर्थ–बहुतसे साधुओंके मने करते संते स्वयं अनार्य असाधुमार्गकर जाता है और रोवते हुए मातापिताओंका संन्यास लेकर जानेवाले पुत्रने अनादर किया है इसकारण विशेष्यविशेषणात्मक मातापितृ रुदत् शब्दोंमें सप्तमीद्विवचन हुआहै । अर्थ–मातापिताके रोवते संते पुत्र संन्यास लेकर जाता है (१)॥

अन्योक्ते प्रथमा ।

अन्योक्ते–प्रथमा । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) यदिदंकार्यत्वादन्येनाख्यातेन कृता चोक्तं भवति तदा प्रथमा प्रयोक्तव्या। घटःक्रियते।पटः कार्यः ।

भाषार्थ–जो कि, यह कार्यादि अर्थात् कर्मकारकादि अन्य नाम आख्यात वा कृदन्तकर कहा जाता है उस कर्ममें प्रथमा विभक्ति होवै है । भाव यह है कि, जो कि, कर्मादिकारक कर्मोक्ति भावोक्तिसंबन्धि आख्यात प्रत्यय कर साधे हुए धातु रूपकर कहा जावे अथवा कृदन्त प्रत्ययकर साधे हुए शब्दकर कहाजावै अथवा चकारके ग्रहणसे समास वा तद्धित कर कहाजावै उस कर्मादिमें प्रथमा विभक्ति होवै है। जैसे कर्मसम्बन्धि आख्यातके यक् प्रत्ययकर साधे हुए क्रियते रूपके साथ कर्मसंज्ञक घट शब्दका ग्रहण है इसकारण घट शब्दमें प्रथमा विभक्ति हुई है और कृदंन्तके घ्यण् प्रत्ययकर साधे हुए कार्य शब्दके साथ कर्मसंज्ञक पट शब्दका ग्रहण है इसकारण पट शब्दमें प्रथमा विभक्ति हुई है ॥

---

(१) क्तस्येन्नन्तस्य कर्मणि सप्तमी । 'अधीती व्याकरणे । भाषार्थ–इन् प्रत्यय है अन्तमें जिसके ऐसे क्त–प्रत्ययान्त शब्दके कर्मवाचक शब्दमें सप्तमी विभक्ति होय । जैसे इन्नन्त क्तप्रत्ययान्त अधीतिन् शब्दके कर्मवाचक व्याकरणशब्दमें सप्तमी विभक्ति हुई है । इति ॥

छन्दसि स्यादिः सर्वत्र। दध्ना जुहोति। पुनन्ति ब्रह्मणस्पतिः। व्रजतीर्विरेजुः॥ इति कारकप्रक्रिया॥

भाषार्थ–छन्दस् नाम वेदके विषे स्यादि विभक्ति सर्वत्र अर्थात् समस्त विभक्तियोंके अर्थमें होवै हैं। भाव यह है कि, वेदविषयमें समस्त विभक्ति समस्तविभक्तियोंके अर्थमें होती हैं। जैसे कर्मवाचक दधि शब्दमें द्वितीया विभक्ति होनी चाहिये थी सो वैदिक प्रयोग होनेसे द्वितीयाके स्थानमें तृतीया विभक्ति हुई है। और वैदिक प्रयोग होनेसेही। ब्रह्मणस्पतिः। इसके साथमें बहुवचनान्त। पुनन्तु। क्रियाका ग्रहण है अथवा कर्मवाचक ब्रह्मणस्पतिमें द्वितीया विभक्ति होनीचाहिये थी सो वैदिक प्रयोग होनेसे द्वितीयार्थमें प्रथमा विभक्ति हुई है और कर्तृवाचक व्रजती शब्दमें प्रथमा विभक्ति होनी चाहिये थी सो आर्ष वाक्य होनेसे प्रथमार्थमें द्वितीया विभक्ति हुई है। इसी प्रकार अन्य वैदिक प्रयोग जानने योग्य हैं॥

॥ इति कारकप्रक्रिया॥

अथार्थवद्विभक्तिविशिष्टानां पदानां समासो निरूप्यते।

भाषार्थ–अथ नाम कारक कहनेके अनन्तर अर्थवान् तथा विभक्तियुक्त ऐसे अनेक पदोंका समास निरूपण कियाजाता है। भाव यह है कि, जिसके विषे अनेक अर्थयुक्त पदोंका एक पद तथा एक विभक्ति की जाती है वह समास होता है। वही समास निरूपण कियाजाता है॥

समासश्चान्वये नाम्नाम्।

समासः–च–अन्वये–नाम्नाम्। चतुष्पदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) नाम्नामन्वययोग्यत्वे सत्येव समासो भवति। चशब्दात्तद्धितोपि भवति। ततो भार्या पुरुषस्येत्यादौ न भवति।

भाषार्थ–विभक्तियुक्त नामसंज्ञक शब्दोंके अन्वयकी योग्यता हुए संतेही समास होताहै। भाव यहहै कि, परस्पर अर्थकी संगतिका नाम अन्वयहै और बाधकप्रमाणके अभावका नाम योग्यताहै। यदि जहाँ विभक्तियुक्त नामसंज्ञक शब्दोंके परस्पर अर्थकी संगतिका बाधा करनेवाला प्रमाण न होवै तहाँ समास होताहै अर्थात् जहाँ विभक्तियुक्त शब्दोंके परस्पर अर्थकी संगतिकी योग्यता होवैहै तहाँ समास होताहै और सूत्रमें चकारके ग्रहणसे तद्धितप्रत्ययसम्बन्धी विग्रहभी अन्वययोग्यता भये संतेही अर्थात् परस्पर अर्थकी संगतिकी योग्यता होनेपरही होताहै तिसीकारणसे (भार्या पुरुषस्य) इत्यादिक विपरीत अन्वयमें समास नहीं होताहै। भाव यहहै कि, भार्या पुरुषस्य। इसमें विपरीत अन्वयहै इसकारण समास नहीं होताहै और (देवदत्तस्य भार्या पुरुषस्य वस्त्रम्) इत्यादिकमें प्रथमका और अन्तका

पद छोडकर शेष रहे हुए मध्यके दोनों पदोंकाभी समास नहीं होसक्ता; क्योंकि इन मध्यके दोनों पदोंमें अन्वयकी योग्यता नहीं है। इति ॥

स च षड्विधः अव्ययीभावस्तत्पुरुषो द्वन्द्वो बहुव्रीहिः कर्मधारयो द्विगुश्चेति। पूर्वपदप्रधानोऽव्ययीभावः। द्विगुतत्पुरुषौ परपदप्रधानौ। द्वन्द्वकर्मधारयौ चोभयपदप्रधानौ। बहुव्रीहिरन्यपदप्रधानः। तस्य क्रियाभिसम्बन्धादुभयपदप्रधानो बलवान्।

भाषार्थ-वह समास छः प्रकारका होताहै। एक अव्ययीभाव, दूसरा तत्पुरुष, तीसरा द्वन्द्व, चौथा बहुव्रीहि, पांचवाँ कर्मधारय और छठा द्विगुसंज्ञक है। जिस समासमें पूर्वोत्तर पदोंके मध्य पूर्व पदही प्रधान होताहै; वह अव्ययीभावहै और जिस समासमें पूर्वोत्तरपदोंके मध्य परपद प्रधान होताहै वह द्विगु और तत्पुरुषसंज्ञकहैं और जिस समासमें पूर्वोत्तर दोनों पद प्रधान होतेहैं वह द्वन्द्व और कर्मधारय संज्ञकहैं और जिस समासमें पूर्वोत्तर दोनों पदोंसे अन्य कोई पृथक्पद प्रधान होताहै वह बहुव्रीहिसंज्ञकहै तिस २ समासमें तिस प्रधान पदकी प्रधानता क्रियाओंके साथ अभिसम्बन्धसेहै। तात्पर्य यहहै कि, अव्ययीभावमें क्रियाके साथ पूर्वपदका अभिसम्बन्धहै इसकारण अव्ययीभाव समासमें पूर्वपद प्रधानहै और द्विगु तथा तत्पुरुषमें क्रियाके साथ पर पदका अभिसम्बन्धहै इसकारण द्विगु और तत्पुरुषसमासमें परपद प्रधानहै और द्वन्द्व और कर्मधारयसमासमें क्रियाके साथ पूर्वोत्तर दोनों पदोंका अभिसम्बन्धहै इसकारण द्वन्द्व और कर्मधारय समासमें पूर्वोत्तर दोनों पद प्रधानहैं और बहुव्रीहिमें क्रियाके साथ पूर्वोत्तर पदोंसे पृथक् पदका अभिसम्बन्धहै इसकारण बहुव्रीहिसमासमें अन्यपद प्रधानहै समासद्वयकी संभवतामें जो उभयपदप्रधानसमास है वह बलवान् होताहै। भाव यह है कि, जहाँ एकपदप्रधान तथा उभयपदप्रधान दोनों समास होसक्तेहैं तहाँ उभयपदप्रधान समासही होताहै न कि एकपदप्रधान ॥

ऐकपद्यमैकस्वर्यमेकविभक्तिकत्वं च समासप्रयोजनम्। अधि स्त्री। इति स्थिते। स्त्रीशब्दाद्द्वितीयैकवचनम् अम्। स्त्रीभ्रुवोः। स्त्रियमधिकृत्य भवतीति विग्रहे। अन्वययोग्यार्थसमर्थकः पदसमुदायो वाक्यमिति यावत्। स्वपदैरन्यपदैर्वा विविच्य कथनं विग्रहः। कृते समासेऽव्ययस्य पूर्वनिपातो वक्तव्यः।

भाषार्थ-ऐकपद्य ऐकस्वर्य एकविभक्तिकत्व समासका प्रयोजनहै। भाव यहहै कि, बहुत पदोंका एकपद होना और बहुत स्वरोंका एकस्वर होना और बहुत विभक्तियोंकी

एकविभक्ति होनी यह समासका प्रयोजनहै । इसके अनन्तर पूर्व कहे अव्ययाभावका उदाहरण कहतेहैं । अधि स्त्री । ऐसा स्थित है स्त्री शब्दसे द्वितीयाएकवचन अम् स्थितहै (स्त्रीभ्रुवोः) इसकर सिद्ध हुआ (स्त्रियम्) अब अधि और स्त्रियम् दोनोंका योग्य अन्वय हुआ (स्त्रियमधि) इस अन्वयका विग्रह किया तो हुआ। स्त्रियमधिकृत्य भवति । विग्रह उसको कहते हैं जो कि अन्वय नाम परस्पर अर्थ संगतिका योग्य अर्थ प्राप्त करनेवाला पदसमूह है और उसीको वाक्य इस नामसेभी बोलते हैं यदि कहो कि, अधि उपसर्गके स्थानमें अधिकृत्य ऐसा क्यों कहा तहाँ कहतेहैं कि, अपने पदोंकर वा अन्य पदोंकर पृथक्तापूर्वक जो कथनहै वहभी विग्रह होताहै जैसे अधि स्वपदकर अधिकृत्यका पृथक्तापूर्वक कथनहै इसकारण अधिकृत्य विग्रहसंज्ञक है इस विग्रहमें भवति क्रियाका सम्बन्ध अधि उपसर्गके साथहै इसकारण इसविग्रहमें अव्ययसंज्ञक अधिपद प्रधान है। समास किये जानेपर अव्यय संज्ञक पदको पूर्वनिपात वक्तव्यहै । जैसे (स्त्रियमधि) इस अन्वयमें समास किये जानेपर अव्ययसंज्ञक अधि उपसर्गको पूर्वनिपात किया तो हुआ । अधिस्त्रियम् ॥

पूर्वेऽव्ययेऽव्ययीभावः ।

पूर्वे–अव्यये–अव्ययीभावः । त्रिपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) अव्यये पूर्वपदे सति योऽन्वयः सोऽव्ययीभावसंज्ञकः समासो भवति । इति समाससंज्ञायां सत्याम् ।

भाषार्थ–अव्यय पूर्वपद हुए संते जो अन्वय है सो अव्ययीभावसंज्ञक समास होताहै जिस अन्वयमें अव्यय पूर्वपद होताहै वह समास अव्ययीभाव संज्ञक है। जैसे। अधिस्त्रियम् । इस अन्वयमें अन्वय पूर्वपद है इसकारण यह अव्ययीभावसंज्ञक समास है इस कथनसे। अधिस्त्रियम् । इसकी अव्ययीभाव समास संज्ञा हुई ॥

समासप्रत्यययोः ।

समासप्रत्यययोः । एकपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) समासे वर्त्तमानाया विभक्तेः प्रत्यये च परे लुग्भवति । इत्यमोलुक् । नामसंज्ञायां स्यादिर्विभक्तिः । अधिस्त्री सि । इति स्थिते ।

भाषार्थ–समासके विषे वर्त्तमान जो विभक्ति तिसका लुक् होय और प्रत्ययपर हुए संते भी विभक्तिका लुक् होय। भाव यह है कि, अव्ययीभाव आदिक जो छः प्रकारके समासहैं उनके विषे वर्त्तमान जो विभक्ति तिसका लुक् होय और कृदन्त प्रत्यय तथा तद्धित प्रत्यय पर हुए संते भी विभक्तिका लुक् होय

इस कथनसे द्वितीयाएकवचन सम्बन्धी अमूका लुक् करनेपर । निमित्ताभावे नैमित्तकस्याप्यभावः । इसकर ईके स्थानमें संपन्न हुए इय्का भी अभाव होगया तव रूप हुआ। अधिस्त्री। फिर (कृत्तद्धितसमासाश्च) इसकर समाससंज्ञक अधि स्त्री। इस रूपकी नाम संज्ञा करनेपर स्यादिक विभक्ति हुई । प्रथमा-एकवचनमें । अधिस्त्री सि । ऐसा स्थितहै ।

स नपुंसकम् ।

सः—नपुंसकम् । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) सोव्ययीभावः समासो नपुंसकलिंगो भवति । नपुंसकत्वाद्ध्रस्वत्वम् । अधिस्त्रि ।

भाषार्थ—सो अव्ययीभाव नपुंसकलिंग होताहै। इस कथनसे अव्ययीभाव संज्ञक। अधिस्त्री । इस रूपको नपुंसकलिंग होनेके कारण (नपुंसकस्य) इसकर ह्रस्व करनेपर रूप हुआ । अधिस्त्रि सि ॥

अव्ययीभावात् ।

अव्ययीभावात् । एकपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) अव्ययीभावात्परस्यावि-भक्तेर्लुग्भवति । अधिस्त्रि । गृहकार्यम्। रायमतिक्रान्तमतिरि—कुलम् । नावम-तिक्रान्तमतिनु—जलम् । ह्रस्वादेशे संध्यक्षराणामिकारोकारौ च वक्तव्यौ ।

भाषार्थ-अव्ययीभाव समाससे परे समस्त विभक्तियोंका लुक् होय। भाव यहहै कि, अव्ययीभाव समासमें विभक्ति मात्रका लुक् होय। इसकथनसे सिकालुक् करनेपर रूप सिद्ध हुआ (अधिस्त्रि) ऐसाही रूप अन्यसमस्तविभक्तियों-में होताहै यह स्त्र्यधीन गृहकार्यका नामहै और। रायमतिक्रान्तम् । ऐसा विग्रह किये जानेपर अव्ययीभाव समास हुआ तव अतिक्रान्त अर्थ वाचक अति अव्ययको पूर्वनिपात करनेपर रूप हुआ (अतिरायम्)। फिर (समासप्रत्यययोः) इसकर विभक्तिका लोप करनेपर ऐके स्थानमें सम्पन्न हुए आय्का भी अभाव होगया तव रूप हुआ (अतिरै) फिर (स नपुंसकम्) इसकर नपुंसकलिंग होनेसे ह्रस्व किया तव ऐकारके स्थानमें इकार हुआ क्योंकि, ह्रस्वके आदेशमें संन्ध्य-क्षरोंको इकार और उकार वक्तव्यहैं । तात्पर्य यहहै कि, ह्रस्वादेशमें एकार ऐकार-के स्थानमें इकार और ओकार औकारके स्थानमें उकार होताहै इस कथनकर ऐके स्थानमें इकार करनेपर रूप हुआ । अतिरिसि। फिर (अव्ययीभावात्)इसकर सि विभक्तिका लुक् करनेसे रूप सिद्ध हुआ (अतिरि) यह द्रव्यपूर्ण कुलका नामहै। और नावमतिक्रान्तम्। ऐसा विग्रह किये जानेपर अव्ययीभाव समास हुआ। तव अतिक्रान्त अर्थवाचक अति अव्ययको पूर्वनिपात करनेपर रूपहुआ अतिनावम् । फिर (समासप्रत्यययोः) इसकर विभक्तिका लोप करनेपर (निमित्ता-भावेनैमित्तिकस्याप्यभावः) इसकर औके स्थानमें सम्पन्न हुए आव्काभी अभाव

होगया तब रूप हुआ । अतिनौ । फिर (सनपुंसकम्) इसकर नपुंसकलिंग होनेसें ह्रस्व किया तब औकारके स्थानमें उकार हुआ क्योंकि ह्रस्वादेशमें औकारके स्थानमें उकार होताहै तब रूप हुआ । अतिनु । फिर (अव्ययीभावात्) इसकर सिविभक्तिका लुक् करनेसे रूप सिद्ध हुआ (अतिनु) ऐसाही समस्तविभक्तियोंमें सिद्ध हुआ । यह तरनेको अशक्य जो जलहै उसका नाम है ।:इसी प्रकार (उपनदि) (उपबन्धु) (उपकर्तृ) (अभ्यग्नि) (प्रत्यग्नि) (साग्नि) (अनुगिरि) (अनुवनम्) (अनुज्येष्ठम्) (प्रत्यक्षम्) (परोक्षम्) (समक्षम्) (अतिनिद्रम्) इत्यादिक अव्ययीभावसंज्ञक हैं ॥

यथाऽसादृश्ये । यथाशब्दोऽसादृश्ये वर्त्तमानः समस्यते । शक्तिमनतिक्रम्य करोति इति यथाशक्ति ।

भाषार्थ–असादृश्य अर्थके विषे वर्त्तमान जो यथा शब्द सो समासको प्राप्त होताहै । भाव यहहै कि, योग्यता और वीप्सा और पदार्थानतिवृत्ति और सादृश्य यह यथा शब्दके चार अर्थहैं तिनमें सादृश्यार्थको त्यागकर अन्य अर्थोंके विषे वर्त्तमान हुए यथा शब्दका अन्वित पदके साथ समास होताहै । योग्यता अर्थमें वर्त्तमान हुए यथा शब्दके समासका उदाहरण । रूपस्य यथा । इस अन्वयके योग्य अर्थका प्राप्त करनेवाला विग्रह हुआ । रूपस्य योग्यम् । इसविग्रहमें योग्यार्थवाचक यथाशब्दके साथ क्रियाका सम्बन्धहै इसकारण इसमें अव्ययसंज्ञक यथाशब्द प्रधानहै । अब अन्वयके अव्यय संज्ञक पदको समास करतेसंते पूर्वनिपात किया तब रूप हुआ । यथारूपस्य । फिर (समासप्रत्यययोः) इसकर षष्ठी विभक्तिका लुक् करनेपर रूप हुआ । यथारूप । फिर नामसंज्ञक होनेसे सि विभक्ति करनेपर अगले (अतोऽमनतः) इस सूत्रकर सिद्ध हुआ (यथारूपम्) और पदार्थोंके व्याप्त होनेकी इच्छाका नाम वीप्साहै उस वीप्सा अर्थके विषे वर्त्तमान हुए यथाशब्दके समासका उदाहरण वीप्साके विषे द्वित्व करनेसे अन्वयपूर्वक विग्रह हुआ (वृद्धं वृद्धं प्रति) इस वीप्सा अर्थवाचक यथाशब्दको पूर्वनिपात करनेसे रूप हुआ । यथावृद्धम् । फिर (समासप्रत्यययोः) इसकर द्वितीयाएकवचनका लुक करनेसे रूप हुआ । यथावृद्ध । फिर (कृत्तद्धितसमासाश्च) इसकर नामसंज्ञा होनेपर सिविभक्ति करनेसे (अतोऽमनतः) इसकर सिद्ध हुआ (यथावृद्धम्) पदार्थके नहीं उल्लंघन करनेका नाम पदार्थानतिवृत्तिहै उसी पदार्थानतिवृत्तिके विषे वर्त्तमान हुए यथाशब्दके समासका उदाहरण । शक्तिमनतिक्रम्य करोति । इस अन्वयपूर्वक विग्रहके विषे अनतिक्रम्य अर्थवाचक यथा अव्ययको पूर्वनिपात करनेपर रूप हुआ । यथाशक्ति । फिर (समासप्रत्यययोः) इसकर द्वितीयैकवचनका लुक् करनेपर रूप

हुआ (यथाशक्ति) फिर नामसंज्ञा होनेपर सिविभक्ति करनेसे (अव्ययीभावात्) इसकर सिद्धहुआ (यथाशक्ति) इसीप्रकार समस्त विभक्तियोंमें सिद्ध हुआ जानना अर्थ-शक्तिको नहीं उलंघन करके करताहै अर्थात् शक्तिके अनुसार करताहै । और यथाशब्द सादृश्य अर्थके विषे नहीं समासको प्राप्त होताहै जैसे । यथा हरिस्तथा हरः ।

अतोऽमनतः ।

अतः-अम्-अनतः । त्रिपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) अकारान्तादव्ययीभावात्परस्याविभक्तेरम् भवति अतंवर्जयित्वा । कुम्भस्य समीपम् । उपकुम्भं वर्त्तते । उपकुंभं पश्य ।

भाषार्थ-अकारहै अन्तमें जिसके ऐसे अव्ययीभावसे परे विभक्तिमात्रको अम् आदेश होय परन्तु ङसिके स्थानमें आदेश किये अत्‌को त्यागकरके अर्थात् पंचमी एकवचनको अम् आदेश नहीं होय । यहाँ उदाहरणहै । कुम्भस्य समीपम् । इस विग्रहमें समीपार्थवाचक उप अव्ययको पूर्वनिपात किया और समीप शब्दको (उक्तार्थानामप्रयोगः) (१) इसकर दूर किया तव रूप हुआ । उपकुम्भस्य । फिर (समासप्रत्यययोः) इसकर षष्ठीएकवचनका लुक् करनेसे रूप हुआ (उपकुम्भ) फिर नाम संज्ञा होनेसे प्रथमा विभक्ति करनेपर (अतोऽमनतः) इसकर सिद्ध हुआ (उपकुम्भं वर्त्तते) अर्थ-कुम्भके समीप वर्त्तमानहै इसीप्रकार द्वितीयामें हुआ (उपकुम्भं पश्य) अर्थ-कुम्भके समीप देखिये ॥

वा टाङ्योः ।

वा-टाङ्योः । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) अकारान्तादव्ययीभावात्परयोष्टाङि इत्येतयोर्वा अम् भवति । उपकुम्भेन कृतम् । उपकुम्भं कृतम् । उपकुम्भं देहि । उपकुम्भादानय । अनत इति विशेषणात्पंचम्या अम् न भवति । उपकुम्भं देशः । उपकुम्भे निधेहि । उपकुम्भं निधेहि ।

भाषार्थ-अकारहै अन्तमें जिसके ऐसे अव्ययीभावसे परे टा और ङि इन विभक्तिवचनोंको विकल्प करके अम् होय । जैसे अव्ययीभाव संज्ञक अकारान्त उपकुम्भ शब्दसे तृतीयाएकवचनके स्थानमें एक जगह अम् करनेसे रूप हुआ (उपकुम्भम्) और एक जगह (टेन) इसकर रूप हुआ (उपकुम्भेन) अर्थ-कुम्भके समीपने कियाहै । चतुर्थीमें (अतोऽमनतः) इसकर सिद्ध हुआ (उपकुम्भम्) अर्थ-कुम्भके समीपके लिये दीजिये (अतोऽमनतः) इस सूत्रमें अनतः इस

(१) समासके विषे कहाहै अर्थ जिन्हों करके एस शब्दोंका अप्रयोग अर्थात् लोप होजाता है ।

विशेषणसे पंचमीएकवचनको अम् नहीं होताहै किन्तु (ङसिरत्) इसकर सिद्ध हुआ (उपकुम्भात्) अर्थ–कुम्भके समीपसे लाइये। षष्ठीमें (अतोऽमनतः) इसकर सिद्ध हुआ (उपकुम्भम्) अर्थ–कुम्भके समीपका देशहै और सप्तमीमें (वाटाङ्च्योः) इसकर एक जगह सिद्ध हुआ (उपकुम्भम्) और जहाँ अम् नहीं हुआ तहाँ (अ इ ए) इसकर सिद्ध हुआ (उपकुम्भे) अर्थ–कुम्भके समीपमें रखिये ॥

अवधारणार्थे यावति च। यावन्त्यमत्राणि तावतो ब्राह्मणानामन्त्रयस्वेति। यावदमत्रमामन्त्रस्व। मक्षिकाणामभावो वर्तते इति निर्मक्षिकं वर्त्तते।

भाषार्थ–अवधारण नाम निश्चय अर्थके विषे यावत् शब्द पूर्वपद हुए संते अव्ययीभाव समास होताहै। भाव यहहै कि, केवल अव्यय पूर्वपद हुए संते ही अव्ययीभाव समास नहीं होताहै। किन्तु अवधारण अर्थमें यावत् शब्द पूर्वपद हुए संते जो अन्वयपूर्वक विग्रहहै उसमें भी अव्ययीभावसंज्ञक समास होताहै जैसे। यावन्ति अमत्राणि संभवन्ति तावतो ब्राह्मणान् आमन्त्रयस्व। इस विग्रहमें अन्वयके योग्यार्थवाचक पदोंको समास करनेपर (उक्तार्थानामप्रयोगः) इसकर लोप करनेसे रूप हुआ। यावन्ति अमत्राणि। फिर (समासप्रत्यययोः) इसकर दोनों पदोंकी विभक्तियोंका लोप करनेपर रूप हुआ। यावदमत्र। फिर नाम संज्ञा होनेपर स्यादिक विभक्तियोंमेंसे शस् विभक्तिवचन हुआ। क्योंकि विग्रहमें। ब्राह्मणान्। यह विशेष पद द्वितीयाबहुवचनान्तहै तब (अतोऽमनतः) इसकर सिद्ध हुआ (यावदमत्रम्) अर्थ–जितने पात्रहैं उतने ब्राह्मणोंका निमंत्रण कीजिये। मक्षिकाणामभावो वर्त्तते। इस विग्रहमें अभावार्थवाचक निर् अव्ययको पूर्वनिपात किया समास करनेपर अभाव शब्दका और क्रियापदका लोप किया तब रूप हुआ। निर्मक्षिकाणाम्। फिर (समासप्रत्यययोः) इसकर षष्ठीबहुवचनका लुक् करनेपर रूप हुआ। निर्मक्षिका। फिर नाम संज्ञा होनेपर अव्ययीभावको नपुसंकलिंग होनेसे ह्रस्व हुआ तब रूप हुआ। निर्मक्षिक। फिर (अतोऽमनतः) इसकर सिविभक्तिको अम् करनेपर रूप सिद्ध हुआ (निर्मक्षिकम्) अर्थ–मक्षिकाओंका अभाव वर्त्तमानहै। इसप्रकार अव्ययीभाव समास होताहै ॥

अमादौ तत्पुरुषः।

अमादौ–तत्पुरुषः। द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) द्वितीयाद्यन्ते पूर्वपदे सति तत्पुरुषसंज्ञकः समासो भवति। ग्रामं प्राप्तः। ग्रामप्राप्तः। दात्रेण छिन्नम्। दात्रच्छिन्नम्। यूपाय दारु। यूपदारु। वृकेभ्यो भयम्। वृकभयम्।

राज्ञः पुरुषः । राजपुरुषः । अक्षेषु शौंडः । अक्षशौंडः । क्वचिदभाव-न्तस्य परत्वम् । अग्नौ आहितः । आहिताग्निः । पूर्वभूतः । भूतपूर्वः ।

भाषार्थ-द्वितीयाद्यन्त पूर्वपद हुए संते तत्पुरुषसंज्ञक समास होताहै । भाव यह है कि, जिस पदके अन्तमें द्वितीयादिक सप्तमीपर्यन्त विभक्तियोंमेंसे कोई विभक्ति होवै वह पद जिस विग्रहमें पूर्वपद होवै उस विग्रहमें तत्पुरुषसंज्ञक समास होताहै जैसे । ग्रामं प्राप्तः । इस विग्रहमें द्वितीयान्त ग्राम शब्द पूर्व है और प्रथमान्त प्राप्त शब्दका क्रियाके साथ सम्वन्ध है इसकारण परपदप्रधान तत्पुरुष समास हुआ तव समाससंज्ञा होनेपर (समासप्रत्यययोः) इसकर विभक्तियोंका लुक् करनेसें रूप हुआ । ग्राम प्राप्त । फिर नाम संज्ञा करनेसे सि विभक्ति की तव रूप सिद्ध हुआ (ग्रामप्राप्तः) और । दात्रेण छिन्नम् । इस विग्रहमें तृतीयान्त दात्र शब्द पूर्व है और प्रथमान्त छिन्न शब्दका क्रियाके साथ सम्बन्ध है इसकारण परपदप्रधान तत्पुरुष समास हुआ तव समाससंज्ञा होनेपर (समासप्रत्यययोः) इसकर विभक्ति-योंका लुक् करनेसे रूप हुआ । दात्रच्छिन्न । फिर नाम संज्ञा होनेसे सि विभक्ति की तव (अतोऽम्) इसकर सिद्ध हुआ (दात्रच्छिन्नम्) और । यूपाय दारु । इस विग्रहमें चतुर्थ्यन्त यूप शब्द पूर्व है और प्रथमान्त दारु शब्दका क्रियाके साथ सम्वन्ध है इसकारण तत्पुरुषसमास हुआ तव समाससंज्ञा होनेपर (समासप्रत्य-ययोः) इसकर विभक्तियोंका लुक् करनेसे रूप हुआ । यूपदारु । फिर समास संज्ञा होनेसे सि विभक्तिकी तव (नपुंसकात्स्यमोर्लुक्) इसकर सिद्ध हुआ । (यूपदारु) और । वृकेभ्यो भयम् । इस विग्रहमें पंचम्यन्त वृकशब्द पूर्व है और प्रथमान्त भयशब्दका क्रियाके साथ सम्वन्ध है इसकारण तत्पुरुष समास हुआ तव समास-संज्ञा होनेपर (समासप्रत्यययोः) इसकर विभक्तियोंका लुक् करनेसे रूप हुआ । वृकभय । फिर नाम संज्ञा होनेसे सि विभक्ति की तव (अतोम्) इसकर सिद्ध हुआ (वृकभयम्) और । राज्ञः पुरुषः । इस विग्रहमें षष्ठ्यन्त राजन् शब्द पूर्व है और प्रथमान्त पुरुष शब्दके साथ क्रियाका सम्बन्ध है इसकारण तत्पुरुष समास हुआ समास संज्ञा होने पर (समासप्रत्यययोः) इसकर विभक्तियोंका लुक् करनेपर रूप हुआ । राजन् पुरुष । फिर (नाम्नो नो लोपशधौ) इसकर नकारका लोपश् करनेपर रूप हुआ । राजपुरुष । फिर नाम संज्ञा होनेसे सि विभक्ति की तव रूप सिद्ध हुआ (राजपुरुषः) और । अक्षेषु शौंडः । इस विग्रहमें सप्तम्यन्त अक्ष शब्द पूर्व है और प्रथमान्त शौंड शब्दका क्रियाके साथ सम्बन्ध है इसकारण परपदप्रधान तत्पुरुष समास हुआ । तव समास संज्ञा होनेपर (समासप्रत्यययोः) इसकर विभक्तियोंका लुक् करनेपर रूप हुआ । अक्षशौंड ।

फिर नाम संज्ञा होनेसे सि विभक्ति की तब रूप सिद्ध हुआ (अक्षशौंडः) कहीं प्रयोगान्तरके विषे तत्पुरुषसमासमें वर्त्तमान हुए द्वितीयादि विभक्त्यन्त पूर्वपदको परत्व अर्थात् उत्तर पदत्ता होवै है। भाव यह है कि, कहीं प्रयोगोंमें तत्पुरुष समासके विषे वर्त्तमान द्वितीयादि विभक्तयन्त पूर्वपद उत्तरपदके जगह स्थित होता है और उत्तरपद पूर्वपदके जगह स्थित होता है जैसे । अग्नौ आहितः । इस विग्रहमें सप्तम्यन्त पद पूर्व है और प्रथमान्त परपदका क्रियाके साथ सम्बन्ध है इस कारण तत्पुरुष समास हुआ तब समास संज्ञा होनेपर (समासप्रत्यययोः) इसकर विभक्तियोंका लुक् करनेपर रूप हुआ । अग्निआहित । अब यहाँ पूर्वपदको परपदके स्थानमें स्थित किया और परपदको पूर्वपदके स्थानमें स्थित किया तब रूप हुआ । आहित अग्नि । फिर (सवर्णे दीर्घः सह) इसकर हुआ । आहिताग्नि । फिर नाम संज्ञा होनेसे सि विभक्ति की तब रूप सिद्ध हुआ (आहिताग्निः) और । पूर्वंभूतः । इस विग्रहमें द्वितीयान्त पद पूर्व है और प्रथमान्त परपदका क्रियाके साथ सम्बन्ध है इसकारण तत्पुरुष समास हुआ समास संज्ञा होनेपर विभक्तियोंका लुक् किया तब रूप हुआ (पूर्वभूत) अव यहाँ पूर्व पदको पर पदके स्थानमें स्थित किया और पर पदको पूर्व पदके स्थानमें स्थित किया तब रूप हुआ । भूतपूर्व । फिर नामसंज्ञा होनेपर सि विभक्ति करनेसे रूप सिद्ध हुआ (भूतपूर्वः)॥

समासे क्वचिदैकपद्यं णत्वहेतुः । शराणां वनम् । शरवणम् । आम्राणां वनम् । आम्रवनम् । त्रिणयनः । पानस्य वा । सुराणां पानम् । सुरापाणम् । सुरापानम् ।

भाषार्थ–समासके विषे कहीं प्रयोगान्तरमें ऐकपद्य णत्वका हेतु होता है। भाव यह है कि, कहीं प्रयोगान्तरमें समास होनेपर पूर्व पदके षकार रेफ ऋवर्णरूप निमित्तसे उत्तरपदके नकारके स्थानमें णकार होताहै जैसे । शराणां वनम् । इस विग्रहमें तत्पुरुष समास होनेपर (समासप्रत्यययोः) इसकर विभक्तियोंका लोप किया तब रूप हुआ। शरवन। इसमें पूर्व पदके रकार निमित्तसे उत्तरपदके नकारके स्थानमें णकार करनेसे रूप हुआ। शरवण। फिर नाम संज्ञा होनेसे विभक्ति की तब (अतोम्) इसकर रूप सिद्ध हुआ (शरवणम्) और (आम्राणां वनम्) इस विग्रहमें तत्पुरुष समास होनेपर विभक्तियोंका लुक् करनेसे रूप हुआ। आम्रवन । फिर पूर्वपदके रकार निमित्तसे उत्तर पदके नकारके स्थानमें णकार करनेसे रूप हुआ। आम्रवण। फिर नाम संज्ञा होनेपर सि विभक्ति करनेसे (अतोम्) इसकर सिद्ध हुआ (आम्रवणम्) इसीप्रकार बहुव्रीहिसमासमें सिद्ध हुआ। त्रिणयनम् । और पान शब्दसम्बन्धी नकारके स्थानमें विकल्प करके णकार होय जैसे ।

सुराणां पानम् । इस विग्रहमें तत्पुरुष समास होनेपर विभक्तियोंका लुक् करनेसे रूप हुआ । सुरापान । फिर पूर्वपदके रकार निमित्तसे उत्तर पद पान सम्बन्धीं नकारके स्थानमें एक जगह णकार करनेसे रूप हुआ । सुरापाण । फिर नाम संज्ञा होने पर सि विभक्ति करनेसे (अतोऽम्) इसकर सिद्ध हुआ (सुरापाणम्) और जहाँ नकारके स्थानमें णकार नहीं हुआ तहाँ सिद्ध हुआ (सुरापानम्)(१)॥

नञि ।

नँञिं । एकपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) नञि पूर्वपदे सति तत्पुरुषसंज्ञकः समासो भवति । न ब्राह्मणः । अब्राह्मणः ।

भाषार्थ-नञ् अव्यय पूर्वपद हुए संते तत्पुरुषसंज्ञक समास होता है । भाव यह है कि, जिस विग्रहके विषे निषेध अर्थवाचक नञ् अव्यय पूर्वपद होवै उस विग्रहमें तत्पुरुषसंज्ञक समास होता है जैसे । न ब्राह्मणः । इस विग्रहमें तत्पुरुषसंज्ञक समास होनेपर (समासप्रत्यययोः) इसकर विभक्तिका लुक् करनेसे रूप हुआ । न ब्राह्मण । फिर- ।

ना ।

अ० १ १
न-अ । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) समासे सति नञोऽकारादेशो भवति नाकादिवर्ज्जम् ।

भाषार्थ-समास हुए संते निषेधार्थवाचक नञ् अव्ययको अकार आदेश होय नाकादिक (२) शब्दोंको वर्जिकरके । जैसे तत्पुरुषसंज्ञक । न ब्राह्मण । इस रूपमें निषेधार्थवाचक न के स्थानमें अकार आदेश होनेसे रूप हुआ । अब्राह्मण । फिर नामसंज्ञा होनेपर सि विभक्ति करनेसे (स्रोर्विसर्गः) इसकर रूप सिद्ध हुआ (अब्राह्मणः) ॥

---

(१) क्वचित् । इसपदके कहनेसे समासके विषे एकपद होनेपर भी पूर्वपदके षकार रेफ ऋवर्ण रूप निमित्तसे उत्तर पदके नकारके स्थानमें णकार नहीं होय जैसे (इंद्रवाहना) (हरिभामिनी) (प्रिययूना) (परिपक्वानि) इत्यादिकके विषे णकार नहीं होताहै और (दूर्वावनम्) (दूर्वावणम्) (गिरिनदी) (गिरिणदी) (चक्रनितम्बा) (चक्रणितम्बा) इत्यादिकमें विकल्पकरके णकार होता है । और (शरवणम्) (प्लक्षवणम्) (खदिरवणम्) (प्रवणम्) (अन्तर्वणम्) (पूर्वाह्णः) (अपराह्णः) (खुरणा) (खुरणसः) (शूर्पणखा) इत्यादिकके विषे नित्यही णकार होताहै ।

(२) नाक, नाग, नमुचि, नख, नक्षत्र, नपुंसक, नकुल, नग, नक्त, नभ्राज, नासत्य, नाराच, नचिकेतस्, नापित, नमेरु, ननांद, नारंग, नास्तिक, नातिविस्तर । इत्यादिक शब्द नाकादिकहैं । इति ॥

अन्स्वरे।

अन्–स्वरे। द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) नञोऽनादेशो भवति स्वरे परे। अश्वादन्योऽनश्वः। धर्माद्विरुद्धोऽधर्मः। ग्रहणस्याभावोऽग्रहणम्। तदन्यतद्विरुद्धतदभावेषु नञ् वर्त्तते।

भाषार्थ–नञ् अव्ययको अन् आदेश होय स्वरपरे संते। भाव यहहै कि, समास होनेपर अन्यार्थ विरुद्धार्थ निषेधार्थ अभावार्थ वाची नञ् अव्ययको स्वर परे संते अन् आदेश होय नाकादिक शब्दोंको वर्जि करके। जैसे अश्वादन्यः। धर्माद्विरुद्धः। ग्रहणस्याभावः। इन तीनों विग्रहोंमें अन्य विरुद्ध अभाववाचक नञ् अव्ययको पूर्व प्रयुक्त किया। और (उक्तार्थानामप्रयोगः) इसकर अन्य विरुद्ध अभावशब्दोंका लोप किया। फिर (समासप्रत्यययोः) इसकर विभक्तियोंका लुक् करने पर रूप हुए। न अश्व। न धर्म। न ग्रहण। इन तीनों तत्पुरुषसमासोंमें प्रथमसमासमें नञ अव्ययसे अश्व शब्दसम्बन्धी अकार परहै इसकारण नञ्के स्थानमें अन् आदेश करनेपर रूप हुआ। अनश्व। और द्वितीय तथा तृतीय तत्पुरुष समासमें (ना) इस सूत्रकर नञ्के स्थान अकार आदेश करनेपर रूपहुए। अधर्म। तथा। अग्रहण। फिर तीनों तत्पुरुषसंज्ञक समासरूपोंकी नाम संज्ञा होनेसे सिविभक्ति की तब रूप सिद्धहुए (अनश्वः) (अधर्मः) (अग्रहणम्) तिससे अन्य अथवा तिससे विरुद्ध अथवा तिसका अभाव इन अर्थोंके विषे नञ् अव्यय वर्त्तताहै इसप्रकार तत्पुरुष समासकी प्रक्रियाहै॥

चार्थे द्वन्द्वः।

चार्थे–द्वन्द्वः। द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) समुच्चयान्वाचयेतरेतरयोगसमाहाराश्चार्थाः। तत्रेश्वरं गुरुं च भजस्वेति प्रत्येकमेकक्रियासंबंधे समुच्चये समासो नास्ति। बटो भिक्षामट गां चानयेति क्रमेण क्रियाद्वयसंबंधेऽन्वाचये च समासो नास्ति परस्परमसम्बन्धात्। इतरेतरयोगे समाहारे च चार्थे द्वंद्वसमासो भवति।

भाषार्थ–समुच्चय और अन्वाचय इतरेतरयोग और समाहार यह चारों च अव्ययके अर्थ हैं समुच्चय वह कहाताहै जिसमें दो वा बहुतकर्म एक क्रियानिष्ठ हों जैसे (ईश्वरं गुरुं च भजस्व) इसमें प्रत्येक कर्मके प्रति एक क्रियाका सम्बन्ध है इसकारण यह समुच्चय चार्थहै समुच्चय चार्थमें समास नहीं होताहै। इसमें जो च अव्ययहै उसमें कर्मवाचक ईश्वर और गुरु शब्दके साथ भजस्व क्रियाका सम्बन्ध

जनायाहै और अन्वाचय वह कहाताहै जिसमें प्रत्येक कर्म प्रत्येक क्रियानिष्ठ हों जैसे (वटो भिक्षामट गां चानय) इसमें प्रत्येक कर्मके प्रति प्रत्येक क्रियाका सम्बन्धहै इसकारण यह अन्वाचय चार्थहै। अन्वाचय चार्थमें भी समास नहीं होताहै इसमें जो च अव्ययहै उसने कर्मवाचक भिक्षा शब्दके साथ अट क्रियाका और कर्मवाचक गौ शब्दके साथ आनय क्रियाका सम्बन्ध जनायाहै । यदि कहो कि, समुच्चय और अन्वाचय चार्थमें क्यों नहीं समास होताहै तहाँ कहतेहैं परस्पर असम्बन्धसे अर्थात् अन्वयकी योग्यता नहीं होनेसे । भाव यह है कि, समुच्चय तथा अन्वाचय चार्थमें अन्वयकी योग्यता नहीं होनेसे समास नहीं होताहै । और इतरेतर योग तथा समाहार चार्थके विषे परस्पर सम्बन्ध होनेसे द्वन्द्वसमास होता है । परस्परसापेक्ष दो शब्दोंके योगका एक क्रियाके साथ सम्बन्ध होवै वह इतरेतर योग होताहै और बहुतोंके इकट्ठे होनेका नाम समाहार है ॥

द्वन्द्वेऽल्पस्वरप्रधानेकारोकारान्तानां पूर्वनिपातो वक्तव्यः । पटुश्चगुप्तश्च पटुगुप्तौ । उक्तार्थानामप्रयोगः । अग्निश्च मारुतश्च । अग्निमारुतौ । भोक्ता च भोग्यश्च । भोक्तृभोग्यौ । धवश्च खदिरश्च । धवखदिरौ ।

भाषार्थ-द्वन्द्व समासके विषे अल्पस्वर तथा प्रधान तथा इकारान्त उकारान्त शब्दोंको पूर्वनिपात वक्तव्यहै । भाव यहहै कि, द्वन्द्वसमासके विषे प्रथम वह पद प्रयुक्त करना चाहिये जिसमें समासके अन्य पदसे अल्पस्वर होवैं और यदि समासके समस्त पदोंमें समान स्वर होवैं तो प्रथम वहुपद प्रयुक्त करना चाहिये जो कि, प्रधान अथवा इकारान्त अथवा उकारान्त होवै अब द्वंद्वसमासका उदाहरण दिखाते हैं । पटुश्च गुप्तश्च । इस विग्रहमें परस्पर सापेक्ष दोनों पटुगुप्त शब्दोंके योगका सम्बन्ध एक क्रियाके साथहै इसकारण इतरेतरयोग द्वंद्वसमास हुआ इस इतरेतरयोग चार्थमें द्वन्द्व समास संज्ञा होनेपर (समासप्रत्यययोः) इसकर विभक्तियोंका लुक् करदिया । और चकारकाभी लोप किया क्योंकि समासमें कहेगयेहैं अर्थ जिन्होंकरके ऐसे शब्दोंका अप्रयोग अर्थात् अभाव यानी लोप होजाताहै । तब रूप हुआ । पटुगुप्त । इसमें यद्यपि पटुगुप्त यह दोनों समान स्वरूपहैं तथापि पटु शब्दको उकारान्त होनेसे पूर्व निपातहै फिर नाम संज्ञा होनेसे । इतरेतरयोगे द्विवचनम् । इसकर प्रथमाद्विवचन किया तब रूप सिद्ध हुआ (पटुगुप्तौ) और । अग्निश्च मारुतश्च । इस विग्रहमें इतरेतर योग चार्थहै इसकारण द्वन्द्वसमास हुआ समाससंज्ञा होनेपर विभक्तियोंका लुक् किया और (उक्तार्थानामप्रयोगः) इसकर चकारका लोप किया तब रूप हुआ । अग्निमारुत । इसमें अग्नि शब्दको अल्पस्वर तथा इकारान्त होनेसे पूर्व निपातहै फिर नाम संज्ञा होनेपर । इतरेतरयोगे द्विवचनम् । इसकर प्रथमाद्विवचन करनेसे रूप सिद्ध हुआ (अग्निमारुतौ)

और। भोक्ता च भोग्यश्च। इस विग्रहमें भी इतरेतर योग चार्थ है इसकारण द्वंद्व समास हुआ समाससंज्ञामें विभक्तियोंका लुक् किया और चकारका लोप किया तब रूप हुआ। भोक्तृ भोग्य। इसमें भोक्तृ शब्दको प्रधान होनेसे पूर्व निपातहै फिर नाम संज्ञामें प्रथमाद्विवचन करनेसे रूप सिद्ध हुआ (भोक्तृभोग्यौ) और। धवश्च खदिरश्च। इस विग्रहमें भी इतरेतर योग चार्थ है इसकारण द्वंद्वसमास हुआ समाससंज्ञामें विभक्तियोंका लुक् किया और चकार का लोप किया तब रूप हुआ। धवखदिर। इसमें धवशब्दको अल्पस्वर होनेसे पूर्व निपातहै फिर नाम-संज्ञामें प्रथमाद्विवचन करनेसे रूप सिद्ध हुआ (धवखदिरौ) और। स्त्री च पुरुषश्च। इस विग्रहमें भी इतरेतर चार्थ है इसकारण द्वंद्वसमास हुआ समाससंज्ञामें विभक्तियोंका लुक् और चकारका लोप किया तब रूप हुआ। स्त्री पुरुष। इसमें पुरुष शब्द प्रधानभी है तथापि स्त्री शब्दको अल्पस्वर होनेसे पूर्व निपातहै फिर नामसंज्ञामें प्रथमाद्विवचन करनेसे रूप सिद्ध हुआ (स्त्रीपुरुषौ)॥

देवताद्वन्द्वे पूर्वपदस्य दीर्घो वक्तव्यः। अग्न्यादेः सोमादीनां सस्य षत्वं वक्तव्यम्। अग्नीषोमौ। इन्द्राबृहस्पती। इतरेतरयोगे द्विवचनम्। "यत्र द्वित्वं बहुत्वं च स द्वंद्व इतरेतरः॥ समाहारः स विज्ञेयो यत्रैकत्वं नपुंसकम्॥ १॥" एकवद्भावो वा समाहारे वक्तव्यः। शशाश्च कुशाश्च पलाशाश्च। शशकुशपलाशाः। शशकुशपलाशम्। अन्यादीनां विभक्तिलोपे पूर्वस्य सगागमो वक्तव्यः। अन्योन्यम्। परस्परम्।

भाषार्थ–देवतावाचक शब्दोंके द्वंद्वसमासके विषे पूर्वपदके अन्त्यस्वरको दीर्घ वक्तव्यहै। उदाहरण। अग्निश्च सोमश्च। इस विग्रहमें इतरेतर योग चार्थ होनेसे द्वंद्व-समास करनेपर विभक्तियोंका लुक् और चकारका लोप किया तब रूप हुआ। अग्निसोम। इसमें अग्नि शब्दको इकारान्त होनेसे पूर्वनिपातहै और यह देवतावाचक शब्दोंका द्वंद्वसमासहै इसकारण पूर्व पद अग्नि शब्दके अन्त्यस्वर इकारको दीर्घ करनेपर रूप हुआ। अग्नीसोम। अग्न्यादिक शब्दोंसे परे जो सोमादिक शब्द तिनके आद्य सकारको षकार वक्तव्यहै। इसकर सोमशब्दके आद्य सकारके स्थानमें षकार करनेपर रूप हुआ। अग्नीषोम। फिर नाम संज्ञामें प्रथमाद्विवचन करनेसे रूप सिद्ध हुआ (अग्नीषोमौ) और। इंद्रश्च बृहस्पतिश्च। इस विग्रहमें भी इतरेतर-योग चार्थ होनेसे द्वंद्वसमास करनेपर विभक्तियोंका तथा चकारका लोप करदिया तब रूप हुआ। इंद्रबृहस्पति। इसमें इंद्र शब्दको अल्पस्वर होनेसे पूर्व निपातहै और यह देवतावाचक शब्दोंका द्वंद्वसमास है इसकारण पूर्वपद इंद्र शब्दके अन्त्य-

स्वर अकारको दीर्घ करनेपर रूप हुआ । इन्द्राबृहस्पति । फिर नामसंज्ञामें प्रथमाद्विवचन करनेपर रूप सिद्ध हुआ (इंद्राबृहस्पती) इसीप्रकार (सूर्याचंद्रमसौ) (मित्रावरुणौ) यह सिद्ध हुए जानने । इतरेतरयोग द्वन्द्वसमासके विषे द्विवचन होताहै । भाव यहहै कि, इतरेतरयोग द्वंद्वसमासके विषे द्विवचन होताहै परन्तु लिंग वह होताहै जो कि, उत्तरपदमें लिंग होताहै ॥ जिस द्वंद्वसमासमें द्विवचन वा बहुवचन होय वह इतरेतर योगहै और जिस द्वंद्वसमासके विषे एकवचन और नपुंसकलिंग हो वह समाहार जानने योग्यहै ॥ १ ॥ समाहार द्वंद्वसमासके विषे एकवद्भाव विकल्प करके वक्तव्यहै । भाव यहहै कि, समाहार द्वंद्वसमासके विषे समास किये-जानेपर एकवचन विकल्प करके होताहै । इस कथनसे यह जनायागया कि, जहाँ समुदायार्थकी प्रधानता हो तहाँ एकवचन होताहै और जहाँ अवयवार्थकी प्रधानता हो तहाँ बहुवचन होताहै वा इस अव्ययके ग्रहणसे कहीं प्रयोगान्तरमें इतरेतरयोगके विषे भी एकवचन होताहै । उदाहरण । शशाश्च कुशाश्च पलाशाश्च । इस विग्रहमें दो पदोंसे अधिक पद होनेसे समाहार चार्थहै इस कारण द्वंद्वसमास हुआ समास संज्ञा होनेपर (समासप्रत्ययययोः) (उक्तार्थानामप्रयोगः) इनकर विभक्तियोंका तथा चकारका लोप करनेसे रूप हुआ । शशकुशपलाश । इस समाहार द्वंद्वकी नामसंज्ञा होनेपर अवयवार्थकी प्रधानतामें प्रथमाबहुवचन करनेसे रूप हुआ (शशकुशपलाशाः) और समुदायार्थकी प्रधानतामें (एकत्वे द्विगुद्वन्द्वौ) इस अगले सूत्रकर नपुंसकलिंगता और एकवचन करनेसे रूप सिद्ध हुआ (शशकुशपलाशम्) इतरेतर योगके एकवचनका उदाहरण । अन्यश्च अन्यश्च । इस विग्रहमें इतरेतरयोग चार्थ होनेसे द्वन्द्वसमास करनेपर विभक्ति और चकारका लोप किया तब रूप हुआ । अन्य अन्य । अन्यादिकोंके पूर्वपदको विभक्ति लोप किये संते सक् आगम वक्तव्य है । भाव यह है कि, समासके विषे वर्त्तमान जो अन्यादिकोंके पूर्वपदवर्त्ती शब्द तिनको सक् आगम होय। इस कथनसे पूर्व अन्यशब्दको सक् आगम किया तो वह आगम पूर्व अन्य शब्दके अन्तमें हुआ क्योंकि आगम कित्संज्ञक है और आगममें अकार उच्चारणार्थ है तब रूप हुआ । अन्यस् अन्य । फिर विभक्तिके लोपमात्रमें भी पदान्त होनेसे (स्रोर्विसर्गः) इसकर सकारके स्थानमें विसर्ग कर (एदोतोतः) इसकर उकार किया फिर (उ ओ) इसकर ओकार करनेपर रूप हुआ । अन्योन्य । फिर एकवद्भाव होनेसे (एकत्वे द्विगुद्वन्द्वौ) इसकर नपुंसकलिंग और एकवचन करनेसे रूप हुआ (अन्योन्यम्) इसमें अप्रधानभूत होनेसे (त्वन्यादेः) इस सूत्रकी नहीं प्राप्ति होती है । परश्च परश्च । इस विग्रहमें समाससंज्ञा होनेपर विभक्ति चकारका लोप करनेसे रूप हुआ । पर पर । (अन्यादीनां विभक्तिलोपे) इसकर सक् आगम करनेसे रूप हुआ । परस्पर । इसमें वाचस्पत्यादिक होनेसे विसर्गादि कार्य नहीं करने योग्य हैं।

नामसंज्ञा होनेपर एकवद्भाव नपुंसकलिंग और एकवचन किया तब रूप सिद्ध हुआ (परस्परम्) (१) ॥

एकत्वे द्विगुद्वन्द्वौ।

एकत्वे–द्विगुद्वन्द्वौ। द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) एकत्वे वर्त्तमानौ द्विगुद्वन्द्वौ नपुंसकलिंगौ भवतः।

भाषार्थ–एकवचनमें वर्त्तमान हुए द्विगुद्वन्द्व समास नपुंसकलिंग होते हैं। भाव यह है कि, द्वंद्व समासमें जहाँ एकवचन होता है तहाँ नपुंसक लिंग होता है और जहाँ स्त्रीलिंगता होवै है और जहाँ ईप् प्रत्ययके होनेकी सम्भवता न होवै तहाँ नपुंसकलिंगता होवै है ॥

संख्यापूर्वोद्विगुः।

संख्यापूर्वः–द्विगुः। द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) संख्यापूर्वो द्विगुर्निगद्यते।

भाषार्थ–संख्या है पूर्वपदवर्त्तिनी जिसकी वह द्विगु समास कहाजाताहै ॥

समाहारेऽतईप्द्विगुः।

समाहारे–अतः–ईप्–द्विगुः। चतुष्पदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) समाहारेऽर्थे द्विगुः समासोभवति ततोऽकारान्तादीप्प्रत्ययोभवति। दशानां ग्रामाणां समाहारो दशग्रामी। पंचाग्नयः समाहृताः। इति पंचाग्नि। पंचानां गवां समाहारः। पंचगु। नपुंसकत्वाद्ध्रस्वत्वम्। त्रिफलेति। रूढिः। पात्रादीनामीप्प्रतिषेधो वाच्यः। पंचपात्रम्। त्रिभुवनम्।

भाषार्थ–समाहार अर्थमें द्विगुसमास होता है। भाव यह है कि, जहाँ संख्यावाची शब्द तो पूर्वपदमें होवै और समाहारार्थसूचक पद पश्चात् होवै तहाँ द्विगुसमास होता है। इस कथनसे यह जनायागया कि, जिस विग्रहमें विशेषणात्मक संख्यावाचक पद पूर्व स्थित हो और विशेष्यात्मक पद पीछे स्थित हो और समा-

---

(१) अन्योन्यम्। परस्परम्। इत्यादिकमें समास नहीं इच्छा करते हैं कोई एक आचार्य किन्तु (कर्मव्यतिहारेऽन्यादीनां द्वित्वं वक्तव्यम्। समासवच्चबहुलम्। तत्र पूर्वपदे प्रथमैकवचनम् उत्तरपदे द्वितीयैकवचनमिति) इसकर। अन्योन्यम्। परस्परम्। इत्यादिक रूपोंकी सिद्धि कहते हैं। अर्थ–कर्मव्यतिहारमें अन्यादिकोंको द्वित्व होता है तिसमें पूर्वपदके विषे प्रथमाएकवचनं और उत्तरपदके विषे द्वितीयाएकवचन होता है। अन्योन्यं परस्परं नमन्ति साधवः। कर्मव्यतिहारमें इत्यादिक उदाहरणहैं।

हार अर्थ सूचित कियागया हो उस विग्रहमें द्विगुसमास होता है । और तिस अकारान्त द्विगुसमासमें ईप् प्रत्यय होवै है । उदाहरण (दशानां ग्रामाणां समाहारः) इस विग्रहमें विशेषणात्मक दशन् शब्द पूर्व है और विशेष्यात्मक ग्राम शब्द पश्चात् है । और समाहार अर्थ सूचित कियागया है इसकारण द्विगुसमास हुआ । समाससंज्ञा होनेपर (समासप्रत्यययोः) इसकर विभक्तियोंका लुक् करनेसे रूप हुआ । दशन् ग्राम । फिर (नाम्नोनो लोपशधौ) इसकर नकारका लोपश् करनेपर रूप हुआ । दशग्राम । यह अकारान्त द्विगुसमास है इसकारण ईप् प्रत्यय करनेपर रूप हुआ (दशग्रामी) फिर समाहारार्थमें एकवचन होनेके कारण सि विभक्ति करनेपर रूप सिद्ध हुआ (दशग्रामी) और । पंच अग्नयः समाहृताः । इस विग्रहमें विशेषणात्मक संख्यावाचक पंचन् शब्द पूर्व है और विशेष्यात्मक अग्नि शब्द पश्चात् है और समाहारः अर्थ सूचित किया है इसकारण द्विगुसमास हुआ । समाससंज्ञा होनेपर विभक्तियोंका लुक् किया । और (नाम्नोनो०) इसकर नकारका लोपश् किया तब रूप हुआ । पंचअग्नि । फिर (सवर्णे दीर्घः सह) इसकर हुआ । पंचाग्नि । समाहारार्थमें एकवचनः होनेसे यह नपुंसकलिङ्ग हुआ है इसकारण सि विभक्ति करनेपर (नपुंसकात्स्यमोर्लुक्) इसकर सिद्ध हुआ (पंचाग्नि) और । पंचानां गवां समाहारः । इस विग्रहमें पूर्ववत् द्विगुसमास करनेपर रूप हुआ । पंचगो । यह समाहारार्थमें एकवचन होनेसे नपुंसकलिङ्ग है इसकारण इसको ह्रस्व करनेपर ओकारके स्थानमें उकार करनेसे रूप हुआ । पंचगु । फिर सि विभक्ति करनेपर (नपुंसकात्स्यमोर्लुक्) इसकर रूप सिद्ध हुआ (पंचगु) और । त्रयाणां फलानां समाहारः । इस विग्रहमें पूर्ववत् द्विगुसमास करनेपर रूप हुआ । त्रिफल । यहाँ ईप् प्रत्ययके होनेकी सम्भवनामें भी रूढि नाम लोकप्रसिद्धिसे आप् प्रत्यय करनेपर रूप हुआ । त्रिफला । फिर सि विभक्ति करनेपर (आपः) इस सूत्रकर रूप सिद्धहुआ (त्रिफला) पात्रादिकोंको ईप् प्रत्ययका निषेध वाच्य है । भाव यह है कि, द्विगु समासके विषे पात्रादि शब्दोंसे ईप् प्रत्यय नहीं होवै है जैसे । पंचानां पात्राणां समाहारः । इस विग्रहमें द्विगु समास होनेपर रूप हुआ । पंचपात्र । यहाँ अकारान्त द्विगुसमाससे ईप् प्रत्यय नहीं हुआ क्योंकि पात्रादिकोंसे ईप्प्रत्यय नहीं होवै है । तब समाहारार्थमें एकवचन होनेसे नपुंसकलिङ्ग होनेके कारण प्रथमाएकवचनमें सिद्ध हुआ (पंचपात्रम्) इसी प्रकार (त्रिभुवनम्) (चतुर्युगम्) (चतुष्पथम्)इत्यादिक जाननेयोग्य हैं (त्रिलोकम्) (त्रिलोकी) यहाँ ईप् प्रत्यय विकल्प करके होता है इसप्रकार द्विगुसमासकी प्रक्रिया है ॥

बहुव्रीहिरन्यार्थे ।

बहुव्रीहिः—अन्यार्थे । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) अन्यपदार्थे प्रधाने यः

समासः स बहुव्रीहिसंज्ञको भवति । बहु धनं यस्य स बहुधनः । अस्ति धनं यस्य सः अस्तिधनः । तस्य प्रधानस्यैकदेशो विशेषणतया यत्र ज्ञायते स तद्गुणसंविज्ञानः । लम्बौ कर्णौ यस्य सः । लम्बकर्णः ।

भाषार्थ–अन्यपदार्थप्रधानमें जो समास होताहै वह बहुव्रीहिसंज्ञक समास होता है । भाव यह है कि, जहाँ समासके मध्यवर्त्ती पदोंसे अन्य पदकाही अर्थ प्रधान होताहै अर्थात् अन्य पदही प्रधान होताहै वह बहुव्रीहिसंज्ञक समास होताहै जैसे । बहु धनं यस्य सः । इस विग्रहमें समासके विषे स्थित हुए बहुधन शब्द हैं इनसें अन्य यस्य यह पद प्रधान है इसकारण इस विग्रहमें बहुव्रीहि समास हुआ । समाससंज्ञा होनेपर (समासप्रत्यययोः) इसकर विभक्तिमात्रका लुक् हुआ और यस्य सः इन पदोंकाभी (उक्तार्थानामप्रयोगः) इसकर लोप किया तब रूप हुआ । बहुधन । अब नामसंज्ञा होनेपर वह लिंग और विभक्ति वचन होना चाहिये जो कि, अन्यपदप्रधानमें है क्योंकि (बहुव्रीहेर्वाच्यलिंगता) अर्थ–बहुव्रीहि समासकी विशेष्यलिंगता होवै है। भाव यह है कि, जो लिंग कि, विशेष्यमें होताहै वही विशेषणात्मक बहुव्रीहिमें होताहै इसकारण अन्यपदप्रधान नर शब्दको पुँल्लिंग तथा प्रथमैकवचनान्त होनेसे पुँल्लिगमें प्रथमैकवचनके विषे रूप सिद्ध हुआ (बहुधनः) । अस्ति धनं यस्य सः । इस विग्रहमें समासस्थ अस्ति और धन शब्द हैं और इनसे अन्य । यस्य । यह पद प्रधान है इसकारण बहुव्रीहि समास हुआ । समास संज्ञा होनेपर विभक्ति और यस्य सः इनका लोप करनेसे रूप हुआ । अस्तिधन । फिर नामसंज्ञा होनेपर विशेष्य प्रधान पदको पुँल्लिंग तथा प्रथमैकवचनान्त होनेसे पुँल्लिगमें प्रथमैकवचनके विषे रूप सिद्ध हुआ (अस्तिधनः) प्राप्तो राजा यं सः । इस विग्रहमें अन्यपद प्रधान होनेसे बहुव्रीहि समास हुआ । समास संज्ञा होनेपर रूप हुआ । प्राप्त राजन् । फिर नामसंज्ञा होनेपर विशेष्य प्रधानको पुल्लिग तथा प्रथमैकवचनान्त होनेसे पुँल्लिगमें प्रथमैकवचनके विषे रूप सिद्ध हुआ (प्राप्तराजा) । ऊढा कन्या येन सः । इस विग्रहमें अन्यपद प्रधान होनेसे बहुव्रीहि समास हुआ समाससंज्ञा होनेपर रूप हुआ । ऊढा कन्या । फिर (अन्यार्थे) (पुंवद्वा) इन अगले सूत्रोंकर रूप हुआ । ऊढकन्य । फिर नाम संज्ञा होनेपर विशेष्यप्रधानको पुँल्लिग तथा प्रथमैकवचनान्त होनेसे पुँल्लिगमें प्रथमैकवचनके विषे रूप सिद्ध हुआ (ऊढकन्यः) तिस प्रधान्का एकदेश विशेषणत्व कर जहाँ जानाजाताहै वह तद्गुणसंविज्ञान बहुव्रीहि होत है । भाव यहहै कि, बहुव्रीहि समास दो प्रकारका होताहै एक तो तद्गुण संविज्ञान और दूसरा अतद्गुणसंविज्ञान । तद्गुणसंविज्ञान बहुव्रीहि समास वह होताहै जिसमें कि, तिस प्रधानभूत पुरुषादिकका अवयवभूत एकदेश विशेषणत्व कर जानाजाता हो जैसे । लम्बौ कर्णौ

यस्य सः । इस विग्रहमें तद्गुणसंविज्ञान बहुव्रीहि समास होताहै । क्योंकि प्रधानभूत नरका करण यह एकदेश है वही समासमें विशेष्यभूत नरके विशेषणत्व कर जानागयाहै । समाससंज्ञा होनेपर रूपहुआ । लम्बकर्ण । यदि कहो कि, यहाँ अन्यपद प्रधानहै और पद परस्पर समानहैं फिर लम्बकर्ण ऐसाही क्यों किया किन्तु कर्णलम्ब ऐसा क्यों नहीं किया तहाँ कहते हैं ॥

बहुव्रीहौ विशेषणसप्तम्यन्तयोः पूर्वनिपातो वक्तव्यः । चक्रपाण्यादौ न । चक्रपाणिः । चंद्रमौलिः । कपिध्वजः ।

भाषार्थ-बहुव्रीहि समासके विषे विशेषण और सप्तम्यन्तशब्दोंका पूर्व निपात वक्तव्य है परन्तु चक्रपाण्यादिकोंके विषे नहीं । बहुव्रीहिसमासके उपलक्षणसे कर्म्मधारयसमासके विषेभी विशेषणको पूर्व निपात होता है। इस कथनसे विशेषणभूत लम्ब शब्दको पूर्व निपात हुआहै । फिर नामसंज्ञा होनेपर विशेष्यप्रधानभूत नरको पुँल्लिग तथा प्रथमैकवचनान्त होनेसे पुँल्लिगमें प्रथमैकवचनके विषे रूप सिद्ध हुआ (लम्बकर्णः) सप्तम्यन्त पूर्वनिपातका उदाहरण। भाले लोचनं यस्य सः। इस विग्रहमें बहुव्रीहिसमास होनेपर रूप हुआ । भाललोचन । इसमें भाल शब्दको सप्तम्यन्त होनेसे पूर्व निपातहै फिर नाम संज्ञा होनेपर विशेष्यभूत प्रधानको पुँल्लिग तथा प्रथमैकवचनान्त होनेसे पुँल्लिगमें प्रथमाएकवचनके विषे रूप सिद्ध हुआ (भाललोचनः) और । चक्रपाणि । इत्यादिकमें सप्तम्यन्तको पूर्व निपात नहीं होता है जैसे। चक्रं पाणौ यस्य सः । इस विग्रहमें बहुव्रीहिसमास होनेपर रूप हुआ। चक्रपाणि । इसमें सप्तम्यन्तको पूर्वनिपात नहीं हुआ । नाम संज्ञा होनेपर विशेष्यभूत प्रधानको पुँल्लिग तथा प्रथमैकवचनान्त होनेसे पुँल्लिग प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (चक्रपाणिः) इसीप्रकार (चंद्रमौलिः) (कपिध्वजः) इत्यादिक सिद्ध हुए जानने ॥

प्रजामेधयोरसुक् । सुप्रजाः । दुर्मेधाः । धर्मादन् । सुष्ठु धर्मो यस्य स सुधर्मा । रूपवती भार्या यस्य सः रूपवद्भार्यः ।

भाषार्थ-अन्यार्थके विषे वर्त्तमान हुए प्रजा और मेधा इन शब्दोंको बहुव्रीहि समासके विषे असुक् आगम होवैहै । उदाहरण । सुष्ठु प्रजा यस्य सः । इस विग्रहमें बहुव्रीहिसमास होनेपर (समासप्रत्यययोः) इसकर विभक्तिका लुक् किया । और उक्तार्थानामप्रयोगः) इसकर सुके स्थानमें सुष्ठु अर्थवाचक पद और यस्य सः इन पदोंका लोप किया तब रूप हुआ । सुप्रजा । फिर असुक् आगम करनेपर रूप हुआ।सुप्रजाअस। फिर (यस्य लोपः) इसकर रूप हुआ (सुप्रजस्) फिर नामसंज्ञा

होनेसे पुँल्लिगमें प्रथमैकवचनके विषे सिद्धहुआ (सुप्रजाः) और । दुष्टा मेधा यस्य सः । इस विग्रहमें बहुव्रीहिसमास होनेपर रूप हुआ । दुर्मेधा । फिर असुक् आगम करनेसे पूर्ववत् हुआ । दुर्मेधस् । फिर नामसंज्ञा होनेपर पुँल्लिगमें प्रथमैकवचनके विषे सिद्ध हुआ (दुर्मेधाः) इसीप्रकार (मन्दमेधाः) (अल्पमेधाः) इत्यादिक सिद्धहुए जानने । अन्यार्थके विषे वर्त्तमान हुए धर्मशब्दसे अन् आगम होय । उदाहरण । सुष्ठु धर्मो यस्य सः । इस विग्रहमें बहुव्रीहि समास होनेपर रूप हुआ । सुधर्म । फिर अन् आगम किया क्योंकि धर्मशब्द अन्यार्थमें वर्त्तमानहै तब रूप हुआ । सुधर्मअन् । फिर (यस्य लोपः) इसकर रूप हुआ । सुधर्मन् । फिर नाम संज्ञा होनेपर पुँल्लिगमें प्रथमैकवचनके विषे रूप हुआ (सुधर्मा) (१) रूपवती भार्या यस्य सः । इस विग्रहमें बहुव्रीहि समास होनेपर विभक्ति और उक्तार्थशब्दोंका लोप किया तब रूप हुआ (रूपवती भार्या) फिर– ॥

अन्यार्थे ।

अन्यार्थे । एकपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) स्त्रीलिङ्गस्यान्यार्थे वर्त्तमानस्य परस्य ह्रस्वो भवति ।

भावार्थ–अन्यार्थके विषे वर्त्तमान जो स्त्रीलिंग परपद तिसको ह्रस्व होय । भाव यहहै कि, बहुव्रीहि समासका परपद यदि स्त्रीप्रत्ययान्त होवै तो उसको ह्रस्व होय । जैसे (रूपवती भार्या) इसमें अन्यार्थके विषे वर्त्तमान परपद स्त्रीप्रत्ययान्त भार्याशब्दहै इसकारण ह्रस्व करनेपर रूप हुआ (रूपवतीभार्य) फिर–॥

पुंवद्वा ।

पुंवत्–वा । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) समासे सति समानाधिकरणे पूर्वस्य स्त्रीलिंगशब्दस्य पुंवद्वा भवति । पुंवद्भावादीब्निवृत्तिः । वा ग्रहणात् कल्याणीप्रिय इत्यादौ न भवति । कल्याणी प्रिया यस्य सः कल्याणीप्रिय इति भवति ।

भावार्थ–समास हुएसंते समानाधिकरणके विषे वर्त्तमान पूर्वके स्त्रीलिंगवाचक शब्दका पुँल्लिगवत् रूप होय । भाव यहहै कि, विशेषणविशेष्यभावकर एक

(१) (धनुषश्च) धनुष् शब्दस्य अन् आदेशो भवति बहुव्रीहौ । अर्थ–धनुष् शब्दको अन् आदेश होय बहुव्रीहि समासके विषे (शार्ङ्गधनुः यस्य सः) इस विग्रहमें बहुव्रीहि समास होनेपर रूप हुआ (शार्ङ्गधनुष्) फिर अन् आदेश करनेपर रूप हुआ । शार्ङ्गधन्वन् । फिर नाम संज्ञा होनेपर पुंल्लिंग प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (शार्ङ्गधन्वा) ॥

विभक्त्यन्तपदोंके एकार्थनिष्ठ होनेका नाम समानाधिकरणहै उसमें वर्त्तमान जो उक्तपुंस्क स्त्रीलिङ्ग पूर्वपद तिसको समास हुएसंते ह्रस्व होय जैसे । रूपवती भार्या। यह दोनों एकविभक्त्यन्त पद विशेषण विशेष्य भावकर एकार्थनिष्ठहैं इसकारण यह समानाधिकरण हुआ । इस समानाधिकरणमें वर्त्तमान पूर्वपद स्त्रीलिंग उक्तपुंस्क रूपवती शब्दका समास होनेपर पुँल्लिगवत् रूप हुआ । पुँल्लिगवत् रूप होनेसे ईप् प्रत्ययकी निवृत्ति हुई तब हुआ (रूपवत् भार्य) (चपाअबेजबाः) इसकर रूप हुआ (रूपवद्भार्य) फिर नाम संज्ञा होनेपर पुँल्लिगमें प्रथमैकवचनके विषे रूप सिद्ध हुआ (रूपवद्भार्यः) (शोभना भार्या यस्य सः) इस विग्रहमें बहुव्रीहिसमास होनेपर रूप हुआ (शोभन भार्या) फिर (अन्यार्थे) (पुंवद्वा) इन सूत्रोंकर रूप हुआ (शोभनभार्य) फिर नाम संज्ञासे पुँल्लिग प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (शोभनभार्यः) सूत्रमें वाके ग्रहणसे । (कल्याणीप्रियः) इत्यादिकके विषे समानाधिकरणमें वर्त्तमान हुए उक्तपुंस्कस्त्रीलिंग पूर्वपदका पुँल्लिगवत् रूप नहीं होये उदाहरण (कल्याणी प्रिया यस्य सः) इस विग्रहमें समानाधिकरणके विषे वर्त्तमानहुए उक्तपुंस्क स्त्रीलिंग पूर्वपद कल्याणी शब्दको समास होनेपर पुँल्लिगवत् रूप नहीं हुआ किन्तु (अन्यार्थे) इस सूत्रकर स्त्रीप्रत्ययान्त परपदको ह्रस्व करनेसे रूप हुआ (कल्याणी प्रिय) फिर नाम संज्ञा होनेपर पुँल्लिगमें प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (कल्याणीप्रियः) आदि शब्दसे (वामोरूभार्यः) (पंचमीप्रियः) इत्यादिकमें पुँल्लिगवत् रूप नहीं होयँ (१) ॥

गोः ।

गोः[१] । एकपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) गोशब्दस्यान्यार्थे वर्त्तमानस्य ह्रस्वो भवति । पंच गावो यस्य सः । पंचगुः ।

भाषार्थ-अन्यार्थके विषे वर्त्तमान हुए गो शब्दको ह्रस्व होय । उदाहरण (पंच गावो यस्य सः) इस विग्रहमें बहुव्रीहि समास होनेपर रूप हुआ (पंचन्गो) फिर (नाम्नोनो लोपशधौ) इसकर रूप हुआ (पंचगो) यहाँ अन्यार्थमें गोशब्द वर्त्तमानहै इसकारण गो शब्दके ओकारको (सन्ध्यक्षराणां ह्रस्वादेशे इकारोकारौ च वक्तव्यौ)

---

(१) (मनोज्ञा) (सुभगा) (क्षांता) (चपला) (वामा) (वामना) (सचिवा) (समा) (बाला) (तनया) (ब्राह्मणी) (दत्ता) (रसिका) (मैथिली) इत्यादिक शब्द कल्याण्यादिकहैं । ता-शस् तर-तम-देश्य-देशीयेषु प्रत्येयेषु परेषु उक्तपुँस्कस्य स्त्रीलिंगस्य पुँवद्भावो भवति । (भाषार्थ) ता, शस्-तर-तम-देश्य-देशीय । यह प्रत्यय पर हुएसंते उक्त पुंस्क स्त्रीलिङ्ग शब्दको पुंवद्भाव होय । जैसे । पट्व्या भावः (पटुता) (अल्पशः) (अल्पतमा) (अल्पतरा) (अनुत्कुलदेश्या) (अनुत्कुलदेशीया) वाके ग्रहणसे यह जानने योग्यहैं ॥

इसकर ह्रस्वादेशमें उकार करनेसे रूप हुआ (पञ्चगु) फिर नामसंज्ञा होनेपर पुँल्लि-गमें प्रथमैकवचनके विषे रूप सिद्ध हुआ (पंचगुः) ॥

संख्यासुव्याघ्रादिपूर्वस्य पादशब्दस्याल्लोपो वक्तव्यः । सहस्रपात्–सहस्र-पाद् । शोभनौ पादौ यस्य सः । सुपात् । व्याघ्रस्य पादौ इव पादौ यस्य सः । व्याघ्रपात् । शसादौ स्वरे परे पदादेशश्च वक्तव्यः । द्विपदः ।

भाषार्थ–संख्यावाचक शब्द और सु अव्यय और व्याघ्रादि उपमावाचक शब्द हैं पूर्व जिसके ऐसे पादशब्दके अकारका लोप वक्तव्य है । भाव यह है कि, जिस पाद शब्दके पूर्व संख्यावाचक शब्द तथा सु अव्यय तथा व्याघ्रादि उपमा-वाचक शब्द हों उस पाद शब्दके अकारका लोप होय उदाहरण (सहस्रं पादा यस्य सः) इस विग्रहमें बहुव्रीहि समास होनेपर (सहस्रपाद्) यह रूप हुआ । फिर संख्या-वाचक सहस्र शब्दको पूर्व होनेंसे पादशब्दके अकारका लोप किया तब रूप हुआ । (सहस्रपाद्) फिर नाम संज्ञा होनेपर पुँल्लिग प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (सहस्रपात्–सहस्रपाद्) (शोभनौ पादौ यस्य सः) इस विग्रहमें बहुव्रीहि समास होनेपर रूप हुआ (सुपाद्) फिर सुअव्ययके पूर्व होनेसे पादशब्दके अका-रका लोप किया तब रूप हुआ (सुपाद्) फिरनामसंज्ञा होनेपर पुँल्लिग प्रथमै-कवचनमें रूप सिद्ध हुआ (सुपात्–सुपाद्) (व्याघ्रस्य पादौ इव पादौ यस्य सः) इस विग्रहमें बहुव्रीहिसमास होनेपर (समासप्रत्यययोः) इसकर विभक्तियोंका लुक् किया । फिर (उक्तार्थानामप्रयोगः) इसकर इव यस्य सः इनपदोंका लोप किया और (वैयधिकरण्ये बहुव्रीहौ मध्यमपदलोपश्च) इसकर मध्यस्थ पादश-ब्दका लोप किया तब रूप हुआ (व्याघ्रपाद्) फिर उपमावाचक शब्द पूर्व होनेसे पादशब्दके अकारका लोप करनेपर रूप सिद्ध हुआ (व्याघ्रपाद्) फिर नाम संज्ञा होनेपर पुँल्लिग प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (व्याघ्रपात्–व्याघ्रपाद्) शसादिक स्वरपरे संते पाद शब्दको पद् आदेश होय और चकारके ग्रहणसे नपुं-सकलिंगमें और स्त्रीलिंगमें ईप् प्रत्यय पर हुएसंते तथा तद्धित प्रत्यय पर हुए संतेभी पद् आदेश होता है । उदाहरण (द्वौ पादौ यस्य सः) इस विग्रहमें बहुव्रीहिसमास होनेपर रूप हुआ (द्विपाद्) फिर (संख्यासुव्याघ्रादि०) इस करके रूप हुआ (द्विपाद्) फिर नामसंज्ञा होनेपर रूप हुए (द्विपात्–द्विपाद्) (द्विपादौ) (द्विपादः) (द्विपादम्) (द्विपादौ) और शसादिकमें पद् आदेश करनेपर रूप हुआ (द्विपदः) (द्विपदा) (द्विपाद्भ्याम्) इत्यादि (१) ॥

(१) स्त्रीलिंगमें ईप्प्रत्यय होनेपर पद् आदेश होनेसे रूप सिद्ध हुए हैं (कुंभपदी) (शतपदी) (सहस्रपदी) (एकपदी) (द्विपदी) यहां नदादिगण होनेसे ईप् प्रत्यय हुआ है और तद्धित प्रत्ययके विषे पद् आदेश होनेपर रूप हुआहै (द्वैपदः) इति ॥

टाडकाः ।

टाडकाः । एकपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) समासे सति ट—अ—ड—क (१) इत्येते प्रत्यया भवंति । अचिन्त्यो महिमा यस्य सः । अचिन्त्यमहिमः ।

भाषार्थ—समास हुए संते ट—अ—ड—क—यह प्रत्यय होवैहैं । भाव यहहै कि, बहुव्रीहि और तत्पुरुष और द्वंद्व और कर्मधारय समासमें यथासंभव ट—अ—ड—क—यह चार प्रत्यय होवैहैं । उदाहरण । :अचिन्त्यो महिमा यस्य सः । इस विग्रहमें बहुव्रीहि समास होनेपर रूप हुआ । अचिन्त्यमहिमन् । फिर (टाडकाः) इसकर ट प्रत्यय करनेपर रूप हुआ । अचिन्त्य महिमन् अ । इसमें टकार इत्संज्ञक था । फिर—॥

नोवा ।

नः—वा । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) नान्तस्य टेर्लोपो वा भवति । यकारे स्वरे च परे ।वा ग्रहणात्क्वचिन्न भवति उपधालोपश्च । अह्नो मध्यम् । मध्याह्नः । कवीनां राजा । कविराजः । टकारानुबन्धईबर्थः । कविराजी । राज्ञां पूः । राजपुरम् । वाक्च मनश्च । वाङ्मनसे । दक्षिणस्यां दिशि पन्थाः । दक्षिणापथः । अहश्च रात्रिश्च । अहोरात्रः । द्वौ वा त्रयो वा द्वित्राः । बहवो राजानो यस्यां । सा बहुराजा—नगरी । अत्र टिलोपेकृते (आबतः स्त्रियाम्) बहवः कर्त्तारो यस्य सः बहुकर्त्तृकः ।

भाषार्थ—नकारहै अन्तमें जिसके ऐसे पदकी टिका लोप होय यकार और स्वर पर हुए संते । वाके ग्रहणसे कहीं प्रयोगान्तरमें नान्तपदकी टिका लोप नहीं होय जहाँ टिका लोप नहीं होय तहाँ उपधाका लोप होय । उदाहरण । अचिन्त्य महिमन् अ । इसमें नकारान्त पद महिमन्से स्वरसंज्ञक अकार परेहै इसकारण महिमन्के टि संज्ञक अन्का लोप करनेपर रूप हुआ । अचिन्त्य महिम् अ । फिर (स्वरहीनं परेण संयोज्यम्) इसकर रूप हुआ । अचिन्त्यमहिम । फिर नाम संज्ञा

---

(१) टकारस्तत्पुरुषे स्यादकारो द्वंद्वएवच । डकारश्च बहुव्रीहौ ककारोनियमोमतः ॥ १ ॥
अर्थ—तत्पुरुष समासमें टकार प्रत्यय होवैहै और द्वंद्वसमासमें अकार प्रत्यय होवैहै. और बहुव्रीहि समासमें डकार प्रत्यय होवैहै और कप्रत्ययका अनियमहै—अर्थात् कप्रत्यय समस्तसमासोंमें होताहै कोई आचार्य ऐसाभी कहतेहैं ।

होनेपर पुँल्लिग प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (अचिन्त्यमहिमः) (अह्नो मध्यम्) इस विग्रहमें तत्पुरुष समास हुआ। क्योंकि इस विग्रहके पर पदका क्रियाके साथ सम्बन्धहै। तब समास संज्ञा होनेपर। अहन् मध्य। ऐसा स्थित हुआ फिर (क्वचिदमाद्यन्तस्य परत्वम्) इसकर रूप स्थित हुआ। मध्य अहन्। फिर ट प्रत्यय करनेपर रूप हुआ। मध्य अहन् अ। फिर वाके ग्रहणसे नकारान्त पदकी उपधाका लोप करनेपर रूप हुआ। मध्य अह्न् अ। फिर (स्वरहीनं परेण संयोज्यम्) (सवर्णे दीर्घः सह) इन सूत्रोंकर रूप हुआ। मध्याह्न। फिर नाम संज्ञा होनेपर पुँल्लिग प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (मध्याह्नः) और। कवीनां राजा। इस विग्रहमें तत्पुरुष समास होनेपर रूप हुआ। कविराजन्। फिर टप्रत्यय करनेपर (नोवा) इस सूत्रकर टिका लोप करनेसे रूप हुआ (कविराज) फिर नाम संज्ञा होनेपर पुँल्लिगप्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (कविराजः) टप्रत्ययमें टकारका अनुवन्ध ईप्प्रत्ययके अर्थ है इसकारण (ष्ठिन्नतः) इसकर ईप् प्रत्यय करनेपर स्त्रीलिंगमें रूप सिद्ध हुआ (कविराजी) और। राज्ञांपूः। इस विग्रहमें तत्पुरुष समास होनेपर अ प्रत्यय करनेसे रूप हुआ। राजन् पुर् अ। फिर (नाम्नोनो लोपशधौ) इसकर नकारका लोपश् करनेपर रूप हुआ। राज पुर् अ। फिर (स्वरहीनं परेण संयोज्यम्) इसकर रूप स्थित हुआ। राजपुर। फिर नाम संज्ञा होनेपर पूः शब्दको अकारान्तत्वमें नपुंसकलिंग होनेसे नपुंसकप्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (राजपुरम्) और। वाक्च मनश्च। इस विग्रहमें इतरेतरयोग होनेसे द्वंद्वसमास होनेके कारण रूप हुआ। वाच् मनस्। फिर (चोःकुः) इसकर रूप हुआ। वाक् मनस्। फिर (ञमेञमावा) इसकर विकल्प करके ककारके स्थानमें ङकार करनेपर रूप हुआ। वाङ्मनस्। फिर (टाडकाः) इसकर अ प्रत्यय करनेपर रूप हुआ। वाङ्मनस। फिर नाम संज्ञा होनेपर समाहारार्थ होनेसे नपुंसकलिंगमें प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (वाङ्मनसम्) और जहाँ समाहारार्थ नहीं हुआ तहाँ द्विवचन होनेसे रूप सिद्ध हुआ (वाङ्मनसे) और दक्षिणस्यांदिशि पन्थाः। इस विग्रहमें तत्पुरुष समास होनेपर अ प्रत्यय करनेसे रूप हुआ। दक्षिणा पंथिन् अ। फिर (नोवा) इसकर इन्का लोप करनेपर (स्वरहीनं०) इसकर रूप हुआ। दक्षिणापथ। फिर नाम संज्ञा होनेपर पुँल्लिग प्रथमैकवचनमें रूप हुआ (दक्षिणापथः)। अहश्च रात्रिश्च। इस विग्रहमें द्वन्द्व समास होनेपर (टाडकाः) इसकर ड प्रत्यय करनेसे रूप हुआ। अहन् रात्रि ड। इसमें डकार इत् है फिर (अह्नःसः) (स्रोर्विसर्गः) (हवे) (उओ) इन सूत्रोंकर रूप स्थित हुआ। अहोरात्रि अ। फिर (डितिटेः) इसकर रूप हुआ। अहोरात्र् अ। फिर (स्वरहीनं परेण संयोज्यम्) इसकर हुआ। अहोरात्र। फिर नाम संज्ञामें समाहारार्थ होनेसे नपुंसक प्रथमैकवचनके विषे रूप सिद्ध हुआ (अहोरात्रः)। द्वौ च त्रयश्च। इस

विग्रहमें द्वन्द्व समास होनेपर (टाडकाः) इसकर ड प्रत्यय करनेसे रूप हुआ। द्वित्रि अ। फिर (डितिटेः) इसकर टिका लोप करनेपर (स्वरहीनं परेण संयोज्यम्) इसकर रूप स्थित हुआ। द्वित्र। फिर नामसंज्ञा होनेपर पुँल्लिगप्रथमाबहुवचनमें रूप सिद्ध हुका (द्वित्राः) और। पंच च षट् च। इस विग्रहमें द्वन्द्व समास होनेपर (टाडकाः) इस सूत्रकर डप्रत्यय करनेसे रूप हुआ। पंचन् षष् अ। फिर (नाम्नो नो लोपशधौ) इसकर नकारका लोप करनेसे रूप हुआ। पंच षष् अ। फिर (डितिटेः) इसकर टिका लोप करनेपर (स्वरहीनं परेण०) इसकर रूप स्थित हुआ। पंचष। फिर नामसंज्ञामें प्रथमाबहुवचनमें पुँल्लिगके विषे रूप सिद्ध हुआ (पंचषाः) और। बहवो राजानो यस्यां सा। इस विग्रहमें बहुव्रीहि समास होनेपर (टाडकाः) इसकर डप्रत्यय करनेसे रूप हुआ। बहुराजन् अ। फिर (डितिटेः) इसकर टिका लोप करनेपर (स्वरहीनं परेण संयोज्यम्) इसकर रूप स्थित हुआ। बहुराज। फिर अन्य विशेष्य प्रधानपद्को स्त्रीलिंग होनेसे (आवतः स्त्रियाम्) इसकर आप् प्रत्यय करनेपर प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (बहुराजा) यह बहुतसे राजाओंवाली नगरीका नाम है। बहवः कर्तारो यस्य सः। इस विग्रहमें बहुव्रीहिसमास होनेपर (टाडकाः) इसकर क प्रत्यय करनेसे रूप हुआ। बहुकर्तृक। फिर नामसंज्ञा होनेपर पुँल्लिगप्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (बहुकर्तृकः) इसी प्रकार। ट अ ड क प्रत्ययान्त अन्य समासान्त पद जाननेयोग्य हैं। (सपत्नीकः) (प्रियसीमंतिनीकः) (सवधूकः) (फलितजम्बूकः) (नदीमातृकः) (जीवत्पितृकः) (व्यूढोरस्कः) (मैत्रसखः) (कंकणस्रजम्) (मांसत्वचम्) (वाक्त्विषम्) (छत्रोपानहम्) (द्विनावम्) (द्विखारम्) (ग्रामतक्षः) (पूर्वरात्रः) (पुण्यरात्रः) (कृष्णभूमः) (पांडुभूमः) (द्विभूमः) (उपदशाः) (आसन्नविंशाः) (बहुदायकाः) (बहुलक्ष्मीकः) इत्यादि ॥

॥ इति बहुव्रीहिसमासः ॥

कर्मधारयस्तुल्यार्थे।

कर्मधारयः--तुँल्यार्थे। द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) पदद्वये तुल्यार्थे एकार्थनिष्ठे सति कर्मधारयः समासो भवति। नीलं च तदुत्पलं च। नीलोत्पलम्। रक्ता चासौ लता च। रक्तलता। पुमांश्चासौ कोकिलश्चेति। पुंस्कोकिलः। पुंसः खपे संयोगान्तस्य लोपो वक्तव्यः।

भाषार्थ—एकही अर्थमेंहै निष्ठा अर्थात् प्रवृत्ति जिनकी ऐसे दो पद तुल्यार्थ हुए संते कर्मधारय समास होताहै। भाव यह है कि, जिस विग्रहमें दो पद तुल्यार्थ हुए एक वस्तुवाचक होवें तो कर्मधारय समास होता है। नीलं च तदुत्पलं च। इस विग्रहमें विशे

षणभूत नीलशब्द है और विशेष्यभूत उत्पल शब्द है और च अव्यय और तत् शब्द एकार्थता जनानेकेलिये विग्रहमें सम्मिलित किये हैं यहाँ गुणवाचक नील शब्द है और द्रव्यवाचक उत्पल शब्द है यह दोनों एकार्थनिष्ठ हैं इसकारण कर्मधारय समास हुआ। इसमें नीलशब्दको विशेषण होनेसे पूर्वनिपात हुआ है फिर समाससंज्ञा होनेपर (समासप्रत्यययोः) इसकर विभक्तियोंका लुक् किया और (उक्तार्थानामप्रयोगः) इसकर च अव्यय और तत् शब्दका लोप किया तब रूप स्थित हुआ। नील उत्पल। फिर (उ ओ) इसकर रूप हुआ । नीलोत्पल। इसमें नील और उत्पल दोनों शब्द प्रधान हैं, क्योंकि विशेषणभूत नीलशब्द और विशेष्यभूत उत्पलशब्द यह दोनों एकार्थनिष्ठ और परस्पराश्रयभूत हैं फिर नामसंज्ञा होनेपर विशेषणविशेष्यको नपुंसकलिंग होनेसे नपुंसकप्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (नीलोत्पलम्) रक्ता चासौ लता च। इस विग्रहमें भी कर्मधारयसमासहुआ क्योंकि, गुणवाचक विशेषणभूत रक्ता शब्द और द्रव्यवाचक विशेष्यभूत हुआ लताशब्द एकार्थनिष्ठ हैं। विग्रहमें च शब्द और असौ शब्द एकार्थता जनानेके लिये संमिलितहैं और रक्ता शब्दको विशेषण होनेसे पूर्वनिपात हुआहै। समाससंज्ञा होनेपर रूप हुआ। रक्ता लता। फिर (पुंवद्वा) इसकर रूप हुआ। रक्तलता। फिर नामसंज्ञा होनेसे विशेषण विशेष्यको स्त्रीलिंग होनेसे स्त्रीलिंगप्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (रक्तलता) पुमांश्चासौ कोकिलश्च । इस विग्रहमें भी कर्मधारयसमास हुआ क्योंकि, विशेषणभूत पुंस् शब्द और विशेष्यभूत कोकिलशब्द एकार्थनिष्ठहैं। समाससंज्ञा होनेपर विशेषणभूत पुंस्शब्दको पूर्वनिपात करनेसे रूप हुआ। पुंस्कोकिल। फिर नामसंज्ञा होनेपर विशेषण विशेष्यको पुँल्लिग होनेसे पुँल्लिगप्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (पुंस्कोकिलः) यदि कहो कि, पुंस् कोकिल शब्दमें (संयोगान्तस्य लोपः) इसकर सकारका लोप क्यों नहीं किया गयाहै तहाँ कहते हैं कि पुंस् शब्दके संयोगान्तका लोप खप प्रत्याहार पर हुए संते नहीं वक्तव्यहै॥

नाम्नश्च कृता समासः।

नाम्नः--च--कृता--समासः। चतुष्पपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) प्रादेरुपसर्गस्य नाम्नश्च कृदन्तेन सह समासस्तत्पुरुषो भवति। प्रकर्षेण वादः। प्रवादः। कुम्भं करोतीति। कुम्भकारः।

भाषार्थ–प्रादि उपसर्ग और नामसंज्ञक शब्दका कृदन्तके साथ समास तत्पुरुष होता है। भाव यह है कि, प्रादि उपसर्ग और नामसंज्ञक शब्दका कृत्प्रत्ययान्त शब्दके साथ जो अन्वय होता है उसमें तत्पुरुषसमास होता है। उदाहरण। प्रकृष्टो

वादः । इस विग्रहमें प्रउपसर्गके साथ कृत्प्रत्ययान्त वादशब्दका अन्वय है इसकारण तत्पुरुष समास हुआ समाससंज्ञा होनेपर रूप हुआ । प्रवाद । फिर नामसंज्ञा होनेपर पुँल्लिंग प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (प्रवादः) और (कुम्भं करोति) इस विग्रहमें (कार्येऽण्) इस कृदन्तसूत्रकर अण् प्रत्यय करनेपर (समासप्रत्यययोः) इसकर दोनों पदोंकी विभक्तियोंका लुक् किया तब रूप हुआ । कुम्भकृ अ । फिर णित् प्रत्यय होनेसे धातुको वृद्धि करनेपर रूप हुआ । कुम्भकार । इसमें कुम्भ शब्दका कृत्प्रत्ययान्त कारशब्दके साथ अन्वयहै इसकारण तत्पुरुष समास हुआ । नामसंज्ञा होनेपर पुँल्लिंगप्रथमैकवचनमें रूप सिद्धहुआ (कुम्भकारः) ॥

सहादेः सादिः ।

सहादेः--सादिः । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) समासे सति सहादीनां सादिर्भवति । पुत्रेण सह वर्त्तते इति। सपुत्रः । सहसम् तिरसां सध्रिसमितिरयः । सहस्य सध्रिः--सध्र्यङ् । समः समिः--सम्यङ् । तिरसस्तिरिः । तिर्यङ् ।

भाषार्थ--समास हुए संते सहादिकोंको सादि आदेश होयँ । भाव यहहै कि, सह, समान इत्यादि शब्दोंके स्थानमें समास होनेपर सआदिक आदेश होंय । उदाहरण । पुत्रेण सह वर्त्तते । इस विग्रहमें (नाम्नश्च कृता समासः) इस सूत्रके चकारसे तत्पुरुष समास हुआ समाससंज्ञा होनेपर सहको पूर्वनिपात किया फिर सहके स्थानमें स आदेश करनेपर रूप हुआ । सपुत्र । फिर नामसंज्ञा होनेपर पुँल्लिंगप्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (सपुत्रः) । समानं ज्योतिर्यस्य सः । इस विग्रहमें बहुव्रीहिसमास होनेपर समानके स्थानमें सआदेश करनेसे रूप हुआ । सज्योतिषू । फिर नामसंज्ञा होनेपर पुँल्लिंग प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (सज्योतिः)॥सह और सम् और तिरस् इनको क्रमसे सध्रि और समि औ तिरि यह आदेश हों (सह अञ्चति) इस विग्रहमें क्विप् प्रत्यय करनेपर (समासप्रत्यययोः) इसकर रूप हुआ। सह अंच् क्विप् । फिर (नो लोपः) (१) इसकर रूप हुआ । सह अच् क्विप् । फिर (क्विपः सर्वापहारी लोपः) (२) इसकर क्विप्प्रत्यय कर लोप करनेपर रूप हुआ । सह अच् । इसमें कृदन्तके क्विप्प्रत्ययान्तके साथ सह शब्दका अन्वय है इसकारण तत्पुरुष समास हुआ । समाससंज्ञा होनेपर सहके स्थानमें सध्रिआदेश करनेसे रूप हुआ । सध्र्यच् । फिर नाम संज्ञा होनेपर पुँल्लिंगप्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (सध्र्यङ्) इसीप्रकार सम्के स्थानमें समि आदेश करनेपर पुँल्लिंग प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (सम्यङ्) और तिरस्के स्थानमें तिरि आदेश करनेपर पुँल्लिंग-

---

(१) यह आख्यातका सूत्र है । (२) यह कृदन्तका सूत्रहै ।

प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (तिर्य्यङ्) और आदि शब्दसे विष्वक्के स्थानमें विष्वद्रि आदेश करनेपर रूप सिद्ध हुआ (विष्वद्रचङ्) देव शब्दके स्थानमें देवद्रि आदेश करनेपर रूप सिद्ध हुआ (देवद्रचङ्) इत्यादि (१) ॥

कोः कदादिः ।

कोः--कदादिः । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) कुशब्दस्य कुत्सितेषदर्थयोर्वर्त्तमानस्य तत्पुरुषे कदादयो वक्तव्याः । कुत्सितमन्नम् । कदन्नम् । ईषदर्थे । कोःकाकवकदुष्णे । कोष्णम् । कवोष्णम् । कदुष्णम् । कालवणम् । पुरुषे वा । कापुरुषः । कुपुरुषः । कोर्मन्दादेशश्च । मन्दोष्णम् ।

भाषार्थ–कुत्सित और ईषदर्थके विषे वर्तमान हुए कुशब्दको तत्पुरुषसमासमें कत् कव का यह आदेश होते हैं । उदाहरण । कुत्सितमन्नम् । इस विग्रहमें तत्पुरुष समास होनेसे कुत्सितार्थवाचक कुशब्दके स्थानमें कत् आदेश करनेपर रूप हुआ । कदन्न । नामसंज्ञामें नपुंसकप्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (कदन्नम्) ईषदर्थके विषे वर्त्तमान हुए कुशब्दको तत्पुरुषसमासमें उष्णशब्द पर हुए संते का, कव, कत्, यह तीन आदेश होते हैं जैसे । ईषदुष्णम् । इस विग्रहमें तत्पुरुषसमास होनेसे ईषदर्थ वाचक कुशब्दके स्थानमें एक जगह का, दूसरी जगह कव, तीसरी जगह कत् आदेश करनेपर रूप हुए । कोष्ण । कवोष्ण । कदुष्ण । फिर नामसंज्ञामें नपुंसकप्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुए (कोष्णम्) (कवोष्णम्) (कदुष्णम्) ईषल्लवणम् । इस विग्रहमें भी तत्पुरुष समास होनेसे ईषदर्थवाचक कुशब्दके स्थानमें का आदेश करनेपर रूप हुआ । कालवण । फिर नामसंज्ञामें प्रथमैकवचनके विषे रूप सिद्ध हुआ (कालवणम्) पुरुष शब्द पर हुए संते तत्पुरुषसमासमें कुत्सितार्थवाचक कुशब्दको विकल्पकरके का आदेश होताहैं । कुत्सितः पुरुषः । इस विग्रहमें तत्पुरुषसमास होनेसे कुत्सितार्थवाचक कुशब्दके स्थानमें विकल्पकरके का आदेश करने पर रूप हुए । कापुरुष । कुपुरुष । नाम संज्ञामें प्रथमैकवचनके विषे रूप सिद्ध हुए

---

(१) ज्योतिर्जनपदपिण्डबन्धुलोहितनाभिवेणीरात्रिगन्धकुक्षिब्रह्मचारितीर्थ्यपत्नीपक्षेषु समानस्य सआदेशः । भाषार्थ–ज्योतिष् आदिक शब्द पर हुए संते समानको स आदेश होय समासके विषे जैसे (सज्योतिः) (सजनपदः) (सपिंडः) (सबन्धुः) (सलोहितः) (सनाभिः) (सवेणी) (सरात्रिः) (सगन्धः) (सकुक्षिः) (सब्रह्मचारी) (सतीर्थ्यः) (सपत्नी) (सपक्षः) ॥ रूपादिषु विकल्पेन समानशब्दस्य सआदेशः । भाषार्थ–रूपादि पद परे संते विकल्प करके समासके समानको स आदेश होय । जैसे (सरूपः) (समानरूपः) (सवर्णः) (समानवर्णः) (सजातीयः) (समानजातीयः) (सगोत्रः) (समानगोत्रः) (सस्थानम्) (समानस्थानम्) (सधर्मा) (समानधर्मा) (सवयाः) (समानवयाः) (सनामा) (समाननामा) इति ॥

(कापुरुषः) (कुपुरुषः) कुशब्दको मन्द आदेशभी होय उष्ण शब्द पर हुए संते । ईषदुष्णम् । इस विग्रहमें तत्पुरुष समास होनेसे ईषदर्थवाचक कुशब्दके स्थानमें मन्द आदेश करनेपर रूप हुआ । मंदोष्ण । फिर नामसंज्ञामें प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (मन्दोष्णम्) इसीप्रकार (कत्तृणम्) (कद्रथः) (कद्वदः) (कदध्वा) (कापथः) (काक्षः) (काग्निः) (कदग्निः) इत्यादिक प्रयोगानुसार कर रूप जानने योग्यहैं ॥

षषउत्वं दतृदशधासूत्तरपदादेः ष्टुत्वं च वक्तव्यम् । षड्भिरधिका दश । षोडश । षड् दन्ता यस्य सः । षोडन् । षट् प्रकाराः । षोढा । बृहतांपतिः । बृहस्पतिः । महच्छब्दस्य टेराकारः समानाधिकरणे । महांश्चासौ देवश्च । महादेवः । महांश्चासौ ईश्वरश्च । महेश्वरः । द्यौश्च भूमिश्च । द्यावाभूमी । जायाया जम्भावो दम्भावो निपात्यते । दंपती । जम्पती । क्वचित् । जायापती । आकृतिगणोयम् ।

भाषार्थ–षष्के अन्त्य षकारको उकार आदेश होय । दतृ और दशन् तथा धा प्रत्यय पर हुए संते और समासके उत्तर पदके आदिवर्णको षकार टवर्गता होय अर्थात् सकारके स्थानमें षकार और तवर्गके स्थानमें यथाक्रमसे टवर्ग होय । उदाहरण । षड्भिरधिका दश । इस विग्रहमें तत्पुरुष समास होनेपर रूप हुआ । षष् दशन् फिर षष्के अन्त्य षकारके स्थानमें उकार किया और उत्तरपद दशन्के आदिवर्ण दकारके स्थानमें डकार किया तब रूप हुआ । षोडशन् । फिर नामसंज्ञा होनेपर बहुवचनमें रूप सिद्ध हुआ (षोडश) । षड् दन्ता यस्य सः इस विग्रहमें बहुव्रीहिसमास होनेपर रूप हुआ । षष्दन्त । फिर (वयसि दन्तस्य दतृ) इसकर दन्तके स्थानमें ऋकारानुबन्ध दत् आदेश करनेपर रूप हुआ । षष् दत् । फिर षष्के अन्त्य षकारके स्थानमें उकार आदेश किया और उत्तरपदके आदिवर्णके स्थानमें डकार किया तब रूप हुआ (षोडत्) फिर नाम संज्ञा होनेपर प्रथमैकवचनमें (त्रितो नुम्) इसकर नुम् आगम करनेपर रूप सिद्ध हुआ (षोडन्) षट् प्रकाराः । इस विग्रहमें प्रकारार्थवाचक तद्धित प्रत्यय धा करनेपर (समासप्रत्यययोः) इसकर रूप हुआ । षष्धा । फिर षष्के अन्त्य षकारको उकार और उत्तरपदसम्बन्धी धा प्रत्ययके धकारके स्थानमें ढकार किया तब रूप हुआ । षोढा । फिर (कृत्तद्धितसमासाश्च) इसकर नामसंज्ञा होनेपर धा प्रत्ययान्तको अव्यय होनेसे विभक्तिका लुक् करनेपर रूप सिद्ध हुआ (षोढा) बृहतां पतिः । इस विग्रहमें तत्पुरुष समास होनेपर रूप हुआ । बृहत् पति । फिर (सहादेः सादिः) इसकर बृहत्शब्दके तकारके स्थानमें सकार करनेपर रूप हुआ । बृहस्

पति । फिर नामसंज्ञा होनेपर प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (बृहस्पतिः) महांश्चासौ देवश्च । इस विग्रहमें कर्मधारय समास होनेपर रूप हुआ । महत् देव । यहाँ समानाधिकरण है, क्योंकि एक विभक्त्यन्त महत् देव शब्द विशेषण विशेष्य भावकर एकार्थनिष्ठ हैं इसकारण महत् शब्दके टिसंज्ञक अत्के स्थानमें आकार करनेपर रूप हुआ । महादेव । फिर नामसंज्ञा होनेपर प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (महादेवः) इसी प्रकार (महेश्वरः) यह सिद्ध हुआ जानना । द्यौश्च भूमिश्च । इस विग्रहमें द्वन्द्वसमास होनेपर रूप हुआ । द्यौभूमि । फिर (सहादेः सादिः) इसकर द्यौके स्थानमें द्यावा आदेश करनेपर रूप हुआ (द्यावाभूमि) फिर नामसंज्ञा होनेपर इतरेतरयोगमें द्विवचन करनेपर प्रथमाद्विवचनके विषे रूप सिद्ध हुआ (द्यावाभूमी) जाया शब्दको जंभाव दम्भाव निपातसे सिद्ध होताहै । उदाहरण । जाया च पतिश्च । इस विग्रहमें द्वन्द्वसमास होनेपर रूप हुआ । जायापति । फिर जायाके स्थानमें जम् और दम् आदेश निपातसे करनेपर रूप हुए । जम्पति । दम्पति । फिर नाम संज्ञामें इतरेतरयोग होनेसे प्रथमाद्विवचनमें रूप हुए (जम्पती) (दम्पती) यह आकृतिगण है । भाव यह है कि, इस गणमें प्रयोगका जैसा आकार दीखता है तैसाही प्रयोग निपात कियाजाता है अर्थात् तैसाही आदेश कियाजाता है इस कारण यह गण आकृतिगणसंज्ञक है ॥

अलुक् क्वचित् ।

अलुक्–क्वचित् । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) क्वचित्समासे कृति तद्धितेपि विभक्तेरलुग्भवति । कृच्छ्रान्मुक्तः । अप्सु योनिर्यस्य सः । अप्सुयोनिः । उरसिलोमा । हृदिस्पृक् । कण्ठेकालः । वाचोयुक्तिः । दिशोदण्डः । पश्यतोहरः । इत्यादि ।

भाषार्थ–समासके विषे तथा कृदन्त प्रत्यय तथा तद्धितप्रत्यय पर हुए संते कहीं प्रयोगान्तरमें पूर्वपदकी विभक्तिका लुक् नहीं होय । उदाहरण । कृच्छ्रान्मुक्तः । इस विग्रहमें तत्पुरुष समास होनेपर पूर्वपदकी विभक्तिका लुक् नहीं हुआ किन्तु परपदकी विभक्तिका लुक् करनेसे रूप हुआ (कृच्छ्रान्मुक्त) फिर नामसंज्ञा होनेपर प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (कृच्छ्रान्मुक्तः) । अप्सु योनिर्यस्य सः । इस विग्रहमें बहुव्रीहिसमास होनेपर पूर्वपदकी विभक्तिका लुक् नहीं हुआ किन्तु परपदकी विभक्तिका लुक् करनेसे रूप हुआ । अप्सुयोनि । फिर नामसंज्ञा होनेपर पुँल्लिङ्ग प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (अप्सुयोनिः) । उरसि लोमानि यस्य सः । इस विग्रहमें बहुव्रीहिसमास होनेपर पूर्व उरस्शब्दकी सप्तमीविभक्तिका लुक् नहीं हुआ

किन्तु पर लोमन्शब्दकी प्रथमाविभक्तिका लुक् करनेसे रूप हुआ। उरसिलोमन्। फिर नामसंज्ञा होनेपर पुँल्लिगप्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (उरसिलोमा)। हृदि स्पृशति। इस विग्रहमें क्विप्प्रत्यय करनेपर (समासप्रत्यययोः) इसकर पूर्व हृद् शब्दकी सप्तमी विभक्तिका लुक् नहीं हुआ किन्तु परपदकी विभक्तिका लुक्करनेपर रूप हुआ। हृदिस्पृश क्विप्। फिर क्विप्का सर्वापहारी लोप करनेसे रूप हुआ (हृदि स्पृश) फिर (नाम्नश्च कृता समासः) इस सूत्रकर यह तत्पुरुष समास हुआ। नामसंज्ञा होनेपर प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (हृदिस्पृक्) यह उदाहरण कृत्प्रत्यय पर हुए संते पूर्वपदकी विभक्तिके नहीं लुक् होनेका है। कण्ठे कालो यस्य सः) इस विग्रहमें बहुव्रीहि समास होनेपर पूर्व कण्ठ शब्दकी सप्तमी विभक्तिका लुक् नहीं हुआ। पर काल शब्दकी प्रथमाविभक्तिका लुक् होनेसे रूप हुआ। कण्ठेकाल। फिर नामसंज्ञा होनेपर प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (कण्ठेकालः) इसी प्रकार (दिशोदण्डः) (पश्यतोहरः) इनमें पूर्वपदकी षष्ठीविभक्तिका लुक् नहीं हुआ। और तद्धित प्रत्यय पर हुए संते विभक्तिके नहीं लुक् होनेका उदाहरण। अमुष्यापत्यम्। इस विग्रहमें अपत्यार्थवाचक आयनण् तद्धितप्रत्यय करनेपर (समासप्रत्यययोः) इसकर विभक्तिका लुक् नहीं होनेसे रूप हुआ। अमुष्य आयन। फिर (यस्य लोपः) (षुर्नोणोऽनन्ते) (आदिस्वरस्य ञ्णितिच वृद्धिः) (१) इन सूत्रोंकर हुआ। आमुष्यायण। फिर नाम संज्ञा होनेपर प्रथमैकवचनके विषे पुँल्लिगमें रूप सिद्ध हुआ (आमुष्यायणः)॥

समानाधिकरणे शाकपार्थिवादीनां मध्यमपदलोपो वक्तव्यः।शाकः प्रियो यस्य सः। शाकप्रियः। शाकप्रियश्चासौ पार्थिवश्च। शाकपार्थिवः।

भाषार्थ–समानाधिकरणमें शाकपार्थिवादिक शब्दोंके मध्यमपदका लोप वक्तव्य है। भाव यहहै कि, एकविभक्त्यन्त पदोंकें विशेषणविशेष्यभाव कर एकार्थनिष्ठ होनेका नाम समानाधिकरणहै उस समानाधिकरणमें वर्त्तमान हुए शाकपार्थिवादि शब्दोंके मध्यमपदका लोप होताहै। उदाहरण। शाकप्रियश्चासौ पार्थिवश्च। इस- विग्रहमें कर्मधारय समास होनेपर रूप हुआ। शाकप्रियपार्थिव। इसमें समानवि- भक्त्यन्त शाकप्रिय और पार्थिव शब्द विशेषणविशेष्यभाव कर एकार्थनिष्ठहैं इस कारण मध्यमपद प्रियशब्दका लोप किया तब रूप हुआ। शाकपार्थिव। नाम- संज्ञा होनेपर पुँल्लिगप्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (शाकपार्थिवः)। देवपूजकश्चासौ ब्राह्मणश्च। इस विग्रहमें कर्मधारयसमास होनेपर रूप हुआ। देवपूजकब्राह्मण। इसमें समानविभक्त्यन्त देवपूजक और ब्राह्मणशब्द विशेषण विशेष्यभाव कर

(१) यह अगाडीका तद्धित सूत्रहै।

एकार्थनिष्ठहैं इसकारण शाकपार्थिवादिक होनेसे मध्यमपद पूजक शब्दका लोप करनेसे रूप हुआ । देवब्राह्मण । फिर नामसंज्ञा होनेपर प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (देवब्राह्मणः) ॥

आदेश्च द्वन्द्वे ।

आदेः–च–द्वन्द्वे । त्रिपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) द्वन्द्वे सति आदेश्च लोपो वक्तव्यः । चकारात् कुत्रचिन्न तु सर्वत्र । (१) माता च पिता च । पितरौ । श्वश्रूश्च श्वशुरश्च । श्वशुरौ । दुहिता च पुत्रश्च । पुत्रौ ।

भाषार्थ–द्वन्द्वसमास हुए संते आदिपदका लोप होय चकारग्रहणसे कहीं प्रयोगान्तरमें न कि, सब जगह । भाव यह है कि, द्वन्द्वसमास हुए संते कहीं प्रयोगान्तरमें आदिपदका लोप होय न कि, सब जगह । उदाहरण । माता च पिता च । इस विग्रहमें इतरेतरयोग चार्थ होनेसे द्वंद्वसमास हुआ । (समासप्रत्यययोः) इसकर विभक्तियोंका लुक् किया (उक्तार्थानामप्रयोगः) इसकर च अव्ययका लोप किया तब रूप हुआ । मातृपितृ । फिर (आदेश्च द्वन्द्वे) इसकर पूर्वपद मातृ शब्दका लोप करनेसे रूप हुआ । पितृ । फिर इतरेतरयोगमें द्विवचन होनेसे परपद पितृ शब्दको पुँल्लिंग होनेके कारण पुँल्लिंगप्रथमाद्विवचनके विषे रूप सिद्ध हुआ (पितरौ) (श्वश्रूश्च श्वशुरश्च) इस विग्रहमें द्वंद्वसमास होनेपर रूप हुआ । श्वश्रूश्वशुर । फिर (आदेश्च द्वंद्वे) इसकर आदिपद श्वश्रूशब्दका लोप करनेपर रूप हुआ । श्वशुर । फिर पुँल्लिंगप्रथमाद्विवचनमें रूप सिद्ध हुआ (श्वशुरौ) (दुहिता च पुत्रश्च) इस विग्रहमें द्वंद्वसमास होनेपर रूप हुआ । दुहितृपुत्र । फिर (आदेश्च द्वन्द्वे) इसकर पूर्वपद दुहितृशब्दका लोप करनेपर रूप हुआ । पुत्र । फिर इतरेतरयोगमें द्विवचन होनेसे प्रथमाद्विवचनमें पुँल्लिंगके विषे रूप सिद्ध हुआ (पुत्रौ) ॥

ऋतां द्वन्द्वे ।

ऋताम्–द्वन्द्वे । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) द्वन्द्वे समासे पूर्वपदस्य ऋकारस्य वा आकारो भवति । माता च पिता च । मातापितरौ ।

भाषार्थ–द्वन्द्वसमास हुए संते पूर्वपदके ऋकारके स्थानमें विकल्प करके आकार होय । उदाहरण । माता च पिता च । इस विग्रहमें द्वन्द्वसमास होनेपर हुआ । मातृपितृ । इसमें जहाँ कि, (आदेश्चद्वन्द्वे) इसकर पूर्वपद मातृ शब्दका लोप नहीं हुआ तहाँ एक जगह पूर्वपद मातृशब्दके ऋकारके स्थानमें आकार करनेपर रूप हुआ

(१) शिष्यमाणोलुप्यमानार्थाभिधायी । अर्थ–द्वंद्वसमासमें शेष रहा शब्द साहचर्यसे लुप्त हुए शब्दार्थका साक्षी रहताहै ॥

मातापितृ । फिर नामसंज्ञामें प्रथमाद्विवचनके विषे रूप सिद्ध हुआ (मातापितरौ) और जहाँ एक जगह पूर्वपद मातृशब्दके ऋकारके स्थानमें आकार नहीं हुआ तहाँ सिद्ध हुआ (मातृपितरौ) इसीप्रकार (दुहितापुत्रौ) (दुहितृपुत्रौ) इत्यादिक सिद्ध हुए जानने ॥

द्वन्द्वे सर्वादित्वं वा । वर्णाश्रमेतरे । वर्णाश्रमेतराः ।

भाषार्थ-द्वन्द्वसमासके विषे सर्वादिकशब्दोंको सर्वादित्व अर्थात् सर्वादिकार्य विकल्प करके होताहै । उदाहरण । वर्णाश्च आश्रमाश्च इतरे च । इस विग्रहमें द्वन्द्वसमास होनेपर रूप हुआ । वर्णाश्रमेतर । फिर नामसंज्ञा होनेपर प्रथमाबहुवचनके विषे समासके अन्त्य शब्द इतरको सर्वादि होनेसे (द्वन्द्वेसर्वादित्वं वा) इसकर एक जगह सर्वादिकार्य किया तब (जसी) (अ इ ए) इन सूत्रोंकर सिद्ध हुआ (वर्णाश्रमतरे) और जहाँ एक जगह सर्वादिकार्य नहीं हुआ तहाँ (सवर्णे दीर्घः सह) स्रोर्विसर्गः) इनकर रूप सिद्ध हुआ (वर्णाश्रमेतराः) द्वितीयाबहुवचनमें (वर्णाश्रमेतरान्) तृतीयाबहुवचनमें (वर्णाश्रमेतरैः) चतुर्थीपंचमीबहुवचनमें (वर्णाश्रमेतरेभ्यः) षष्ठीबहुवचनमें एक जगह सर्वादिकार्य किया तब (सुडामः) (एस्भिबहुत्वे) (किलात्षःसःकृतस्य) इन सूत्रोंकर सिद्ध हुआ (वर्णाश्रमेतरेषाम्) और जहाँ एक जगह सर्वादिकार्य नहीं हुआ तहाँ (नुडामः) (नामि) (षुर्नोणोऽनन्ते) इन सूत्रोंकर सिद्ध हुआ (वर्णाश्रमेतराणाम्) सप्तमीबहुवचनमें (वर्णाश्रमेतरेषु) ॥

वैयधिकरण्ये बहुव्रीहौ मध्यमपदलोपश्च । कुमुदस्य गंध इव गन्धो यस्य सः । कुमुदगंधिः । उपमानात्परस्य गंधशब्दस्येकारो भवति । हंसस्य गमनमिव गमनं यस्याः सा । हंसगमना ।

भाषार्थ-वैयधिकरण्य अर्थ वर्त्तमान हुए संते बहुव्रीहिसमासके विषे मध्यमपदका लोप होय । भाव यहहै कि, भिन्न विभक्त्यन्त पदोंकी भिन्नार्थमें निष्ठा होनेका नाम वैयधिकरण्यहै वह वैयधिकरण्य अर्थ वर्त्तमान हुए संते बहुव्रीहिसमासके विषे मध्यमपदका लोप होता है । उदाहरण । कुमुदस्य गन्ध इव गन्धो यस्य सः । इस विग्रहमें बहुव्रीहिसमास होनेपर (समासप्रत्यययोः) (उक्तार्थानामप्रयोगः) इनकर विभक्ति और उक्तार्थ शब्दोंका लोप किया तब रूप हुआ । कुमुदगन्धगन्ध । इस बहुव्रीहिसमासमें वैयधिकरण्य अर्थ वर्त्तमान हैं क्योंकि षष्ठ्यन्त कुमुद और प्रथमान्त गन्ध इन शब्दोंकी भिन्न २ अर्थमें निष्ठा है इसकारण मध्यमपद गंध शब्दका लोप करनेपर रूप हुआ । कुमुदगंध । उप-

मावाचक शब्दसे परे गन्धशब्दके अकारको इकार होताहै बहुव्रीहिसमासमें इसकर गन्ध शब्दके अकारको इकार करनेपर रूप हुआ । कुमुदगन्धि । फिर नामसंज्ञा होनेपर अन्य विशेष्य प्रधान पदको पुँल्लिग होनेसे पुँल्लिगप्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (कुमुदगन्धिः) । हंसस्य गमनमिव गमन यस्याः सा । इस विग्रहमें बहुव्रीहिसमास होनेपर रूप हुआ । हंसगमन गमन । इस बहुव्रीहिसमासमें वैयधिकरण्य अर्थ विद्यमानहै इसकारण मध्यमपद गमन शब्दका लोप करनेपर रूप हुआ । हंसगमन । फिर अन्य विशेष्य प्रधान पदको स्त्रीलिंग होनेसे (आबतः स्त्रियाम्) इसकर आप्प्रत्यय किया । तब प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (हंसगमना) ॥

दिक्संख्ये संज्ञायाम् ।

दिक्संख्ये–संज्ञायाम् । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) दिग्वाचकं संख्यावाचकं च पदं संज्ञायां वाच्यमानायां तुल्यार्थेनोत्तरपदेन सह विग्रहरहितं समस्यते समासश्च तत्पुरुषो भवति । अविग्रहो नित्यसमासोपि । अन्यस्त्वस्वपदविग्रहः । दक्षिणाग्निः । सप्तग्रामाः ॥ इति समासप्रक्रिया ॥

भाषार्थ–दिशावाचक तथा संख्यावाचक पदसंज्ञा कहीजानेपर तुल्य अर्थवाले उत्तरपदके साथ समासको प्राप्त होवै तो वह समास तत्पुरुषसंज्ञक होताहै । समास दो प्रकारका होताहै एक नित्य और दूसरा अनित्य । जो विग्रहरहित समासहै वह नित्य समासहै और अपिशब्दसे जो स्वपदविग्रह समासहै वह भी नित्य समासहै । और जो अस्वपदविग्रह अर्थात् स्वपदसे भिन्न विग्रहवाला समास है वह अन्य अर्थात् अनित्यसमासहै ॥ नित्यसमासका उदाहरण (दक्षिणाग्निः) इसमें दिशावाचक दक्षिणाशब्द एकार्थ अग्नि शब्दके साथ समासको प्राप्त हुआ है इसकारण यहाँ नित्य तत्पुरुषसमास होनेसे विग्रह नहीं किया और (सप्तग्रामाः) इसमें संख्यावाचक सप्तन् शब्द एकअर्थवाले ग्रामशब्दके साथ समासको प्राप्त हुआहै इसकारण यहाँ नित्य तत्पुरुषसमास होनेसे विग्रह नहीं किया है (दक्षिणाग्निः । सप्तग्रामाः) यह नित्य तत्पुरुषसमासात्मक शब्द संज्ञावाचकहैं (१) ॥

॥ इति समासप्रक्रिया ॥

अथ तद्धितो निरूप्यते ।

भाषार्थ–समास कहनेके अनन्तर तद्धित निरूपण कियाजाताहै ॥

---

(१) पूर्वेऽव्ययेऽव्ययीभावोऽमादौतत्पुरुषः स्मृतः । चकारबहुलो द्वन्द्वः संख्यापूर्वो द्विगुः स्मृतः॥ ॥ १ ॥ यस्य येन बहुव्रीहिः सचासौ कर्मधारयः । इति किंचित्समासानां षण्णां लक्षणमीरितम् ॥ २ ॥

अपत्येऽण् ।

अपत्ये-अण् । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) नाम्नोऽपत्येऽर्थेऽण् प्रत्ययो भवति । उपगोरपत्यमिति वाक्ये । उपगोः अण् । इति स्थिते । समासप्रत्यययोः षष्ठीलोपः । णकारो वृद्ध्यर्थः ।

भाषार्थ-नामसंज्ञक शब्दसे अपत्यअर्थके विषे अण् प्रत्यय होवैहै । भाव यहहै कि, अपत्य नाम पुत्रपौत्रादि सन्तान वा शिष्यप्रशिष्यादि सन्तानवाच्य हुए संते नामसंज्ञक शब्दसे अण् प्रत्यय होवैहै । उदाहरण । उपगोरपत्यम् । इस विग्रहमें नामोंके अन्वयकी योग्यता होनेसे अपत्यार्थवाचक तद्धितप्रत्यय अण् करनेपर रूप हुआ । उपगोः अण् । (समासप्रत्यययोः) इसकर तद्धितप्रत्यय अण् परे होनेसे उपगुशब्दकी षष्ठीविभक्तिका लुक् किया और (उक्तार्थानामप्रयोगः) इसकर अपत्यशब्दका लोप किया तब रूप हुआ । उपगु अण् । अण् प्रत्ययमें णकार वृद्धिके अर्थहै इसकारण णकारका लोप करनेपर रूप हुआ । उपगु अ । फिर-॥

आदिस्वरस्य ञ्णिति च वृद्धिः ।

आदिस्वरस्य-ञ्णिति-च-वृद्धिः । चतुष्पदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) स्वराणां मध्ये य आदिस्वरस्तस्य वृद्धिर्भवति ञिति णिति च तद्धिते परतः । उकारस्य औकारो वृद्धिः ।

भाषार्थ-स्वरोंके मध्यमें जो आदिस्वरहै तिसको वृद्धि हो ञित् णित् तद्धित प्रत्यय पर हुए संते । भाव यहहै कि, तद्धितप्रत्ययान्त जो पदहै उसके जितने स्वर होवैं उनसमस्त स्वरोंके मध्यमें जो आदिका स्वर होवै उसको वृद्धि होय जो ञकार इत् वा णकार इत्वाला तद्धित प्रत्यय परे होवै तो जैसे (उपगुअ) इसमें अण्-प्रत्ययान्त उपगु पदका आदि स्वर उकारहै इसको (आरै औ वृद्धिः) इसकर औकार वृद्धि किया, क्योंकि णकारइत्वाला तद्धितसम्बन्धी अप्रत्यय परे विद्यमानहै तब रूप हुआ । औपगु अ । फिर-॥

वोऽव्यस्वरे ।

वो-अव्-यस्वरे । त्रिपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) उवर्णस्यौकारस्य च वा अव् भवति यकारे स्वरे च परे । औपगवः । वासिष्ठः । गौतमः ।

भाषार्थ-उवर्ण और ओकारको अव् होय तद्धितसम्बन्धी यकार तथा स्वर परे हुए संते । औपगु अ । इसमें उकारसे तद्धितसम्बन्धी अकार स्वर परे विद्यमान है

इसकारण उकारके स्थानमें अव् करनेसे रूप हुआ । औपगव् अ । फिर (स्वरहीनं परेण संयोज्यम्) इसकर रूप स्थित हुआ । औपगव । फिर (कृत्तद्धितसमासाश्च) इसकर नामसंज्ञा होनेपर अपत्यको पुरुष होनेसे पुँल्लिगप्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (औपगवः) यदि अपत्य स्त्री होवै तो (त्रणईप्) इसकर ईप् प्रत्यय करनेपर स्त्रीलिंगप्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (औपगवी) यह नाम किसी उपगुनाम मुनिके सन्तानका है । वसिष्ठस्य अपत्यम् । इस विग्रहमें अपत्यार्थवाचक तद्धित प्रत्यय अण् करनेपर (समासप्रत्यययोः) (उक्तार्थानामप्रयोगः) इनकर रूप हुआ वसिष्ठ अ । फिर (आदिस्वरस्य ञ्णिति च वृद्धिः) इसकर आदि स्वर वकार उत्तरवर्त्ती अकारको आकार वृद्धि करनेसे रूप हुआ । वासिष्ठ अ । फिर (यस्य लोपः) इसकर ठकार उत्तरवर्त्ती अकारके लोप करनेपर (स्वरहीनं परेण संयोज्यम्) इसकर रूप हुआ । वासिष्ठ । फिर (कृत्तद्धितसमासाश्च) इसकर नामसंज्ञा होनेपर अपत्यको पुरुष होनेसे पुँल्लिग प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (वासिष्ठः) (गौतमस्य अपत्यम्) इस विग्रहमें अण्प्रत्यय करनेपर रूप हुआ । गौतम अ । फिर (आदिस्वरस्यञ्णितिचवृद्धिः) इसकर आदिस्वर गकार उत्तरवर्त्ती औकारको औकारवृद्धि करनेसे रूप हुआ । गौतम अ । फिर (यस्य लोपः) इसकर रूप हुआ । गौतम । फिर नामसंज्ञा होनेपर पुँल्लिग प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (गौतमः) वृत्तिमें वाके ग्रहणसे कहीं प्रयोगान्तरमें अव् आदेश नहीं होता है । जैसे । स्वयम्भुवोऽपत्यम् । इस विग्रहमें तद्धित प्रत्यय अण् करनेपर रूप हुआ । स्वयम्भू अ । फिर आदि स्वरको वृद्धि करनेसे रूप हुआ । स्वायंभू अ । इसमें (वोऽव्यस्वरे) इसकर उकारको अव् आदेश नहीं हुआ किन्तु (य्वोर्धातोरियुवौ स्वरे) इसकर उव् आदेश करनेसे रूप हुआ । स्वायम्भुव । फिर नामसंज्ञा होनेपर पुँल्लिग प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (स्वायंभुवः) ॥

ऋ उरणि ।

ऋ[1]--उर्[2]--अणि[3] । त्रिपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) ऋकारस्य उर् भवति । अणि परे । षाण्मातुरः । षषो णो वाच्यो मातरि । द्वैमातुरः । भाद्रमातुरः ।

भाषार्थ–ऋकारको उर् आदेश होय तद्धितप्रत्यय अण् पर हुए संते । भाव यह है कि, मातृशब्दके ऋकारके स्थानमें उर् आदेश होय तद्धितप्रत्यय अण् परे होवै तो । उदाहरण । षट् च ता मातरश्च । इस विग्रहमें कर्मधारय समास होनेपर रूप हुआ । षष् मातृ । फिर षष्के षकारके णकार आदेश वक्तव्य है मातृशब्द पर हुए संते इसकर रूप हुआ । षण्मातृ । फिर नामसंज्ञा होनेपर षष्ठीबहुवचनमें

रूप सिद्ध हुआ । षण्मातॄणाम् । षण्मातॄणामपत्यम् । इस विग्रहमें अपत्यार्थवाचक अण् प्रत्यय करनेपर रूप हुआ । षण्मातृ अ । फिर (आदिस्वरस्यञ्णितिचवृद्धिः) इसकर आदिस्वर षकारउत्तरवर्त्ती अकारको वृद्धि करनेपर रूप हुआ । षाण्मातृ अ । फिर (ऋ उरणि) इसकर मातृशब्दके ऋकारको उर् आदेश करनेपर रूप हुआ । षाण्मातुर । फिर नामसंज्ञा होनेपर पुँल्लिगप्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (षाण्मातुरः) यह कार्तिकेयका वाचक है । द्वयोर्मात्रोरपत्यम् । इस विग्रहमें अपत्यार्थवाचक अण् प्रत्यय करनेपर रूप हुआ । द्विमातृ अ । फिर (आदि स्वरस्य ञ्णितिचवृद्धिः) इसकर आदिस्वरको वृद्धि करनेपर रूप हुआ । द्वैमातृ अ । फिर (ऋ उरणि) इसकर मातृशब्दके ऋकारकेस्थानमें उकार करनेपर रूप हुआ । द्वैमातुर । नामसंज्ञा होनेपर पुँल्लिगप्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (द्वैमातुरः) इसी प्रकार (भाद्रमातुरः) यह सिद्ध हुआ है । यह दोनों सतीसुतवाचक हैं ॥

अतइञनृषेः ।

अतः--इञ्--अनृषेः । त्रिपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) अकारान्तान्नाम्नोऽनृषिशब्दादपत्येऽर्थे इञ् प्रत्ययो भवति । यस्यलोपः । देवदत्तस्यापत्यं दैवदत्तिः । श्रैधरिः ।

भावार्थ-ऋषिवाचकशब्दवर्जित अकारान्त नामसे अपत्य अर्थके विषे इञ् प्रत्यय होय । भाव यहहै कि, अकारान्त नामसंज्ञक शब्दसे सन्तानार्थमें इञ् प्रत्यय होय और ऋषिवाचक अकारान्त नामसंज्ञकशब्दसे इञ् प्रत्यय नहीं होय । उदाहरण । देवदत्तस्यापत्यम् । इस विग्रहमें अकारान्त नामसंज्ञक देवदत्तशब्दसे अपत्यार्थमें इञ् प्रत्यय किया (समासप्रत्यययोः) इस कर देवदत्तशब्दकी षष्ठी विभक्तिका लोप किया और (उक्तार्थानामप्रयोगः) इसकर अपत्यशब्दका लोप किया तब रूप हुआ । देवदत्त इ । फिर आदिस्वर दकारउत्तरवर्त्ती एकार स्वरको ऐकार वृद्धि किया क्योंकि ञकार इत्वाला इप्रत्यय परे विद्यमानहै तब रूप हुआ । दैवदत्त इ । फिर (यस्यलोपः) इसकर रूप हुआ । दैवदत्ति । फिर नामसंज्ञा होनेपर पुँल्लिग प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (देवदत्तिः) श्रीधरस्यापत्यम् । इस विग्रहमें श्रीधर शब्दको अकारान्त होनेसे अपत्यार्थवाचक इञ् प्रत्यय करनेपर रूप हुआ । श्रीधर इ । फिर आदिस्वरको दीर्घकर (यस्यलोपः) इससे रूप हुआ । श्रैधरि । फिर नामसंज्ञा होनेपर पुँल्लिग प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (श्रैधरिः) इसीप्रकार

दशरथस्यापत्यम्। इस विग्रहमें सिद्ध हुआ (दाशरथिः) पुरन्दरस्यापत्यम्। इस विग्रहमें सिद्ध हुआ (पौरन्दरिः)॥ (१)

व्यासवरुडसुधातृनिषादबिम्बचांडालादिञ्अपत्येऽर्थे। चैषामन्तस्य अकः। वैयासकिः। वारुडकिः। सौधातकिः। नैषादकिः। बैम्बकिः। चांडालकिः।

भाषार्थ–व्यास–वरुड–सुधातृ–निषाद–बिम्ब–चांडाल–इनसे अपत्य अर्थमें इञ् प्रत्यय होय और इनके अन्त्यवर्णको अक आदेश होय। उदाहरण। व्यासस्यापत्यम्। इस विग्रहमें अपत्यार्थवाचक इञ्प्रत्यय करनेपर रूप हुआ। व्यास इ। फिर (न सन्धिय्वोर्युट् च) इस अगले सूत्र और (आदिस्वरस्य ञ्णिति च वृद्धिः) इस सूत्रकर रूप हुआ। वैयास इ। फिर अन्त्य वर्ण अकारके स्थानमें अक आदेश करनेपर रूप सिद्ध हुआ। वैयासक इ। (यस्यलोपः) इसकर ककार उत्तरवर्ती अकारका लोप करनेपर रूप हुआ। वैयासकि। फिर नामसंज्ञा होनेपर पुँल्लिगप्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (वैयासकिः) वरुडस्यापत्यम्। इस विग्रहमें अपत्यार्थवाचक इञ्प्रत्यय करनेपर रूप हुआ। वारुड इ। फिर अन्त्यवर्ण अकारके स्थानमें अक आदेश कर (यस्य लोपः) इसकर रूप हुआ। वारुडकि। फिर नामसंज्ञा होनेपर पुँल्लिग प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (वारुडकिः) सुधातुरपत्यम्। इस विग्रहमें इञ्प्रत्यय करनेपर अन्त्यवर्ण ऋकारके स्थानमें अक आदेश किया। और (आदिस्वरस्य ञ्णिति च वृद्धिः) इसकर आदिस्वर सकार उत्तरवर्त्ती उकारके स्थानमें औकार वृद्धि करनेपर रूप हुआ। सौधातक इ। फिर (यस्य लोपः) इसकर रूप हुआ। सौधातकि। फिर नामसंज्ञा होनेपर पुँल्लिगप्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ। (सौधातकिः) इसी प्रकार सिद्ध हुए शेष रूप जानने चाहिये॥

---

(१) बाह्वादेश्च। बाहविः। गार्गिः। औडुलोमिः। भाषार्थ–बाहुआदिक शब्दोंसे अपत्य अर्थमें इञ् प्रत्यय होता है। उदाहरण। बाहोरपत्यम्। इस विग्रहमें इञ् प्रत्यय करनेपर रूप हुआ। बाहुइ। फिर (वोऽव्यस्वरे) इसकर उकारको अव् करनेपर रूप हुआ बाहवि। फिर नामसंज्ञा होनेपर पुँल्लिग प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ। (बाहविः)। गर्गस्यापत्यम्। इस विग्रहमें ऋषिवाचक शब्द होनेपर भी बाह्वादिक होनेसे इञ् प्रत्यय करनेपर रूप हुआ। गर्गइ। फिर आदिस्वरको वृद्धि करनेपर (यस्यलोपः) इसकर रूप हुआ। गार्गि। फिर नामसंज्ञा होनेपर पुँल्लिग प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (गार्गिः) उडुलोम्नोऽपत्यम्। इस विग्रहमें बाह्वादिक होनेसे इञ् प्रत्यय करनेपर रूप हुआ। उडुलोमन् इ। फिर आदिस्वरको वृद्धि किया और (नोवा) इसकर टि संज्ञक अन् का लोप किया तब रूप हुआ। औडुलोमि। फिर नामसंज्ञा होनेपर पुँल्लिग प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (औडुलोमिः) इसीप्रकार प्रयोगानुसार अन्यरूप सिद्ध हुए जानने।

शिवादिभ्यश्चाण् वक्तव्यः । शैवः । वासुदेवः । वैदेहः ।

भाषार्थ–शिवादिकशब्दोंसे अपत्य अर्थके विषे अण्प्रत्यय वक्तव्य है, न कि इञ् । उदाहरण । शिवस्यापत्यम् । इस विग्रहमें अण्प्रत्यय करनेपर (आदिस्वरस्य ञ्णिति च वृद्धिः) (यस्य लोपः) इन सूत्रोंकर रूप हुआ । शैव । फिर नामसंज्ञा होनेपर पुँल्लिगप्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (शैवः) इसीप्रकार । वसुदेवस्यापत्यम् । इसमें रूप सिद्ध हुआ (वासुदेवः) विदेहस्यापत्यम् । इसमें सिद्ध हुआ (वैदेहः) इत्यलम् ॥

ण्यायनणेयण्णीया गर्गनडात्रिस्त्रिपितृष्वस्रादेः ।

ण्यायनणेयण्णीयाः–गर्गनडात्रिस्त्रीपितृष्वस्रादेः । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) गर्गादेर्नडादेरत्र्यादेः स्त्रीलिंगात्पितृष्वस्रादेश्च ण्य–आयनण्–एयण्–णीय–इत्येते प्रत्यया भवंति अपत्येऽर्थे । गार्ग्यः । वात्स्यः । नाडायनः । चारायणः । आमुष्यायणः । आत्रेयः । कापेयः । गांगेयः । माहेयः । पैतृष्वस्रीयः । मातृष्वस्रीयः ।

भाषार्थ–गर्गादिक और नडादिक और अत्र्यादिक और स्त्रीलिंग और पितृष्वस्रादिकशब्दोंसे अपत्यअर्थमें ण्य–आयनण्–एयण्–णीय यह प्रत्यय होवैं हैं । भाव यह है कि, गर्गआदिक शब्दोंसे अपत्यअर्थमें ण्य प्रत्यय और नड आदिकशब्दोंसे अपत्यअर्थमें आयनण् प्रत्यय और अत्रिआदिक शब्दोंसे तथा स्त्रीलिंगशब्दोंसे अपत्य अर्थमें एयण् प्रत्यय और पितृष्वसृआदिक शब्दोंसे अपत्यअर्थमें णीय प्रत्यय होवै हैं । इन प्रत्ययोंमें णकारका ग्रहण वृद्धिके अर्थ है । उदाहरण । गर्गस्यापत्यम् । इस विग्रहमें अपत्यार्थवाचक ण्यप्रत्यय करनेपर (आदिस्वरस्य ञ्णिति च वृद्धिः) इसकर आदि स्वरको वृद्धि करनेसे रूप हुआ । गार्गय । फिर (यस्य लोपः) इसकर गकार उत्तरवर्त्ती अकारका लोप करनेपर रूप हुआ । गार्ग्य । फिर नामसंज्ञा होनेपर पुँल्लिगप्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (गार्ग्यः) इसीप्रकार (वत्सस्यापत्यम्) इस विग्रहमें ण्य प्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ (वात्स्यः) नडस्यापत्यम् । इस विग्रहमें अपत्यार्थवाचक आयनण् प्रत्यय करनेपर (आदिस्वरस्य ञ्णिति च वृद्धिः) इसकर पूर्वस्वरको वृद्धि करनेसे रूप हुआ । नाड आयन फिर (यस्य लोपः) इसकर डकारउत्तरवर्त्ती अकारका लोप करनेपर रूप हुआ । नाडायन । फिर नामसंज्ञा होनेपर पुँल्लिग प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (नाडायनः) इसीप्रकार । चरस्यापत्यम् । इस विग्रहमें आयनण् प्रत्यय करनेपर (आदिस्वरस्य ञ्णिति च वृद्धिः) (यस्य लोपः) (षुर्नोणोऽनन्ते) इन सूत्रोंकर सिद्ध हुआ (चारायणः) और अमुष्य अपत्यम् । इस विग्रहमें

आयनण् प्रत्यय करनेपर (अलुक्क्वचित्) इससे अदस्शब्दकी षष्ठीविभक्तिका लुक् नहीं हुआ । किन्तु (आदिस्वरस्य ञ्णिति च वृद्धिः) (यस्य लोपः) (षुर्नोणोऽनन्ते) इन सूत्रोंकर सिद्ध हुआ (आमुष्यायणः) । अत्रेरपत्यम् । इस विग्रहमें एयण् प्रत्यय करनेपर (आदिस्वरस्य ञ्णिति च वृद्धिः) इसकर आदिस्वरअकारको आकार वृद्धि किया और (यस्यलोपः) इसकर इकारका लोप किया तब रूपहुआ । आत्रेय । फिर नामसंज्ञा होनेपर पुँल्लिंगप्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (आत्रेयः) इसीप्रकार । कपेरपत्यम् । इस विग्रहमें एयण् प्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ (कापेयः) । गंगायाः अपत्यम् । इस विग्रहमें स्त्रीलिंग होनेसे एयण् प्रत्यय करनेपर आदि स्वर अकारको आकार वृद्धि किया और (यस्य लोपः) इसकर गकारउत्तरवर्ती आकारका लोप किया तब रूप हुआ (गांगेय) फिर नामसंज्ञा होनेपर पुँल्लिंगप्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (गांगेयः) । मह्याः अपत्यम् । इस विग्रहमेंभी स्त्रीलिंग होनेसे एयण् प्रत्यय करनेपर रूप हुआ । महीएय । फिर आदिस्वर अकारको आकार वृद्धिकिया और (यस्य लोपः) इसकर ईकारका लोप किया । तब रूप हुआ (माहेय) फिर नाम संज्ञा होनेपर पुँल्लिंगप्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (माहेयः) पितृष्वसुरपत्यम् । इस विग्रहमें णीय प्रत्यय करनेपर रूप हुआ । पितृष्वसृ ईय । फिर आदिस्वर पकारउत्तरवर्त्ती इकारको ऐकार वृद्धि किया । तब रूप हुआ । पैतृष्वसृईय । फिर (ऋरम्) इसकर ऋकारके स्थानमें रकार करनेपर रूप हुआ । पैतृष्वस्रीय । फिर नामसंज्ञा होनेपर पुँल्लिगप्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (पैतृष्वस्रीयः) इसीप्रकार । मातृष्वसुरपत्यम् । इस विग्रहमें णीय प्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ । (मातृष्वस्रीयः) (१) ॥

---

(१) (मातृपितृभ्यां स्वसुः सकारस्य षत्वं वक्तव्यम्) भाषार्थ—मातृ तथा पितृ शब्दसे परे जो स्वसृ शब्द तिसके आदि सकारके स्थानमें षकार वक्तव्य है (पितृमातृभ्यां व्यड्डुलौ) भाषार्थ—पितृ तथा मातृ शब्दसे भ्रात्रर्थमें व्य और डुल प्रत्यय क्रमसे होते हैं । अर्थात् पितृ शब्दसे भ्रात्रर्थमें व्य प्रत्यय और मातृ शब्दसे भ्रात्रर्थमें डुल प्रत्यय होवेहै । उदाहरण । पितुर्भ्राता । इस विग्रहमें भ्रात्रर्थवाचक व्य प्रत्यय करनेपर रूप हुआ । पितृव्य फिर नामसंज्ञा होनेपर पुँल्लिंग प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ । (पितृव्यः) मातुर्भ्राता । इस विग्रहमें मातृशब्दसे भ्रात्रर्थवाचक डुल प्रत्यय करनेपर रूपहुआ । मातृ उल । इसमें डकार इत्संज्ञक है (डितिटेः) इसकर रूप हुआ । मातुल । फिर नामसंज्ञा होनेपर प्रथमैकवचनपुँल्लिंगमें रूप सिद्धहुआ । (मातुलः) (पितृडातृभ्यां डामहष्) भाषार्थ—पितृमातृ शब्दोंसे मातृ पित्रर्थमें डामहष् प्रत्यय होवै है । उदाहरण । पितुः पिता । इस विग्रहमें पित्रर्थवाचक डामहष् प्रत्यय करनेपर रूप हुआ । पितृ आमह । इसमें डकार डित्कार्यके अर्थहै औरषकार ईप् प्रत्ययके अर्थ है । तब (डितिटः) इसकर पितृशब्दकी टिका लोप करनेपर रूप हुआ । पितामह । फिर नाम संज्ञा होनेपर पुँल्लिंग प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ :। पितामहः । पितुर्माता । इस विग्रहमेंभी डामहष् प्रत्यय करनेपर रूप हुआ पितामह । फिर षिद्गौरादिभ्यश्च ष्वितः । इसकर ईप् प्रत्यय करनेपर रूप हुआ । पितामही । इसीप्रकार । मातुः पिता । इस विग्रहमें रूप सिद्ध हुआ । मातामहः । और मातुर्माता । इस विग्रहमें रूप सिद्ध हुआ । मातामही । इत्यलम् ॥

लुग्बहुत्वे क्वचित्।

लुक्-बहुत्वे-क्वचित्। त्रिपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) अपत्येऽर्थे उत्पन्नस्य प्रत्ययस्य बहुत्वे सति क्वचिदृष्यनृषिविषये लुक् भवति। गर्गाः। अत्रयः। विदेहाः।

भाषार्थ-अपत्यअर्थके विषे उत्पन्नहुए प्रत्ययका बहुवचन हुए संते कहीं ऋषिवाचक शब्दविषयमें वा कहीं अनृषिवाचक शब्दविषयमें लुक् होय। उदाहरण। प्रथमैकवचनमें (गार्ग्यः) द्विवचनमें (गार्ग्यौ) बहुवचनमें। गार्ग्य अस्। ऐसा स्थित है (लुग्बहुत्वे क्वचित्) इसकर अपत्यअर्थमें उत्पन्नहुए ण्यप्रत्ययका लुक् किया तब (निमित्ताभावेनैमित्तिकस्याप्यभावः) इसकर आदिस्वरकी वृद्धिकाभी अभाव होगया और (यस्यलोपः) इसकर जोकि, अकारका लोप हुआथा सो उस अकारके लोपकाभी अभाव होगया तब रूप हुआ (गर्ग अस्) फिर (सवर्णे दीर्घः सह) (स्रोर्विसर्गः) इनकर रूप सिद्धहुआ (गर्गाः) द्वितीयाबहुवचनमें (गर्गान्) तृतीयाबहुवचनमें (गर्गैः) चतुर्थी पंचमी बहुवचनमें (गर्गेभ्यः) षष्ठीबहुवचनमें (गर्गाणाम्) सप्तमीबहुवचनमें (गर्गेषु) इसीप्रकार आत्रेयका प्रथमैकवचनमें (आत्रेयः) द्विवचनमें (आत्रेयौ) बहुवचनमें (आत्रेय अस्) ऐसा स्थित है (लुग्बहुत्वे क्वचित्) इसकर अपत्यअर्थमें उत्पन्न हुए एयण् प्रत्ययका लुक् किया तब (निमित्ताभावे नैमित्तिकस्याप्यभावः) इस कर वृद्धि तथा इकारके लोपकाभी अभाव हुआ। तब रूप हुआ (आत्रि अस्) फिर (एओजसी) (ए अय्) (स्रोर्विसर्गः) इनकर रूप सिद्ध हुआ (अत्रयः) द्वितीयादिमें (आत्रेयम्) (आत्रेयौ) (अत्रीन्) इत्यादि रूप जानने। इसीप्रकार वैदेहका प्रथमाएकवचनमें (वैदेहः) द्विवचनमें (वैदेहौ) बहुवचनमें अपत्यअर्थमें उत्पन्न हुए अण् प्रत्ययका लुक् करने पर स्थित हुआ (विदेह अस्) फिर (सवर्णे दीर्घः सह) (स्रोर्विसर्गः) इनकर रूप सिद्ध हुआ (विदेहाः) द्वितीयादिमें (वैदेहम्) (वैदेहौ) (विदेहान्) इत्यादि॥

देवतेदमर्थे।

देवतेदमर्थे। एकपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) देवतार्थे इदमर्थे चोक्ताः प्रत्यया भवन्ति। इन्द्रो देवताऽस्येति। ऐन्द्रम् हविः। सोमो देवतास्येति। सौम्यम्। देवदत्तार्थमिदं वस्त्रम्। दैवदत्तम्।

भाषार्थ-देवतार्थ तथा इदमर्थमें कहे हुए अण् आदिक प्रत्यय होयँ। उदाहरण। इंद्रो देवतास्य। इस विग्रहमें देवतार्थके विषे अण् प्रत्यय करनेपर (समासप्रत्यययोः)

इसकर विभक्तिका लुक् किया और (उक्तार्थानामप्रयोगः) इसकर देवता शब्द तथा (अस्य) इस पदका लोप किया तब रूप हुआ (इंद्र अ) फिर (आदिस्वरस्य ञ्णिति च वृद्धिः) इसकर आदिस्वर इकारको ऐकार वृद्धि की फिर (यस्य लोपः) इसकर अकारका लोप किया तब रूप हुआ । ऐंद्र । फिर नामसंज्ञा होनेपर विशेष्यपदको नपुंसकलिंग होनेसे प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (ऐन्द्रम्) यह उसका नाम है जिसका कि, इंद्र देवता होवै । सोमो देवतास्येति । इस विग्रहमें देवतार्थके विषे ण्यप्रत्यय करनेपर रूप हुआ । सोम य । फिर आदि स्वर ओकारको औकार वृद्धि की और (यस्य लोपः) इसकर अकारका लोप किया तब रूप हुआ । सौम्य । फिर नामसंज्ञा होनेपर विशेष्यपदको नपुंसकलिंग होनेसे प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (सौम्यम्) यह उसका नाम है, जिसका कि सोम देवता होय । देवदत्तार्थम् इदं वस्त्रम् । इस विग्रहमें इदमर्थके विषे अण प्रत्यय करनेपर रूप हुआ । देवदत्त अ । फिर (आदिस्वरस्य ञ्णिति च वृद्धिः) (यस्य लोपः) इनकर रूप हुआ । दैवदत्त । फिर नामसंज्ञा होनेपर विशेष्यको नपुंसक लिंग होनेसे नपुंसक प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (दैवदत्तम्) यह उस वस्त्रका नाम है जो कि देवदत्तसम्बन्धी होवै । इसीप्रकार देवतार्थमें (वायव्यम्) (आग्नेयम्) (पित्र्यम्) इत्यादिक सिद्ध हुए जानने । और इदमर्थमें । नद्या अयम् । इस विग्रहमें (नादेयः) यह सिद्ध हुआ जानना ।

क्वचिद्द्वयोः ।

अ० क्वचित्–द्वयोः[६ २] । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) पूर्वोत्तरपदयोः क्वचिद्वृद्धिर्भवति । आग्निमारुतं कर्म । सुहृदो भावः । सौहार्दम् । अत्र भावेऽण् वक्तव्यः ।

भाषार्थ–कहीं प्रयोगान्तरमें पूर्वपदके आदिस्वर तथा उत्तरपदके आदिस्वर दोनोंको वृद्धि होय ञित् णित् प्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण । अग्निमरुतोरिदं कर्म । इस विग्रहमें इदमर्थके विषे अण्प्रत्यय करनेपर (समासप्रत्यययोः) इसकर षष्ठीद्विवचनका लोप किया (उक्तार्थानामप्रयोगः) इसकर इदम् और कर्मशब्दका लोप किया तब रूप हुआ । अग्नि मरुत् अ । फिर (क्वचिद्द्वयोः) इसकर पूर्वपद अग्निशब्दके आदिस्वर अकार और उत्तरपद मरुत् शब्दके आदिस्वर अकारकी वृद्धि करने पर रूप हुआ । आग्नि मारुत् अ । फिर (स्वरहीनं परेण०) इसकर रूप हुआ । आग्निमारुत । फिर नामसंज्ञा होनेपर विशेष्यपदको नपुंसक लिंग होनेसे नपुंसकप्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (आग्निमारुतम्) यह अग्नि और मरुत्का जो कर्म है उसका नामहै । भावके विषे भी अण् प्रत्यय वक्तव्यहै ।

उदाहरण (सुहृदो भावः) इस विग्रहमें भाव अर्थके विषे अण् प्रत्यय करनेपर रूप हुआ (सुहृद् अ) फिर (क्वचिद् द्वयोः) इसकर आदिपद सुशब्दके आदिस्वर उकारको औकार और उत्तरपद हृद् शब्दके आदिस्वर ऋकारको आर् वृद्धि करनेपर रूप हुआ । सौहार्द्अ । फिर (स्वरहीनं परेण०) इसकर हुआ । सौहार्द फिर नामसंज्ञा होनेपर भावार्थ अण् प्रत्ययान्तको नपुंसक लिंग होनेसे प्रथमा-एकवचनमें सिद्ध हुआ (सौहार्दम्) इसी प्रकार । सुभगस्य भावः । इस विग्रहमें सिद्ध हुआ (सौभाग्यम्) इति ॥

णितो वा ।

णितः—वा । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) उक्ताः प्रत्यया विषयान्तरे णितो वा भवंति । अजोगौर्यस्यासौ अजगुः शिवः, तस्येदं धनुः । आजगवम् । अजगवं वा । कुमुदस्य गंध इव गन्धोऽस्येति । कुमुदगंधिः । तस्यापत्यं स्त्री । कौमुदगन्ध्या । श्वशुरस्यायं ग्रामः । श्वाशुर्यः । विष्णोरिदम् । वैष्णवम् । गव्यम् । कुल्यम् । तव इदम् । त्वदीयम् । मम इदम् मदीयम् । त्वन्मदेकत्वे।

भाषार्थ—कहे हुए अणादिक प्रत्यय अर्थान्तरके विषे णित् होते भी हैं और वाके ग्रहणसे णित् नहीं भी होतेहैं । भाव यहहै कि, यह अणादि प्रत्यय पर हुए संते कहीं प्रयोगान्तरमें नित्य वृद्धि होवेहै और कहीं प्रयोगान्तरमें वृद्धि नहीं भी होतीहै और कहीं प्रयोगान्तरमें विकल्प करके वृद्धि होवेहै । उदाहरण । अजगोरिदं धनुः । इस विग्रहमें इदमर्थके विषे अण् प्रत्यय करनेपर रूप हुआ (अजगु अ) फिर इसमें आदि स्वर अकारको आकार एक जगह वृद्धि की तब रूप हुआ (आजगु अ) फिर (वोऽव्यस्वरे) इसकर उकारके स्थानम अव् करनेपर (स्वरहीनं परेण संयोज्यम्) इसकर रूप हुआ (आजगव) फिर नामसंज्ञा होनेपर विशेष्य-वाचक धनुः शब्दको नपुंसकलिंग होनेसे नपुंसकलिंग प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (आजगवम्) और जहाँ अण् प्रत्यय णित् नहीं है तहाँ रूप सिद्ध हुआ (अजगवम्) यह अजन्मा वृषवाले शिवजीके धनुषका नाम है (कुमुदगन्धेरपत्यं स्त्री) इस विग्रहमें अपत्यअर्थके विषे ण्य प्रत्यय करनेपर रूप हुआ (कुमुदगंधि य) फिर आदिस्वर ककार उत्तरवर्त्ती उकारको औकार वृद्धि किया और (यस्य लोपः) इसकर इकारका लोप किया तब रूप हुआ । कौमुदगन्ध्य । फिर स्त्रीलिंग अपत्य होनेसे (आवतः स्त्रियाम्) इसकर आप् प्रत्यय करनेसे रूप हुआ । कौमुदगन्ध्या । फिर स्त्रीलिंगप्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (कौमुदगंध्या) श्वशुरस्यायम् । इस विग्रहमें इदमर्थके विषे ण्य प्रत्यय करनेपर रूप हुआ । श्वशुर य । फिर (आदिस्वरस्य ञ्णिति च वृद्धिः) (यस्यलोपः) इनकर रूप हुआ । श्वाशुर्य । फिर नामसंज्ञा होनेपर विशेष्य पदको पुँल्लिंग होनेसे पुँल्लिंग प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध

हुआ (श्वाशुर्यः) विष्णोरिदम् । इस विग्रहमें अण् प्रत्यय करनेपर पूर्ववत् रूप हुआ (वैष्णव) नाम संज्ञाहोनेपर नपुंसक प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (वैष्णवम्) गोरिदम् इस विग्रहमें ण्य प्रत्यय करने पर रूप हुआ । गोय । फिर यहाँ ण्य प्रत्ययको णित् नहीं होनेसे वृद्धि नहीं हुई किन्तु (वोऽव्यस्वरे) इसकर ओकारको अव् करनेपर रूप हुआ । गव्य । फिर नामसंज्ञामें नपुंसक प्रथमैकवचनमें सिद्ध हुआ (गव्यम्) कुले भवम् । इस विग्रहमें (कारकात् क्रियायुक्ते) इस अगले सूत्रसे ण्य प्रत्यय करने पर रूप हुआ । कुलय । फिर यहाँ ण्य प्रत्ययको णित् नहीं होनेसे वृद्धि नहीं हुई किन्तु (यस्यलोपः) इसकर रूप हुआ । कुल्य । नामसंज्ञामें नपुंसकप्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (कुल्यम्) । तव इदम् । इस विग्रहमें इदमर्थके विषे णीय प्रत्यय करनेपर रूप हुआ । युष्मद् ईय । फिर (त्वन्मदेकत्वे) इसकर युष्मद्के स्थानमें त्वत् आदेश किया तब रूप हुआ । त्वत् ईय । फिर यहाँ णीय प्रत्ययको णित् नहीं होनेसे वृद्धि नहीं हुई और (क्वचिदपदान्तेपिपदान्तताश्रयणीया) इसकर त्वत् शब्दके आगे पदान्त मानकर (चपा अबे जबाः) इसकर रूप हुआ त्वदीय । फिर नामसंज्ञामें नपुंसक प्रथमैकवचनके विषे सिद्ध हुआ (त्वदीयम्) इसीप्रकार । मम इदम् । इस विग्रहमें सिद्ध हुआ (मदीयम्) एतस्य इदम् । इस विग्रहमें सिद्ध हुआ (एतदीयम्) ॥

चतुरश्चलोपः ।

चंतुरः-चलोपः । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) चतुरशब्दस्य चकारस्यलोपो भवति ण्यणीययोः परतः । तुर्यः । तुरीयः ।

भाषार्थ-चतुर शब्दके चकारका लोप होय ण्य तथा णीय यह प्रत्ययपर हुए संते । उदाहरण । चतुर्णां संख्यापूरणः । इस विग्रहमें इदमर्थान्तर्गत पूरणार्थमें ण्य णीय प्रत्यय करनेपर रूप हुए । चतुरय । चतुरईय । फिर (चतुरश्चलोपः) इसकर चतुर शब्दके चकारका लोप करनेपर रूप हुए । तुर्य । तुरीय । यहाँभी ण्यणीय प्रत्यय णित् नहीं होनेसे वृद्धि नहीं हुई फिर नामसंज्ञा होनेपर विशेष्यपदको पुँल्लिङ्ग होनेसे पुँल्लिङ्ग प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुए (तुर्यः) (तुरीयः) ॥

अन्यस्य दक् ।

अन्यस्य-दक् । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) अन्यशब्दस्य णीयप्रत्यये परे दगागमो भवति । अन्यस्य इदम् । अन्यदीयम् । केचित्तु अन्यत्रापि दगागममिच्छन्ति । अन्यदर्थः । अन्यदुत्सुकः । इत्यादि ।

भाषार्थ-अन्य शब्दको दक् आगम होय णीय प्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण (अन्यस्येदम्) इस विग्रहमें इदमर्थके विषे णीय प्रत्यय करनेपर रूप हुआ ।

अन्यईय । यहाँपरभी णीय प्रत्ययको णित् नहीं होनेसे वृद्धि नहीं हुई किन्तु (अन्यस्यदक्) इसकर दक् आगम किया तो वह कित् होनेसे अन्य शब्दके अन्तमें हुआ । तब रूप हुआ । अन्यदीय । फिर नामसंज्ञा होनेपर नपुंसक प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (अन्यदीयम्) कोई आचार्य अन्य शब्दको दक् आगम णीय प्रत्ययके अन्यत्र समासमेंभी इच्छा करतेहैं (अन्यदर्थः) (अन्यदुत्सुकः) इत्यादि ॥

कारकात् क्रियायुक्ते ।

कारकात्–क्रियायुक्ते । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) कारकादप्येते प्रत्यया भवंति क्रियायुक्ते कर्त्तरि कर्मणि चाभिधेये । कुंकुमेन रक्तं वस्त्रम् । कौंकुमम् । कौसुम्भम् । मथुराया आगतस्तत्र जातो वा । माथुरः । ग्रामे भवो ग्राम्यः । धुरं वहतीति धुर्यः । धौरेयः ।

भावार्थ–कारक (१) अर्थात् कर्त्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान, आधार संज्ञक पदसे यह अण् आदिक प्रत्यय होयँ क्रियायुक्त कर्त्ता वा क्रियायुक्त कर्म अभिधेय हुए संते । भाव यहहै कि, कर्त्तृसंज्ञक पदसे वा कर्मसंज्ञक पदसे वा करणसंज्ञक पदसे वा संप्रदान संज्ञक पदसे वा अपादान संज्ञक पदसे वा आधारसंज्ञक पदसे यह अणादिक प्रत्यय होयँ जो क्रियायुक्त कर्त्ता वा क्रियायुक्त कर्म अभिधेय होवै तो । उदाहरण । कुंकुमेन रक्तं वस्त्रम् । इस विग्रहमें कुंकुमेन यह पद करणकारकहै और रंजनरूप क्रियायुक्त वस्त्र कर्म अभिधेयहै इसकर करणकारकसे क्रियायुक्त कर्म अभिधेयमें अण् प्रत्यय करनेपर (समासप्रत्यययोः) इसकर विभक्तिका लुक् किया । और (उक्तार्थानामप्रयोगः) इसकर क्रियायुक्त कर्म अभिधेयका लोप किया । तब रूप हुआ (कुंकुम अ) फिर आदि स्वरको वृद्धि की और (यस्य लोपः) इसकर अकारका लोप किया तब रूप हुआ (कौंकुम) फिर नामसंज्ञा होनेपर कर्म अभिधेयको नपुंसकलिंग होनेसे नपुंसक प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (कौंकुमम्) इसीप्रकार (कुसुम्भेन रक्तम्) इस विग्रहमें रूप सिद्ध हुआ (कौसुम्भम्) मथुराया आगतः । इस विग्रहमें मथुरायाः । यह अपादानकारकहै और आगमन क्रियायुक्त नर कर्त्ता अभिधेयहै इसकारण अपादानकारकसे क्रियायुक्त कर्त्ता अभिधेयमें अण् प्रत्यय करनेपर रूप हुआ । मथुरा अ । फिर (आदिस्वरस्य ञ्णिति च वृद्धिः) (यस्यलोपः) इसकर रूप हुआ (माथुर) फिर नामसंज्ञामें क्रियायुक्त कर्त्ता अभिधेयको पुँल्लिंग होनेसे नपुंसकप्रथमैकवचनमें सिद्ध हुआ (माथुरः) । ग्रामे भवः । इस विग्रहमें ग्रामे यह पद आधारकारकहै और

(१) कर्त्ता १ कर्म २ च करणं ३ संप्रदानं ४ तथैव च । अपादाना–५ धिकरण–६ मित्याहुः कारकाणि षट् ॥

भवनाक्रियायुक्त कर्त्ता अभिधेय है इसकारण आधार कारकसे क्रियायुक्त अभिधेयमें ण्य प्रत्यय करनेसे रूप हुआ । ग्रामय । फिर (यस्यलोपः) इसकर रूप हुआ (ग्राम्य) फिर नामसंज्ञा होनेपर । क्रियायुक्त कर्त्ता अभिधेयको पुँल्लिग होनेसे प्रथमैकवचन पुँल्लिगमें रूप सिद्ध हुआ (ग्राम्यः) धुरं वहति । इस विग्रहमें (धुरम्) यह कर्म कारक है और वहन क्रियायुक्त कर्त्ता अभिधेय है इसकारण कर्म कारकसे क्रियायुक्त कर्त्ता अभिधेयमें ण्य प्रत्यय और एयण् प्रत्यय करनेपर रूप हुए (धुर्य) । धुर्एय । फिर यहाँ ण्य प्रत्यय णित् न होनेसे आदिस्वरको वृद्धि नहीं हुई तव रूप हुआ । धुर्य और एयण् प्रत्ययको णित् होनेसे आदिस्वर उकारको औकार वृद्धि करनेपर रूप हुआ । धौरेय । फिर नामसंज्ञा होनेपर क्रियायुक्त कर्त्ता अभिधेयको पुँल्लिग होनेसे पुँल्लिगप्रथमैकवचनमें दोनों प्रत्ययके रूप सिद्ध हुए (धुर्यः) (धौरेयः) ॥

केनेयेकाः ।

केनेयेकाः । एकपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) क-ईन-इय-इक—इत्येते प्रत्यया भवंति भवाद्यर्थेषु णित्त्वं चैषां वैकल्पिकम् । कर्णाटे भवः । कार्णाटकः । ग्रामादागतस्तत्र जातो वा । ग्रामीणः । सध्रीचीनः । समीचीनः । तिरश्चीनः ।

भाषार्थ—क—ईन—इय—इक—यह प्रत्यय भवादि अर्थोंके विषे होवै हैं इनको णित् भाव विकल्प करके है अर्थात् यह प्रत्यय पर हुए संते कहीं प्रयोगान्तरके विषे विकल्प करके वृद्धि होय और कहीं प्रयोगान्तरमें नित्यही वृद्धि होय और कहीं प्रयोगान्तरमें सर्वथा भी वृद्धि नहीं होय । उदाहरण । कर्णाटे भवः । इस विग्रहमें भवार्थके विषे क प्रत्यय करनेपर रूप हुआ । कर्णाटकः । फिर एक जगह क प्रत्यय णित् होनेसे वृद्धि हुई और एक जगह णित् न होनेसे वृद्धि नहीं हुई । तब रूप हुए कार्णाटक । कर्णाटक । फिर नामसंज्ञा होनेपर विशेष्यको पुँल्लिङ्ग होनेसे पुँल्लिग प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुए (कार्णाटकः) (कर्णाटकः) । ग्रामादागतस्तत्र जातो वा । इस विग्रहमें आदि शब्दसे आगतार्थ वा उत्पन्नार्थमें ईन प्रत्यय करनेपर (यस्य लोपः) (षुर्नोणोऽनन्ते) इनकर रूप हुआ (ग्रामीण) फिर नामसंज्ञा होनेपर विशेष्यको पुँल्लिग होनेसे पुँल्लिग प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (ग्रामीणः) । सध्रीचिभवः । इस विग्रहमें भवार्थके विषे ईन प्रत्यय करनेपर रूप हुआ (सध्र्यच् ईन) यहाँ ईन प्रत्यय णित् न होनेसे वृद्धि नहीं हुई । किन्तु । (अंचेरलोपो दीर्घश्च) इस कर रूप हुआ । सध्रीच् ईन । फिर (स्वरहीनं परेण संयोज्यम्) इसकर रूप हुआ (सध्रीचीन) नामसंज्ञा होनेपर विशेष्यको पुँल्लिग

होनेसे प्रथमैकवचनपुँल्लिगमें रूप सिद्ध हुआ (सध्रीचीनः) इसीप्रकार (समीचिभवः) इस विग्रहमें ईन प्रत्यय करनेसे रूप सिद्ध हुआ (समीचीनः)। तिरश्चिभवः। इस विग्रहमें भवार्थके विषे ईन प्रत्यय करनेपर रूप हुआ (तिर्यच् ईन) फिर णित् न होनेसे वृद्धि नहीं हुई। किन्तु (तिरश्चादयः) इसकर रूप हुआ (तिरश्च ईन) फिर (स्वरहीनं०) इसकर रूप हुआ (तिरश्चीन) फिर नामसंज्ञामें पुँल्लिंग प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (तिरश्चीनः) ॥

यलोपश्च ।

यलोपः-च । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) तद्धितप्रत्यये परे नाम्नाऽनुपधाभूतस्य यकारस्य लोपो भवति । कन्याया जातः । कानीनः । पुष्येण युक्ता पौर्णमासी पौषी । पौष्यां भवः पौषीणः ।

भाषार्थ-तद्धित प्रत्यय पर हुए संते नामके उपधाभूत यकारका लोप होय । (१) उदाहरण (कन्याया जातः) इस विग्रहमें जातार्थके विषे ईन प्रत्यय करने पर रूप हुआ (कन्या ईन) यहाँ ईन प्रत्यय णित् होनेसे वृद्धि की फिर (यस्य लोपः) इसकर आकारका लोप किया । फिर (यलोपश्च) इस कर यकारकाभी लोप किया । तव रूप हुआ (कान् ईन) फिर (स्वरहीनं०) इसकर रूप हुआ (कानीन) फिर नामसंज्ञा होनेपर पुँल्लिंग प्रथमैकवचनमें सिद्ध हुआ (कानीनः) । पुष्येण युक्ता पौर्णमासी । इस विग्रहमें (कारकात् क्रियायुक्ते) इसकर अण् प्रत्यय करनेपर रूप हुआ । पुष्यअ । यहाँ अण्को णित् होनेसे वृद्धि हुई और (यस्य लोपः) इसकर अकारका लोप हुआ और (यलोपश्च) इसकर यकारकालोप हुआ । तव रूप हुआ पौष् अ । फिर (स्वरहीनं०) इसकर रूप हुआ (पौष) फिर स्त्रीलिङ्ग होनेसे (ऋणईप्) इसकर ईप् प्रत्यय करनेसे प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (पौषी) पौष्यां भवः इस विग्रहमें भवार्थके विषे ईन प्रत्यय करनेपर (यस्य लोपः) (पुनर्णोणोऽनन्ते) इनकर रूप हुआ । पौषीण । फिर नामसंज्ञा होनेपर पुँल्लिंगप्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (पौषीणः) ॥

इयोवा । क्षत्राद्भवः । वा । क्षत्रस्यापत्यम् क्षत्रियः । क्षात्रः । शुक्रो देवतास्येति । शुक्रियम् । इंद्राद्भवम् । इन्द्रियम् । अक्षैर्दीव्यतीति। आक्षिकः।

---

(१) तद्धित प्रत्ययके अतिरिक्त अन्यत्रभी नामके उपधाभूत यकारका लोप होता है । तदुक्तम् । मत्स्यस्य यस्य स्त्रीकारे ईपि वाऽगस्त्यसूर्ययोः । तिष्यपुष्ययोर्नक्षत्रे आणि यस्य विभञ्जना ॥ १ ॥ भाषार्थ-स्त्रीलिंगमें ईप् प्रत्यय पर हुए संते मत्स्य तथा अगस्त्य और सूर्यके यकारका लोप होय और नक्षत्रार्थमें वर्त्तमान हुए तिष्य तथा पुष्यके यकारका लोप अण्प्रत्यय पर हुए संते होय । इति ॥ मत्सी । अगस्त्यस्यायम् आगस्तीयः । अगस्त्यस्येयंदिक् आगस्ती । सूर्यस्यायंसौर्यः । तत्रभवः सौरीयः। सौर्यस्येयंदिक्सौरी ॥

शब्दमधीते । वेत्ति वा । शाब्दिकः । वेदे भवा । वैदिकी स्तुतिः, ऋग्वा । तर्कं करोतीति । तार्किकः ।

भाषार्थ–इय प्रत्यय भवाद्यर्थोंमें विकल्प करके होता है । उदाहरण । क्षत्राद्भवः वा क्षत्रियस्यापत्यम् । इस विग्रहमें एक जगह इय प्रत्यय किया तब रूप हुआ । क्षत्र इय । यहाँ इय प्रत्ययको णित् न होनेसे वृद्धि नहीं हुई किन्तु (यस्य लोपः) इसकर अकारका लोप करनेपर रूप हुआ । क्षत्रिय । नाम संज्ञा होनेपर पुँल्लिग प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (क्षत्रियः) और जहाँ इय प्रत्यय नहीं हुआ तहाँ अण् प्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ (क्षात्रः) । शुक्रो देवताऽस्य । इसविग्रहमें देवतार्थके विषे इय प्रत्यय करनेपर रूप हुआ । शुक्र इय । यहाँ णित् प्रत्यय न होनेसे वृद्धि नहीं हुई किन्तु (यस्य लोपः) इसकर रूप हुआ । शुक्रिय । फिर नामसंज्ञा होनेपर नपुंसक प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (शुक्रियम्) इन्द्राद्भवम् । इस विग्रहमें इय प्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ (इन्द्रियम्) अक्षैर्दीव्यति । इस विग्रहमें (कारकात् क्रियायुक्ते) इसकर क्रीडनार्थमें इक प्रत्यय करनेपर रूप हुआ। अक्ष इक । यहाँ इक प्रत्ययको णित् होनेसे वृद्धि हुई और (यस्य लोपः) इसकर अकारका लोप हुआ तब रूप हुआ । आक्षिक । फिर नामसंज्ञामें पुँल्लिङ्ग प्रथमैक-वचनमें रूप सिद्ध हुआ (आक्षिकः) । शब्दमधीते वेत्ति । इस विग्रहमें भी (कारकात्०) इसकर अध्ययनार्थ वा वेदनार्थमें इक प्रत्यय करनेसे रूप सिद्ध हुआ (शाब्दिकः) वेदे भवा । इस विग्रहमें भवार्थके विषे इक प्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ (वैदिकी) यह स्त्रीलिंग है वेदकी स्तुति वा ऋचाका नाम है । तर्कं करोति । इस विग्रहमें पूर्ववत् इक प्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ (तार्किकः)॥

त्यतनौ ।

त्यतनौ । एकपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) किमादेरद्यादेर्भवाद्यर्थे च त्यतनौ प्रत्ययौ भवतः । कुत्रत्यः । कुतस्त्यः । ततस्त्यः । अद्यतनः । ह्यस्तनः । श्वस्तनः । सदातनः । सनातनः । चिरंतनम् । सायंतनम् । पुरातनम् । प्राक्तनम् । दक्षिणापश्चात्पुरसस्त्यण्वक्तव्यः । दाक्षिणात्यः । पाश्चात्यः । पौरस्त्यः ।

भाषार्थ–किमादिक और अद्यादिकसे भवादि अर्थमें त्य और तन प्रत्यय होय । भाव यह है कि, किमादि अव्ययसे भवादि अर्थमें त्य प्रत्यय होय और अद्यादि अव्ययसे भवादि अर्थमें तन प्रत्यय होय । उदाहरण । कुत्रभवः । इस विग्रहमें किम् शब्दके कुत्ररूप अव्ययसे भवार्थमें त्य प्रत्यय करनेपर पुँल्लिङ्ग प्रथमैकवचनमें

रूप सिद्ध हुआ (कुतस्त्यः) इसी प्रकार । कुतोभवः । इस विग्रहमें सिद्ध हुआ (कुतस्त्यः) ततो भवः इस विग्रहमें तत् शब्दके ततः रूप अव्ययसे भवार्थमें त्य प्रत्यय करनेपर पुँल्लिग प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (ततस्त्यः) इसीप्रकार (अत्र भवः) इस विग्रहमें सिद्ध हुआ (अत्रत्यः) इहभवः । इस विग्रहमें सिद्ध हुआ (इहत्यः) इत्यादि (अद्यभवः) इस विग्रहमें अद्य अव्ययसे भवार्थमें तन प्रत्यय करने पर पुँल्लिग प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (अद्यतनः) इसीप्रकार (ह्योभवः) इस विग्रहमें सिद्ध हुआ (ह्यस्तनः) (श्वोभवः) इस विग्रहमें सिद्ध हुआ (श्वस्तनः) । सदाभवः । इस विग्रहमें सिद्ध हुआ (सदातनः) सना निरंतरं भवति । इस विग्रहमें सिद्ध हुआ (सनातनः) इसी प्रकार (चिरंतनम्) (सायंतनम्) (पुरातनम्) (प्राक्तनम्) इत्यादि सिद्ध हुए जानने । दक्षिणा और पश्चात् और पुरस् इनसे भवाद्यर्थमें त्यण् प्रत्यय वक्तव्य है (दक्षिणस्यां भवः) इस विग्रहमें दक्षिणा शब्दसे भवार्थमें त्यण् प्रत्यय करनेसे (आदिस्वरस्यञ्णितिचवृद्धिः) इसकर रूप हुआ दाक्षिणात्य । फिर नामसंज्ञा होनेपर पुँल्लिग प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (दाक्षिणात्यः) । पश्चाद्भवः । इस विग्रहमें रूप सिद्ध हुआ (पाश्चात्यः) । पुरोभवः । इस विग्रहमें रूप सिद्ध हुआ (पौरस्त्यः) ।

स्वार्थेपि ।

स्वार्थे-अपि । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) उक्ताः प्रत्ययाः स्वार्थेपि भवंति । देवदत्तएव । दैवदत्तकः । चत्वार एव वर्णाश्चातुर्वर्ण्यम् । चोर एव चौरः । त्रयो लोका एव । त्रैलोक्यम् ।

भाषार्थ-पूर्व कहेहुए अणादिक इक पर्यन्त प्रत्यय स्वार्थमें होवैहैं । उदाहरण (देवदत्तएव) इस विग्रहमें स्वार्थके विषे क प्रत्यय करने पर रूप हुआ । (देवदत्तक) यहाँ क प्रत्ययको णित् होनेसे वृद्धि हुई तबरूप हुआ (दैवदत्तक) फिर नामसंज्ञा होनेपर पुँल्लिग प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (दैवदत्तकः) चत्वार एव वर्णाः । इस विग्रहमें स्वार्थमें ण्य प्रत्यय करनेपर रूप हुआ (चतुर्वर्ण य) फिर आदिस्वर चकार उत्तरवर्त्ती अकारको आकार वृद्धि किया और (यस्य लोपः) इसकर अकारका लोप किया तब रूप हुआ । चातुर्वर्ण्य । फिर नामसंज्ञा होनेपर समाहारार्थ होनेसे नपुंसकलिंग प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (चातुर्वर्ण्यम्) चोर एव । इस विग्रहमें स्वार्थके विषे अण् प्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ (चौरः) त्रयोलोका एव । इस विग्रहमें स्वार्थके विषे अण् प्रत्यय करनेपर रूप समाहारार्थ होनेसे सिद्ध हुआ (त्रैलोक्यम्) ॥

भागरूपनामभ्यो धेयः स्वार्थेपि । भागधेयम् । रूपधेयम् । नामधेयम् ।

भाषार्थ–भाग तथा रूप तथा नामन् इन तीनों शब्दोंसे स्वार्थके विषे धेय प्रत्यय होय । उदाहरण । भागधेयम् । रूपधेयम् । नामधेयम् ॥

अणीनयोर्युष्मदस्मदोस्तवकादिः । तावकम् । मामकम् । तावकीनः । मामकीनः । यौष्माकः । आस्माकः । यौष्माकीणः । आस्माकीनः ।

भाषार्थ–युष्मद् अस्मद् इन शब्दोंको अण् प्रत्यय तथा ईन प्रत्यय पर हुए संते तवकादि आदेश होयँ आदिशब्दसे द्विवचन बहुवचन विषयमें युष्मद् अस्मद्को क्रमसे युष्माक तथा अस्माक आदेश होयँ । भाव यह है कि एकवचनके विषे वर्त्तमान हुए युष्मद् शब्दको भवाद्यर्थमें अण् तथा ईन प्रत्यय पर हुए संते तवक आदेश होय । और द्विवचन बहुवचनके विषे वर्त्तमान हुए युष्मद् शब्दको भवाद्यर्थमें अण् तथा ईन प्रत्यय पर हुए संते युष्माक आदेश होय । और एकवचनके विषे वर्त्तमान हुए अस्मद् शब्दको भवाद्यर्थमें अण् तथा ईन प्रत्यय पर हुए संते ममक आदेश होय । और द्विवचन बहुवचनके विषे वर्त्तमान हुए अस्मद् शब्दको भवाद्यर्थमें अण् तथा इन प्रत्यय पर हुए संते अस्माक आदेश होय । उदाहरण (तव इदम् । तव अयम्) इन विग्रहोंमें क्रमसे अण् तथा ईन प्रत्यय करनेपर रूप हुए । युष्मद्‌अ । युष्मद्‌ईन । यहाँ युष्मद् शब्द एकवचनके विषे वर्त्तमानहै इसकारण युष्मद्को तवक आदेश करनेपर रूप हुए । तवक अ । तवक ईन । फिर अण् और ईन प्रत्ययको णित् होनेसे आदि स्वरको वृद्धि करनेपर (यस्यलोपः) इसकर रूप हुए । तावक । तावकीन । फिर नामसंज्ञा होनेपर नपुंसक तथा पुँल्लिंगके क्रमसे प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुए (तावकम्)(तावकीनः) इसीप्रकार । ममइदम् । मम अयम् । इन विग्रहोंमें क्रमसे अण् ईन प्रत्यय करनेपर ममक आदेश करनेसे रूप सिद्ध हुए (मामकम्) (मामकीनः)। युवयोर्युष्माकं वा अयम्। इस विग्रहमें अण् तथा ईन प्रत्यय करनेपर रूप हुए (युष्मद्‌अ । युष्मद्‌ईन) यहाँ युष्मद् शब्द द्विवचन बहुवचनके विषे वर्त्तमानहै इसकाण । युष्मद्को युष्माक आदेश करनेपर (आदिस्वरस्यञ्णितिचवृद्धिः) (यस्य लोपः) इनकर रूपहुए (यौष्माक) यौष्माकीण) फिर नामसंज्ञा होनेपर पुँल्लिंग प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुए (यौष्माकः) (यौष्माकीणः) इसीप्रकार। आवयोः अस्माकं वा अयम् । इस विग्रहमें अण् ईन प्रत्यय करनेपर अस्माक आदेश करनेसे रूप सिद्ध हुए (आस्माकः) (आस्माकीनः) ॥

वत्तुल्ये ।

वत्[1]–तुल्ये[1] । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) सादृश्येर्थे वत्प्रत्ययो भवति । चंद्रवन्मुखम् । घटवत् । पटवत् ।

भाषार्थ-सादृश्य अर्थके विषे वत् प्रत्यय होताहै । भाव यहहै कि उपमावाचक शब्दसे सादृश्य अर्थमें वत् प्रत्यय होवै है । उदाहरण (चंद्रेण तुल्यम्) इस विग्रहमें उपमावाचक चंद्रेण इसपदसे सादृश्यार्थमें वत् प्रत्यय करनेसे रूप हुआ (चंद्रवत्) नामसंज्ञा होनेपर (क्त्वाद्यन्तंच) इसकर वत् प्रत्ययान्तको अव्यय होनेसे यथास्थित सिद्धहुआ । इसी प्रकार (घटेन तुल्यम्) इस विग्रहमे सिद्ध हुआ (घटवत्) पटेन तुल्यम् । इस विग्रहमे सिद्ध हुआ (पटवत्) ॥

भावे तत्वयणः ।

भावे-तत्वयणः । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) शब्दस्य प्रवृत्तिनिमित्तं भावस्तस्मिन्भावे त-त्व-यण्-इत्येते प्रत्यया भवंति । तप्रत्ययान्तं स्त्रीलिंगम् । त्वयण् इत्येतदन्तं नपुंसकलिंगम् । ब्राह्मणस्य भावः ब्राह्मणता । तान्तस्य नित्यं स्त्रीलिंगत्वादाप् ।

भाषार्थ-जो कि, शब्दकी प्रवृत्तिका निमित्त नाम कारणहै वह भाव होताहै अर्थात् जिससे कि, ब्राह्मणादि शब्दकी प्रवृत्ति होवै है वह भाव है उस भावके विषे त-त्व-यण्-यह प्रत्यय होवै हैं । त-प्रत्ययान्त स्त्रीलिङ्ग होता है और त्व यण् प्रत्ययान्त नपुंसकलिंग होता है । उदाहरण (ब्राह्मणस्य भावः) इस विग्रहमें ब्राह्मण इस शब्दका जो कि, याजनादिक्रियानिष्ठत्व लक्षण है उस अर्थमें त प्रत्यय करनेपर रूप हुआ । ब्राह्मणत । फिर त-प्रत्ययान्तको नित्यस्त्रीलिङ्ग होनेसे (आबतः स्त्रियाम्) इसकर आप् प्रत्यय करनेसे प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (ब्राह्मणता)॥

समाहारे ता च । चशब्दात्त्रेर्गुणः । त्रेता । जनता । ब्राह्मणत्वम् । ब्राह्मण्यम् । सौमनस्यम् । सौभाग्यम् । वैदुष्यम् ।

भाषार्थ-समाहार अर्थके विषेभी ता प्रत्यय होवै है और च शब्दसे त्रिशब्दको गुण होता है । उदाहरण (त्रयाणांसमाहारः) इस विग्रहमें समाहार अर्थके विषे ता प्रत्यय करनेपर त्रिशब्दको गुण करनेसे रूप हुआ (त्रेता) नामसंज्ञामें सिका लोप करनेपर ऐसाही सिद्ध रहा (जनानांसमूहः) इस विग्रहमें समाहार अर्थके विषे ता प्रत्यय करनेपर प्रथमैकवचनमें सिद्ध हुआ (जनता)) ब्राह्मणस्यभावः । इस विग्रहमें भाव अर्थके विषे त्व प्रत्यय करनेपर रूप हुआ । ब्राह्मणत्व । और यण् प्रत्यय करनेपर (यस्यलोपः) इसकर रूप हुआ (ब्राह्मण्य) फिर नामसंज्ञा होनेपर त्व यण् प्रत्ययान्तको नपुंसकलिंग होनेसे नपुंसकप्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुए (ब्राह्मणत्वम्) (ब्राह्मण्यम्) इसीप्रकार सुमनसो भावः । इस विग्रहमें यण् प्रत्यय करनेपर (आदिस्वरस्यञ्णिति

च वृद्धिः) इसकर रूप हुआ (सौमनस्य) फिर नामसंज्ञामें नपुंसक प्रथमैकवचनमें सिद्ध हुआ (सौमनस्यम्) । सुभगस्य भावः । इस विग्रहमें यण् प्रत्यय करनेपर (आदिस्वरस्यञ्णितिचवृद्धिः) (यस्यलोपः) इनकर रूप हुआ । सौभाग्य । फिर नामसंज्ञामें नपुंसकप्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (सौभाग्यम्) । विदुषो भावः । इस विग्रहमें यण् प्रत्यय करनेपर रूप हुआ । विद्वस् य । फिर आदिस्वरको वृद्धि करनेपर रूप हुआ । वैद्वस् य । फिर (वसोर्वउः) (किलातषः सः कृतस्य) इनकर रूप हुआ । वैदुष्य । फिर नामसंज्ञामें नपुंसकलिंगप्रथमैकवचनके विषे सिद्ध हुआ (वैदुष्यम्) (१) ॥

कर्मण्यपि यण् वक्तव्यः । ब्राह्मणस्य कर्म । ब्राह्मण्यम् । राज्ञ इदं कर्म । राजन्यम् । राज्यम् ॥

भाषार्थ–कर्मके विषे भी यण् प्रत्यय वक्तव्य है । ब्राह्मणस्य कर्म इस विग्रहमें कर्मके विषे यण् प्रत्यय करनेपर (यस्यलोपः) इसकर रूप हुआ ब्राह्मण्य फिर नाम संज्ञा होनेपर समूह भावकर्मविहिताकारान्तप्रत्ययान्तको नपुंसकलिंग होनेसे नपुंसक प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (ब्राह्मण्यम्) । राज्ञः कर्म । इस विग्रहमें यण् प्रत्ययान्त करनेपर एक जगह (नोवा) इसकर टिका लोप किया और एक जगह टिका लोप नहीं किया तब रूप हुए । राज्य–राजन्य । फिर नामसंज्ञा होनेपर प्रथमैकवचन नपुंसकलिंगमें सिद्ध हुए । राज्यम् । राजन्यम् ॥

लोहितादेर्डिमन् ।

लोहितादेः–डिमन् । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) लोहितादेर्भावे इमन् प्रत्ययो भवति स च डित् । लोहितिमा । अणिमा ।

भाषार्थ–लोहितादिक शब्दोंसे भावके विषे इमन् प्रत्यय होवै है वह इमन् प्रत्यय अनेक स्वर शब्दसे परे डित्संज्ञक होताहै । उदाहरण । लोहितस्यभावः । इस विग्रहमें भावके विषे इमन् प्रत्यय करनेपर रूप हुआ । लोहित इमन् । फिर इमन् प्रत्ययको डित् होनेसे (डितिटेः) इसकर रूप हुआ । लोहितिमन् । फिर नामसंज्ञा होनेपर इमन्प्रत्ययान्तको पुँल्लिग होनेसे प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (लोहितिमा) इसीप्रकार । अणोर्भावः । इसविग्रहमें रूप सिद्ध हुआ (अणिमा) ॥

---

(१) सर्वत्र तद्धितमें विकल्पानुवृत्ति होनेसे भावमें अणादिक प्रत्ययभी होतेहैं । उदाहरण । शिशोर्भावः । इस विग्रहमें भाव अर्थके विषे अण् प्रत्यय करनेपर (आदिस्वरस्यञ्णितिचवृद्धिः) (वोऽव्यस्वरे) इनकर रूप हुआ । शैशव । फिर नामसंज्ञा होनेपर नपुंसक प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (शैशवम्) । वृद्धस्यभावः । इस विग्रहमें णित् संज्ञक कप्रत्यय करने पर रूप हुआ । वार्द्धक फिर नामसंज्ञा होनेपर समूह भाव कर्म विहिताकारान्तप्रत्ययको नपुंसक लिंग होनेसे प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (वार्द्धकम्) इत्यलम् ॥

ऋ र इमनि ।

ऋ-रः-इमनि । त्रिपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) ऋकारस्य रेफो भवति इमनि परे । प्रथिमा । बहोर्भावः । इति विग्रहे ।

भाषार्थ-ऋकारको र आदेश होय इमन् प्रत्यय पर हुए संते । भाव यहहै कि, पृथु, मृदु, दृढ, कृश इत्यादि शब्दोंके हसादि लघु ऋकारके स्थानमें र आदेश होय इमन् प्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण । पृथोर्भावः । इस विग्रहमें (लोहितादेर्डिमन्) इस सूत्रकर इमन् प्रत्यय करनेपर रूप हुआ । पृथु इमन् । फिर इमन् प्रत्ययको डित् होनेसे (डिति टेः) इसकर टि संज्ञक उकारका लोप किया तब रूप हुआ । पृथ् इमन् । फिर (ऋरइमनि) इसकर ऋकारके स्थानमें र करनेसे रूप हुआ । प्रथिमन् । फिर नामसंज्ञा होनेपर पुँल्लिंग प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (प्रथिमा) इसीप्रकार । दृढस्य भावः । इस विग्रहमें रूप सिद्ध हुआ (द्रढिमा) कृशस्य भावः (क्रशिमा) बहोर्भावः । इस विग्रहमें इमन् प्रत्यय करनेपर रूप हुआ (बहु इमन्) फिर- ॥

बहोर्लोपोभूचबहोः ।

बहोः-लोपः-भू-च-बहोः । पंचपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) बहोरुत्तरेषामिमनादीनामिकारस्य(१)लोपो भवति।बहोःस्थाने भूचादेशः ।भूमा ।

भाषार्थ-बहु शब्दसे परे इमनादिक प्रत्ययोंके इकारकालोप होय और बहुशब्दको भू आदेश होय जैसे । बहु इमन् । इसमें बहु शब्दसे परे इमन् प्रत्ययहै इसकारण इमन् प्रत्ययके इकारका लोप किया और बहुशब्दके स्थानमें भू आदेश किया तब रूप हुआ । भूमन् । फिर नामसंज्ञा होनेपर पुँल्लिंग प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (भूमा) ॥

अस्त्यर्थे मतुः ।

अस्त्यर्थे-मतुः । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) नाम्नो मतुप्रत्ययो भवति अस्यास्मिन्वास्तीति एतस्मिन्नर्थे । उकारोनुमीब्विधानार्थः । गोमान्-गोमती । श्रीमान्-श्रीमती ।

भाषार्थ-नामसंज्ञक शब्दसे मतु प्रत्यय होय । अस्य अस्ति वा अस्मिन् अस्ति । इस अर्थके विषे । प्रत्ययमें उकार नुम् और ईप् प्रत्ययके विधानार्थ है । उदाहरण ।

---

(१) यहाँ कोई आचार्य (इवर्णस्य) ऐसा पद कहते हैं ईयस् प्रत्ययके अभिप्रायसे । अन्यथा ईय प्रत्ययके ईकारका लोप करनेमें ग्रहण नहीं होवेगा ॥

गौरस्यास्ति । इस विग्रहमें अस्यास्ति अर्थके विषे मतु प्रत्यय करनेपर रूप हुआ । गोमत् । फिर नामसंज्ञा होनेपर विशेष्यपदको पुँल्लिग होनेसे पुँल्लिगके विषे (त्रितोनुम्) इसकर नुम् आगम करनेपर प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (गोमान्) और स्त्रीलिङ्गके विषे (ष्ट्रित्रितः) इसकर ईप् प्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ (गोमती)। श्रीरस्यास्ति। इस विग्रहमें अस्यास्ति अर्थके विषे मतु प्रत्यय करनेपर पुँल्लिग प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (श्रीमान्) और स्त्रीलिंग प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (श्रीमती) और नपुंसकलिंग प्रथमैकवचनमें सिद्ध हुआ (श्रीमत्) ॥

अइकौ मत्वर्थे ।

अइकौ-मत्वर्थे । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) मत्वर्थे अ-इकौ प्रत्ययौ भवतः । वैजयन्ती पताका अस्मिन्नस्ति । वैजयन्तः प्रासादः । माया अस्यास्ति । मायिकः ।

भाषार्थ-मत्वर्थके विषे अ तथा इक यह दोनों प्रत्यय होयँ। भाव यह है कि, अस्यास्ति वा अस्मिन्नस्ति इस अर्थके विषे अ और इक प्रत्यय होयँ । उदाहरण । वैजयन्ती अस्मिन्नस्ति । इस विग्रहमें अस्मिन्नस्ति इस अर्थके विषे अ प्रत्यय करनेपर रूपहुआ। वैजयन्ती अ। फिर (यस्यलोपः) इसकर ईका लोप करनेपर रूप हुआ । वैजयन्त । फिर नामसंज्ञा होनेपर विशेष्यको पुँल्लिग होनेसे प्रथमैक-वचनमें रूप सिद्ध हुआ (वैजयन्तः)) माया अस्यास्ति । इस विग्रहमें इक प्रत्यय करनेपर (यस्यलोपः) इसकर रूप हुआ । मायिक । फिर नामसंज्ञा होनेपर विशेष्यको पुँल्लिग होनेसे पुँल्लिग प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (मायिकः) कहीं अ प्रत्यय णित्‌भी होता है जैसे प्रज्ञा अस्यास्ति । इस विग्रहमें अ प्रत्यय करनेपर रूप हुआ (प्रज्ञाअ) यहाँ अ प्रत्ययको णित् होनेसे आदि स्वरको वृद्धि हुई (यस्यलोपः) इसकर आकारका लोप करनेसे रूप हुआ (प्राज्ञ) फिर नाम संज्ञामें विशेष्यको पुँल्लिग होनेसे प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (प्राज्ञः) ॥

मान्तोपधाद्वत्विनौ ।

मान्तोपधात्-वत्विनौ । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) मकारान्तान्मकारोपधादकारान्तादकारोपधाच्च वत्विनौप्रत्ययौभवतोऽस्त्यर्थे । धनवान् । धनी । छत्री । दण्डी । दृषद्वती भूमिः । किंवान् । शमी ।

भाषार्थ-मकार है अन्तमें जिसके अथवा मकार है उपधाभूत जिसके ऐसे शब्दसे और अकार है अन्तमें जिसके अथवा अकार है उपधाभूत जिसका ऐसे

शब्दसे वतु और इन् प्रत्यय होयँ अस्त्यर्थमें । भाव यह है कि, जिस शब्दके अन्तमें मकार होवै अथवा जिस शब्दका उपधाभूत मकार होवै अथवा जिस शब्दके अन्तमें अकार होय अथवा जिस शब्दका उपधाभूत अकार होवै उस शब्दसे वतु तथा इन् यह दोनों प्रत्यय होवैं हैं (अस्यास्ति वा अस्मिन्नस्ति) इस अर्थके विषे उदाहरण (धनमस्यास्ति) इस विग्रहमें अस्यास्ति इस अर्थके विषे वतु तथा इन् । प्रत्यय किये क्यों कि, धन शब्द अकारान्त है तब रूप हुए (धनवत्) (धन इन्) फिर जहाँ कि, वतु प्रत्यय किया है तहाँ नाम संज्ञा होनेपर (त्रितो-नुम्) (अत्वसोः सौ) इनकर पुँल्लिग प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (धनवान्) और जहाँ इन् प्रत्यय किया है तहाँ (यस्य लोपः) इसकर अकारका लोप किया तब रूप हुआ (धनिन्) फिर नामसंज्ञा होनेपर पुँल्लिङ्ग प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (धनी) इसीप्रकार । छत्रमस्यास्ति । दण्डमस्यास्ति । इन विग्र-होंमें अकारान्त होनेसे इन् प्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुए (छत्री) (दण्डी) । दृषदः अस्यां सन्ति । इस विग्रहमें वतु प्रत्यय किया क्यों कि, दृषद् शब्दका अकार उपधाभूतहै तब रूप हुआ । दृषद्वत् । फिर विशेष्यको स्त्रीलिंग होनेसे (शृत्रितः) इसकर ईप्प्रत्यय करनेपर प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (दृषद्वती) । किमस्यास्ति । इस विग्रहमें मकारान्त होनेसे वतु प्रत्यय करनेपर पुँल्लिङ्ग प्रथमै-कवचनमें रूप सिद्ध हुआ (किंवान्) (शमोऽस्यास्ति) इस विग्रहमें इन् प्रत्यय किया क्योंकि शम शब्दका मकार उपधाभूतहै तब (यस्य लोपः) इसकर रूप हुआ। शमिन् । फिर नामसंज्ञा होनेपर पुँल्लिग प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (शमी)॥(१)

तड़िदादिभ्यश्च वतुप्रत्ययो भवति । तडित्वान् । मरुत्वान् । सरस्वान् ।

भाषार्थ–तडित आदिक शब्दोंसे अस्त्यर्थके विषे वतु प्रत्यय होता है । उदाहरण । तडित् अस्यास्ति । इस विग्रहमें अस्त्यर्थके विषे वतु प्रत्यय करनेपर रूप हुआ । तडित्वत् । यहाँ विभक्तिके लोप होनेपर पदान्त होनेसे भी (चपा अबे जबाः) इस कर तकारके स्थानमें सूत्रमें चकारके ग्रहणसे दकार नहीं हुआ है नामसंज्ञा होनेपर पुँल्लिग प्रथमैकवचनमें सिद्ध हुआ (तडित्वान्) इसी प्रकार (मरुत् अस्यास्ति)

---

(१) क्वचिद्वतौ (वृत्तिः) क्वचिद्वतुप्रत्यये मतुप्रत्यये च परे दीर्घत्वमपि भवति । अमरावती । पद्मा-वती । कुसुमावती । भोगावती । पुष्पावती । हनूमान् । भार्षार्थ–कहीं प्रयोगान्तरमें वतु प्रत्यय और मतु प्रत्यय पर हुये संते दीर्घ होता है । उदाहरण । अमराअस्यांसन्ति । इस विग्रहमें अस्त्यर्थके विषे वतु प्रत्यय करनेपर रूप हुआ । अमरवत् । फिर यहाँ वतु प्रत्यय परमें होनेसे पूर्वको दीर्घ करनेपर नाम संज्ञामें स्त्रीलिंगके विषे ईप् प्रत्ययसे प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (अमरावती) इसी प्रकार अन्य प्रयोग जानने । हनुरस्यास्ति । इस विग्रहमें अस्त्यर्थके विषे मतु प्रत्यय करनेपर पूर्व हनु शब्दकेउकारको दीर्घ करनेसे प्रथमैकवचन पुँल्लिङ्गमें सिद्ध हुआ हनूमान् ॥

इस विग्रहमें वतु प्रत्यय करने पर रूप सिद्ध हुआ (मरुत्वान्) इसी प्रकार सिद्ध हुआ (सरस्वान्) ॥ (१)

एतत्किंयत्तद्भ्यःपरिमाणे वतुः ।

भाषार्थ-एतत्-किम्-यद्-तद् इन शब्दोंसे परिमाण अर्थके विषे वतु प्रत्यय होय । उकार नुम् और ईप्प्रत्ययके विधानार्थ है । उदाहरण । यत्परिमाणमस्य । तत्परिमाणमस्य । इन विग्रहोंमें यद् तद् शब्दोंसे परिमाण अर्थमें वतु प्रत्यय करनेपर रूप स्थित हुए । यद्वत् । तद्वत् । फिर-॥

यत्तदोरा ।

यत्तदोः-आ । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) यत्तच्छब्दयोष्टेरा भवति परिमाणेऽर्थेवतौपरे । यावान् । तावान् ।

भाषार्थ-यद् और तद् शब्दकी टिको आकार होय परिमाण अर्थके विषे वतु प्रत्यय पर हुए संते जैसे । यद्वत् । तद्वत् । इनमें यद् तथा तद् शब्दसे वतु प्रत्यय परे विद्यमान है इसकारण टिको आकार करनेपर रूप हुए (यावत्-तावत्) फिर नाम संज्ञा होनेपर विशेष्यको पुँल्लिंग होनेसे प्रथमैकवचनमें (ग्रितोनुम्) (अत्वसोः सौ) इनकर रूप सिद्ध हुए (यावान्) (तावान्) ॥

किमः किर्यश्च ।

किमः-किः-यः-च । चतुष्पदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) वतु-प्रत्यये परे किमूशब्दस्य कृत्स्नस्य किरादेशो भवति प्रत्ययस्य वकारस्य यकारो भवति ।

भाषार्थ-वतु प्रत्यय पर हुए संते समस्त किम् शब्दको कि आदेश होय और प्रत्ययके वकारको यकार होय । उदाहरण । किम् परिमाणमस्य । इस विग्रहमें परिमाण अर्थके विषे वतु प्रत्यय करनेपर किम् शब्दको किः आदेश किया और वतु प्रत्ययके वकारको यकार आदेश किया तब रूप हुआ । कियत् । फिर नामसंज्ञा होनेपर विशेष्यको पुँल्लिङ्ग होनेसे पुँल्लिङ्गप्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (कियान्) ॥

---

(१) सिध्मादेश्च लप्रत्ययः । भाषार्थ-सिध्म आदिकसे अस्त्यर्थके विषे ल प्रत्यय होय । उदाहरण । सिध्ममस्यास्ति । इस विग्रहमें अस्त्यर्थके विषे ल प्रत्यय करनेपर नामसंज्ञामें पुंल्लिंग प्रथमैकवचनके विषे सिद्ध हुआ (सिध्मलः) इसी प्रकार (चूडालः) (मांसलः) (अंसलः) इत्यादि सिद्ध हुए जानने इति (ऐश्वर्ये स्वशब्दादामिन्) अर्थ-ऐश्वर्य अर्थमें स्वशब्दसे आमिन् प्रत्यय होताहै । स्वम् ऐश्वर्यम् अस्यास्तीति-स्वामी ॥

आ इश्चैतदो वा ।

आ-इश्-च-एतदः-वा । पंचपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) वतुप्रत्यये परे एतद्शब्दस्य आ इश् इत्येतावादेशौ भवतः । आ इति गुरुस्तथापि चकारग्रहणादन्तस्यैव टेरादेशो न कृत्स्नस्य । वाग्रहणाद्यत्र इशादेशस्तत्र वकारस्य यकारः अन्यत्र न । एतावान् । इयान् ।

भाषार्थ–वतु प्रत्यय पर हुए संते एतद् शब्दको आ और इश् यह आदेश होयँ अर्थात् एक जगह एतद् शब्दको आ आदेश होय और एक जगह इश् आदेश होय । आ यह गुरु आदेश है तथापि सूत्रमें चकारके ग्रहणसे अन्त टिको ही आदेश होय न कि, समस्तको । और सूत्रमें वाके ग्रहणसे जहाँ इश् आदेश होय तहाँ ही प्रत्यके वकारको यकार आदेश होय । उदाहरण । एतत्परिमाणमस्य) इस विग्रहमें परिमाण अर्थके विषे वतु प्रत्यय करनेपर एक जगह एतद् शब्दकी टिको आ आदेश करनेसे रूप हुआ । एतावत् । और एक जगह इश् आदेश करनेसे रूप हुआ । इयत् । फिर नामसंज्ञा होनेपर विशेष्यको पुँल्लिंग होनेसे प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुए (एतावान्) (इयान्) ॥

तुन्दादेरिलः । तुन्दिलः ।

भाषार्थ–तुन्द आदिक शब्दोंसे अस्त्यर्थके विषे इल प्रत्यय होवै है । उदाहरण । तुन्दमस्यास्ति । इस विग्रहमें अस्त्यर्थके विषे इल प्रत्यय करनेपर (यस्यलोपः) इसकर रूप हुआ । तुन्दिल । नामसंज्ञामें पुँल्लिंगप्रथमैकवचनके विषे सिद्ध हुआ (तुन्दिलः)

औन्नत्ये दन्तादुरः । दन्तुरः ।

भाषार्थ–दन्त शब्दसे औन्नत्य अर्थात् उच्चत्व अर्थके विषे उर प्रत्यय होय । उच्चा दन्ता यस्य । इस विग्रहमें उच्चत्व अर्थके विषे उर प्रत्यय करनेपर । (यस्य लोपः) इसकर रूप हुआ । दन्तुर । फिर नामसंज्ञामें पुँल्लिंगप्रथमैकवचनमें सिद्ध हुआ (दन्तुरः) ॥

श्रद्धादेर्लुः । श्रद्धालुः । कृपालुः ।

भाषार्थ–श्रद्धा आदिक शब्दोंसे अस्त्यर्थके विषे लु प्रत्यय होय । उदाहरण । श्रद्धास्यास्ति । इस विग्रहमें लुप्रत्यय करनेपर नामसंज्ञामें पुँल्लिंग प्रथमैकवचनके विषे सिद्ध हुआ (श्रद्धालुः) इसी प्रकार सिद्ध हुआ (कृपालुः)

अस्मायामेधास्रग्भ्योऽस्त्यर्थे विनिर्वक्तव्यः । तपस्वी । मायावी । मेधावी । स्रग्वी ।

भाषार्थ–अस् प्रत्ययान्त और मेधा और स्रज् शब्दोंसे अस्त्यर्थके विषे विनि प्रत्यय वक्तव्य है । प्रत्ययमें इकार उच्चारणार्थ है । उदाहरण । तपोऽस्यास्ति । इस विग्रहमें अस्प्रत्ययान्त तपस् शब्दसे अस्त्यर्थके विषे विन् प्रत्यय करनेपर नामसंज्ञामें पुँल्लिंग प्रथमैकवचनमें सिद्ध हुआ (तपस्वी) इसीप्रकार सिद्ध हुए (मायावी) (मेधावी)। स्रक् अस्यास्ति । इस विग्रहमें विन् प्रत्यय करनेपर रूप हुआ । स्रज् विन् । फिर अन्तर्वर्त्तिनी विभक्तिके आश्रयसे पदान्त मानकर (चोःकुः) (चपा अबे जबाः) इनकर जकारके स्थानमें गकार करनेपर पुँल्लिंग प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (स्रग्वी)॥

वाचोग्मिनिः । वाग्मी ।

भाषार्थ–वाच् शब्दसे अस्त्यर्थके विषे ग्मिनि प्रत्यय होय प्रत्ययमें गकार (ञमे ञमा वा) सूत्रसे मकार होनेके निषेधके अर्थ है । वागस्यास्ति । इस विग्रहमें ग्मिनि प्रत्यय करनेपर रूप हुआ । वाच् ग्मिन् । यहाँ पदान्तताके आश्रयसे (चपा अबे जबाः) इसकर चकारको गकार किया । फिर नामसंज्ञा होनेपर पुँल्लिंगप्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (वाग्मी) ॥

अलाटौ कुत्सितभाषिणि । वाचालः । वाचाटः ।

भाषार्थ–कुत्सितभाषी अभिधेयके विषे वाच् शब्दसे आल और आट यह प्रत्यय होयँ । कुत्सिता वागस्य । इस विग्रहमें वाच् शब्दसे आल तथा आट प्रत्यय करनेपर रूप हुए । वाचाल । वाचाट । फिर नामसंज्ञामें पुँल्लिंग प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुए (वाचालः) (वाचाटः) ॥

ईषदपरिसमाप्तौ कल्पदेश्यदेशीयाः । ईषदपरिसमाप्तः सर्वज्ञः । सर्वज्ञकल्पः । पटुदेश्यः । कविदेशीयः ।

भाषार्थ–अल्प मात्र अपरिसमाप्तिमें नामसंज्ञकशब्दसे कल्प देश्य देशीय । यह प्रत्यय होयँ । भाव यह है कि, किंचित् न्यूनता वाच्यमान हुए संते कल्प–देश्य–देशीय यह प्रत्यय नामसे होवै हैं । उदाहरण । अल्पमात्रमपरिपूर्णः सर्वज्ञः । इस विग्रहमें अल्पमात्र अपरिपूर्णता वाच्यमान होनेसे सर्वज्ञ शब्दसे कल्प प्रत्यय करनेपर रूप हुआ (सर्वज्ञकल्प) फिर नामसंज्ञामें पुँल्लिंग प्रथमैकवचनके विषे रूप सिद्ध हुआ (सर्वज्ञकल्पः) यह उस सर्वज्ञका नाम है जिसकी सर्वज्ञतामें थोडीही अपरिपूर्णता होय इसी प्रकार । ईषद् अपरिपूर्णः पटुः । ईषद् अपरिपूर्णः कविः । इन विग्रहोंमें क्रमसे देश्य देशीय प्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुए (पटुदेश्यः) (कविदेशीयः) ॥

प्रशंसायांरूपः । प्रशस्तो वैयाकरणो वैयाकरणरूपः । पाशः कुत्सायाम् । कुत्सितो वैयाकरणः वैयाकरणपाशः ।

भाषार्थ-प्रशंसा अर्थ वाच्यमान हुए संते रूप प्रत्यय होताहै । जैसे । प्रशस्तो वैयाकरणः । इस विग्रहमें प्रशंसा अर्थ वाच्यमान है इसकारण रूप प्रत्यय करनेपर पुँल्लिगप्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (वैयाकरणरूपः) कुत्सा नाम निन्दा अर्थ वाच्यमान है इसकारण पाश प्रत्यय करनेपर पुँल्लिग प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (वैयाकरणपाशः) ॥

भूतपूर्वे चरट् । पूर्वं दृष्टः । दृष्टचरः । स्त्री चेत् । दृष्टचरी ।

भाषार्थ-भूतपूर्व अर्थात् प्राग्विषयीभूत अर्थके विषे चरट् प्रत्यय होय । उदाहरण । पूर्वदृष्टः । इस विग्रहमें प्राग्विषयीभूत अर्थ विद्यमान है इसकारण चरट् प्रत्यय करनेपर रूप हुआ । दृष्टचर । फिर नामसंज्ञामें पुँल्लिगप्रथमैकवचनमें सिद्ध हुआ (दृष्टचरः) स्त्रीलिंगमें (टिड्ढित:) इसकर ईप् प्रत्यय करने पर प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (दृष्टचरी) ॥

प्राचुर्यविकारप्राधान्यादिषुमयट् । अन्नमयो यज्ञः । मृन्मयो घटः । स्त्रीमयो जाल्मः । अमृतमयश्चन्द्रः ।

भाषार्थ-प्रचुरता तथा विकार और प्रधानता आदिक अर्थोंके विषे मयट् प्रत्यय होताहै आदि शब्दसे निर्वर्त्तन,स्वरूप,पुरीष, अवयव,-इन अर्थोंके विषेभी मयट् प्रत्यय होताहै । अन्नं प्रचुरमस्त्यस्मिन् । इस विग्रहमें प्रचुरता अर्थ विद्यमान है इसकारण मयट् प्रत्यय करनेपर रूप हुआ । अन्नमय । नामसंज्ञा होनेपर पुँल्लिगप्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (अन्नमयो-यज्ञः) यह उस यज्ञका नाम है जिसमें बहुतसा अन्न होय । स्त्रीलिंगमें (टिड्ढित:) इसकर प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (अन्नमयी) मृदो विकारः । इस विग्रहमें विकार अर्थके विषे मयट् प्रत्यय करनेपर । मृद् मय । फिर (क्वचिजवानामपि ञमा द्रष्टव्याः) इसकर दकारके स्थानमें नकार करनेपर रूप हुआ । मृन्मय । फिर नामसंज्ञा होनेपर पुँल्लिङ्गमें प्रथमैकवचनके विषे रूप सिद्ध हुआ (मृन्मयो-घटः) स्त्री प्रधानमस्य इस विग्रहमें प्रधानता अर्थ विद्यमान है इसकारण मयट् प्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ (स्त्रीमयो जाल्मः) । अमृतेन निर्वृतः । अमृतमेव स्वरूपं यस्य । इन विग्रहोंमें निर्वर्त्तन अर्थ तथा स्वरूपार्थ विद्यमान है इसकारण मयट् प्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ (अमृतमयश्चंद्रः) । गोः पुरीषम् । इस विग्रहमें पुरीष अर्थ विद्यमान है इसकारण मयट् प्रत्यय करनेपर नपुंसक प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (गोमयम्) । शरस्यावयवाः । इस विग्रहमें अवयवार्थ होनेसे मयट् प्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ (शरमयाः-बाणाः)॥

तदधीते वेदेत्यत्राण् वक्तव्यः । व्याकरणमधीते वेद वेति विग्रहेऽण् प्रत्यये कृते सति । व्याकरण अण् । इति स्थिते ।

भाषार्थ–तदधीते वेद वा इस अर्थके विषे अण् प्रत्यय वक्तव्यहै । भाव यह है कि, कर्मसंज्ञक पदसे अध्ययनक्रियायुक्त वा वेदनक्रियायुक्त कर्त्ता अभिधेय हुए संते अण् प्रत्यय होय । उदाहरण । व्याकरणमधीते वेद वा । इस विग्रहमें अध्ययन क्रियायुक्त वा वेदनक्रियायुक्त कर्त्ता अभिधेय विद्यमान है इसकारण कर्मवाचक व्याकरणम् इस पदसे अण् प्रत्यय करनेपर (समासप्रत्यययोः) (उक्तार्थानामप्रयोगः) इनकर रूप स्थित हुआ । व्याकरण अ ॥

न सन्धिय्वोर्युट् च ।

न सन्धिय्वोः–युट्–च । चतुष्पदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) सन्धिजौ य्वौ सन्धिय्वौ तयोः सन्धिजयोर्यकारवकारयोः स्वरस्य वृद्धिर्न भवति किन्तु तयोर्युडागमो भवति इट् उट् इत्येतावागमौ भवतः । वर्णविश्लेषं कृत्वा यकारात्पूर्वमिकारः । वकारात्पूर्वमुकारः । पश्चात् (आदिस्वरस्य ञ्णिति च वृद्धिः) । वैयाकरणः । सौवश्वः ।

भाषार्थ–सन्धिसे उत्पन्न हुए जो यकार वकार सो कहिये सन्धिय्वौ उन सन्धिसे उत्पन्न हुए यकार और वकारके सम्बन्धी स्वरको वृद्धि नहीं होय किन्तु उन यकार और वकारको युट् आगम होय अर्थात् इट् और उट् आगम होयँ । भाव यहहै कि, सन्धिसे उत्पन्न हुए यकार और वकारके सम्बन्धी स्वरको वृद्धि नहीं होय किन्तु उस सन्धिसे उत्पन्न हुए यकारको इट् आगम होय और वकारको उट् आगम होय । वर्णविभाग करके यकारसे पूर्व इकार करना चाहिये और वकारसे पूर्व उकार करना चाहिये पश्चात् (आदिरस्वस्य ञ्णिति च वृद्धिः) इस सूत्रकर वृद्धि करनी चाहिये । उदाहरण । व्याकरण अ । इसमें आदिस्वर आकारको वृद्धि नहीं हुई क्योंकि, यह आकार सन्धिसे उत्पन्न हुए यकारका सम्बन्धी है और स्वयं वृद्धिरूप है किन्तु वर्णविभाग करके सन्धिसे उत्पन्न हुए यकारको इट् आगम किया तो वह आगमरूप इकार यकारसे पूर्व हुआ तब रूप हुआ । व् इय् आकरण अ । फिर (स्वरहीनं परेण संयोज्यम्) इसकर रूप हुआ । वियाकरण अ । फिर (आदिस्वरस्य ञ्णिति च वृद्धिः) इसकर आदिस्वर इकारको ऐकार वृद्धि करनेपर (यस्यलोपः) इसकर रूप हुआ । वैयाकरण । फिर नाम संज्ञा होनेपर पुँल्लिगप्रथमैकवचनमें सिद्ध हुआ (वैयाकरणः) । स्वश्वंवेद । इस विग्रहमें वेदनक्रियायुक्तकर्त्ता

अभिधेय विद्यमान है इसकारण कर्मवाचकपदसे अण् प्रत्यय करनेपर रूप हुआ । स्वश्व अ । यहाँ आदिस्वर अकारको वृद्धि नहीं हुई क्योंकि, यह अकार सन्धिसे उत्पन्न हुए वकारका सम्बन्धी है किन्तु वर्ण विभाग करके सन्धिसे उत्पन्न हुए वकारको उट् आगम किया तो वह आगमरूप उकार वकारसे पूर्व हुआ तब रूप हुआ । स् उ व् अश्व अ । फिर (स्वरहीनं परेण संयोज्यम्) इसकर रूप हुआ (सुवश्वअ) फिर (आदिस्वरस्य ञ्णिति च वृद्धिः) इसकर आदिस्वर उकारको वृद्धि करनेपर (यस्यलोपः) इसकर रूप हुआ (सौवश्व) फिर नामसंज्ञा होनेपर पुँल्लिगके प्रथमैकवचनमें सिद्धहुआ (सौवश्वः) ॥

इतो जातार्थे ।

इतः-जातार्थे । द्विपदमिदं सूत्रम्(वृत्तिः) जातार्थे इतः प्रत्ययो भवति ।

भाषार्थ-जातार्थके विषे इत प्रत्यय होय । उदाहरण । लज्जा जातास्य । इस विग्रहमें जातार्थ विद्यमानहै इसकारण इत प्रत्यय करनेपर (यस्य लोपः) इसकर रूप हुआ (लज्जित) फिर नामसंज्ञामें पुँल्लिग प्रथमैकवचनके विषे सिद्ध हुआ । लज्जितः ॥

तरतमेयस्विष्ठाः प्रकर्षे ।

तरतमेयस्विष्ठाः-प्रकर्षे । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) अतिशयेर्थे तर, तम, ईयसु, इष्ठ इत्येते प्रत्यया भवन्ति । अतिशयेन कृष्णः । कृष्णतरः । कृष्णतमः । शुक्लतमः । ईयस्विष्ठौ डितौ वक्तव्यौ । डिति टेर्लोपः । उकारो नुमीब्विधानार्थः । न्सम्महतोधौ दीर्घः शौ च । अतिशयेन लघुः । लघीयान् । पापीयान् । लघीयसी । पापीयसी । लघिष्ठः । पापिष्ठः ।

भाषार्थ-अतिशय अर्थके विषे तर-तम-ईयसु-इष्ठ । यह चार प्रत्यय होवैं हैं । उदाहरण (अतिशयेन कृष्णः) इस विग्रहमें अतिशय अर्थ विद्यमानहै इसकारण तर-तम-प्रत्यय करनेपर नामसंज्ञामें पुँल्लिगप्रथमैकवचनके विषे सिद्धहुए (कृष्णतरः) (कृष्णतमः) इसीप्रकार सिद्ध हुआ (शुक्लतमः) ईयसु और इष्ठ यह दोनों प्रत्यय डित्संज्ञक वक्तव्य हैं । ईयसु प्रत्ययमें उकार, नुम् और ईप्प्रत्ययके विधानार्थहै । अतिशयेन लघुः । अतिशयेन पापः । इनविग्रहोंमें ईयसु प्रत्यय करनेपर (डितिटेः) इसकर टिका लोप करनेसे रूप हुए । लघीयस् । पापीयस् । फिर नामसंज्ञा होनेपर पुँल्लिगमें (ब्वितोनुम्) (न्सम्महतोधौ दीर्घः शौ च) इनकर रूप सिद्ध हुए (लघीयान्) (पापीयान्) स्त्रीलिंगमें (ष्ट्वितः) इसकर ईप्प्रत्यय करनेपर

रूप सिद्ध हुए (लघीयसी) (पापीयसी) । अतिशयेन लघुः । अतिशयेन पापः । इन विग्रहोंमें इष्ठ प्रत्यय करनेपर (डितिटेः) इसकर टिका लोप करनेसे रूप हुए । लघिष्ठ । पापिष्ठ । फिर नामसंज्ञामें पुँल्लिंग प्रथमैकवचनके विषे सिद्ध हुए (लघिष्ठः) (पापिष्ठः) ॥

गुर्वादेरिष्ठेमनीयस्सु गरादिष्टचलोपश्च ।

गुर्वादेः–इष्ठेमनीयस्सु–गरादिः–टचलोपः–च । पंचपदमिदं सूत्रम् । (वृत्तिः) गुरु–प्रिय–स्थिर–स्फिर–उरु–बहुल–वृद्ध–दीर्घ–प्रशस्य–बाढ–युवन्–अल्प–स्थूल–दूर–अन्तिक–क्षिप्र–क्षुद्र इत्येतेषां क्रमेण गर्–प्र–स्थव्–स्फ–वर–बंह्–ज्या–द्राघ्–श्र–साध्–यव्–कन्–स्थव्–दव्–नेद्–क्षेप्–क्षोद्–एते आदेशा भवन्ति इष्ठेमनीयस्सु परतः । अतिशयेन गुरुः । गरीयान् । गरीयसी । गारिष्ठः । गुरोर्भावः । गरिमा । प्रेष्ठः । प्रेयान् । प्रेमा । स्थविष्ठः । स्थवीयान् ।

भाषार्थ–गुरु आदिक शब्दोंको क्रमसे गर् आदिक आदेश होंय इष्ठ और इमन् और ईयस् यह प्रत्यय पर हुए संते और टिका लोप नहीं होय अर्थात् गुरु आदिक शब्दोंके स्थानमें आदेश किये हुए गर आदिक शब्दोंकी टिका लोप नहीं होय डित्संज्ञक इष्ठ–इमन्–ईयस् प्रत्यय पर हुए संतेभी । उदाहरण । अतिशयेन गुरुः । इसविग्रहमें इष्ठ तथा ईयस् प्रत्यय करनेपर गर् आदेश करनेसे पुँल्लिंगप्रथमैकवचनके विषे सिद्धहुए (गरिष्ठः) (गरीयान्) स्त्रीलिंगमें (गरीयसी) (गुरोर्भावः) इस विग्रहमें भावके विषे इमन् प्रत्यय करनेपर गर् आदेश करनेसे पुँल्लिंगप्रथमैकवचनमें सिद्ध हुआ (गरिमा) इसीप्रकार (अतिशयेन प्रियः) इस विग्रहमें इष्ठ ईयस प्रत्यय करनेपर प्र आदेश करनेसे पुँल्लिंग प्रथमैकवचनमें सिद्ध हुआ (प्रेष्ठः) (प्रेयान्) स्त्रीलिंगमें (प्रेयसी) । प्रियस्य भावः । इस विग्रहमें भावके विषे इमन् प्रत्यय करनेपर प्र आदेश करनेसे सिद्ध हुआ (प्रेमा) अतिशयेन स्थूलः । इस विग्रहमें इष्ठ ईयस् प्रत्यय करनेपर स्थव् आदेश करनेसे पुँल्लिंगप्रथमैकवचनमें सिद्ध हुआ (स्थविष्ठः) (स्थवीयान्) इसीप्रकार अन्यरूपभी साधनेयोग्यहैं ॥

ईलोपोज्याशब्दादीयसः । ज्यायान् । ज्येष्ठः । अतिशयेन दीर्घः । द्राघिष्ठः । द्राघीयान् । अतिशयेन प्रशस्यः । श्रेष्ठः । श्रेयान् । श्रेयसी ।

भाषार्थ-ज्या शब्दसे परे ईयस् प्रत्ययके ईकारका लोप होय । उदाहरण (अतिशयेन वृद्धः) इस विग्रहमें इष्ठ ईयस् प्रत्यय करनेपर वृद्धको ज्या आदेश करनेसे रूप हुआ (ज्या इष्ठ । ज्या ईयस्) फिर जहाँ इष्ठ प्रत्यय परे है तहाँ पुँल्लिग प्रथमैकवचनमें सिद्ध हुआ (ज्येष्ठः) और जहाँ ईयस् प्रत्यय परे है तहाँ ईयस् प्रत्ययके ईकारका लोप करनेपर पुँल्लिगप्रथमैकवचनमें सिद्ध हुआ (ज्यायान्) स्त्रीलिंगमें (ज्यायसी) । अतिशयेन दीर्घः । इसविग्रहमें इष्ठ ईयस् प्रत्यय करनेपर द्राघ् आदेश करनेसे पुँल्लिगप्रथमैकवचनमें सिद्धहुआ (द्राघिष्ठः) (द्राघीयान्) । अतिशयेन प्रशस्यः । इस विग्रहमें इष्ठ ईयस् प्रत्यय करनेपर श्र आदेश करनेसे पुँल्लिगप्रथमैकवचनमें सिद्ध हुआ (श्रेष्ठः) (श्रेयान्) स्त्रीलिंगमें (श्रेयसी) ॥

बहोरिष्ठेयिः ।

बहोः-इष्ठे-यिः । त्रिपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) बहुशब्दात् इष्ठप्रत्यये परे यिर्भवति । भूयिष्ठः । भूयान् ।

भाषार्थ-बहुशब्दसे इष्ठ प्रत्यय परे हुए संते यि आगम होय । उदाहरण । अतिशयेन बहुः । इस विग्रहमें इष्ठ और ईयस् प्रत्यय करनेपर (बहोर्लोपो भूचबहोः) इस सूत्रकर बहुशब्दके स्थानमें भू आदेश और इष्ठ और ईयस् प्रत्ययके इकार ईकारका लोप किया तब रूप हुआ । भू ष्ठ । भूयस् । फिर जहाँ इष्ठ प्रत्यय परे हैं तहाँ (यदादेशस्तद्वद्भवति) इसकर भूके स्थानमें बहु मानकर यि आगम करनेपर रूप हुआ । भूयिष्ठ । फिर नाम संज्ञा होनेपर पुँल्लिगप्रथमैकवचनमें सिद्ध हुए । भूयिष्ठः । भूयान् । स्त्रीलिंगमें । भूयसी ॥

किमोऽव्ययादाख्याताच्चतरतमयोराम् वक्तव्यः । कुतस्तरांपरमाणवः । कुतस्तमांतेषामारंभकत्वम् । उच्चैस्तरांगायति । पचतितराम् । पचतितमाम् ।

भाषार्थ-किम् शब्द सम्बन्धी अव्ययसे और आख्यात सिद्धरूपसे और चकारसे उच्चैस् नीचैस् इत्यादि अव्ययसे स्वार्थ वा अतिशयार्थमें किये हुए तर तम प्रत्ययोंके आगे आम् प्रत्यय होता है । उदाहरण । कुतः । यह किम् शब्दसम्बन्धी अव्यय है इससे स्वार्थमें तर तम प्रत्यय करनेपर रूप हुआ । कुतस्तर । कुतस्तम । फिर आम्प्रत्ययान्तको (क्त्वाद्यन्तंच०)इसकर अव्यय होनेसे रूप सिद्ध हुआ।कुतस्तराम् । कुतस्तमाम् । अर्थ-कहाँसे परमाणु प्रकट होतेहैं और कहाँसे उन परमाणुओंका उत्पादकत्वहै ।उच्चैस्। इस अव्ययसे अतिशयार्थमें तर प्रत्यय करनेपर पश्चात् आम् प्रत्यय करनेसे रूप सिद्ध हुआ (उच्चैस्तराम्) अर्थ-अति ऊंचे स्वरसे गाता है। पचति-पठति । इन आख्यातसिद्ध

क्रियारूपोंसे अतिशयार्थमें तर तम प्रत्यय करनेके पश्चात् आम् प्रत्यय करनेसे रूप हुए (पचतितराम्) (पचतितमाम्) अर्थ । अतिशय कर पाक करता है ॥

अव्ययसर्वनाम्नामकच्प्राक्टेः ।

भाषार्थ-अव्यय संज्ञक शब्द और सर्वादि नामोंकी टिसे पूर्व अकच् आगम वक्तव्य है । उदाहरण । उच्चैस् । इस अव्ययसंज्ञक शब्दके टिसे पूर्व अकच् आगम करनेपर रूप हुआ उच्च् अक ऐस् । फिर (स्वरहीनं परेण संयोज्यम्) (स्रोर्विसर्गः) इनकर सिद्ध हुआ (उच्चकैः) और सर्वशब्दके टिसे पूर्व अकच् आगम करनेपर सिद्ध हुआ (सर्वकः) इसीप्रकार यत् शब्दकी टिसे पूर्व और तत् शब्दकी टिसे पूर्व अकच् आगम करनेपर सिद्ध हुए (यकः) (सकः) इति ॥

परिमाणे दघ्नादयः ।

परिमाणे-दघ्नादयः । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) परिमाणेर्थे दघ्नट् द्वयसट् मात्रट् इत्येते प्रत्यया भवन्ति । जानुदघ्नं जलम् । शिरोद्वयसम् । पुरुषमात्रम् ।

भाषार्थ-परिमाण अर्थके विषे दघ्नट् द्वयसट् मात्रट् यह प्रत्यय होवैं हैं । उदाहरण । जानु परिमाणमस्य । इस विग्रहमें परिमाण अर्थके विषे दघ्नट् प्रत्यय करनेसे रूप हुआ । जानुदघ्न । फिर नाम संज्ञा होनेपर विशेष्यको नपुंसकलिंग होनेसे नपुंसक प्रथमैकवचनके विषे सिद्ध हुआ (जानुदघ्नं जलम्) पुरुषः प्रमाणमस्य । इस विग्रहमें परिमाण अर्थके विषे मात्रट् प्रत्यय करनेपर विशेष्यको नपुंसकलिंग होनेसे प्रथमैकवचनमें सिद्ध हुआ (पुरुषमात्रम्) । शिरः परिमाणमस्य । इस विग्रहमें द्वयसट् प्रत्यय करनेपर विशेष्यको नपुंसकलिंग होनेसे नपुंसकलिंगप्रथमैकवचनमें सिद्ध हुआ (शिरोद्वयसम्) स्त्रीलिंगके विषे (ट्टिड्ढाणञ्०...) इसकर ईप् प्रत्यय करनेपर तीनों प्रत्ययोंके रूप सिद्ध हुए (जानुदघ्नी) (पुरुषमात्री) (शिरोद्वयसी) ॥

द्वयोर्बहूनां चैकस्य निर्द्धारणे किमादिभ्यो डतरडतमौ वक्तव्यौ । कतरो भवतोः काण्वः । कतमो भवतां तांत्रिकः । भवतोर्यतरस्तार्किकस्ततर उद्गृह्णातु ।

भाषार्थ-दो अथवा बहुतोंके मध्यसे एकके पृथक् करनेमें किमादिक शब्दोंसे डतर और डतम प्रत्यय होयँ । भाव यह है कि, दो अथवा बहुतोंके मध्यमेंसे जो कि, एकका पृथक् करना है उस अर्थमें किम्-यत्-तत्-इन शब्दोंसे डतर तथा

डतम प्रत्यय होवैं हैं । भवतोर्मध्येकाण्वः कः । इस विग्रहमें दोके मध्यसे एक कण्व-वंशीयका पृथक् करना है इसकारण किम् शब्दसे डतर प्रत्यय करनेपर (डितिटेः) इसकर रूप हुआ। कतर। फिर नामसंज्ञामें पुँल्लिगप्रथमैकवचनके विषे सिद्ध हुआ (कतरः) अर्थ-तुम दोनोंके मध्यमें कण्ववंशवाला कौन है । भवतां तांत्रिकः कः । इस विग्रहमें बहुतोंके मध्यसे एक तांत्रिकको पृथक् करनाहै इसकारण किम् शब्दसे डतम प्रत्यय करनेपर (डितिटेः) इसकर सिद्ध हुआ (कतमः) अर्थ-तुम बहुतोंके मध्यमें तांत्रिक नाम तंत्रका जाननेवाला कौनहै। इसप्रिकार यद् तद् शब्दसे डतर प्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुए (यतरः) (ततरः) अर्थ-तुम दोनोंके मध्यमें जो कि, तर्कशास्त्र जाननेवालाहै वह कहो ॥

विन्मतोर्लुक् ।

विन्मतोः-लुक् । द्विपदमिदं सूत्रम् (वृत्तिः) विन्मतोर्लुक्स्यादिष्ठेयसुप्रत्यययोः परतः । अतिशयेन स्रग्वी । स्रविष्ठः । स्रजीयान् ।

भाषार्थ-विन् और मतुप् प्रत्ययका लुक् होय इष्ठ और ईयस् प्रत्यय पर हुए संते । उदाहरण । अतिशयेन स्रग्वी । इस विग्रहमें इष्ठ ईयस् प्रत्यय करनेपर विन् प्रत्ययका लुक् करनेसे रूप हुआ । स्रजिष्ठ । स्रजीयम् । फिर नामसंज्ञा होनेपर पुँल्लिग-प्रथमैकवचनमें सिद्धहुआ (स्रजिष्ठः) (स्रजीयान्) ॥

संख्येयविशेषावधारणे द्वित्रिशब्दाभ्यां तीयः । द्वितीयः । त्रेः सम्प्रसारणम् । तृतीयः ।

भाषार्थ-संख्येय विशेषावधारणके विषे अर्थात् संख्यापूरण अर्थके विषे द्वि और त्रिशब्दोंसे तीय प्रत्यय होवैहै । भाव यहहै कि, जिसपर संख्याकी पूर्त्ति होवै उसीके विशेषकर निश्चयकरनेमें संख्यावाचक द्वि, त्रि शब्दोंसे तीय प्रत्यय होय । उदाहरण । द्वयोः संख्या पूरणः । इस विग्रहमें संख्या पूरण अर्थके विषे तीय प्रत्यय करनेपर रूप हुआ । द्वितीय । फिर नामसंज्ञा होनेपर विशेष्यको पुँल्लिग होनेसे पुँल्लिगप्रथमैकवचनके विषे सिद्ध हुआ (द्वितीयः) । त्रयाणां संख्या पूरणः । इस विग्रहमें संख्यापूरण अर्थके विषे तीय प्रत्यय करनेपर रूप हुआ । त्रितीय । संख्या पूरण अर्थके विषे त्रि चब्दको संप्रसारण होताहै । अर्थात् संख्या पूरण अर्थके विषे त्रि शब्दके स्वरसहित रकारको ऋकार होताहै । इसकर त्रिके स्थानमें तृ करनेपर रूप हुआ। तृतीय । फिर नाम संज्ञा होनेपर विशेष्यको पुँल्लिग होनेसे पुँल्लिग प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (तृतीयः) ॥

षट्चतुरोस्थट् । षष्ठः । चतुर्थः । पंचादेर्मट् । पंचमः । सप्तमः ।

भाषार्थ–संख्यापूरण अर्थके विषे संख्यावाचक षष् और चतुर् शब्दसे थट् प्रत्यय होवै है (षण्णां संख्यापूरणः) इस विग्रहमें संख्यापूरण अर्थके विषे थट् प्रत्यय करनेपर रूप हुआ (षष्थ) फिर (ष्टुभिः ष्टुः) इसकर थकारके स्थानमें ठकार करनेसे रूप हुआ (षष्ठ) फिर नामसंज्ञा होनेपर विशेष्यको पुँल्लिग होनेसे पुँल्लिगप्रथमैकवचनके विषे सिद्ध हुआ (षष्ठः) स्त्रीलिंगके विषे (ष्ट्रितः) इसकर ईप् प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ (षष्ठी)। चतुर्णाम् संख्यापूरणः । इस विग्रहमेंभी थट् प्रत्यय करनेपर पुँल्लिग प्रथमैकवचनमें रूप सिद्ध हुआ (चतुर्थः) स्त्रीलिंगके विषे (ष्ट्रितः) इसकर ईप् प्रत्यय करनेपर रूप सिद्ध हुआ (चतुर्थी) संख्यापूरण अर्थके विषे संख्यावाचक पंचन् और आदि शब्दसे (सप्तन् अष्टन् । नवन् । दशन्) पर्यन्त शब्दोंसे मट् प्रत्यय होय । उदाहरण (पंचानां संख्यापूरणः) इस विग्रहमें संख्यापूरण अर्थके विषे मट् प्रत्यय करनेपर (नाम्नोनो लोपशधौ) इसकर नकारका लोपश् करनेसे रूप हुआ (पंचम) फिर नामसंज्ञा होनेपर विशेष्यको पुँल्लिग होनेसे पुँल्लिगप्रथमैकवचनके विषे सिद्ध हुआ (पंचमः) स्त्रीलिंगमें सिद्धहुआ (पंचमी) इसीप्रकार सिद्ध हुए (सप्तमः) (अष्टमः) (नवमः) (दशमः) ॥

एकादशादेर्डट् । एकादशः । द्वादशः । त्रयोदशः । पंचदशः। षोडशः । सप्तदशः । अष्टादशः । द्वित्र्यष्टानां द्वात्रयोष्टाः ।

भाषार्थ–संख्यापूरण अर्थके विषे एकादशन् आदिक शब्दोंसे डट् प्रत्यय होवै है । उदाहरण (एकादशानां संख्यापूरणः) इस विग्रहमें संख्यापूरण अर्थके विषे डट् प्रत्यय करनेपर (डितिटेः) इसकर टिका लोप करनेसे रूप हुआ । एकादश । फिर नामसंज्ञा होनेपर विशेष्यको पुँल्लिग होनेसे पुँल्लिगप्रथमैकवचनमें सिद्ध हुआ (एकादशः) स्त्रीलिंगमें (ष्ट्रितः) इसकर ईप्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ (एकादशी) यहाँपर एकशब्दको एका आदेश और द्विशब्दको द्वा आदेश और त्रिशब्दको त्रय आदेश और अष्टन् शब्दको अष्टा आदेश (सहादेःसादिः) इस सूत्रसे अवगन्तव्यहै ॥ (१)

---

(१) प्राक्शतादनशीतेर्वा । भाषार्थ–संख्यावाचक शतशब्दपर्यन्त अशीति शब्दको त्यागकर अन्य दशन् आदिक शब्द परे होवैं तौ द्विके स्थानमें द्वा और त्रिकेस्थानमें त्रय और अष्टन्के स्थानमें अष्टा यह आदेश हों और वा–के ग्रहणसे चत्वारिंशत् आदिक परे होवैं तौ विकल्पकरके यह आदेश होयँ। उदाहरण । द्वादशः । त्रयोदशः । अष्टादशः । द्वाविंशः । त्रयोविंशः अष्टाविंशः । द्वात्रिंशः । त्रयस्त्रिंशः । अष्टात्रिंशः । द्वाचत्वारिंशत् । द्विचत्वारिंशत् । त्रिचत्वारिंशत् । त्रयश्चत्वारिंशत् । अनशीतेः । इति किम् । द्व्यशीतिः । द्व्यशीतितमः । इति ॥

विंशत्यादेर्वा तमट् । विंशतितमः ।

भाषार्थ-विंशति आदिक संख्यावाचकशब्दोंसे तमट् प्रत्यय होय संख्यापूरण अर्थके विषे । विंशतेः संख्यापूरणः। इस विग्रहमें संख्यापूरण अर्थके विषे तमट् प्रत्यय करनेपर विशेष्यको पुंलिङ्ग होनेसे पुंलिङ्गप्रथमैकवचनमें सिद्ध हुआ (विंशतितमः) स्त्रीलिंगमें (विंशतितमी) इसीप्रकार (त्रिंशत्तमः । चत्वारिंशत्तमः) इत्यादि ॥ और जहाँ तमट् प्रत्यय नहीं हुआ तहाँ संख्यापूरण अर्थमें (एकादशादेर्डट्) इसकर डट् प्रत्यय करनेपर रूप स्थित हुआ । विंशति अ- ॥

विंशतेस्तिलोपोडिति । विंशः ।

भाषार्थ-डित् प्रत्यय पर हुए संते विंशतिशब्दके तिका लोप वक्तव्यहै । उदाहरण (विंशतिअ) इसमें विंशति शब्दसे डितसंज्ञक अ-प्रत्यय परे विद्यमानहै इसकारण विंशति शब्दकी तिका लोप करनेपर रूप हुआ (विंशअ) फिर (डितिटेः) इसकर टि संज्ञक अकारका लोप करनेपर रूप हुआ (विंश) फिर नामसंज्ञा होनेपर पुँल्लिग प्रथमैकवचनमें सिद्ध हुआ (विंशः) इसीप्रकार । त्रिंशतः संख्यापूरणः । इस विग्रहमें सिद्ध हुआ (त्रिंशत्तमः) (त्रिंशः) ॥

संख्यायाः प्रकारे धा । द्विधा । त्रिधा । चतुर्धा । गुणोऽण्च । द्वेधा । त्रेधा । द्वैधम् । त्रैधम् ।

भाषार्थ-संख्यावाचकशब्दसे प्रकार अर्थके विषे धा प्रत्यय होवै है । उदाहरण । (द्वौ प्रकारौ अस्य) इस विग्रहमें प्रकार अर्थमें धा प्रत्यय करनेपर (क्त्वाद्यन्तं च) इसकर धा-प्रत्ययान्तको अव्यय होनेसे सिद्ध हुए (त्रिधा) (चतुर्धा) (पंचधा) इत्यादि धा प्रत्यय पर हुएसंते द्वि त्रिं शब्दोंको विकल्प करके गुण होय और धा प्रत्ययसे स्वार्थमें विकल्प करके अण् प्रत्यय होयँ। उदाहरण । द्विधा इसमें एक जगह द्वि शब्दको गुण करनेसे रूप हुआ (द्वेधा) इसीप्रकार (त्रेधा) और स्वार्थमें धा प्रत्ययसे अण् करनेसे रूप हुआ (द्विधाअ) फिर आदिं स्वरको वृद्धि किया और (यस्यलोपः) इसकर आकारका लोप किया तब रूप हुआ (द्वैध) फिर नामसंज्ञा होनेपर नपुंसकप्रथमैकवचनमें सिद्ध हुआ (द्वैधम्) इसीप्रकार सिद्ध हुआ । त्रैधम् ॥

क्रियाया आवृत्तौ कृत्वस् । पंचकृत्वः । सप्तकृत्वः ।

भाषार्थ-क्रियाकी आवृत्तिके विषे संख्यावाचक पंचन् सप्तन् आदिक शब्दोंसे कृत्वस् प्रत्यय होवै है । भाव यह है कि, क्रियाकी आवृत्ति उसको कहते हैं जोकि, क्रियाका लौटकर वारंवार होनाहै उस अर्थके विषे संख्यवाचक पंचन् सप्तन् आदिक

शब्दोंसे कृत्वस् प्रत्यय होवै है। उदाहरण (पंच वारान् करोति) इस विग्रहमें क्रियाका वारंवार होना अर्थ विद्यमानहै इसकारण कृत्वस् प्रत्यय करनेपर (नाम्नो नो लोपशधौ) इसकर नकारका लोपश् करनेसे कृत्वस् प्रत्ययान्तको अव्यय होनेसे सिद्धहुआ (पंचकृत्वः)।

द्वित्रिभ्यां सुः। द्विरुक्तम्। त्रिरुक्तम्।

भाषार्थ–क्रियाकी आवृत्तिके विषे द्वि और त्रिशब्दसे सु प्रत्यय होवैहै प्रत्ययमें उकार उच्चारणार्थ है (द्वौवारौ। त्रीन् वारान्) इन विग्रहोंमें क्रियाका वारंवार होना अर्थ विद्यमानहै इसकारण सु प्रत्यय करनेपर सु प्रत्ययान्तको अव्यय होनेसे सिद्ध हुए (द्विः। त्रिः)॥

बह्वादेः शस्। बहुशः। शतशः।

भाषार्थ–बहु आदिक शब्दोंसे वारंवार अर्थके विषे वा संख्याके विषे शस् प्रत्यय होवै है। बहुवारान्। अथवा। वहव एव। इन विग्रहोंमें शस् प्रत्यय करनेपर शस् प्रत्ययान्तको अव्यय होनेसे सिद्ध हुआ। वहुशः। इसीप्रकार। कोटिः संख्या यस्य। इस विग्रहमें संख्यार्थके विषे शस् प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुआ (कोटिशः) और (शतशः) (सहस्रशः) (अनेकशः) (भूरिशः) (गणशः) (कतिशः) इत्यादि शस् प्रत्ययान्त हैं॥

तयायडौ संख्यायामवयवार्थे। द्वितयम्। त्रितयम्। द्वयम्। त्रयम्। शेषा निपात्याः कत्यादयः॥ इति तद्धितप्रक्रिया समाप्ता॥

इति श्रीअनुभूतिस्वरूपाचार्य्यकृतसारस्वतस्य प्रथमावृत्तिः समाप्ता॥

भाषार्थ–संख्या वाच्यमान हुए संते अवयवार्थके विषे तयट् अयट् यह प्रत्यय होवैं हैं तहाँ तयट् प्रत्यय तौ संख्यावाचकमात्र शब्दसे होवै है और अयट् द्वि और त्रिशब्दोंसेही होताहै। उदाहरण (द्वौ अवयवौ यस्य) इस विग्रहमें तयट् तथा अयट् प्रत्यय किये क्यों कि, अवयवार्थ विद्यमान है तव हुए (द्वितय) (द्वय) फिर नामसंज्ञा होनेपर नपुंसकप्रथमैकवचनमें सिद्ध हुए (द्वितयम्) (द्वयम्)। त्रयोऽवयवा यस्य। इस विग्रहमें संख्यावाचक त्रिशब्दसे अवयवार्थके विषे तयट् अयट् प्रत्यय करनेपर नामसंज्ञामें नपुंसकलिंग प्रथमैकवचनमें सिद्ध हुए (त्रितयम्। त्रयम्) और स्त्रीलिंगके विषे (ष्ट्वित्रतः) इसकर ईप्प्रत्यय करनेपर सिद्ध हुए (द्वितयी) (द्वयी) (त्रितयी) (त्रयी) और इसीप्रकार सिद्ध हुआ (चतुष्टयम्) (चतुष्टयी) और कोई आचार्य संख्यावाचक शब्दसे तयट् प्रत्यय स्वार्थके विषे कहते हैं। उदाहरण।

द्वावेव त्रय एव । इन विग्रहोंमें स्वार्थके विषे तयट् अयट् प्रत्यय करनेपर । नपुंसक प्रथमैकवचनमें सिद्ध हुए (द्वितयम् । द्वयम्) (त्रितयम् । त्रयम्)॥जो इस व्याकरण ग्रंथमें नहीं कहेहैं वह शब्द अन्य ग्रन्थान्तरोंमें सिद्धिको प्राप्त हुए हैं ऐसे शेष कर्ति आदिक शब्द निपातसे सिद्ध हैं ॥ इति तद्धितप्रक्रिया ॥ ॥

त्रिबाणांकक्षोणीशरदि गुहपौषाऽसिततिथौ
विधायैवं भाषातिलकमनुभूतिप्रविहिते ॥
प्रबन्धेऽदाच्छ्रीवेङ्कटपतिसुयन्त्राधिपतये
द्विजः काशीरामः स्वयशसि ढढौलीपुरि वसन् ॥ १ ॥

दोहा--संवत् अग्निशरांकशशि, पौषअसितछठिप्राप्त ।
सारस्वतप्रथमावृती, भाषातिलकसमाप्त ।
अर्प्योमंगलसैनसुत, रचिद्विजकाशीराम ।
वेंकटेशयन्त्राधिपति, खेमराजके नाम ।

इति श्रीअनुभूतिस्वरूपाचार्य्यकृतसारस्वतस्य प्रथमावृत्तौ श्रीपाठकमंगलसेनात्मजकाशिरामसंकलितसविस्तरसोपपत्तिभाषाटीका समाप्तिमगात् ॥

॥ समाप्तोऽयं ग्रन्थः ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-
खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस-बम्बई.